

**DUPLICATE DATE SLIP**

# **GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

**KOTA (Raj.)**

Students can retain library books only for two weeks at the most.

<b>BORROWER'S No.</b>	<b>DUE DATE</b>	<b>SIGNATURE</b>

माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक-४८

# जैन शिलालेख संग्रह

[ भाग चार ]

109308

सम्राहक-संपादक

डा० विद्याधर जोहरापुरकर,

एम० ए०, पीएच० डी०



प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

प्रथमावृत्ति ]

वीर निर्वाण सन्त २४९१

[ मूल्य-~~१००~~ रुपये ]

## ग्रन्थमाला सम्पादक

डॉ० हीरालाल जैन, एम० ए०, डी० लिट्०

डॉ० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, एम० ए०, डी० लिट्०

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ  
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी



प्रथम आवृत्ति १००० प्रति  
मूल्य सात रुपये

109308

मुद्रक

सन्मति मुद्रणालय  
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी



## अनुक्रमणिका

प्रधान सम्पादकीय	५-८
प्राक्कथन	६-१०
संकेत-सूची	११
प्रस्तावना	१-३३
१ हेम्वोंका साधारण परिचय	१-२
२ जैन सघका परिचय	२-१६
(अ) यापनीय सघ	२ ४
(आ) मूलसघ	४-१४
(इ) गौड सघ	१४
(ई) द्राविड़ सघ	१५
(उ) माधुर सघ	१५
(ऊ) पचस्तूप निकाय	१५
(ऋ) जम्बूग्वढगण	१५
(ॠ) सिंहबूरगण	१५
(ॡ) जैनसघके विषयमें साधारण विचार	१५ १६
३ राजवशोंका आश्रय	१६ ३२
(अ) उत्तर भारतके राजवश	१६-१६



## जैनशिलालेख-संग्रह

(आ) दक्षिण भारतके राजवंश	१९-३२
(इ) राजाश्रयके विषयमें साधारण विचार	३२
४ जैन संघकी दुरवस्था	३२-३३
५ उपसंहार	३३
मूल लेख ( तिथिक्रमसे )	१-३८४
परिशिष्ट	
१ श्वेताम्बर लेखोंकी सूचना	३८५-३८८
२ जैनतर लेखोंमें जैन व्यक्ति आदिकें उल्लेख	३८९-३९२
३ नागपुर प्रतिमा लेख संग्रह	३९३-४२९
मन्दिरों व मूर्तियोंका विवरण	४३०-४५४
नामसूची—	४५५



## प्रधान सम्पादकीय

प्राचीन कालकी मानवीय प्रवृत्तियोंका विधिवत् वर्णन व विश्लेषण ही इतिहास है। ऐसे इतिहासके लिए आधारभूत सामग्री प्राप्त होती है मानव-की निमित्तियोंके भग्नावशेषों अर्थात् गुफाओं, चैत्यों, स्तूपों, समाधियों, गृहों, मन्दिरादि धर्मायतनों व मूर्तियों जैसे स्थापत्यके भग्नावशेषोंसे, चित्रोंमें व साहित्यिक रचनाओंसे। किन्तु इनसे भी अधिक प्रामाणिक और यथावत् वृत्तांत उन लेखोंसे मिलता है जो राजाओं व अन्य धनिकाके दानकी तथा उनके द्वारा निर्माण कराये गये मन्दिरादिकी स्मृति-रक्षणार्थ पाषाणखण्डों व ताम्रपटों आदि पर उत्कीर्ण कराये गये पाये जाते हैं। ऐसे प्राचीनतम लेखोंकी लिपि बहुधा वही ब्राह्मी है जिससे आजकी नागरी लिपि विकसित हुई है, तथापि उसका प्राचीनतम रूप इतना भिन्न था कि उसे पढ़ना बहुत कठिन सिद्ध हुआ। बड़े परिश्रमके पश्चात् उस लिपिकी कुजो हाथ लगी, जिससे लगभग गत अठ्ठाई सहस्र वर्षोंके शिलालेख पढ़े और समझे जा सके। किन्तु चालोस-पचास वर्ष पूर्व सिन्धु घाटीसे ऐसे भी मुद्रालेख प्राप्त हुए हैं, जिन्हें पढ़ने और समझनेका अभी प्रयास ही चल रहा है, कोई सफलता प्राप्त नहीं हो सकी।

जो प्राचीन शिलालेख पढ़े गये और प्रकाशित हुए वे पुरातत्त्व विभागके बहुमूल्य व दुर्लभ ग्रन्थमालाओं व पत्रिकाओंमें समाविष्ट पाये जाते हैं। इनमें जैन धर्म सम्बन्धी शिलालेखोंका वितरण भी यत्र तत्र बिखरा पाया जाता है। इन लेखोंका ऐतिहासिक महत्त्व तब प्रकट हुआ जब सन् १८८९ में मैसूरके पुरातत्त्व विभागकी ओरसे थवणबेगालके १४४ शिलालेखोंका अलगम संग्रह एक विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना सहित प्रकाशित हुआ। सन् १९२२में इसका सशोधित और परिवर्धित संस्करण प्रकाशमें आया

जिसमें शिलालेखोंकी संख्या ५०० हो गयी। इसी बीच सन् १९०८ में फ्रांसीसी विद्वान् गैरीनोकी एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने तब तक प्रकाशित हुए आठ सौ पचास जैन शिलालेखोंका परिचय कराया। इस सब सामग्रीके सम्मुख आनेपर कुछ जैन विद्वानोंकी आँखें खुलीं, और उन्हें अनुभव हुआ कि जब तक इस सामग्रीका उपयोग करते हुए धर्म व साहित्य सम्बन्धी लेख नहीं लिखे जायेंगे तबतक जैनधर्मका प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। स्वभावतः उस समय जो विद्वान् जैन साहित्य और इतिहासके मंशोधनमें तल्लीन थे उन्हें इस आवश्यकताका विशेष रूपसे बोध हुआ। इनमें माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके संस्थापक व प्रधान सम्पादक स्वर्गीय पं० नाथूरामजी प्रेमीकी याद आती है। उन्होंने ही अपनी प्रेरणा-द्वारा जैनशिलालेख संग्रहका प्रथम भाग तैयार कराकर प्रस्तुत ग्रन्थमालाके २८वें पुष्पके रूपमें प्रकाशित किया, जिसमें श्रवण-वेलगोलके उपर्युक्त पाँच सौ शिलालेख नागरी लिपिमें हिन्दी सारांश तथा विस्तृत भूमिका व अनुक्रमणिकाओं सहित जिज्ञासुओं व लेखकोंको अति सुलभ हो गये। इसका तुरन्त ही हमारे साहित्य व इतिहास संशोधन कार्यपर महत्त्वपूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। तद्विषयक लेखोंमें इनके उपयोग द्वारा बड़ी वांछनीय प्रामाणिकता आने लगी जिसके लिए प्रेमीजी-जैसे विद्वान् बहुत आतुर थे। अब उन्हें अन्य शिलालेखों को भी इसी रूपमें सुलभ पानेकी अभिलाषा तीव्र हुई जिसके फलस्वरूप उक्त गैरीनो महोदयकी रिपोर्टके आधार शिलालेख संग्रह भाग २ और ३ में (ग्र० ४५-४६ सन् १९५२, १९५७) आठ सौ पचास लेखोंका पाठ व परिचय हमारे सम्मुख आ गया।

आगेका लेख-संग्रह कार्य बड़ा कठिन प्रतीत हुआ, क्योंकि इसके लिए कोई व्यवस्थित सूचियाँ उपलब्ध नहीं थीं। किन्तु इस कार्यको पूरा कराना हमने अपना विशेष कर्तव्य समझा। सौभाग्यसे डॉक्टर विद्याधर जोहरापुर-करने यह कार्य-भार अपने ऊपर लेकर विशेष प्रयासों द्वारा यह छह सौ

चौवन लेखोंका परिचय करानेवाला चीज सग्रह प्रस्तुत कर दिया। प्रस्तावनामें उन्होंने लेखोंका काल, प्रदेश, भाषा, प्रयोजन, मूलमूल, गण-वश आदि दृष्टियोंमें जो विश्लेषण व वर्गीकरण किया है वह बहुत महत्वपूर्ण है इसके लिए हम उनके बहुत कुछ कृतज्ञ हैं। हमें दुःख है कि पण्डित नाथूरामजी प्रेमी आज हमारे बीच नहीं रहें। किन्तु हमें उम्मीद है कि हमें इस नये लेख सग्रहकी देखकर ।

शिलालेख-सग्रहके इन भागोंमें संकलित सामग्रीका जैन साहित्य और इतिहासके सशोधन कार्यमें विशेष उपयोग हो रहा है, और होगा इसमें सन्देह नहीं। किन्तु इस विषयमें अब तकके अनुभवके आधारसे कुछ सूचनाएँ कर देना हम अपना कर्तव्य समझते हैं—

१ लेखोंका जो मूल पाठ यहाँ प्रस्तुत किया गया है, वह सावधानी पूर्वक तो अवश्य लिया गया था, तथापि उसे अत-प्रमाण होनेका दावा नहीं किया जा सकता। कन्नड़ लेखोंको यहाँ जो देवनागरीमें लिखा गया है उसमें भी लिपिभेदसे अशुद्धियाँ हो जाना सम्भव है। आगे-पीछे विशिष्ट विद्वानों-द्वारा पाठ व अर्थ-सशोधन सम्बन्धी लेख लिखे ही गये होंगे। अतएव विशेष महत्वपूर्ण मौलिक स्थापनाओंके लिए सशोधकोंको मूलखोना का भी अवलोकन कर लेना चाहिए।

२ इधर कुछ कालसे ऐसी प्रवृत्ति दिखाई देती है कि जहाँ दो आचार्योंमें नाम-साम्य दिखाई दिया वहाँ उन्हें एक ही मान लिया गया। किन्तु यह बात भ्रामक है। एक ही नामके अनेक आचार्य विविध कालोंमें भी हुए हैं और मम-सामयिक भा। अतएव उन्हें एक मिद्ध करनेके लिए नाममात्रके अतिरिक्त अन्य प्रमाणोंकी भी खोज करना चाहिए।

३ इन प्रकाशित शिलालेखोंमें यह अपेक्षा नहीं करना चाहिए कि उनमें समस्त प्राचीन आचार्योंका उल्लेख आ ही गया है अतएव इनमें किसी आचार्यके नामका अभाव किसी विशिष्ट अनुमान व तर्कका आधार

नहीं बनाया जा सकता । ये लेख जैन मुनियोंकी पूरी गणनाका लेखा नहीं समझना चाहिए ।

४. कन्नड लेखोका जो सार हिन्दीमें दिया गया है उसीके आधार मात्रसे कोई नयी कल्पनाएँ नहीं करना चाहिए । उसके लिए मूल पाठ और उसके शब्दशः अनुवादका अवश्य अवलोकन करना चाहिए ।

यथार्थतः ये लेख-संग्रह सामान्य जिज्ञासुओंके लिए तो पर्याप्त है । किन्तु विशेष संशोधकोंके लिए तो ये मूल सामग्रीकी ओर दिग्निर्देश मात्र ही करते हैं ।

इस ग्रन्थमालाको अपनी गोदमें लेकर श्री ज्ञान्तिप्रसादजी व श्रीमती रमारानीजीने न केवल समाजके एक अग्रणी हितैषी सेठ माणिकचन्द्रजीकी स्मृतिकी रक्षा की है व ग्रन्थमालाके जन्मदाता पं० नाथूरामजी प्रेमीकी भावनाको सम्मान दिया है किन्तु जैन साहित्यकी रक्षा व जैन इतिहासके नवनिर्माण कार्यमें बड़ी महत्त्वपूर्ण सेवा की है जिसके लिए समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा ।

— ही. ला. जैन

— आ. ने. उपाध्यक्ष

( प्रधान सम्पादक )

## प्राक्कथन

प्रस्तुत सग्रहका प्रथम भाग डा० हीरालालजी जैन द्वारा संपादित होकर सन् १९२८ में प्रकाशित हुआ था । उसमें श्रवणवेलगोल तथा निक्टवर्ती स्थानोंके ५०० लेख संकलित हुए थे । इसका दूसरा तथा तीसरा भाग श्री विजयमूर्ति शास्त्री-द्वारा संकलित हुआ । इन दो भागोंमें फ्रेच विद्वान् डा० गेरिनो द्वारा संपादित पुस्तक 'रिपोर्टर द एपिग्राफी जैन'के आधारमें ८५० लेख दिये हैं । डा० गेरिनोकी पुस्तक पैरिसमें सन् १९०८ में प्रकाशित हुई थी । अतः इन दो भागोंमें सन् १९०८ तक प्रकाशित हुए लेख ही आ सकते हैं । इन ८५० लेखोंमेंमें १४० लेख प्रथम भागमें आ चुके हैं तथा १७५ लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं अतः इनकी सूचना भर दी गयी है — शेष ५३५ लेखोंका पूरा विवरण दिया गया है । इस तरह पहले तीन भागोंमें कुल १०३५ लेखोंका सग्रह हुआ है ।

सन् १९५७ में इस सग्रहके तीसरे भागके प्रकाशित होनेपर श्रीमान् डा० उपाध्येजीने हमें प्रस्तुत चौथे भागके संपादनके लिए प्रेरित किया । तबसे कोई चार वर्ष तक अवकाशके समयका उपयोग कर यह कार्य हमने किया । इसे कुछ विस्तृत रूप देनेके लिए हमने सन् १९६१ की गर्मियोंकी छुट्टियोंमें दो सप्ताह तक उटकमट स्थित प्राचीनलिपिविद्-कार्यालयमें भी अध्ययन किया । इसके फलस्वरूप सन् १९०८ के बाद प्रकाशित हुए कोई ६५४ लेखोंका सग्रह प्रस्तुत भागमें प्रकाशित हो रहा है ।

यद्यपि ये सब लेख पुरातत्त्वविभागके प्रकाशनोमें पहले प्रकाशित हो चुके हैं तथापि साधारण अभ्यासके लिए वे सुलभ नहीं हैं — उनका संपादन अंगरेजीमें हुआ है तथा उनका मूल्य भी बहुत अधिक है । अतः इस सग्रहमें उनका पुनः प्रकाशन उपयोगी होगा

इसमें सन्देह नहीं है ।

यह कहना तो संभव नहीं है कि इन भागोंमें अवतक प्रकाशित सब लेख संगृहीत हो चुके हैं — तथापि अधिकांश लेखोंका संग्रह करनेकी हमने कोशिश की है ।

यह स्पष्ट ही है कि इन प्रकाशित लेखोंके अतिरिक्त अभी मंकड़ों लेख अप्रकाशित भी हैं — विशेषकर मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा उत्तरप्रदेशके मंकड़ों मूर्तियों तथा मन्दिरों आदिके लेखोंका अध्ययन अभी बहुत कम हुआ है । परिणाममें दिये हुए नागपुर मूर्तिलेख संग्रहसे इस कार्यके विस्तारकी कल्पना हो सकती है । हमें आशा है कि इन लेखोंका संग्रह भी प्रस्तुत मालाके अगले भागोंमें प्रकाशित हो सकेगा ।

माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके प्रारम्भसे ही इसका कार्य स्व० नाथू-रामजी प्रेमीने बहुत श्रद्धा तथा उत्साहसे संभाला था । हमें जैन इतिहासके अध्ययनमें उनसे बहुत प्रोत्साहन मिला है । खेद है कि इस पुस्तकके सम्पादनके पूर्ण होनेसे पहले ही उनका स्वर्गवास हो गया । हम उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं ।

प्रस्तुत संग्रहकी प्रेरणाके लिए हम आदरणीय डॉ० उपाध्येजीके भी ऋणी हैं । उटकमंडके प्राचीन लिपिविद् कार्यालयके प्रमुख डॉ० दिनेशचन्द्र सरकारसे वहाँके पुस्तकालयमें अध्ययनकी सुविधा मिली तथा वहाँके अन्य अधिकारी डॉ० गै एवं श्री० रिस्तीसे अच्छा सहयोग मिला एतदर्थ हम उनके ऋणी हैं । उन सब विद्वानोंका ऋण तो स्पष्ट ही है जिन्होंने इन लेखोंका पहले सम्पादन किया था तथा विभिन्न पत्रिकाओंमें उन्हें प्रकाशित किया था ।

अन्तमें कन्नड भाषा अथवा इतिहासके अज्ञानवश जो त्रुटियाँ रही हों उनके लिए हम पाठकोंसे क्षमा चाहते हैं ।

जावरा — दिसम्बर १९६१

— वि० जोहरापुरकर

## संकेत-सूची

(अ) पूर्णतः उपयुक्त पत्रिकाएँ -

ए० इ०	एपिग्राफिया इण्डिका
रि० इ० ए०	एन्युअल रिपोर्ट आन इण्डियन एपिग्राफी
रि० सा० ए०	एन्युअल रिपोर्ट आन साउथ इण्डियन एपिग्राफी
इ० म०	इस्क्रिप्शन्स ऑफ दि मद्रास प्रेसिडेन्सी
इ० पु०	इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ दि पुदुकोट्टै स्टेट
ए० रि० मै०	एन्युअल रिपोर्ट ऑफ दि मैसोर आर्किऑलॉजिकल डिपार्टमेण्ट
रि० आ० म०	एन्युअल रिपोर्ट ऑफ दि आर्किऑलॉजिकल सर्वे आफ इण्डिया

(आ) अंशतः उपयुक्त पत्रिकाएँ -

सा० इ० इ०	साउथ इण्डियन इस्क्रिप्शन्स
इ० ए०	इण्डियन एण्टिक्वेरी
मै० आ० स०	मेमॉयर्स आफ दि आर्किऑलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया
इ० हि० का०	इण्डियन हिस्टॉरिकल काँग्रेस रिपोर्ट
इ० ओ० का०	इण्डियन ओरिएण्टल कॉन्फरन्स-रिपोर्ट



## प्रस्तावना

### १. लेखोंका साधारण परिचय—

जैन शिलालेख संग्रहके प्रस्तुत चौथे भागमें कुल ६५४ लेख संगृहीत हैं । इहे समयके क्रमसे प्रस्तुत किया है । इसमें सन्पूर्व चौथी सदीका १ (क्र० १) सन्पूर्व तीसरी सदीका १ (क्र० २), सन्पूर्व पहली सदीके ११ (क्र० ३ से १३,) सन् पहली सदीका १ (क्र० १४), दूसरी सदीके ४ (क्र० १५ से १८), पाँचवी सदीका १ (क्र० १९), छठी सदीके दो (क्र० २० व २१), सातवीं सदी के २२ (क्र० २२ से ४३) आठवीं सदीके १० (क्र० ४४ से ५३), नौवी सदीके २० (क्र० ५४ से ७३), दसवी सदीके ४२ (क्र० ७४ से ११५), ग्यारहवी सदीके ६७ (क्र० ११६ से १८२), बारहवी सदीके १३४ (क्र० १८३ से ३१६), तेरहवी सदीके ७३ (क्र० ३१७ से ३८९), चौदहवी सदीके ३० (क्र० ३९० से ४१९), पन्द्रहवी सदीके ३५ (क्र० ४२० से ४५४) सोलहवीं सदीके ४७ (क्र० ४५५ से ५०१), सत्रहवी सदीके १५ (क्र० ५०२ से ५१६), अठारहवी सदीके ११ (क्र० ५१७ से ५२७), तथा उनीसवी सदीके ८ (क्र० ५२८ से ५३५) लेख हैं । शेष ११९ लेखोंका समय अनिश्चित है ।

इन ६५४ लेखोंमें राजस्थानके २१, उत्तरप्रदेशके ९, बिहारके ४, बंगालका १, गुजरातके ३, मध्यप्रदेशके १५, उड़ीसाके १६, महाराष्ट्रके ७, आन्ध्रके ४६, मद्रासके ८२, केरलका १ एवं मैसूर प्रदेशके ४४७ लेख हैं ।

भाषाकी दृष्टिसे इन लेखोंका विभाजन इस प्रकार है — प्राकृतके १८, सस्कृतके ८८, हिन्दीके ३, तेलुगुके ८, तमिलके ७७ एवं कन्नड़के ४६० ।

प्रयोजनकी दृष्टिसे ये लेख मुख्यतः चार भागोंमें बाँटे जा सकते हैं—८७ लेखोंमें जिनमन्दिरोंके निर्माण अथवा जीर्णोद्धारका वर्णन है, १२६ लेखोंमें जिनमूर्तियोंकी स्थापनाका वर्णन है, २०८ लेखोंमें मन्दिरों तथा मुनियोंकी गाँव, जमीन, सुवर्ण, करोंकी आय आदिके दानका वर्णन है, तथा १६४ लेखोंमें मुनियो, गृहस्थों तथा महिलाओंके समाधिमरणका उल्लेख है। इसके अतिरिक्त १३ लेखोंमें गुहा-निर्माणका, ४ लेखोंमें (क्र० ४८६, ४८७, ४८९ तथा ५७६) मठोंके आर्थिक व्यवहारोंका, ३ लेखोंमें (क्र० ४२५, ४७१ तथा ४७२) साम्प्रदायिक समझौतोंका एवं एक लेख (क्र० ५०७) में सामाजिक कुसूदिके निवारणका वर्णन है।

लेखोंके इस सूक्ष्म परिचयके बाद हम इनसे प्राप्त ऐतिहासिक तथ्योंका कुछ विस्तारसे अवलोकन करेंगे—पहले जैनसंघके बारेमें तथा बादमें राज-वंशों आदिके विषयमें।

## २. जैनसंघका परिचय—

(अ) यापनीय संघ—प्रस्तुत संग्रहमें यापनीय संघका उल्लेख कोई १७ लेखोंमें हुआ है। इनमें सबसे प्राचीन लेख गंग राजा अविनीतका ताम्रपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है (ले० २०)<sup>१</sup>। इसमें 'यावतिक' संघ-द्वारा अनुष्ठित एक मन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

इस संघके कुमिलि अथवा कुमुदि गणका उल्लेख चार लेखोंमें है<sup>२</sup> (क्र० ७०, १३१, ६११ एवं ६१२)। इनमें पहले लेख (क्र० ७०) में नौवीं सदीमें इस गणके महावीर गुरुके शिष्य अमरमुदल गुरुका वर्णन है। इन्होंने कीरेप्पावकम् ग्रामके उत्तरमें देशवल्लभ जिनालयका निर्माण

१. पहले संग्रहके क्र० ९९, १०० तथा १०५ लेखोंमें ११वीं सदीके उत्तरार्धमें भी यापनीय संघका उल्लेख है।

२. पहले संग्रहमें इस गणका कोई उल्लेख नहीं है।

कराया था। दूसरे लेख ( क्र० १३१ ) में सन् १०४५ में इस गणके कुछ आचार्योंका वर्णन है। इस समय चावुण्ड नामक अधिकारीने भुगुद ग्राममें एक जिनालय बनवाया था। अब दो लेख ( क्र० ६११ तथा ६१२ ) अनिश्चित समयके निषिद्धि लेख हैं। इनमें पहला लेख इन गणके शान-वीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है।

यापनीय सधका दूसरा गण पुन्नागवृक्षमूल गण चार लेखोंमें ज्ञात होता है ( क्र० १३०, २५९, १६८, ६०७ )। पहले लेखमें सन् १०४४ में इस गणके बालचन्द्र आचार्यको पूति नगरके नवनिमित्त जिनालयके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी लेखके उत्तरार्धमें सन् ११४९ में इस गणके रामचन्द्र आचार्यको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस गणका अगला उल्लेख ( क्र० २५९ ) सन् ११६५ का है। इसमें इस गणकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है — मुनिचन्द्र — विजयकीर्ति — कुमारकीर्ति त्रैविद्य — विजयकीर्ति ( द्वितीय )। शिलाहार राजा विजयादित्यके सेनापति बाल्मणने एकसम्बुगे नगरमें एक जिनालय बनवाकर उसके लिए विजयकीर्ति ( द्वितीय ) को कुछ दान दिया था। एक लेखमें ( क्र० १६८ ) वृक्षमूलगणके मुनिचन्द्र त्रैविद्यके गिह्य चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है — यह सन् १०९६ का लेख है। एक अनिश्चित समयके लेख ( क्र० ६०७ ) में भी वृक्षमूलगणके एक मन्दिर कुमुमजिनालयका उल्लेख है। हमारा अनुमान है कि इन दो लेखोंका वृक्षमूलगण पुन्नागवृक्षमूलगणमें भिन्न नहीं होगा।

यापनीय सधके कण्डूर गणका उल्लेख तीन लेखोंमें है ( क्र० २०७, ३६८, ३८६ ) इनमें पहला लेख १०वीं सदीके पूर्वार्धका है तथा इसमें

---

१ पहले संग्रहमें पुन्नागवृक्षमूलगणके दो उल्लेख सन् ८१२ तथा सन् ११०८ के हैं ( क्र० १२४, २५० )।

इस गणके बाहुवली, शुभचन्द्र, मोनिदेव एवं मावनन्दि इन चार आचार्यों का वर्णन है — इनमें परस्पर सम्बन्ध बननाया नहीं है। दूसरे लेखमें १३वीं सदीमें इस गणके एक मन्दिरका उल्लेख है तथा तीसरे लेखमें इसी समयकी एक जिनमूर्तिका उल्लेख है।<sup>१</sup>

इसी संघके कारेयगणका उल्लेख १२वीं सदीके पूर्वार्धके एक लेख (क्र० २०९) में है। मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवनूरि ये इस गणके आचार्य थे।<sup>२</sup>

पाँच लेखोंमें यापनीय संघका उल्लेख किसी गण या गच्छके बिना ही प्राप्त होता है (क्र० १४३, २९८-३००, ३८४)। इनमें पहला लेख सन् १०६० का है तथा इससे जयकीर्ति — नागचन्द्र — कनकशक्ति इस गुरुपरम्पराका पता चलता है। अगले दो लेख १२वीं सदीके हैं तथा इनमें मुनिचन्द्र एवं उनके शिष्य पाल्यकीर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है। अन्तिम लेखमें १३वीं सदीमें त्रैकीर्ति आचार्यका उल्लेख है।

इस तरह प्रस्तुत संग्रहसे यापनीय संघका अस्तित्व छठी सदीसे तेरहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।<sup>३</sup>

(भा) मूलसंघ—प्रस्तुत संग्रहमें मूलसंघके अन्तर्गत सेनगण, देशी गण, मूरस्थगण, बलगारगण (बलात्कार गण) क्राणूरगण तथा निगमा-

१. पहले संग्रहमें इस गणका उल्लेख सन् १८० में हुआ है (क्र० १६०)।

२. पहले संग्रहमें इस गणके दो लेख सन् ८७५ तथा दसवीं सदी-पूर्वार्धके हैं (क्र० १३०, १८२)।

३. पहले संग्रहमें यापनीय संघके तीन और गणोंका उल्लेख है — कनकोपलसम्भूत वृक्षमूल गण, श्रीमूलमूलगण तथा कौटिमटुव गण- (तीसरा भाग-प्रस्तावना पृ० २७-२९)।

न्वय इन छह परम्पराओंके उत्तरेख विस्तारसे मिलते हैं।<sup>१</sup> इनका अव क्रमशः विवरण प्रस्तुत करेंगे।

(त्रा १) सेनगण—इसका प्राचीनतम उल्ग्व मन् ८२१ का है (क्र० ५५)। इस लेखमें इसे 'चतुष्टय मूलमधरा उदयान्वय सनसध' कहा है। इसकी आचार्यपरम्परा मल्लवादी-मुमति पूज्यपाद-अपराजित इस प्रकार थी। लेखके समय गुजरातके राष्ट्रकूट शासक ककराज मुपुर्णवपने अपराजित गुप्तको कुछ दान दिया था।<sup>२</sup>

सेनगणके तीन उपभेद थे—पोगरि अथवा होगरि गच्छ, पुस्तक गच्छ, एवं चन्द्रकवाट अवय। पोगरि गच्छका पहला लेख (क्र० ६१) सन् ८९३ का है तथा उसमें विनयसेनके शिष्य कनकमनका कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस लेखमें इसे मूलमध-सेनान्वयका पागरियगण कहा है। दूसरा लेख (क्र० १३४) सन् १०८७ का है तथा इसमें नागसेन पण्डितको सेनगण-होगरि गच्छके आचार्य कहा है। इहे चालुक्य राजा अक्कादेवीने कुछ दान दिया था।<sup>३</sup>

चन्द्रकवाट अवयका पहला लेख (क्र० १३८) सन् १०५३

१ पहले सग्रहमें उल्लिखित देवगणशा कोई लेख इस सग्रहमें नहीं है। पहले सग्रहमें मूलसधक प्राचीन उल्लेख (क्र० ६०, ९४) पौंचवीं सदीके है। तथा उनमें गण आश्रित उल्लेख नहीं है।

२ पहले सग्रहमें सेनगणका प्राचीनतम उल्ग्व मन् ९०३ का है (क्र० १३७)। इसे ग्यस्वर डॉ० चौधराने रचना की थी कि आदिपुराणकर्ता चिनसन ही सेनगणके प्रसक्त होने (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४४) किन्तु प्रस्तुत लेखप चिनसनक गुरु बीरसेनक समयमें हा सनसधकी परम्पराका अन्तिम प्रमाणित होता है। पारसेनने धरलाटीका रचना सन् ८१६ में पूर्ण की थी।

३ पहले सग्रहमें पोगरिगच्छक चार उल्लेख मन् १०४५ से १२७१ तक के आय हैं। (क्र० १८६, २१०, १८६, ५११)

का है तथा इसमें अजितसेन-कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन इस परम्पराका वर्णन है। लेखके समय मिन्द कुलके सरदार कंचरसेन नयसेनको कुछ दान दिया था। नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन ( द्वितीय ) का उल्लेख सन् १०८१ के लेख ( क्र० १६५ ) में मिलता है। दोण नामक अधिकारी-द्वारा इन्हे कुछ दान दिया गया था। उन लेखोंमें नरेन्द्रसेन तथा नयसेनकी व्याकरण-शास्त्रमें निपुणताके लिए प्रशंसा की गयी है।<sup>१</sup>

एक लेख ( क्र० १४७ ) में चन्द्रिकावाट वंशके शान्तिनन्दि भट्टारकका सन् १०६६ में उल्लेख है। इसमें मूलसंघका उल्लेख है किन्तु सेनगणका उल्लेख नहीं है।

सेनगणके तीसरे उपभेद पुस्तकगच्छका वर्णन १४वीं सदीके एक लेख ( क्र० ४१५ ) में है। इसमें ग्यारह आचार्योंकी परम्परा बतलायी है। इस परम्पराके प्रभाकरसेनके शिष्य लक्ष्मीसेनके समाधिमरणका प्रस्तुत लेखमें वर्णन है। लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनका समाधिमरण सन् १४०५ में हुआ था ( ले० ४२१ )।

प्रस्तुत संग्रहके पाँच लेखोंमें सेनगणका उल्लेख किसी उपभेदके बिना हुआ है ( क्र० ४९२, ४९३, ५०४, ५०७, ६२६ )। पहले दो लेखोंमें सन् १५९७ में सोमसेन भट्टारक-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अगले दो लेखों ( ५०४, ५०७ ) में ममन्तभद्र आचार्यका सन् १६२२ एवं १६३२ में उल्लेख है। सन् १६२२ में उन्होंने एक मन्दिरका जीर्णोद्धार किया था तथा सन् १६३२ में दीवालीका त्योहार मनानेके हेतु कुछ मुधार किया था। अन्तिम लेख अनिश्चित समयका है तथा इसमें प्रसिद्ध वादी भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है।<sup>२</sup>

१. पहले संग्रहमें चन्द्रिकावाट ग्रन्थका कोई वर्णन नहीं है।

२. भावसेन कृत संस्कृत ग्रन्थ विश्वतत्त्वप्रकाश जीवराज ग्रन्थमाला ( गोलपुर ) द्वारा प्रकाशित हो रहा है। इसकी प्रस्तावनामें हमने भावसेनका समय १३वीं सदीका उत्तरार्ध निश्चित किया है।

इस तरह प्रस्तुत सग्रहके १३ लेखोंसे सेनगणका अस्तित्व आठवीं सदीमें सत्रहवीं सदी तक प्रमाणित होता है ।<sup>१</sup>

(आ २) देशीगण—प्रस्तुत सग्रहमें देशीगणके पुस्तकगच्छ, आर्य-सघग्रहकुल, चन्द्रकराचार्याम्नाय, तथा मैणदावय इन चार परम्पराओंका उल्लेख हुआ है ।

पुस्तकगच्छका एक उपभेद पनसोगे ( अथवा हनमोगे ) बलि था । इसका पहला उल्लेख ( क्र० ७४ ) दसवीं सदीके प्रारम्भका है<sup>२</sup> तथा इसमें श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है । इस बलि का दूसरा लेख ( क्र० २७२ ) सन् ११८० के आसपासका है तथा इसमें नयकीर्तिके शिष्य अध्यात्मो बालचन्द्र-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है । इस शाखाके चार लेख और हैं ( क्र० २९२, ३३५, ४१६ तथा ५३८ ) जो बारहवींसे चौदहवीं सदी तकके हैं । इनमें ललितकीर्ति, देवचन्द्र तथा नयकीर्ति आचार्योंका उल्लेख है । अन्तिम लेखमें 'धनशौकबला' इस प्रकार इस शाखाके नामका संस्कृतोक्तिरूप किया गया है ।

पुस्तकगच्छका दूसरा उपभेद इगुलेश्वर बलि था । इसका उल्लेख सात लेखोंमें ( क्र० २९०, ३१०, ३६९, ३७८, ३८२, ६०६, ६४२ ) मिला है । ये सब लेख १२वीं - १३वीं सदीके हैं । तथा इनमें हरि-चन्द्र, श्रुतकीर्ति, भानुकीर्ति, माधनदि, नेमिदेव, चन्द्रकीर्ति तथा जयकीर्ति

१ सेनगणनी पुष्करगच्छ नामक शाखा ( विदमं ) में १५वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थी । इसका विस्तृत वृत्तान्त हमारे ग्रन्थ 'महाराज सम्प्रदाय' में दिया है । पुष्करगच्छ सम्भवतः पोगिरि गच्छका ही संस्कृत रूप है ।

२ यही इस सग्रहमें देशीगणका पहला उल्लेख है । पहले सग्रहमें देशीगणके उल्लेख सन् ८६० ( क्र० १२७ ) से मिले हैं तथा पन-सोगे शाखाके उल्लेख सन् १०८० ( क्र० २२३ ) से प्राप्त हुए हैं ।

इन आचार्यों के उल्लेख मिलते हैं ।<sup>१</sup>

प्रस्तुत संग्रहमें पुस्तकगच्छके उल्लेख बिना किसी उपभेदके भी कई लेखोंमें मिलते हैं । इनमें पहला लेख ( क्र० १६४ ) सन् १०८१ का है तथा इनमें सकलचन्द्र भट्टारकका उल्लेख है । इस प्रकारके अन्य लेख १७ है ( क्र० १७१, १७७-८, १९०, २०३, २३४, २५१, ३१८-९, ३६१-६, ४९०, ५६१ ) । ये लेख १६वीं सदी तकके हैं । इनसे कोई विस्तृत गुरु-परम्पराका पता नहीं चलता<sup>२</sup> !

देगीगणके दूसरे उपभेद आर्यमंथग्रहकुलका उल्लेख एक ही लेख ( क्र० ९४ ) में मिला है । यह लेख दसवीं सदीका है तथा इनमें कुलचन्द्र-के शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख है । विशेष यह है कि यह लेख उड़ीसाके खण्डगिरिपर्वतपर मिला है जब कि देगीगणके अन्य उल्लेख मैसूर प्रदेशके हैं ।<sup>३</sup>

देगी गणका तीसरा उपभेद चन्द्रकराचार्याम्नाय भी एक ही लेखसे ज्ञात होता है ( क्र० २१७ ) तथा यह मध्यप्रदेशमें मिला है । इसमें प्रतिष्ठाचार्य शुभद्र-द्वारा १२वीं सदीके पूर्वार्धमें एक मन्दिरकी प्रतिष्ठाका उल्लेख है ।<sup>४</sup>

देगी गणके चौथे उपभेद मैणदान्वयके शुभचन्द्र आचार्यका एक उल्लेख १३वीं सदीमें मिला है ( क्र० ३७२ ) ।<sup>५</sup>

१. पहले संग्रहमें इंगुलेश्वर बलिके उल्लेख सन् ११८३ ( क्र० ४११ ) से सन् १५४४ ( क्र० ६७३ ) तकके हैं ।

२. पहले संग्रहमें पुस्तक गच्छके उल्लेख सन् ८६० ( क्र० १२७ ) से सन् १८१३ ( क्र० ७५३ ) तक के हैं ।

३, ४ पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका कोई उल्लेख नहीं है ।

५. पहले संग्रहमें इस अन्वयका उल्लेख नहीं है इसमें मिलता जुलता एक उपभेद बाणद बलि है जो पुस्तकगच्छके अन्तर्गत था ( क्र० ४७८ ) इसका उल्लेख सन् १२३२ का है ।



किसी अपभ्रंशके बिना भी देशीगणके कई उल्लेख मिले हैं। इनमें दो लेखोंमें (क्र० ८३, १६९) सन् ९५० तथा १०९६ में गुणचन्द्र और रविचन्द्र आचार्योंका उल्लेख है। इन लेखोंमें देशी गणके साथ सिर्फ कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण है। कोई १८ लेखोंमें भूलमघ - देशीगण इस प्रकार उल्लेख है। इनमें प्राचीनतर लेख (क्र० १९३, २२९, २५६) बरहवी मदीके हैं। कोई ८ लेखोंमें देशीगणके साथ अथ कोई विशेषण नहीं है। ऐसे लेखोंमें प्राचीनतर लेख (क्र० १२६, १३९, १४०) सन् १०३२ तथा १०५४ के हैं और इनमें अष्टोपनासी कनकनदि आचार्योंको कुछ दान देनेका वणन है।

(आ ३) कोण्डकुन्दान्वय—देशी गणके पुस्तक गच्छको प्राय कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण दिया गया है। कुछ लेखोंमें किसी मघ या गणके बिना सिर्फ कोण्डकुन्दान्वयका उल्लेख है। ऐसे लेखोंमें प्राचीनतर लेख (क्र० १८०, २२२) बरहवी बरहवी मदीके हैं। एक प्राचीन लेख (क्र० ५४) में सन् ८०८ में कोण्डकुन्देय अवयके सिमलगेरुह गणके कुमारनदि-एन्नाचाय-वर्धमानगुरु इस परम्पराका उल्लेख है। वर्धमानगुरुका राष्ट्रकूट राजा कम्मराजने एक ग्राम दान दिया था। इस लेखमें कोण्डकुन्देय अन्वय यह शब्द प्रयोग है जो स्पष्ट कोण्डकुन्देयानका सूचक है।

(आ ४) मूर्धन्य गण—प्रस्तुत संग्रहमें इस गणका पहला उल्लेख सन् ९६२ का है (क्र० ८५)। इसमें प्रभाव—कनकेदेव-रविचन्द्र-

१ पहला संग्रहमें कोण्डकुन्दान्वयका प्रथम उल्लेख सन् ७०७ में (क्र० १२२) बिना किसी गणक हुआ है। वहाँ सिमलगेरुह गणका कोई उल्लेख नहीं है। कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण कवचित् द्राविड राज, सेनगण आदिके लिए भी प्रयुक्त हुआ है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४५, ५१)

रविनन्दि-एलाचार्य इस परम्पराका वर्णन है। गंग राजा मारसिंह २ ने एलाचार्यको एक ग्राम अर्पण किया था।<sup>१</sup>

सूरस्थ गणके दो उपभेदोंका पता चला है — कौहूर गच्छ तथा चित्रकूटान्वय।<sup>२</sup> कौहूर गच्छका एक ही लेख है (क्र० ११७) तथा इसमें सन् १००७ में अर्हणन्दि पण्डितका वर्णन है। चित्रकूटान्वयके १० लेख हैं। पहले लेखमें (क्र० १५३) सन् १०७१ में इस अन्वयके श्रीनन्दि पण्डितकी एक शिष्याको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। श्रीनन्दिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी — चन्द्रनन्दि-दामनन्दि-सकलचन्द्र-कनकनन्दि-श्रीनन्दि। श्रीनन्दि तथा उनके गुरुबन्धु भास्करनन्दिके समानविलेख सन् १०७७-७८ के हैं (क्र० १६०)। इस अन्वयका तीसरा लेख (क्र० १५८) सन् १०७४ का है तथा इसमें अर्हणन्दिके शिष्य आर्य पण्डितको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अगले दो लेखोंसे (क्र० २३७-३८) इस अन्वयकी एक परम्पराका पता चलता है जो इस प्रकार थी — वामुपूज्य-हरिणन्दि-नागचन्द्र। हरिणन्दि तथा नागचन्द्रको सन् ११४८ में कुछ दान मिला था। इस अन्वयके अन्य लेख अनिश्चित समयके हैं। इस प्रकार काई १४ लेखोंसे सूरस्थ गणका अस्तित्व दसवीं सदीसे बारहवी सदी तक प्रमाणित होता है।<sup>३</sup>

( आ ५ ) बलगार-( बलात्कार )-गण — इस गणका पहला उल्लेख

१. सूरस्थ गणका प्राचीन लेख पहले संग्रहमें सन् १०५४ का है (क्र० १८५)।
२. पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका वर्णन नहीं है। वहाँ चित्रकूटान्वयका सम्बन्ध बलगार गणमें भी पाया गया है (क्र० २०८)।
३. कुछ लेखोंमें सेनगण और सूरस्थगणको (जिसे कहीं-कहीं शूरस्थ भी कहा है) अभिन्न माना है। इसका विवरण हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' के सेनगण विषयक प्रकरणमें दिया है।

सन् १०७१ का है ( क्र० १५४ ) ।<sup>१</sup> इसमें मूलमध-नन्दिसधका बलगार गण ऐसा हमका नाम है तथा इसके ८ आचार्योंकी परम्परा दी है जो इस प्रकार है - वर्धमान-महावादी विद्यानन्द-उनके गुरुबन्धु ताविकार्क भाणि-क्यनन्दि-गुणकीर्ति विमलचन्द्र-गुणचन्द्र-गण्डविमुक्त-उनके गुरुबन्धु अभय-नन्दि ।<sup>२</sup> अगले लेख ( क्र० १५५ ) में इसी परम्पराके तीन और आचार्यों-के नाम हैं-अभयनन्दि-सकलचन्द्र-गण्डविमुक्त २-त्रिभुवनचन्द्र । इन लेखों-में गुणकीर्ति तथा त्रिभुवनचन्द्रको मिले हुए दानोंका विवरण है । लेख १५७ में सन् १०७४ में पुनः त्रिभुवनचन्द्रका उल्लेख है । इस गणके अगले महत्त्वपूर्ण लेख ( क्र० ३४२, ३७६ ) तेरहवीं सदीके हैं । इनमें शास्त्रमारममुच्चय आदि ग्रन्थोंके कर्ता माधनन्दि आचार्यका वर्णन है । इनकी गुप्तरम्परा में १९ आचार्योंके नाम दिये हैं किन्तु उनका क्रम व्यवस्थित प्रतीत नहीं होता ।

चौदहवीं सदीसे बलान्कारगणके साथ सरस्वतागच्छका उल्लेख मिलता है । इसकी एक परम्पराके आचार्य अमरकीर्ति थे । इनके शिष्य माधनन्दिने सन् १३५५में एक मूर्ति स्थापित कायी ( क्र० ३९३ ) इसी परम्पराके तीन गेव और है । इनमें वर्धमान, धमभूषण तथा वर्धमान २ इन भट्टा-रकोंका उल्लेख है । ये लेख सन् १३९५ तथा १४२४ के हैं ( क्र० ४०३,

१ इस लेखसे बलगार गणकी परम्पराका अस्तित्व सन् ९०० तक जात होता है । अतः डॉ० चौधरीकी यह कल्पना गलत प्रतीत होता है कि यह बलहारि गणका ही रूपान्तर है । बलहारि गणका उल्लेख पहले संग्रहमें सन् १५० क लगभग मिला है ( तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० २६, ३० ) ।

२ इस परम्परामें भाणिक्यनन्दिका नाम उल्लेखनीय है । हमारा अनुमान है कि परीक्षामुखके कर्ता भाणिक्यनन्दि इनमें अभिन्न होंगे ।

४०४, ४३४) ।<sup>१</sup>

बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छकी उत्तर भारतीय शाखाओंके तीन लेख इस संग्रहमें हैं ( क्र० ४४८, ४६०, ४६८ ) ।<sup>१</sup> इनमें सन् १५०० में रत्न-कीर्तिका तथा सन् १५३१ में धर्मचन्द्रका उल्लेख है ।

( आ ६ ) क्राणूर गण — इस गणके उल्लेखोंमें पहला दसवीं सदीका है ( क्र० ९६ ) ।<sup>१</sup> इसमें एक विस्तृत गुरुपरम्पराका वर्णन है किन्तु लेख-के बीच-बीचमें घिस जानेसे इस परम्पराका ठीक ज्ञान नहीं होता । इस लेखमें मुनिचन्द्र आचार्यके एक शिष्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है ।

क्राणूर गणके तीन उपभेदोंके उल्लेख मिले हैं — तिन्त्रिणी गच्छ, मेपपापाण गच्छ तथा पुस्तकगच्छ । तिन्त्रिणी गच्छके ६ लेख हैं ( क्र० २१२, २९१, ३२३, ४७६, ५६५, ६१९ ) । पहले दो लेख बाह्यारवीं सदी-के हैं<sup>१</sup> तथा इनमें मेघचन्द्र तथा पर्वतमुनि इन आचार्योंका वर्णन है । तीसरा लेख सन् १२०७ का है तथा इसमें अनन्तकीर्ति भट्टारकको कुछ दान मिलनेका वर्णन है । अनन्तकीर्तिके पूर्ववर्ती छह आचार्योंके नाम भी इस

१. इस परम्पराका वर्णन पहले संग्रहके क्र० ५७२ तथा ५८५ में भी है ।

२. पहले संग्रहमें ऐसे दो लेख हैं ( क्र० ६१७, ७०२ ) । क्र० ६१७ में इने मदसारद गच्छ पढ़ा गया है, वह 'श्रीमद्विशारद गच्छ'-अर्थात् सरस्वतीगच्छका ही रूपान्तर है । उत्तर भारतमें बलात्कार-गणकी दस शाखाएँ १४वीं सदीमें २०वीं सदी तक विद्यमान थीं । इनका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है ।

३. पहले संग्रहमें क्राणूरगणका प्राचीनतम लेख सन् १०७४ का ( क्र० २०७ ) है ।

४. पहले संग्रहमें तिन्त्रिणीगच्छका पहला लेख सन् १०७५ का ( क्र० २०९ ) है ।

लेखमें दिये हैं। इस गच्छके चौथे लेख ( क्र० ४७६ ) में सन् १५५६ में देवकीर्ति-मुनिचन्द्र-देवचन्द्र यह परम्परा दी है। लेखके समय देवचन्द्रको कुछ दान मिला था।

मेघपापाणगच्छके दो लेख हैं ( क्र० २१४, ६०३ )। पहले लेखमें सन् ११३० में प्रभाचन्द्रके शिष्य कुलचन्द्र आचार्यका वर्णन है। दूसरा लेख इस गच्छकी एक वसदिके बारेमें है।<sup>१</sup>

पुस्तक गच्छका एक लेख ( क्र० २४० ) सन् ११५० का है किन्तु यह बीच-बीचमें घिसा हुआ है अतः इसका तात्पर्य स्पष्ट नहीं है।<sup>२</sup>

बागहवी-तेरहवी सदीके चार लेखोंमें ( क्र० २०२, ३१२, ३२६, ३७३ ) ब्राह्मणगणके वनकचन्द्र, माधवचन्द्र तथा सकलचन्द्र आचार्योंका वर्णन है। इनका गच्छ नाम अज्ञात है।

इस तरह कोई १५ लेखोंसे ब्राह्मणगणका अस्तित्व दसवी सदीसे सोलहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।

(आ ७) निगमान्वय—मूलमध-निगमान्वयका एक लेख ( क्र० ३६० ) सन् १३१० का है। इसमें कृष्णदेव-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।<sup>३</sup>

उपर्युक्त विवरणसे मूलमधमें भेद-प्रभेदोंका अच्छा परिचय मिलता है। कोई १५ लेखोंमें किसी भेदका उल्लेख किये बिना मूलसधका उल्लेख मिलता है। इनमें प्राचीनतर लेख ( क्र० ११२, १४५, २०४ ) दसवी-

१ पहले संग्रहमें मेघपापाणगच्छका पहला उल्लेख सन् १०७९ का है ( क्र० २१६ )

२ पहले संग्रहमें इस गच्छका कोई उल्लेख नहीं है ( देशीगण तथा सेनगणमें भी पुस्तकगच्छ थे उनका वर्णन पहले आ चुका है। )

३ पहले संग्रहमें इस अन्वयका कोई लेख नहीं है।

ग्यारहवीं सदीके है। इन तरह प्रस्तुत संग्रहमें कुल मिलाकर मूलसंघके कोई १५० लेख आये हैं।

(इ) गौड संघ—उस संघका एक लेख (क्र० ८४) मिला है। इनमें सोमदेवसूरि-द्वारा एक जिनालयके निर्माणका उल्लेख है।<sup>१</sup>

(ई) द्राविड संघ—उस संघके नन्दिगण-अरंगल अन्वयका एक लेख ग्यारहवीं सदीका है (क्र० १७५)

इसमें शान्तिमुनि-वादिराज-वर्धमान यह परम्परा दी है। वर्धमानके समाधिमरणका स्मारक उनके गुरुबन्धु कमलदेवने स्थापित किया था। इस अन्वयका अगला लेख सन् ११९२ का है (क्र० २८२) तथा इसमें वामुपूज्यके शिष्य वज्रनन्दिका वर्णन है। इनकी गुरुपरम्परा काफी विस्तार-से दी है किन्तु उसमें आचार्योंका क्रम स्पष्ट नहीं है। चौदहवीं सदीके एक लेखसे (क्र० ३४४) इस अन्वयके श्रीपाल-पद्मप्रभ-धर्मसेन इस परम्पराका पता चलता है।

द्राविड संघके तीन लेखोंमें (क्र० २५२, ३५७, ४०९) अरंगल अन्वयका उल्लेख नहीं है। ये लेख सन् ११५९, १२०५ तथा १४वीं सदीके हैं। अन्तिम दो लेखोंमें क्रमशः गुणसेन तथा लोकाचार्यका नाम ज्ञात होता है। इस तरह प्रस्तुत संग्रहके कोई आठ लेखोंसे इसका अस्तित्व ११वीं सदीसे १४वीं सदी तक प्रमाणित होता है।<sup>२</sup>

१. गौडसंघका पहले संग्रहमें या अन्यत्र साहित्यमें कोई वर्णन नहीं है। सोमदेवसूरिके लिखित यशस्तिलकचम्पू तथा नीतिवाक्यामृत ये ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

२. पहले संग्रहमें द्राविड संघके उल्लेख सन् ९९० (क्र० १६६) से मिले हैं। इन्हें कहीं-कहीं मूलसंघ-द्रविडान्वय और द्राविड संघ-कोण्डकुन्दान्वय कहा है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ३५-४३)

(उ) माथुर सव—इसका उल्लेख सन् ११७० के एक लेखमें (क्र० २६५) है। इस सवके महामुनि गुणभद्र द्वारा इस लेखकी रचना की गयी थी। लेखमें लोलक श्रेष्ठी-द्वारा पाश्वनाथमन्दिरके निर्माणका वर्णन है।<sup>१</sup>

(ऊ) पचस्तूप निकाय—प्रस्तुत संग्रहके एक लेख (क्र० १९) में काशीके पचस्तूप निकायके आचार्य गृहनदिका वर्णन है। इनके शिष्याके लिए बटगोहाली ग्राममें एक विहार था जिसे ब्राह्मण नाथशर्माने सन् ४७९ में कुछ दान दिया था।<sup>२</sup>

(ऋ) जम्बूखण्डगण—इसका उल्लेख छठी-सातवीं सदीके एक लेखमें (क्र० २२) हुआ है। इसके आचार्य आयणन्दिको सेदक राजा इन्द्रगन्दने कुछ दान दिया था।

(ॠ) सिहबूर गण—इसका एक लेख (क्र० ५६) मिला है। इसमें सन् ८६० में सम्राट् अमोघवर्ष-द्वारा इस गणके नागनदि आचार्यको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।<sup>३</sup>

(ल) जैन सवके विषयमें साधारण विचार—अब तक जैन मुनियोंके विभिन्न सवका जो परिचय दिया गया है उससे स्पष्ट है कि इनमें व्यवहार-

१. माथुर सव बादमें वाष्ठासवका एक गच्छ बन गया था। इसका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'मठारक सम्प्रदाय' में दिया है।

२. धवलदीपाके कता वीरसेन आचार्य पचस्तूप अन्वयके ही थे (धवल-प्रशस्ति)। किन्तु उनके प्रशिष्य गुणभद्र उन्हें सेनान्वयका कहते हैं। हो सकता है कि पचस्तूपान्वयकी ही बादमें सेनान्वय नाम प्राप्त हुआ हो। किन्तु सेनान्वय सन् ७८० के लगभग अस्तित्वमें था लुका था यह पहले स्पष्ट कर चुके हैं।

३. जम्बूखण्ड गण तथा सिहबूर गणका वर्णन पहले संग्रहमें नहीं है।

की दृष्टिमें कोई काम भेद नहीं था । उन सभी संघोंके मुनि मठ-मन्दिर बनवाने थे, उनके लिए खेत, घर, दगाने, गाँव आदिका धन ग्रहण करने थे, गजममाओंमें दादविवाद करने थे, प्रसंगातृक राजकार्यमें मदद देते थे तथा मन्त्रमाधना, ज्योतिष और वैद्यकका आश्रय लेकर जैन संघका प्रभाव बढ़ानेकी कोशिश करते थे । ये सब प्रवृत्तियाँ जैन साधुके मूलमूल उद्देश्य-वांतराग भावका भावनाके कदाचित्त अतृकूल है यह प्रश्न विचारणीय है । इन्हें रोकनेका ऐसा कोई व्यवस्थित प्रयत्न दिगम्बर सम्प्रदायमें हुआ ही ऐसा प्रमाण नहीं मिला है ।<sup>१</sup>

यह तो नहीं कहा जा सकता कि दिगम्बर साधुसंघके सभी मुनि इस प्रकारकी प्रवृत्तिप्रधान गतिविधियोंमें ही मग्न रहते थे — साधुसंघका एक वर्ग अवश्य ही प्राचीन शास्त्राक्तमार्गका निःस्पृह भावमें अनुसरण करना रहा होगा । किन्तु लौकिक कार्योंमें इन रहनेके कारण इन वांतराग साधुओंका शिलालेखों आदिमें वर्णन मिलना कठिन है ।

### ३. राजवंशोंका आश्रय—

(अ) उत्तर भारतके राजवंश—ग्रन्थित संग्रहमें जैन संघका सम्मान करनेवाले जिन राजवंशोंका उल्लेख है उनमें कलिंगके राजा ग्यारवेलका वंश प्रथम व प्रमुख है । सन्पूर्व पहला सदीमें इस वंशके तीन राजपुत्रों-द्वारा जैन साधुओंके लिए खण्डगिरि पर्वतपर कई गुहाएँ बनवायीं गयीं । ग्यारवेलको पट्टराजा, महाराज कुदेषथी तथा कुमार वट्ठव ये थे तीन राजपुत्र हैं ( ले० ३-५ ) । यहाँके एक लेख (अ० ५) में नगरके न्यायाधीश

१. श्वेताम्बर सम्प्रदायमें इन प्रवृत्तियोंको रोकनेके कुछ प्रयत्न होते रहे हैं । इस विषयमें पं० नाथूरामजी प्रेमीका लेख 'जैनधर्मा और वनधर्मा' ( जैन साहित्य और इतिहास-द्वितीय संस्करण ) देखने योग्य है ।



मुभूति-द्वारा निर्मित गुहाका भी उल्लेख है ।<sup>१</sup>

पाटलिपुत्रके गुप्त राजाओंके समयका एक लेख (क्र० १९) प्रस्तुत सग्रहमें है । यह सन् ४७९ का है तथा इसमें एक ब्राह्मण-द्वारा वटगोहालीके जैन विहारको कुछ दान मिलनेका वर्णन है ।<sup>२</sup>

हस्तिकुण्डी ( राजस्थान ) के राष्ट्रकूट वंशके राजा विदग्धराजका उल्लेख सन् ९४० के एक लेख (क्र० ८१) में मिला है । आचार्य वासुदेवके उपदेशसे इस राजाने ऋषभदेवका एक मन्दिर बनवाया था । इस मन्दिरके लिए राजाने अपनी सुवर्णमुला कराकर दान दिया था तथा नगरके व्यापारियोंमें कुछ करोंकी आय भी अर्पित की थी । यह कार्य सन् ९१७ में हुआ था । विदग्धराजके पुत्र मम्मटने सन् ९४० में उक्त दानको पुनः सम्मति दी । मम्मटके पुत्र धवलकी वीरताका विस्तारसे वर्णन इस लेखमें मिलता है । धवलके पुत्र बालप्रसादके समय सन् ९९७ में उक्त मन्दिरका जीर्णोद्धार हुआ था ।

उड़ीसाके राजा उद्योतकेसरीके समय — दसवीं सदीके दो लेख (क्र० ९३-९४) इस सग्रहमें हैं । इनमें खण्डगिरिके पुरातन मन्दिरोंके जीर्णोद्धारका वर्णन है ।

- १ पहले सग्रहमें खारवेलके जीवनके विषयमें एक विस्तृत लेख (क्र० २) आ चुका है । उसके पहले मौर्य सम्राट् अशोकके लेखमें (क्र० १) निर्ग्रन्थों ( जैनो ) की देग्गमालका भी उल्लेख हुआ है ।
- २ पहले सग्रहमें गुप्तकालके तीन लेख ( क्र० ९१-९३ ) आये हैं । उसके पहले शक और कुषाण राजाओंके कई लेख आ हैं ।
- ३ पहले सग्रहमें इस राजवंशका उल्लेख नहीं है । वहाँ इसके पहले गुर्जर प्रतिहार राजा मोजका एक लेख (क्र० १२८) है । इसी समयके कच्छपघात तथा चन्देल वंशोंके भी कुछ लेख पहले सग्रह-में आये हैं (क्र० १५३, २२८ आदि) ।

मालवाके परमार वंशके राजा भोजके समयका - ग्यारहवीं सदी (पूर्वाध्व) का एक लेख (क्र० १३५) मिला है।<sup>१</sup> इसमें नामन्त यशोवर्मा-द्वारा कलकलेश्वर तीर्थके मुनिसुव्रतमन्दिरके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी वंशके उदयादित्यके समयका एक मन्दिर ऊनमें है (क्र० १७४)।

गुजरातके चोलुक्य राजा भीमदेव (प्रथम) का एक लेख मिला है (क्र० १४६)। इसने सन् १०६६ में वायड अविष्टानको वसतिके लिए कुछ भूमि दान दी थी। इसी वंशके राजा भीमदेव (द्वितीय) के समय - बारहवीं सदीके अन्तका एक लेख (क्र० २८७) है। इसमें बेरावलके चन्द्रप्रभमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अणहिल्लपुरमें राजा-द्वारा नन्दि-नंघके आचार्य श्रीकीर्तिके मम्मानका भी इसमें उल्लेख है।<sup>२</sup>

बुन्देलखण्डके कलचुरि वंशका एक लेख मिला है (क्र० २१७)। इसमें राजा गयाकर्ण तथा उसके नामन्त गोलहणदेवके समय - बारहवीं सदीके पूर्वार्धमें एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।<sup>३</sup>

राजस्थानके चाहमान वंशके पाँच लेख हैं (क्र० २१८, २३१-३२, २३५, २६५)।<sup>४</sup> पहले चार लेख नडोलके राजा रायपालके समयके सन् ११३३ से ११४६ तकके हैं। इनमें पहले लेखमें रानी मीनलदेवी-द्वारा यतियोंके लिए दानका तथा बादके लेखोंमें ठाकुर राजदेव-द्वारा मन्दिर

१. इस वंशका उल्लेख पहले संग्रहमें नहीं है। परमार वंशकी वाँम-वाढा व चन्द्रावती शाखाके लेख वहाँ आये हैं। (क्र० ३०५, ४०१, ४७२)।

२. चालुक्य कुमारपालका एक लेख (क्र० ३३२) पहले संग्रहमें है।

३. इस वंशके कोई लेख पहले संग्रहमें नहीं है।

४. पहले संग्रहमें नडोलके चाहमान वंशके दो (क्र० ३५७-५८) तथा जालोरके चाहमान वंशका एक (क्र० ५०७) लेख है।

और यतियोंके लिए कुछ दानका वर्णन है। पाँचवा लेख शाकम्भरीके चाहमान राजा सोमेश्वरके समयका सन् ११७० का है। इसमें विजोलिया-के पार्श्वनाथ मन्दिरके लिए पृथ्वीराज २ तथा सोमेश्वर-द्वारा दो गाँव दान दिये जानेका वर्णन है। इस राजवशके कोई ३० पोटियोंका वर्णन इस लेखमें मिलता है।<sup>१</sup>

मुगल साम्राज्यके तीन लेख इस संग्रहमें हैं (क्र० ४८१, ५०६, ५१२)। पहला लेख अकबरके समयका सन् १५७१ का है। इसमें महेश्वरके आदिनाथ मन्दिरका जीर्णोद्धार मण्डलोई सुजानराय-द्वारा होने-का वर्णन है। शाहजहाँके राज्यका एक लेख (क्र० ५०६) सन् १६२८ का है। इसमें भी एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १६६२ का — औरंगजेबके समयका है। इसमें राजा जयसिंहके मंत्री मोहनदास द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।<sup>२</sup>

### (आ) दक्षिण भारतके राजवश—

(आ १) गंग राजवश—इस वशके ११ लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं। इनमें पहला (क्र० २०) राजा अविनीतना एक दानपत्र है जो छठी सदीक पूर्वार्धका है। इसमें यावनिक मधके जिनमन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका वर्णन है। दूसरा लेख (क्र० २४) सातवी सदीके अन्तका शिवकुमार पृथ्वीकोण्डिवृद्धराजके समयका है। इसमें राजा तथा कुछ अन्य सज्जनों-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। तीसरे लेखमें (क्र० ८८) आठवी सदीके अन्तमें राजा श्रीपुष्प तथा नवी सदीक प्रारम्भमें राजा शिवमारके समय कुछ अधिकारिया द्वारा एक जिनमन्दिरके

१ पहले संग्रहमें इसके बाद गुजरातमें वाघेल और म्हालियारके तोमर वशके कुछ लेख हैं।

२ पहले संग्रहमें मुगल राज्यके कई लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं। एक लेख (क्र० ७०२) त्रिगम्बर सम्प्रदायका भी है।

लिए दो गाँवोंके दानका वर्णन है। चौथे लेखमें (क्र० ६३) राजा दुग्गमार-द्वारा नवी सदीमें एक मन्दिरको भूमिदान देनेका उल्लेख है। इसके बाद दसवीं सदीके प्रारम्भके एक लेखमें (क्र० ७६) एरेय राजाके समय एक जैन आचार्यके समाधिमरणका वर्णन है। सन् ९५० के एक लेख (क्र० ८३) में राजा वूतुगकी रानी पद्मव्वरसि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ दानका वर्णन है। सन् ९६२ में राजा मारसिह २ ने अपनी माता-द्वारा निर्मित मन्दिरके लिए एलाचार्यको एक गाँव दान दिया था (क्र० ८५) इसी वर्षमें इस राजाने मुंजार्य नामक जैन ब्राह्मणको भी एक गाँव दान दिया था (क्र० ८६)। सन् ९७१ में इस राजाके समय शंखजिनालयको कुछ दान मिलनेका वर्णन एक लेखमें (क्र० ८८) में है। दसवीं सदीके अन्तके एक लेख (क्र० ९६) में राजा रक्कसगंग तथा नन्नियगंगके समय कुछ दानका वर्णन है। एक लेख (क्र० १५४) में वूतुग राजा तथा रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख है। इनकी स्मृतिमें गंगकन्दर्प नामक जिनमन्दिर अण्णिगेरे नगरमें बनवाया गया था। एक अन्य लेखमें (क्र० २०७) पुनः रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख हुआ है। इस तरह गंगवंशके राज्यकालमें जैनसंघकी स्थिति सदा ही प्रभावशाली रही थी।<sup>१</sup>

(आ २) कदम्ब वंश — इस वंशके स्वतन्त्र राज्यकालका एक लेख (क्र० २१) इस संग्रहमें है जो छठी सदीके राजा रविवर्मके समयका है। इस राजाने एक सिद्धायतनके लिए कुछ भूमि दान दी थी।<sup>२</sup> राष्ट्रकूट तथा चालुक्य साम्राज्यमें कदम्बवंशके कई सामन्त प्रादेशिक शासक थे। ऐसे सामन्तोंके कोई १५ लेख मिले हैं। सन् ८९० के एक

१. पहले संग्रहमें गंग वंशके कई लेख हैं, जिनमें सबसे प्राचीन लेख (क्र० ९०) पाँचवीं सदीके उत्तरार्धका है।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख हैं जो पाँचवीं व छठी सदीके हैं (क्र० ९६-१०५)।

लेखमें कदम्ब महासामन्त अलियमरम-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका वर्णन है ( क्र० ६० ) । सन् १०४५ के एक लेखमें काकण प्रदेशमें महामण्ड-  
लेश्वर चट्टम्पदेवके शासनका उल्लेख है ( क्र० १३१ ) तथा एक मन्दिर-  
को कुछ दान मिलनेका वर्णन है । सन् १०८१ के दो लेखोंमें कदम्ब राजा  
गोवल्देव तथा 'कादम्बचक्रवर्ति' वीरमके समय एक वसतिको दान मिलने-  
का तथा एक महिलाके समाधिमरणका वर्णन है ( क्र० १६३-४ ) ।  
सन् १०९६ में कदम्ब कुलके सामन्त एरेयगकी रानी असवब्बरसिने एक  
मन्दिर बनवाया था ( क्र० १६९ ) । सन् ११२३ और ११३० के दो  
दानलेखोंमें ( क्र० २०२ व २१४ ) कदम्ब सामन्त तैलपदेव तथा मयूर-  
वमके शासनका उल्लेख है । तैलपदेवके शासनका उल्लेख सन् ११४८ के  
दो दानलेखोंमें भी है ( क्र० २३६-२३८ ) । सन् १२०७ के एक दानलेखमें  
कदम्ब सामन्त ब्रह्माका तथा सन् १२१८ में जयकेशीका उल्लेख मिला है  
( क्र० ३२३ व ३२५ ) । सन् १५०४ में कदम्ब लक्ष्मणपरसने चारुकीर्ति  
पण्डिताचार्यके शिष्यको घर्माधिकार प्रदान किये थे ( क्र० ४५५ ) । एक  
अनिश्चित समयके लेख ( क्र० ६१४ ) में त्रिभुवनवीर नामक कदम्ब  
शासककी रानीके समाधिमरणका उल्लेख है ।

( भा ३ ) राष्ट्रकूट वंश — प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशके देवज महाराज-  
के सामन्त सेन्द्रक इन्द्रणन्दका एक लेख है ( क्र० २२ ) जो छठी-मातवी  
सदीका है । इन्द्रणन्दने आर्यनदि आचार्यको एक ग्राम दान दिया था ।  
राष्ट्रकूट वंशकी प्रधान शाखाएँ कोई १३ लेख इस संग्रहमें हैं । इनमें पहला

१ देवज राजाका राष्ट्रकूटोंके प्रमुख वंशमें क्या सम्बन्ध था यह  
स्पष्ट नहीं है । सेन्द्रक वंशके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं — ( क्र०  
१०४, १०६, १०९ ) ।

२ पहले संग्रहमें इस शाखाके दस लेख हैं जिनमें पहला ( क्र० १०४ )  
सन् ८०२ का है ।

लेख सन् ८०८ का है ( क्र० ५४ ) । इसमें सम्राट् गोविन्दराज जगत्सुंगके राज्यकालमें उनके ज्येष्ठ वन्धु रणावलोक कम्भराज-द्वारा वर्धमानगुरुको एक गाँवके दानका वर्णन है । दूसरे लेख ( क्र० ५५ ) में सन् ८२१ में सम्राट् अमोघवर्षका तथा उनके चाचाके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्षका उल्लेख है । कर्कराजने अपराजितगुरुको एक खेत दान दिया था । सन् ८६० में सम्राट् अमोघवर्षने नागनन्दि आचार्यको भूमिदान दिया था ( क्र० ५६ ) । सन् ८६४ में इसी सम्राट्के राज्यकालमें एक समाधिलेख लिखा गया था ( क्र० ५७ ) । नवी-दसवीं सदीके एक लेखमें नेमिचन्द्र आचार्यका वर्णन है जिसमें उन्हें राष्ट्रकूट वंशके लिए आनन्ददायी कहा है ( क्र० ७२ ) । सन् ९०२ के एक मन्दिरलेखमें सम्राट् कृष्ण २ अकालवर्षके शासनका तथा सन् ९२५ के एक मन्दिरलेखमें सम्राट् गोविन्द ४ नित्यवर्षके शासनका उल्लेख है ( क्र० ७७, ७८ ) । कृष्ण २ की रानी चन्द्रियवर्ने सन् ९३२ में एक जिनमन्दिर निर्माण कराया था ( क्र० ७९ ) । सन् ९५० के एक लेखमें कृष्ण ३ अकालवर्षके शासनका तथा इसके बादके एक लेखमें सम्राट् खोट्टिगका वर्णन है ( क्र० ८३, ८७ ) । इन्द्र ४ नित्यवर्षने एक जिनमूर्तिका पादपीठ बनवाया था ( क्र० ८९ ) । सम्राट् इन्द्र ३ के सेनापति श्रीविजयकी प्रशंसामें एक स्तम्भलेख मिला है ( क्र० ९७ ) ।

बारहवीं सदीके एक लेख ( क्र० २१७ ) में कलचुरि राजा गयाकर्णके अधीन राष्ट्रकूट कुलके सामन्त गोल्लहणदेवका उल्लेख है ।

( भा ४ ) पाण्ड्य वंश — इस वंशके पाँच लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं । इनमें पहला ( क्र० २३ ) सातवीं सदीके राजा वरगुण विक्रमादित्यके समयका दानलेख है । आठवीं सदीके एक लेखमें ( क्र० ५० ) सुन्दर पाण्ड्य राजा-द्वारा एक जिनमन्दिरकी जमीनोको करमुक्त करनेका वर्णन है । सन् ८७० में राजा वरगुण २ के समय दो मूर्तियोंका जीर्णोद्धार हुआ

था ( क्र० ५८ ) । सित्तनवासलके गुहामन्दिरका जीर्णोद्धार नवी सदीमें राजा अवनिपशेखर श्रीवल्लभके समयमें हुआ था ( क्र० ६२ ) । इस वंशका अन्तिम लेख ( क्र० ३५६ ) सन् १२९० का एक दानलेख है तथा इसमें मारवर्मन् विक्रम पाण्ड्यके राज्यका उल्लेख है ।

( आ ५ ) पल्लववंश—इसका उल्लेख तीन लेखोंमें है । इनमें पहला लेख ( क्र० २० ) छठी सदीके पूर्वार्धका है । इसमें पल्लव राजा सिहविष्णु-को माता-द्वारा निमित्त एक जिनमन्दिरका वर्णन है । दूसरे लेख ( क्र० ३९ ) में मातवी-आठवी सदीके शासक पल्लवादित्य वादिराजुलको अर्हत् भट्टारक-का पादानुध्यात कहा है । तीसरा लेख ( क्र० ५३७ ) अनिश्चित समयका है तथा इसमें पेर्हजिगदेव नामक पल्लव राजाके शासनका उल्लेख है ।<sup>१</sup>

( आ ६ ) चालुक्य वंश—बदामीके चालुक्य राजाओंके दो लेख इस संग्रहमें हैं ।<sup>२</sup> पहला ( क्र० ४६ ) सन् ७०८ का है तथा इसमें राजा विजयादित्यकी रानी कुकुमदेवी-द्वारा निमित्त जिनमन्दिरका उल्लेख है । दूसरे लेख ( क्र० ४६ ) में राजा कौर्तिवर्मा २के राज्यमें सन् ७५१ में एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है ।

वेंगीके चालुक्य राजाओंके तीन लेख इस संग्रहमें हैं ।<sup>३</sup> पहला ( क्र० ४४ ) लेख राजा जयसिंहवल्लभ २ के राज्यका—आठवी सदीके प्रारम्भका है तथा इसमें रट्टगुडि वंशके सामन्त कल्याणवसन्त-द्वारा अर्हत् भट्टारकको कुछ दानका वर्णन है । दूसरा लेख ( क्र० ४९ ) आठवी सदीके उत्तरार्धमें राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके समयका है तथा इसमें सामन्त गोकथ्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए दानका वर्णन है । तीसरे ( क्र० १०० )

१ इस वंशका एक लेख पहले संग्रहमें है ( क्र० ११५ ) ।

२ इस शाखाके ६ लेख पहले संग्रहमें हैं ( क्र० १०६-८ तथा १११, ११३, ११४ ) ।

३ इस शाखाके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं ( क्र० १४३-१४४, २१० ) ।

में दसवीं सदीके उत्तरार्धमें अम्मराज २-द्वारा विजयवाटकके जिनमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है ।

कल्याणीके चालुक्य राजाओंके लेख संख्यामें सर्वाधिक-५८ है । लेखोंकी अधिकताके कारण हम यहाँ उन लेखोंका ही उल्लेख करेंगे जिनमें इस वंशके सम्राटोंका जैन धर्मकार्यसे साक्षात् सम्बन्ध आया था — जिनमें सिर्फ़ उनके राज्यकालका उल्लेख है उनका निर्देश सूचीमें होगा ही । इस वंशके लेखोंमें पहला ( क्र० ११७ ) सन् १००७ का है तथा इसमें सामन्त नागदेवकी पत्नी-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है । यह लेख सम्राट् सत्याश्रय आहवमल्लके समयका है । सन् १०२७ के एक लेखमें ( क्र० १२४ ) सम्राट् जयसिंह २ की कन्या सोमलदेवी-द्वारा एक मन्दिरको कुछ दान मिला था ऐसा वर्णन है । सन् १०३२ के एक लेखमें सम्राट् जगदेकमल्ल-द्वारा एक मन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है ( क्र० १२६ ) । इस मन्दिरका नाम ही जगदेकमल्ल जिनालय था । जगदेकमल्लकी बहन अवकादेवीने सन् १०४७ में गोणदवेडंगि जिनालयको कुछ दान दिया था ( क्र० १३४ ) । सन् १०५५ के एक लेखमें आचार्य इन्द्रकीर्तिको त्रैलोक्यमल्लकी सभाका आभूषण कहा है । ( क्र० १४१ ) । इस वंशका अन्तिम लेख ( क्र० २७४ ) सन् ११८५ का है तथा इसमें सोमेश्वर ४ के राज्यकालमें एक मन्दिरको कुछ दानका वर्णन है ।<sup>१</sup>

( आ ७ ) चोल वंश—इस वंशका उल्लेख कोई २५ लेखोंमें है ।<sup>२</sup> इनमें पहला ( क्र० ८२ ) सन् ९४५ का है तथा इसमें राजा परान्तक १ के समय एक वृषके निर्माणका वर्णन है । सन् ९९९ के एक लेखमें

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला ( क्र० १६६ ) सन् ९२० के आनपासका है ।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख ( क्र० १६७, १७१, १७४ ) हैं ।



(क्र० ९२) राजराज १ के समय कुछ जैन आचार्योंका उल्लेख है। दसवीं सदीके उत्तरार्धके एक दानलेखमें (क्र० ९८) गण्डरादित्य मुम्मूटि चोल राजाका उल्लेख है। सन् १००९ के एक लेखमें (क्र० ११९) राजराज १ को आज्ञाका वर्णन है जो ब्राह्मणा तथा जैनोको नियमित रूपसे कर देनेके लिए दी गयी थी। दो दानलेखोंमें (क्र० १२१, १२९) ग्यारहवीं सदी-पूर्वार्धमें राजेन्द्र १ चोलके शासनका उल्लेख है। सन् १०६८ के दो दानलेख राजेन्द्र २ के शासनकालके हैं (क्र० १५०-५१)। कुलोत्तुग १ के शासनके पाँच लेख हैं (क्र० १६७, १७३, १९४, १९५, १९८)। जो सन् १०८६ से १११८ तकके दानलेख हैं। विक्रमचोलके शासनके दो दानलेख सन् ११३१ तथा ११३४ के हैं (क्र० २१५, २१९) कुलोत्तुग २ के राज्यकालके तीन लेख हैं जिनमें एक सन् ११३७ का है (क्र० २२३, २२४, २२६)। राजराज २ के शासनके तीन लेख सन् ११५६-५७ के हैं। (क्र० २४८-२५०)। कुलोत्तुग ३ के समयके दो लेख हैं (क्र० ३२४, ३८०) इनमें पहला सन् १२१६ का तथा दूसरा अनिश्चित समयका है। इस दूसरे लेखके अनुसार कुलोत्तुग राजाने नल्लूर नामक गाव एक देवमंदिरको अर्पण किया था।

इस तरह हम देखते हैं कि चोल राजाओंके प्रायः सब लेख राजपुरुषा-से मायात् सम्बन्ध नहीं रखते।

युद्धके दिनोंमें चोल सेना-द्वारा जिनमंदिरोंका विध्वंस होनेका वर्णन सन् १०७१-७२ के एक लेखमें (क्र० १५४) हुआ है।

(आ ८) होयसल वंश—इस वंशके कोई ३० लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं।<sup>१</sup> इनमें सबसे पहला लेख (क्र० १४५) सन् १०६२ का है तथा

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० २००) सन् १०६२ का ही है।

इसमें राजा विनयादित्य-द्वारा अभयचन्द्र पण्डितको दान दिये जानेका वर्णन है। सन् १०६९ के एक लेखमें विनयादित्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है। ग्रामीण लोग गरीबीके कारण यह कार्य नहीं कर सके थे अतः राजाने सहायता देकर यह मन्दिर बनवाया था ( क्र० १५२ ) ग्यारहवीं सदी-अन्तिम चरणके एक लेखमें ( क्र० १७५ ) वर्धमान आचार्यको होयसल राज्यके कार्यकर्ता यह विशेषण दिया है। राजा वल्लाल १ के सेनापति मरियानेने वारहवीं सदीके प्रारम्भमें एक मूर्ति स्थापित की थी ( क्र० १८३ )। वारहवीं सदी — प्रथम चरणके दो लेखोंमें राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी तथा उसके बन्धु दुर्दमल्ल-द्वारा जिन-मन्दिरोंको दान देनेका वर्णन है ( क्र० १८८-८९ )। इस समयके चार लेखोंमें ( क्र० २००, २०१, २१२, २१३ ) विष्णुवर्धनके चार सेनापतियों—गंगराज, उसका पुत्र वोप्प, पुणिसमय्य तथा मरियानेके धर्मकार्योंका — मन्दिर निर्माण, दान आदिका वर्णन है। राजा नरसिंह १ ने सन् ११५९में एक मन्दिरको कुछ दान दिया था ( क्र० २५२ ) तथा उसके सेनापति भरतिमय्य एवं माचियणने सन् ११४५ तथा ११५३ में इसी प्रकारके दान दिये थे ( क्र० २३३, २४६ )। सन् ११७६ तथा ११९२ के लेखोंमें ( क्र० २७१, २८२ ) राजा वीरवल्लाल २ द्वारा जिनमन्दिरोंको दान देनेका वर्णन है तथा सन् ११७३ एवं ११९० के लेखोंमें इसी राजाके अधीन अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानोंका उल्लेख है ( क्र० २६८, २८१ )। इसी राजाके समयके तीन दानलेख और हैं ( क्र० २८५, २८६, ३२३ ) जो सन् ११९९ से १२०७ तक के हैं तथा दो समाधिलेख हैं ( क्र० ३२०-३२२ )। राजा नरसिंह ३ ने सन् १२६५में एक जिनमन्दिरको दान दिया था ( क्र० ३४२ ) तथा उसके अधीन अधिकारियोंने सन् १२५७, १२७१ तथा १२८५ में ऐसे ही धर्मकार्य किये थे ( क्र० ३३५, ३४५, ३५१ )। एक लेखमें राजा रामनाथ-द्वारा पार्श्वनाथ मन्दिरको दान देनेका वर्णन है ( क्र० ३६० ) तथा एक अन्य लेखमें राजा वीरवल्लाल ३ के समय सन्

१३१९में कुछ स्थानीय अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानका उल्लेख मिलता है ( क्र० ३९१ ) ।

( आ ९ ) कलचुर्य वंश—प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशका उल्लेख सात लेखोंमें है ।<sup>१</sup> इनमें पहला लेख सन् ११५९ का है तथा इसमें किसी सेना-पति-द्वारा एक जैन आचार्यको दान मिलनेका वर्णन है ( क्र० २५१ ) । यह लेख राजा विज्जलके समयका है । इस राजाका उल्लेख चार अन्य लेखोंमें है ( क्र० २५६, २६०-२६२ ) । ये लेख सन् ११६१ से ११६८ तक के हैं तथा इनमें स्थानीय अधिकारियों-द्वारा जैन आचार्योंको मिले हुए दानोंका वर्णन है । इस वंशके अन्तिम दो लेख राजा सोविदेवके राज्यके सन् ११७३ तथा ११७५ के हैं ( क्र० २६७, २७० ) तथा इनमें भी स्थानीय व्यक्तियोंके दानोंका उल्लेख है ।

( आ १० ) यादव वंश—देवगिरिके यादवोंका उल्लेख प्रस्तुत संग्रह-के १५ लेखोंमें है ।<sup>२</sup> इनमें पहला लेख ( क्र० ३२६ ) राजा सिंहणके समय सन् १२३० में लिखा गया था तथा एक मन्दिरके लिए कुछ दानका इसमें वर्णन है । इस राजाके समयके तीन अन्य लेखोंमें ( क्र० ३२८, ३२९, ३३० ) तीन महाप्रधानों — प्रभाकरदेव, मल्ल तथा बीचिराज-द्वारा जिन-मन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है । ये लेख सन् १२४५ तथा १२४७ के हैं । राजा बन्हरदेवके राज्यके चार लेख हैं ( क्र० ३३४, ३३६, ३३७, ३३९ ) । ये लेख सन् १२५७ से १२६२ तकके हैं इनमें तीन दानलेख हैं तथा एक समाधिलेख है । राजा महादेवके समयके तीन लेख हैं ( क्र० ३४०, ३४१, ३४४ ), ये सन् १२६५ तथा १२६९ के हैं तथा तीनों सभाधिमरणके स्मारक हैं । राजा रामचन्द्रके समयके चार लेख हैं ( क्र० ३५२, ३५४, ३५५, ३५९ ), ये सन्

१ पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं ( क्र० ४०८, ४३५, ४३६ ) ।

२ पहले संग्रहमें इस वंशके ९ लेख हैं, जिनमें पहला ( क्र० ३१७ ) सन् ११४२ का है ।

१२८५ से १२९७ तक के है। पहले लेखमें सर्वाधिकारी मायदेव-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है, दूसरा एक समाधिलेख है, तीसरेमें एक मन्दिरके लिए दानोंका वर्णन है तथा चौथेमें महामण्डलेश्वर तिकमदेव-के मन्त्रीके पुत्र-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है।

( आ ११ ) विजयनगरके राजवंश—विजयनगर राज्यके कोई २० लेख प्रस्तुत संग्रहमें है।<sup>१</sup> इनमें पहला ( क्र० ३९३ ) सन् १३५५ का है तथा हरिहर राजाके समय एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। बुक्क राजाके समयके दो लेख हैं ( क्र० ३९४, ३९६ ), ये सन् १३५७ तथा १३७६ के हैं। पहला लेख एक जिनमन्दिरके अवशेषोंमें है तथा सेनापति वैचयका इसमें उल्लेख है। दूसरा एक समाधिलेख है। राजा हरिहर २ के सेनापति इरुगने एक जिनमन्दिर बनवाया था ( क्र० ४०३ )। तथा इस राजाके अधीन गोवाके शासक माधवके सेनापति नेमणने पार्श्वनाथ-मन्दिरको सन् १३९५ में कुछ दान दिया था ( क्र० ४०२ )। सन् १३९५ के ही एक लेखमें वैचय दण्डनायकके पुत्र इम्मडि बुक्कमन्त्रीश्वर-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है ( क्र० ४०४ )। राजा बुक्क २ के समयके दो लेख हैं ( क्र० ४०६, ४१५ ) इनमें एक शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका स्मारक है तथा दूसरेमें लक्ष्मीसेन भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है। राजा देवरायके समयके दो लेख हैं ( क्र० ४२५, ४३४ )—पहला सन् १४१२ का है तथा दो मन्दिरोंकी सीमाओंके बारेमें एक नमस्तीतेका इसमें वर्णन है। दूसरा सन् १४२४ का है तथा इसमें राजा-द्वारा नेमिनाथ-मन्दिरके लिए वरांग ग्रामके दानका वर्णन है। राजा मल्लिकार्जुनके समय सन् १४५० में एक मन्दिरको मिले हुए दानोंका वर्णन एक लेखमें है ( क्र० ४४० )। कृष्णदेव महारायके समयके एक लेखमें ( क्र० ४५६ )

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला सन् १३५३ का है ( क्र० ४५८ )।

मन्दिरोंकी भूमियाँकी करमुक्त करनेका वर्णन है, यह लेख सन् १५०९ का है। वराण ग्रामकी मन्दिरकी ज़मानको खेतीयोग्य बनानेका वर्णन सन् १५१५ क एक लेखमें है (क्र० ४५८)। राजा जच्युतदेवने सन् १५३० में एक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए कुछ कराकी आय दान दी थी (क्र० ४६७)। राजा सदाशिवके समय रामराजने सन् १५४५ में एक जिनमन्दिरका कुछ भूमि दान दी थी (क्र० ४७३)। इसी राजाके समयका एक दानलेख सन् १५५६ का है (क्र० ४७६)। राजा रामदेवके समय सन् १६१९ में एक जैन विद्वानका कुछ दान दिया गया था (क्र० ५०३)। इस राज्यका अंतिम लेख सन् १७५७ का है (क्र० ५२०) तथा इसमें सदाशिव रायके अधीन शासक अरसप्पोडेय-द्वारा चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

(आ १२) दक्षिण भारतक छोटे राजवंश—अब हम उन राजवंशोंक उल्लेखोंका विवरण देंगे जिन्होंने राष्ट्रकूट, चालुक्य, होयसल या पादव राज्योंमें सामन्तोंके रूपमें महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया था। ऐसे वंशोंमें नोलम्बवंश प्रथम है जिसके चार लेख मिले हैं (क्र० ५९, ६१, १२३, १३९)।

इनमें पहले दो लेख राजा महेन्द्रके समयके हैं। एकमें राजा द्वारा सन् ८७८ में एक जिनमन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है तथा दूसरेमें सन् ८९३ में आचार्य कनकसेनके लिए कुछ दानका उल्लेख है। नोलम्ब घट्टेयस्कारने एक जिनमन्दिरको सन् १०२४ में भूमिदान दिया था (क्र० १२३)। नोलम्ब ब्रह्माविराजके समय सन् १०५४ में अष्टोपनामी मुनिको कुछ दान मिले थे (क्र० १३९)।

हम्मचके सान्तर वंशके चार लेख मिले हैं (क्र० १३७, २५८, ४२२-

१ पहले स ग्रहमें नोलम्बवाहिके कई उल्लेख हैं किन्तु नोलम्ब राजाओंका कोई लेख नहीं है।

४६१)।<sup>१</sup> इनमें पहला लेख सन् १०५३ का है तथा इसमें राजा वीरमानन्द-द्वारा उसके जैन भ्राता नकुलरसको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। दूसरे लेखमें राजा नैजदेवक जैन मेधाति गोपिकी मृगुके दान राजा-द्वारा उसके कुटुम्बियोंको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। यह लेख सन् ११६२ का है। तीसरे लेखमें राजा पान्दवमूल-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। यह लेख सन् १४१० का है। चौथा लेख सन् १५२२ का है तथा इसमें इम्मडि भैरवरस राजा-द्वारा वरांगके मेदिनाथमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है।

सिन्द कुलके सामन्तोंके चार उल्लेख मिले हैं (क्र० १३८, १६६, २६१, २६४)।<sup>२</sup> इनमें पहला सन् १०५३ का है तथा इसमें सिन्द कंचरस-द्वारा नथमेत आचार्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है। दूसरा लेख सन् १०८५ का है तथा यह सिन्द बर्मदेवरसके समयका दानलेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६७ में सिन्द होलरस-द्वारा एक वसदिको दान दिये जानेका वर्णन है। अन्तिम लेखमें सन् ११७० में सिन्द चावुण्डरस-द्वारा जैन बालाको भूमिदान मिलनेका वर्णन है।

नट्ट कुलके उल्लेख छह लेखोंमें हैं (क्र० १७६, १८६, २५२, ३१७, ३१८, ३१९)।<sup>३</sup> इनमें पहला लेख ११वीं शतीका राजा कार्तवीर्य २ के समयका है। इसका विवरण अज्ञ है। दूसरा लेख सन् ११०८ का है तथा इसमें राजा लक्ष्मदेव-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है। तीसरे लेखमें सन् ११७५ में राजा कार्तवीर्य ३-द्वारा एकमन्दिरके जिनमन्दिरके

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कटे लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १४६) सन् ६५० के आसपासका है।
२. पहले संग्रहमें सिन्द राजाओंके लेख नहीं हैं।
३. पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १३०) सन् ८०५ का है।

दर्शनका वर्णन है। अन्तिम तीन लेख कान्तवीर्य ८ के राज्यके सन् १२०१ तथा १२०८ के हैं। इनमें राजा द्वारा जिनमन्दिरोके लिए दानोंका वर्णन है।

गिलाहार वंशके चार लेख मिले हैं (क्र० १९२, २२१, २२२, २५९)।<sup>१</sup> इनमें पहला सन् १११५ का है तथा इसमें राजा गण्डरादित्य-द्वारा उनके जैन मामत भोलम्बको दो गांवोंके दानका वर्णन है। अगले दो लेखोंमें गण्डरादित्यके जैन सामत निम्बका वर्णन है। इसने सन् ११३५ में एक जिनमन्दिरका निर्माण कराया था। अन्तिम लेखमें गण्डरादित्यके जैन सेनापति जितण तथा विजयादित्यके सेनापति कालणका उल्लेख है। कालणने सन् ११६५ में एक मन्दिर बनवाया था।

काकतीय वंशका एक लेख सन् १११७ का मिला है (क्र० १९७)।<sup>२</sup> इसमें राजा प्रोलके मन्त्री वेंतकी पत्नी-द्वारा अमकोण्डमें पद्मावती देवीका मन्दिर बनवानेका वर्णन है।

गुप्त वंशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यने सन् ११६२ में पार्श्वनाथ-मन्दिरके लिए कुछ दान दिया था (क्र० २५७)।<sup>३</sup>

कागाव वंशके शासक वीरकोगावने सन् १११५ के दानपत्र सत्यवाक्यजिनालय नामक मन्दिर बनवाया था (क्र० १९३)।<sup>४</sup>

मैसूरके राजा चामराजकी रानी देवीगम्भणिने मैसूरके शान्तिनाथ-मन्दिरमें दीपस्तम्भ तथा कलश दान दिये थे (क्र ५० ८-५२५)। इनका

१ पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० २५०, ३२०, ३३४)।

२ ३ पहले संग्रहमें इन दो वंशोंका उल्लेख नहीं है।

४ पहले संग्रहमें इस वंशके छह लेख हैं जिनमें पहला सन् १०२८ का है (क्र० १८६)।

समय १८वीं सदीका अन्तिम चरण है ।<sup>१</sup>

(इ) राजाश्रयके विषयमें साधारण विचार — उपर्युक्त विवरणसे यह स्पष्ट होता है कि जैन मंघको प्रायः सभी राजवंशोंके समय-विशेषकर दक्षिण भारतीय राजवंशोंके समय-अपने धर्मकार्योंमें अच्छी सहायता मिली है । इस सम्बन्धमें एक बातका ध्यान रखना चाहिए कि इनमें-से अधिकांश राजाओंका कुलधर्म जैनधर्म नहीं था — वे विष्णु, शिव, सूर्य या लक्ष्मीके उपासक थे ।<sup>२</sup> तथापि उनकी प्रजामें जैन आचार्योंका अच्छा प्रभाव रहा होगा अतः जैन मंघके विषयमें उनकी नीति सहानुभूतिपूर्ण रही है ।

४ जैन संघकी दुरवस्था — बारहवीं सदीसे दक्षिण भारतमें वीरशैव तथा श्रीवैष्णव सम्प्रदायोंका प्रभाव बढ़ता गया तथा इनके आक्रामक रुख-का परिणाम जैन आचार्यों तथा मठ-मन्दिरोंको सहना पड़ा । इसके प्रत्यक्ष उल्लेख पहले संग्रहके दो लेखोंमें है ।<sup>३</sup> इस संग्रहके कई लेखोंसे अप्रत्यक्ष रूपसे यही बात स्पष्ट होती है — ये लेख विष्णुमन्दिरों तथा शिवमन्दिरोंमें नगे पाये गये हैं । स्पष्ट है कि जैन मन्दिरोंके ध्वंसावशेषोंसे ही ये पत्थर

१. पहले संग्रहमें मैसूरके राजाश्रयोंके कई लेख हैं ।

२. जिन्हें हम 'जैन' राजा कह सकते हैं ऐसे राजाश्रयोंकी संख्या सीमित ही है — कलिंगके ग्यारहवें, नवीं सदीसे दसवीं सदी तकके गंग राजा, दसवीं-ग्यारवीं सदीके होयसल राजा तथा कुछ सामन्त ये जैन राजा कहे जा सकते हैं । आठवीं सदी तकके गंग राजा तथा बारहवीं सदीके तथा बादके होयसल राजा भी विष्णु, शिव आदिके उपासक थे ।

३. यहाँ उल्लिखित राजवंशोंके राजनीतिक प्रभाव, राज्यविस्तार आदिके बारेमें तीसरे भागकी प्रस्तावनामें डॉ० चौधरीने विस्तारसे लिखा है अतः वे बातें यहाँ दुहरायी नहीं हैं ।

४. लेख क्र० ४३५-३६ ।



विष्णु या शिवके मंदिरोंमें ले जाये गये हैं । इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण कोन्हापुरका महालक्ष्मी मन्दिर है जहाँके कुछ स्तम्भोंपर पाश्वनाथमन्दिर सम्बन्धी लेख मौजूद हैं ( क्र० २२२ ) । आन्ध्र प्रदेशमें अमकोण्ड पहाड़ी-पर देवी पद्मावतीका मन्दिर था जो बादमें पूरी तरह ब्राह्मणोंके अधिकारमें चला गया ( क्र० १९७ ) । इस तरहके अनेक उदाहरण भी हैं ।

५ समारोप—जैनधर्म, साहित्य तथा समाजके इतिहासके लिए शिलालेखोंका महत्त्व सर्वमाय है । अबतक इस सग्रहके लेखोंमें प्राप्त तथ्याका जो विवरण दिया है उससे यह बात अतिस्पष्ट होगी । इस ऐतिहासिक जानकारीका उपयोग कर जैन साहित्य तथा कथाओंकी प्रामाणिकता परखना आवश्यक है । साहित्यिक तथा शिलालेखीय दोनों साधनों के समन्वित उपयोगसे ही तथ्यपूर्ण इतिहासका निर्माण सम्भव है ।

इस सग्रहके अन्तमें तीन परिशिष्ट दिये हैं । पहले परिशिष्टमें इस सग्रहकी तैयारीके समय जो श्वेताम्बर लेख हमारे अवलोकनमें आये उनकी सूचा दी है । दूसरे परिशिष्टमें उन जनेतर लेखोंकी सन्निप्त जानकारी दी है जिनमें जैन व्यक्तियोंमें सबद्ध कुछ उल्लेख हैं । तीसरे परिशिष्टमें नागपुरके समस्त मूर्तिलेखोंका सग्रह है । यह सग्रह आजसे कोई २५ वर्ष पहले श्रीमान् शान्ति कुमारजी ठवलीने तैयार किया था जो कई कारणोंसे अबतक प्रकाशित नहीं हो सका । इस पुस्तकमें प्रस्तुत सग्रहकी अतभूत करनेकी अनुमतिके लिए हम श्री ठवलीजीके आभारी हैं । हमें आशा है कि इन तीन परिशिष्टोंमें प्रस्तुत सग्रह अम्यामकोंके लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा ।

# जैन शिलालेख संग्रह

[ मूल लेख तथा सारांश ]

# मूल लेख तथा सारांश

१

वारली ( जि० अजमेर ) ( राजस्थान म्युजियम )

वारलीसे एक मील दूर मिलोत माताके मंदिरमें ।

प्राकृत, ग्राह्यी—सन्पूर्व ४थी सदी

१ वीराय भगव ( ते )

२ चनुरासिति व ( से )

३ ये सा ( लि ) मालिनि

४ २ नि ( वि ) ठ माझिमिके

[ इस लेखमें भगवान् वीरका निर्देश है जिससे प्रतीत होता है कि यह किसी जैन मन्दिरका लेख होगा । इसकी लिपि सम्राट् अशोकके लेखोंकी लिपिसे प्राचीन है । इसमें अनुमान होता है कि इसमें जो ८४वें वर्षका निर्देश है वह महावीरके निर्वाणके बादका ८४वां वर्ष होगा । इसकी अन्तिम पंक्तिमें माध्यमिका नगरीका उल्लेख है । लेख टूटा है अतः इसका उद्देश्य ज्ञात नहीं होता । ]

[ इ० ए० ५८ ( १९२९ ) पृ० २२९ ]

२

मालकोण्ड ( नेलोर, आंध्र )

प्राकृत-ग्राह्यी, सन्पूर्व ३री सदी

[ यह लेख स्थानीय पहाड़ीकी एक गुहाके अग्रभागमें है । यह गुहा अस्वाहि कुलवे नन्दसेठिके पुत्र विरिसेठिके अपित को ऐसा लेखमें कहा है ।

लिपि सन्पूर्व ३री सदीकी है। ये गुहाएँ धर्मणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थीं। ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५३१ पृ० ५९ ]

## ३

खण्डगिरि ( ओरिसा )— ( मंचपुरी गुहा—ऊपरका भाग )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ अरहंतपत्तादाय कालिंगा ( नं ) ( सम ) नानं लेणं कारितं  
राजिनो लालाक ( स )

२ हथिसाहस-पपोतस धु ( तु ) ना कलिंगच ( कवत्तिनो सिरिखा )-  
रवेलस

३ अगमहिसि ( ना ) कारि ( तं )

[ अरहंतोंकी कृपासे कलिंग प्रदेशके धर्मणोंके लिए यह गुहा कलिंग-चक्रवर्ती खारवेलकी महारानीने बनवायी। यह हस्तिसाहसके प्रपौत्र लालाककी कन्या थी ]

[ ए० इ० १३ पृ० १५९ ]

## ४

खण्डगिरि—( मंचपुरी गुहा—नीचेका भाग )

प्राकृत—ब्राह्मी सन्पूर्व पहली सदी

१ खरस महाराजस कलिंगाधिपतिनो महा ( मेघ ) वाह ( नस )  
कुदेपसिरिनो लेण

[ कलिंगके अधिपति महाराज खर महामेघवाहन कुदेपश्रीने यह गुहा बनवायी। ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६० ]

५

खण्डगिरि—( भचपुरी गुहा—नीचेका भाग )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

कुमारो बहुखय लेण

[ यह गुहा कुमार बहुखने बनवायो । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६१ ]

६

खण्डगिरि ( सर्पगुहा )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

चूलकम्मस कोठाजेया च

[ चूलकम्म ( शुद्धकर्म अथवा चूडाकर्म ) का कक्ष । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६२ ]

७

खण्डगिरि ( सर्पगुहा )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ कमम हलसि—

२ णय च पमादो

[ कर्म तथा हलन्विण ( सल्लक्षण ) का बनवाया प्रासाद । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६२ ]

८

खण्डगिरि ( हरिदाम गुहा )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

[ यह लेख सर्पगुहाके पहले लेखके समान ही है । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६२ ]

६

खण्डगिरि ( वाघ गुहा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ नगर अखदंस

२ सभूतिनो लेणं

[ नगरके न्यायाधीश सुभूतिकी गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६३ ]

१०

खण्डगिरि ( जम्बेश्वर गुहा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

महामदास चारियाय नाकियस लेणं

[ महामदकी पत्नी नाकियाकी गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६३ ]

११

खण्डगिरि ( छोटा हाथीगुंफा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

अगिख....स लेणं

[ अगिख....की गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६४ ]

१२

खण्डगिरि ( तत्त्वगुहा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

पादमुलिकस कुसुमास लेणं फि....

[ पदमूलिकके कुसुमकी गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६४ ]

१३

खण्डगिरि ( अनन्तगुहा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहला सदी

दाहद समणल लेण

[ दोहदके श्रमणोकी गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६४ ]

१४

खण्डगिरि ( तत्त्वगुहा )

ब्राह्मी, पहली सदी

१ घ

२ ण त थ द ध न

३ ण त थ द ध न श प स

४ ण त थ द ध न प फ व श प स ह

५ त थ द ध न प फ व श प स ह

६ थ

[ यह वर्णमाला चित्रित की गयी है जो सम्भवत किसी नवदीक्षित साधुका कार्य है । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६५ ]

१५

मथुरा ( उत्तर प्रदेश )

प्राकृत-ब्राह्मी, वर्ष ८४ ( दूसरी सदी )

१ ओं सिद्ध स ८० ४ व ३ दि २० ५ एतस्मि पूर्य दमित्रस्य  
धितु ओख-

२ रिक्काये कुटुबिणिये दत्ताये दान वर्धमानप्रतिमा प्रतिथपिता

३ गणतो कोट्टियतो....सत्यसेनस्य....धरवृधिस्य नि....

[ वर्ष ८४ मे वर्षा ऋतुके तीसरे महीनेके २५वें दिन दमित्रकी पुत्री तथा ओखरिककी पत्नी दत्ता ( दत्ता ) ने यह मूर्ति स्थापित की । कोट्टिय गणके....सत्यसेन....धरवृद्धि । ] [ यदि लेखका वर्ष शककालका हो तो वह सन् १६२ होगा । ]

[ ए० इ० १९ पृ० ६७ ]

१६

मथुरा

प्राकृत-ब्राह्मी, पहली-२ री सदी ( खण्डित जैनमूर्तिके पादपीठपर )  
( क्षा ) खातो वाच ( कस्य ) आर्य ऋ ( पि ) दासस्य निर्वर्तना....  
रकस्य भट्टिदामस्य....

[ ....शाखाके वाचक आर्य ऋपिदासने यह बनवायी ।....रक भट्टिदामकी....]

[ रि० आ० स० १९११-१२ पृ० १७ ]

१७-१८

मथुरा

प्राकृत-ब्राह्मी, २री सदी

[ यह लेख २री सदीकी लिपिमें है । अरहतके प्रणामसे इसका प्रारम्भ होता है तथा लाघकके पुत्रका इसमें उल्लेख है । एक अन्य पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें वर्धमानको प्रणाम किया है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२८-२९ पृ० ७७ ]

१६

पहाड़पुर ताम्रपत्र ( जि० राजशाही, बंगाल )

गुप्त वर्ष १५५ = सन् ४७९ संस्कृत

अगला भाग



- १ स्वस्ति पुण्ड्र ( वधं ) नादायुक्तका आर्यनगरश्रेष्ठिपुरोगाञ्चाधिष्ठा  
नाधिकरण दक्षिणाशकवीधेयनागिरद्व-
- २ माण्डलिकपलाशाट्टपार्थिक - वटगोहालीजम्बूदेवप्रावेश्यपृष्ठिमपो-  
त्तक गोपाटपुञ्जक-मूलनागिरद्वप्रावेश्य-
- ३ नित्वगोहालीषु ब्राह्मणोत्तरान् महत्तरादिकुटुम्बिन कुशलमनुव-  
र्ण्यानुबोधयन्ति । विज्ञापयत्यस्मान् ब्राह्मणनाथ
- ४ शर्मा एतद्भार्या रामी च युष्माकमिहाधिष्ठितानाधिकरणे द्विदो-  
नारिक्यकुल्यवापेन शश्वत्कालोपभोग्याक्षयनीवीसमुदयवाद्या-
- ५ प्रतिकरपिलक्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तदहंधानेनैव क्रमेणावयो  
सकाशाद् दीनारत्रयमुपसगृह्यावयो स्वपुण्याप्या-
- ६ यनाय वटगोहाल्यामवास्यान् काशिक पञ्चस्तूपनिकायिकनिर्ग्रन्थ  
श्रमणाचार्य गृहनन्दि-शिष्यप्रशिष्याधिष्ठितविहारे
- ७ भगवतामहंता गन्धधूपसुमनोदीपाद्यन्तलवटकनिमित्त च  
अ ( त ) एव वटगोहालीतो वास्तुद्रोणवापमध्यधं ज-
- ८ जम्बूदेवप्रावेश्य पृष्ठिमपोत्तकैत् क्षेत्र द्रोणवापचतुष्टय गोपाटपुजाद्  
द्रोणवापचतुष्टय मूलनागिरद्व-
- ९ प्रावेद्यानित्वगोहालीत अर्धत्रिकद्रोणवापानित्येवमध्यधं क्षेत्र-  
कुल्यवापमक्षयनीया दानुमि ( त्यत्र ) यत प्रथम-
- १० पुस्तपालदिवाकरनदि पुस्तपालघृतिविष्णु - विरोचनरामदास हरि-  
दास-शशिनन्दिषु प्रथमनु मन्वधारण-
- ११ यावद्वृत्तमस्त्यस्मदधिष्ठितानाधिकरणे द्विदोनारिक्यकुल्यवापेन  
शश्वत्कालोपभोग्याक्षयनीवासमु ( दयवा ) ह्याप्रतिकर-
- १२ ( तिल ) क्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तद् यद् युष्मान् ब्राह्मणनाथ-  
शर्मा एतद्भार्या रामी च पलाशाट्टपार्थिकवटगोहालीस्थ

## पिछला भाग

- १३ .....कपञ्चस्तूपनिकायिकाचार्यनिर्ग्रन्थ-गुह्यनन्दि- शिष्यप्रशिष्या-  
धिष्ठितसद्विहारे अहंतां गन्ध ( धूपा ) द्युपयोगाय
- १४ ( तलवा ) टकनिमित्तं च तत्रैव वटगोहाल्यां वास्तुद्रोणवाप-  
मध्यर्धं क्षेत्रं जन्वूदेवप्रावेश्यपृष्ठिनपोत्तके द्रोणवापचतुष्टयं
- १५ गोपाटपुञ्जाद् द्रोणवापचतुष्टयं मूलनागिरट्प्रावेश्यनित्वगोहालीतो  
द्रोणवापद्वयमाढवा ( पट्ट ) याधिकमित्येवम-
- १६ मध्यर्धं क्षेत्रकुल्यवापं प्रार्थयतेत्र न काश्चिद् विरोधः गुणस्तु यत्  
परमभट्टारकपादानामर्थोपचयां धर्मपट्मागाप्याय-
- १७ न च भवति तदेवं क्रियतामिन्यनेनावधारणाक्रमेणात्माद् ब्राह्म-  
णनाथशर्मत एतद्माचारामिचाश्च दीनारत्र-
- १८ यमायांकृत्यैताभ्यां विज्ञापितवक्रमोपयांगायोपरिनिर्दिष्टग्रामगो-  
हालीकेषु तलवाटकवास्तुना सह क्षेत्रं
- १९ कुल्यवाप अर्धधोक्षयनीवीधर्मेण दत्तः कु १ द्रो ४ तद् द्युप्तामिः  
स्वकर्मणाविरोधिस्थाने पट्कनडैरप-
- २० विच्छेद्य दातव्याक्षयनीवीधर्मेण च शश्वदाचन्द्रार्कतारककालमनु-  
पालयितव्य इति सं १०० ( + ) ५० ( + ) ९
- २१ माव दि ७ उक्तं च भगवता व्यासेन । स्वदत्तां परदत्तां वा यो  
हरेत वसुन्धरां ।
- २२ स विष्टायां कृमिर्भूत्वा पितृभिः सह पच्यते ॥ पष्टिवर्षसह-  
स्राणि स्वर्गे वसति भूमिदः ।
- २३ आक्षेपता चानुमन्ता च तान्येव नरके वसेत् ॥ राजभिर्वहुभिर्दत्ता  
दीयते च पुनः पुनः । यस्य यस्य
- २४ यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ पूर्वदत्तां द्विजातिभ्यो  
यत्नाद् रक्ष युधिष्ठिर । नर्ही महिमतां श्रेष्ठ

२५ दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥ विन्ध्याटवीयनम्भ, मु शुष्ककोटर-  
वासिन । कृष्णाहिनी हि जायन्ते देवदाय हरन्ति ये ॥

[ यह ताम्रपत्र गुप्तवर्ष १५९ के माघ मासके ७वें दिन लिखा गया था । ब्राह्मण नाथशर्मा तथा उसकी पत्नी रामीने पुण्ड्रवर्धनके राजकोषमें तीन दीनार देकर डेढ़ कुल्यवाप जमीन प्राप्त की । इसमें ४ द्रोणवाप जमीन पृष्ठिमपोत्तक गांवमें, ४ द्रो० गोपाटपुञ्जक गांवमें, २½ द्रो० नित्व-गोहालीमें और १½ द्रो० वटगोहालीमें थी । काशीके पञ्चस्तूपनिकायके निर्ग्रन्थ धर्मणाके आचार्य गुहनदिके शिष्य-प्रशिष्योंका एक विहार घट-गोहालीमें था । वहाँ भगवान् अर्हत्की पूजाके लिए गन्ध, धूप, फूल, दीप आदिकी व्यवस्थाके लिए यह जमीन नाथशर्मा तथा रामीने दान दी । इस ताम्रपत्रमें परममहाराज पदसे किसी सम्राट्का उल्लेख किया है । ये सम्भवतः गुप्तवर्षीय सम्राट् बुधगुप्त थे । पहाड़पुरके समीपका गोआलभिट्टा गांव ही सम्भवतः प्राचीन वटगोहाली है । यहाँके एक बड़े मन्दिरके उत्खननमें कई जैन, बौद्ध तथा ब्राह्मण अवशेष मिले हैं । ]

[ ए० ३० २० पृ० ५९ ]

२०

होसकोटे ( मैसूर )

६वीं सदा पूर्वार्ध सस्कृत

पहला पत्र

१ स्वस्ति जित भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह्न-  
वेयकुलामल्लयो-

२ माध्वमामनमास्करस्य स्वभुजजवजयज्जनितभुजनजनपदस्य  
दारुणारिगण-

३ विदारणरणोपलब्धत्रणविभूषणभूपितस्य काण्वायनसगोत्रस्य श्री-

४ मत्कौंगाणवर्मधर्ममहाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागतगुणयुक्तस्य

५. विद्याविहितविनयस्य सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्य-  
प्रयोजनस्य

द्वितीयपत्र : पहला भाग

६. विद्वत्कविकांचननिकषोपलभूतस्य विशेषतोप्यनवशेषस्य नीति-  
शास्त्रस्य चकृत्प्र-  
७. योक्तृकुशलस्य सुविभक्तभक्तभृत्यजनस्य दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेतुः  
श्रीमन्माधववर्म-  
८. हाधिराजस्य पुत्रस्य पैतृपितामहगुणयुक्तस्य अनेकचतुर्दन्त-  
युद्धावाप्त-  
९. चतुरुदधिसलिलास्त्रादितयशसः समदद्विरदतुरगारोहणातिशयो-  
त्पन्नतेजसो धनुर-  
१०. भियोगजनितसम्पादितसम्पद्विशेषस्य श्रीमद्भरिवर्ममहाधिराजस्य  
पुत्रस्य

द्वितीय पत्र : पिछला भाग

११. गुरुगोब्राह्मणपूजकस्य नारायणचरणानुध्यातस्य श्रीमद्विष्णु-  
गोपमहाधि-  
१२. राजस्य पुत्रस्य त्र्यम्बकचरणाभोरुहरजःपवित्रीकृतोत्तमांगस्य  
व्यायामोद्वृत्तपीन-  
१३. कठिनभुजद्वयस्य स्वभुजबलपराक्रमक्रयक्रांतराज्यस्य चिरप्रनष्ट-  
ब्रह्मदे-  
१४. यवहुसहस्रविसर्गाग्रयणकारिणः क्षुत्क्षामोष्टपिशिताशनप्रोतिकर-  
निशितधा-  
१५. रासेः कलियुगमलपंकावसन्नधर्मवृषोद्धरणनित्यसन्नद्धस्य श्रीमाधव-  
महाधिराज-

तृतीय पत्र : अगला भाग

- १६ स्य पुत्रेण जननीदेवतापर्यंकनरुसमधिगतराज्येन निजप्रभाव-  
खडित-
- १७ रिपुनृपतिमडलेनाखडलविलविविभविक्रमेण करितुरगवरारो  
हणसौष्ट-
- १८ व्रजनितगुणविशेषेण स्वदानकुसुममजरीसुरमितसमतद्गित-  
रामिग-
- १९ तदुधमधुकरममुदयन वरागनापागशरविक्षेपलक्षणेन प्रजापरिरक्ष-
- २० णैकदीक्षाक्षपितकल्मषेणापरिणतवयसापि परिणतमतिसत्त्व-  
सम्पदा परम-

तृतीय पत्र पिछला भाग

- २१ धार्मिकेण श्रीमता कौण्डिन्यधिराजेनात्मनः प्रवर्धमानविजयैश्वर्ये  
द्वादशे सवरस-
- २२ रे कान्तिके मासे शुक्लपक्षे तिथौ पौर्णमास्या शासनाधिकृतस्य  
सफलमन्त्रतन्त्रातर्ग-
- २३ तस्य विविधागमजलप्रक्षालितविशुद्धबुद्धे सिंहविष्णुपरलवाधि-  
राजस्य
- २४ जनन्याः मर्तुकुलकीर्तिजनन्यार्थं चात्मनश्च धर्मप्रवर्धनार्थं च  
प्रतिष्ठापिताय अर्हद्दे-
- २५ वतायतनाय यावनिकसघानुष्ठिताय कोरिकुन्दमागे पुल्लिङ्ग-  
नाम ग्रामे

चतुर्थ पत्र अगला भाग

- २६ महातिटाकस्थापस्तात् मूलाभ्याशे श्रमणकंदारसहितसप्तकण्डुका-  
वापमात्र
- २७ क्षेत्र मध्यमागे पञ्चकण्डुकावापमात्र क्षेत्र इक्षुनिष्पादनक्षममे-
- २८ कन्तोदक्षेत्र ग्रास दक्षिणेन कण्डुकावापमात्र पत्र उत्तरेण च द्वा-

- २९ दशकण्डुकावापमात्रमारण्यक्षेत्रं च देवतायतनसंश्लिष्टमेकं वेदम च  
 ३० एतत् सर्वं सर्वपरिहारपरिगृहीतं पानीयपातपुरस्सरं दत्तं योस्य  
 चतुर्थपत्र : पिछला भाग  
 ३१ लोभात् प्रमादाद् वापि हर्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति  
 अपि चास्मिन्न-  
 ३२ र्थे मनुगीता( नू ) श्लोकानुदाहरन्ति ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो  
 हरेत् वसुन्धराम्  
 ३३-३८ ( नित्यके शापात्मक श्लोक )  
 ३६ कुवलालत्वष्टकारस्य इदम्पटुवस्य पुत्रेण परेरन्नामलिखिताम्पट्टिका ॥  
 शिवमस्तु

[ यह ताम्रपत्र गंगवंशीय राजा माधव ( द्वितीय ) के पुत्र कोंगण्य-  
 धिराज ( अविनीत ) द्वारा राज्यवर्ष १२ के कार्तिक शु० १५ को दिया  
 गया था । इसमें यावनिक संघ-द्वारा अनुष्ठित एक अर्हद्देवतायतन ( जिन-  
 मन्दिर ) के लिए पुल्लिङ्गर ग्रामकी कुछ भूमि और एक घर दान दिये जाने-  
 का उल्लेख है । यह मन्दिर पल्लव राजा सिंहविष्णुकी माता-द्वारा निर्माण  
 किया गया था । ताम्रपत्रको इदम्पटुवके पुत्र परेरने लिखा था । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० ८० ]

२१

कोरमंग ( मैसूर )

६वीं सदी, संस्कृत

प्रथम पत्र

- १ सूर्याशुद्युतिपरिपिक्तपंकजानां शोभां यद् वहति सदास्य पाद-  
 पद्मम् ।

सिद्धम्

- २ द्रवणा मकुटमणिप्रभामिषिक्त सर्वज्ञः स जयति सर्व-  
लोकनाथ (॥११)
- ३ कीर्त्या दिगन्तरव्यापी रघुरामीश्वराधिप (१) काकुत्स्थतुल्य काकु-  
स्थो यवीयास्तस्य भूपति (॥२)
- ४ तस्याभूत् तनय श्रीमाण् शान्तिवर्मा महीपति (१) मृगेरास्तस्य  
तनयो मृगेश्वरपराक्रम (॥३)
- ५ कदम्बामलवशाद्रे मौलितामागतो रवि (१) उदयाद्रिमकुट्टेप  
( टाटोप ) दीप्रागुरिवांशुमान् (॥४)
- ६ नृपदल्लनकी विष्णुदैत्यजिष्णुरय स्वय (१) हिरण्यचलन्माल  
स्यक्त्वा चक्र विभावित (॥५)
- ७ साम्राज्ये नन्दमानापि न माद्यति परतप (१) धीरेषा मदयत्य-  
न्यानतिर्पातेव वारणा (॥६)
- द्वितीय पत्र
- ८ नमंते त मही प्रीत्या यमाश्रित्यामिनन्दति (१) कौस्तुभामारुण  
च्छाय वक्षो लक्ष्मीहंररिव (॥७)
- ९ रवाविधि जयन्तीय सुरेन्द्रनगरी श्रिया (१) बैनयन्तो चलच्चित्र  
बैनयन्ती विराजते (॥८)
- १० रवेर्भुजगदासीव चदनप्रीतमानमा (१) तथा धीर्नामवत् प्रीता  
सुरारेरपि वक्षसि (॥९)
- ११ विश्वा वसुमती नाथस्त्रायते नयकोविदम् (१) धीरिवेन्द्र ज्वलद्ब-  
ज्रदाप्तिकोरकितादम् (॥१०)
- १२ यस्य मूर्ध्नि स्वय लक्ष्मी हेमकुम्भोदरच्युतै (१) राज्यामिषेकम-  
करोदम्भोजशवलैर्जलै (॥११)
- १३ रघुणालम्बिताभीली ( मौली ) कुण्डो गिरिधारयत् (१) रवेराज्ञा  
वहस्यद्य मालामिव महीधर (॥१२)

१४ धर्मार्थं हरिदत्तेन सोयं विज्ञापितो नृपः (१) स्मितज्योत्स्नामिपि-  
क्तेन वचसा प्रत्यभाषत (॥१३)

द्वितीय पत्र : दूसरा भाग

१५ चतुस्त्रिंशत्तमं श्रीमद्राज्यवृद्धिसमासमा (१) मधुर्मासस्तिथिः  
पुण्या शुक्लपक्षश्च रोहिणी (॥१४)

१६ यदा तदा महाबाहुरासंध्यामपराजितः (१) सिद्धायतनपूजार्थं  
संघस्य परिवृद्धये (॥१५)

१७ सेतोरुपलकस्यापि कोरसंगाश्रितां महीम् (१) अधिकान्निवर्त-  
नान्येव दत्तवां स्वामस्मिन्दमः (॥१६)

१८ आनन्दी दक्षिणस्याय सेतोः कंदारमाश्रितम् (१) राजमानेन  
मानेन क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (॥१७)

१९ समणे सेतुबंधस्य क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (१) तच्चापि राजमानेन  
वेटिकौटेनिनिवर्तनम् (॥१८)

२० उज्ज्वादिपरिहर्तव्ये समाधिसहितं हितम् (१) दत्तवांश्श्रीमहाराज-  
स्सर्वसामन्तसंनिधौ (॥१९)

२१ ज्ञात्वा च पुण्यमभिपालयितुर्विशालं तद्रसंगकारणमितस्य च  
दोषवत्तान्

तीसरा पत्र :

२२ .....श्रमस्खलितसंयमनैकचित्ताः संरक्षणेस्य जगतीपतयः  
प्रमाणं (॥२०)

२३ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजमिस्मगरादिभिः (१) यस्य यस्य यदा  
भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं (॥२१)

२४ अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्मुक्तं सद्भिश्च परिपालितम् (१) पृतानि न निवर्त-  
न्ते पूर्वराजकृतानि च (॥२२)



२५ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हारत वसुधरा (१) षष्टिर्वर्षसहस्राणि  
नरके पच्यते तु स (॥२३)

[ यह ताम्रपत्र कदम्बवशीय गजा मृगेशके पुत्र रविवर्मा-द्वारा दिया गया था । हरिदत्तके निवेदनपर राजाने सिद्धायननकी पूजा तथा सघ-  
की वृद्धिके लिए कोरमग ग्रामकी कुछ खमीन दान दी ऐसा इसमें निर्देश  
है । दानकी तिथि राज्यवर्ष ३४ के चैत्र शुक्ल पक्षकी पुण्यतिथि कही  
गयी है । ]

[ ए० रि० मं० १९३३ पृ० १०९ ]

२२

गोकाक ताम्रपत्र ( जि० बेलगांव, मंमूर )

६-७वीं सदी, सस्कृत-नागरी

- १ स्वस्ति ॥ वर्धता वर्धमानेन्दोर्वर्धमानगणोदधे । शासन नाशित-
- २ रिपोर्मासुर मोहशासन ॥ ( १ ) इहास्यामघमर्षिष्यान्तीर्थ-
- ३ करणो चतुर्दशतितमस्य सन्मने श्रीवर्धमानस्य वर्धमा-
- ४ नाया तीर्थसन्ततावागुसायिकाना राज्ञामष्टसु वर्षशते-
- ५ पु पचत्तवारिंशदश्रेषु गतेषु राष्ट्रकूटान्वयजातश्रीदे-

दूसरा पत्र पहला भाग

- ६ जमहाराजस्यामिमत् श्रीसेन्द्रकामलकुलवरोदितदी-
- ७ प्रदिवाकरो विजयानन्दमध्यराजात्मज श्रीमानिन्द्रणन्दाधि-
- ८ राज स्ववश्यानामारमनश्च धर्मवृद्धये कर्माण्डीविषये
- ९ पर्वतप्रत्यासिन्नजलारग्रामे जम्बूखण्डगणस्थाय ज्ञान-
- १० दर्शनतपस्सम्पन्नाय आर्यणन्दाचार्याय भगवद्दे-

दूसरा पत्र : दूसरा नाग

- ११ अतिमानवरतपूजार्थं शिक्षकग्लानवृद्धानां च तपस्विनां वै-  
 १२ यावृत्यार्थं ग्रामस्योत्तरतः पूर्वांगग्रामविरेयसीमकं द-  
 १३ क्षिणेन मुञ्जजलमार्गपर्यन्तं अपरतः ण्ण्दावीस्तस-  
 १४ हितवल्मीकं तस्मादुत्तरतः पुष्करणी ततश्च यावत् पूर्वविरेय-  
 १५ कं राजमानेन पंचारालवर्तनप्रमाणक्षेत्रन्द-

तीसरा पत्र

- १६ त्तवानेतद् धो हरति स पंचमहापातकमयुक्तो भवति ॥ उक्तञ्च  
 १७-२० बहुमिर्वसुधा भुक्ता-( नित्यकं शापात्मकं श्लोक )

[ यह ताम्रपत्र सेन्द्रक वंशके अधिराज विजयानन्दके पुत्र इन्द्रगन्द-द्वारा जम्बूद्वीपके आचार्य आर्यगन्दिको दिया गया था । अर्हत्प्रतिमाकी पूजाके लिए तथा तपस्वियोंकी सेवाके लिए जलार ग्रामके पासकी कुछ भूमि उन्हें दी गयी थी । राजा इन्द्रगन्द राष्ट्रकूट वंशके देवज महाराजका सामन्त था । इस ताम्रपत्रका काल आगुप्ताधिक राजाओंका ८४५वां वर्ष इस प्रकार कहा है । किन्तु इसमें कौन-सी कालगणना अभिप्रेत है यह स्पष्ट नहीं क्योंकि लिपिको दृष्टिसे यह ताम्रपत्र छठी या सातवीं सदीका प्रतीत होता है । ]

[ ए० ई० २१ पृ० २८९ ]

२३

चितरल ( केरल )

७वीं सदी, तमिल

भगवती मन्दिरके लिए प्रसिद्ध तिरुच्छाणत्तुमलै पहाड़ीपर

[ इस लेखमें अरिष्टनेमि भटारके शिष्य गुणन्दांगि कुरट्टिगल-द्वारा देवीके लिए कुछ सोनेके आभूषण दान देनेका निर्देश है । यह लेख विष्णुमूर्ति वरगुणके २८ वें वर्षका है । ]

[ इ० म० तिरुवांकुर २ ]

२४

कुलगाण ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, ७वीं सदी

पहला पत्र

- १ स्वस्ति श्री जित मगवता श्रीमज्जान्हवेय
- २ श्रीमणाचार्यमाधित स्त्रसङ्गैक
- ३ रात्रमैकयशम दारुणारिगणविदार
- ४ पद्मायनसगोत्रस्य श्रीमत्कागणिवमध

दूसरा पत्र

- ५ युक्तस्य श्रीमन्माधवमहाधिराजस्य प्रियोरसस्य श्रीपिण्डवर्म-  
गोपमहाधिराजस्य अने
- ६ कचतुदन्तयुद्धावाप्तचतुर्द्विमलिलास्वादितयशम पुत्रस्य श्री-  
मन्माधवमहाधिराज-
- ७ जस्य पुत्रस्य श्रीमत्कृष्णवर्ममहाधिराजस्य भागिनेयस्य श्रीमत्-  
कोगणिवृद्धराजस्या-
- ८ विनीतनाम्न पुत्रस्य श्रीदुर्जिनीतनामधेयस्य समस्तपाणाटपुत्रा-  
दाधिपतेरात्मन्स्य श्री-

दूसरा पत्र ( ब )

- ९ मत्कोगणिवृद्धराजस्य प्रथितमुक्तरद्वितीयनामधेयस्य सर्वविद्या-  
पारगस्य सुनो श्रीम-
- १० तत्पृथगीकोगणिवृद्धराजस्य श्रीविजयमद्वितीयनामधेयस्य सर्व-  
विद्यानिकपोपलभूतस्य प्र-
- ११ योगनिपुणनरस्य श्रीविजयमोषाजितानेकचन्द्रस्य प्रतापोपनत-  
सकलमामन्तस्य

१२ वनविनीतस्यात्मजे श्रीमत्पृथिवीकौंगणिवृद्धराजे प्रणितानेक-  
राजस्य सकुटुम्बणिम-

तीसरा पत्र

१३ मृत्पुंजपिंजरितांगुष्ठे वस्युवतिमनोनयनमुभगे रिपुनृपतिगजाश्व-  
रथनरोत्वन-

१४ लोकममदद्विदनुगारोहणोपमासमाननिरतिशयनिजशरीरश्री-  
वल्लभे सकल-

१५ पाणाटपुञ्जादाद्यनेकजनपदाधिवर्ता मनोविनीतस्य आता शिव-  
कुमारः श्रीमत्पृथिवी-

१६ कौंगणिवृद्धराजः स्थिरविनीतः अवतिमहेन्द्रविज्यातः पाणाटपु-  
ञ्जादाद्यनेकजनपदाधि-

तीसरा पत्र (ब)

१७ पतिः पृथिवीं परिपालयति कोहुगून्नाडा केल्लिपुमूरा चेदिअक्के  
कर्गुलप्पोल तट्टवल्ल-

१८ वेरेडं वसदिगालुमेरहु कलनिडं तोट्टमुं मनेत्तानमुं पृथिवीकौंगणि  
मुत्तरसरनुमतदो-

१९ लं पल्लवेळारमर् पाय्दार् कोकन्दियुं मयिल्लुगयुं मेल्पालुं  
जादिगालु कोलिगंकरंक्कालु आन्दुताट्टमुमा-

२० कलनिडं पृथिवीकौंगणि मुत्तरसरनुमतदोलं गंजेनाडर् कण्णमन्  
पाय्दार् चन्त ( न्द्र ) मेनाचा-

चौथा पत्र

२१ यर् कर्तारराग अदक्के माक्षि केल्लिपुमूर् पत्तिवरे अय्सामन्तरे  
नालत्ताणिडं ददा-

२२ नलिदोन् पचमहापातगनप्पोन् श्री बहुमिर्मुधा भुक्ता राजमि-  
स्मक (ग)-

२३ रात्रिमि यस्य यस्य यदा भूमि ( ) तस्य तस्य नदा फल ॥  
देवस्त्र तु विष धो-

२४ र न विष विषमुच्यते विषमेकाकिन हन्ति देवस्य पुत्रपौत्रक ॥  
स्वदत्ता पदत्ता वा

चौथा पत्र (३)

२५ यो हरेति वसुन्धरा पाँछि वर्षसहस्राणि धारे तममि यतते ।  
मारगो-

२६ टेरोनहु तोट पाय्त्तार् देवरा पसु गोटोनहु तोट कोण्डत्तु गज-  
नादर

२७ कण्णम्मन् कोहुगूर्नाटाल ओरकल्वाय्गर मीम्भाल्वाय्गरमिवर  
तुप्पूराळभरसरान-

२८ नुमतप्पडिमि पोय्ददु तुल्टिल्काल् किप्पुमूर् चेद्रियक्क

पाँचवें पत्र

२९ से ३० तक पक्तियों १३ से १६ तक के समान हैं ।

३३ पाणाटपुन्नाटाघनेकजनपदाधिरति पृथिवी परिपारयति क हुगूर्-  
विषये

३४ कटिप्पुसूर् नाम ग्रामे जिनालयाय वसटिकालु जातिकालु  
मेलपालु कोलि-

३५ गनूकरकालु कर्गुलदापोल तद्दुवल्लुवेरड पल्लुकरनिड नाल्गु-  
तोह्मु म-

३६ नेत्तानमु चन्द्रमेनाचार्यर् उदपूर् कोट्टरदक् साक्षी कोट्टेर  
कारेभरकु

[ इस ताम्रपत्रके प्रारम्भमें गंग वंशके राजाओंकी वंशावली इस प्रकार बतलायी है - कोंगणिवर्मा माधव - विष्णुवर्मगोप - माधव - अविनीत कोंगणिवृद्धराज - दुर्विनीत - मुष्कर कोंगणिवृद्धराज - श्रीविक्रम पृथिवीकोंगणिवृद्धराज - श्रीवल्लभ पृथिवीकोंगणिवृद्धराज । श्रीवल्लभके वन्धु शिवकुमार अवनिमहेन्द्र पृथिवीकोंगणिवृद्धराजके शासनकालमें यह लेख लिखा गया था । पल्लवेल अरमने राजाकी अनुमतिसे कैल्लिपुमूर् ग्रामका एक खेत, बर्गीचा और कुछ जमीन एक जिनमन्दिरका दान दी उसका इस लेखमें निर्देश है । इसी समय गंजेनाड निवामी कण्णम्मन्ते भी कुछ खेत इस मन्दिरको अर्पण किये । मारुगोट्टेरर्ने एक बगीचा तथा ओरंकल्वायर् और मीम्पाल्वायर्ने कुछ खेत दान दिये । राजाने भी कुछ खेत दान दिये थे । इस जिनमन्दिरके अधिष्ठाता चन्द्रमेनाचार्य थे । ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९० ]

२५-२६-२७

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

७वीं सदी, कन्नड

[ ये तीन लेख रमामिदुलगुट्ट नामक पहाड़ीपर पापाणोंपर खुदे हैं । इनमें निम्नलिखित नाम उत्कीर्ण हैं -

१ मिंगनन्दित्रन्दिनन्

२ श्रीडग्गिपसिण्ड

३ श्रीमूलाकोमरन्

इनकी लिपि ७वीं सदीकी है । ]

[ रि० मा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५४-५५-५६ पृ० १२६ ]

२८

रत्नगिरि ( कटर, उडीमा )

संस्कृत, ७वीं सदी

[ इस लेखमें ७वीं सदीकी लिपिमें एक जिनालयका उल्लेख है । लेख क्षण्डित है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४४८ पृ० ६७ ]

२९

पेनिकेलपाडु ( कडप्पा, आत्र )

संस्कृत-तेलुगु, ७वीं सदी

[ इस लेखमें वृषभ नामक जैन आचार्यकी प्रशंसा की गयी है । उन्हें भव्यरूपी कमलके लिए मेघके समान तथा बाद-विवादमें पर्वतके समान दृढ़ कहा है । इस स्थानको अब सयासिगुण्डु कहा जाता है । लिपि ७वीं सदीकी है । ]

[ रि० मा० ए० १९४०-४१ क्र० ८०१ पृ० १२० ]

३०

कौंगरपुलियंगुलम् ( मद्रास )

खट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

( एक जैनमूर्तिके नीचे - ) श्रीअज्जणन्दि

[ यहाँमें ३८वें लेख तक ९ लेखोंका समय लिपिके आधारपर कहा है । ]

[ रि० मा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ५४ ]

३१

मुत्तुप्पट्टि ( मद्रास )

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[ ( जैनमूर्तिके नीचे - ) यह मूर्ति वेण्णुनाडुके कुरण्डि अट्टुपवासि भटारके शिष्य गुणसेनदेवके शिष्य कनकवीरपेरियडिगल्-द्वारा बनवायी गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६१ ]

३२

मुत्तुप्पट्टि ( मद्रास )

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[ यह मूर्ति कुरण्डि अट्टुपवासिके शिष्य माघनन्दि-द्वारा बनवायी गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६२ ]

३३-३८

कीलक्कुडि ( मद्रास )

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[ यहाँ जैन मूर्तियोंके समीप निम्न नाम खुदे हैं - कनकनन्दि भटारके शिष्य अभिनन्दन भटारके शिष्य अरिमण्डल भटारके शिष्य अभिनन्दन भटार ( २ ) ।

अज्जणन्दिकी माता गुणमत्तियार् ।

गुणसेनदेवके शिष्य अनत्तवन् मासेनन्का भतीजा आच्चन् श्रीपालन् ।

गुणसेनदेवके शिष्य कण्डन् पोर्पट्टन् । वेण्णुनाडुके तिरु कुरण्डिके सेवक कनकनन्दि । गुणसेनदेवके शिष्य अरैयंगाविदि, पल्लिके प्रमुख । ]

[ रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६३-६९ ]



३६

नलजनम्पाडु ( आध्र )

तेलुगु, ७वीं-८वीं सदी

अगला भाग

- |                           |                           |
|---------------------------|---------------------------|
| १ स्वस्ति म-              | २ गवदहंत ( प )-           |
| ३ रममट्टारकस्य पा-        | ४ दानुध्यात परममा-        |
| ५ हेश्वर पर(मं) श्वर प-   | ६ हलवादित्य श्रीवादि-     |
| ७ राजुल अन्दु पल्ले-      | ८ यरि कोडुकु बादि (रा)-   |
| ९ जेन्वानूर राजमा (न)-    | १० बु मूनूर बुट्टु आल्ले- |
| ११ पट्टु क्षेत्रबु प(रि)- | १२ सि पल्लेयारि (दा)-     |
| १३ यनबुनाकु इच्चे         | १४ दीनि रक्षिचिनवानि (कि) |

बिल्ला भाग

- |                  |                 |
|------------------|-----------------|
| १५ अडुगडु-       | १६ गश्वमेधबुना  |
| १७ पलबगु         | १८ दीनि लच्चिन- |
| १९ चानिकि एकलु   | २० श्रीपर्वतबु  |
| २१ लच्चिन पाप-   | २२ बगु वाच्चो-  |
| २३ लाल कोडुकु    | २४ पदन्नवाचा-   |
| २५ ज्यंस्य लिकि- | २६ तम् (॥)      |

[ इस लेखमें परमेश्वर पल्लवादित्य वादिराजुल नामक शासक-द्वारा ३ पुट्टि जमीन किसी ग्राममुख्यको दिये जानेका उल्लेख है । वादिराजुलको अर्हन्मट्टारक तथा महेश्वर दोनोंका भक्त कहा गया है । लेखकी लिपि ७वीं-८वीं सदीकी है । ]

[ ए० इ० २७ पृ० २०३ ]

४०-४३

सातानिकोट ( कुर्नूल, आन्ध्र )

कन्नड, ७वीं-८वीं सदी

[ यहाँ एक खेतमें पाषाणोंपर निम्न नाम खुदे हैं -

१ श्री...कोपा ( शि ) की निसिधि

२ संसारभीत

३ श्रीविमलचन्द्रन्

४ गणिगे महाव्रति

इनकी लिपि ७वीं-८वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ३३०, ३३२,  
३३७, ३३९ पृ० ४१-४२ ]

४४

माचेर्ल ( कृष्णा, आन्ध्र )

तेलुगु, ८वीं सदी, पूर्वार्ध

[ यह लेख पूर्वोक्त चालुक्य राजा सकललोकाश्रय जयसिंहवल्लभ ( द्वितीय ) के राज्यवर्ष ८ में लिखा गया था । दयावसन्त पृथिवोदेशरट्ट-गुडिके प्रपौत्र तथा धन्यवसन्त पृथिवोदेशरट्टगुडिके पुत्र कल्याणवसन्तुलु-द्वारा अरहन्तभटारको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इस दानकी रक्षा कोंटूरुके रट्टगुडि वंशके आसक करेंगे ऐसा लेखमें कहा है । ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १८ पृ० १३१ ]

४५

शिम्गाव ( धारवाड, मैसूर )

शक ६३० = सन् ७०८

मस्कृत-नागरा

[ यह ताम्रपत्र चालुक्य राजा विजयादित्यके ११वें राज्यवर्ष शक ६३० में आपाठ पीणिमाके दिन दिया गया था । किमुवल्लके राजम्बन्धा-धारमे राजाने पुरिगेरे नगरमे कुकुमादेवी-ढागा निमित्त जियमन्दिरके लिए गुट्टिगेरे ग्राम दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९८५-४६ ए० क्र० ४९ ]

४६

अण्णिगेरि स्तम्भलेख ( डि० धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ६ = सन् ७५१-५२, कन्नड

- |                                 |                               |
|---------------------------------|-------------------------------|
| १ स्वस्ति कीर्तिवर्म(सत्या)ध्रय | २ श्रीशृधु(वीरवल्लभ) महाराजा  |
| ३ धिरान परमेश्वर भटारर          | ४ राज्य आन्दुत्तरममिशृद्धि म- |
| ५ ले आरनेया चपं प्रव-           | ६ दमानमागे जे-                |
| ७ बुलगेरिगे कलि-                | ८ यम्म रामुण्डुगेरि           |
| ९ चेन्नियमान्माडिमिदोद्         | १० इतर मुन्दे कोण्ड-          |
| ११ शुल्लकुप्प कीर्तिवर्म-       | १२ गामामिय निरिमिन्ना         |
| १३ कीर्तन । त्रीशापालस्य लि-    | १४ वित । प्रमुनामन् ।         |

[ यह लेख बदामीके चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वितीयके राज्यके छठे वर्षका अर्थात् सन् ७५१-५२ का है । इसमें जेबुलगेरिगे ग्रामाधिकारी कलिम्ब-द्वारा एक चेन्निय अर्थात् जिनमन्दिर बनवाये जानेका निर्देश है । ]

[ ए० इ० २१ पृ० २०४ ]

४७

कुडलूर ( मैसूर )

कन्नड, ८वीं सदी

श्रीयम्मं तोरैय तडिय तोण्टदोल् तम्म भागमं देवर्गे कोट्टर् अय्यप्प  
राउणद् पक्कदतोण्टमं कोण्डु तोरैय तडिय तम्म भागद् तोण्टमं मूडण-  
वमदिगे कोट्टर् रणपाकरम्मर् आले कोण्डु तोट्टर् ॥

[ इस लेखमें रणपाकरसके राज्यकालमें श्रीयम्म तथा अय्यप्प-द्वारा  
किसी नदीतीरपर स्थित पूर्वोक्तसदिके लिए कुछ उद्यान आदिके दानका  
उल्लेख है । लिपि ८वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९०९ पृ० १४ ]

४८

नरसिंहराजपुर ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, ८वीं-९वीं सदी

[ यह ताम्रपत्र गंग राजा श्रीपुरुष-द्वारा दिया गया था । इस राजाके  
'अनुकूलवर्ती' पसिण्डि गंग कुलके नागवर्मा तथा कदम्बकुलके तुलुअडिने  
तगरे प्रदेशके तोल्लग्राममें स्थित चैत्यालयके लिए मल्लवलि ग्राम दान  
दिया था । इसी प्रकार कोशिक वंशके मणलि मनेओडेयोन्ने कुछ भूमि  
दान थी । इसी ताम्रपत्रके अन्तिम भागमें गंग राजा शिवमारके राज्यमें  
सिन्दनाडु ८००० के शासक विट्टरस-द्वारा तोल्लरके चैत्यके लिए करिमान्नी  
ग्रामके दानका भी उल्लेख है । तदनन्तर इसी चैत्यके लिए राजा शिवमारके  
मामा विजययक्ति अरस-द्वारा ६ त्वंडुगभूमिके दानका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२० पृ० २७ ]

४६

मुनुगोडु ( गुण्टूर, आंध्र )

तेलुगु, ८वीं सदी

[ यह लेख पूर्वोक्त चालुक्य राजा सवल्लोकाश्रय विष्णुवर्धनके राज्यवर्ष ३७ का है। इस समय महामण्डलेश्वर गोकर्णने मुनुगोडुके जिनालयके लिए कुछ भूमि दान दी थी। यही एक अथ लेखमें शाकके सेवक बायुगट्ट-द्वारा इस जिनालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है जिसका निर्माण अम्भोति-द्वारा मुनिमुद्रतके तीर्थमें किया गया था। ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १७-१८ पृ० ६ ]

५०

तिरुगोकर्णम् ( मद्रास )

तमिल, ८वीं सदी

[ यह लेख शड्डयापारै नामक पहाड़ीपर एक जिनमूर्तिके पास है। पाण्ड्य राजा कोणेरिष्मैकोण्डान् सुन्दरपाण्ड्यदेवके २४वें वर्षकी एक राजाज्ञाका इसमें उल्लेख है। तदनुसार तेंकविणाडुके निवाभियोंमें कहा गया था कि कत्लारुप्पल्लिके पेन्नकिलि चोलप्परुप्पल्लि आल्वारके पूजादि-के लिए स्थानीय पत्थर ( जिनमन्दिर ) के व्यवस्थापकों-द्वारा अर्पित जमीनोंको करमुक्त किया गया। ]

[ इ० पु० क्र० ५३० पृ० ८५ ]

५१-५३

ब्रिटिश म्यूजियम ( लंदन )

८वीं-९वीं सदी, मस्कृत-नागरी

१ अनन्तवीर्य

२ मुलाचना

३ धृति

[ ये नाम तीन मूर्तियोंके पादपीठोपर खुदे हैं। ये मूर्तियाँ यक्ष तथा

यमिगियोंकी है और उनके विरोधामें विद्वत्तियां लुप्त हैं । अङ्गोंकी स्थिति तथा भूविस्तार ८वीं-९वीं सदीके हैं । ]

[ Medieval Indian Sculpture in the  
British Museum P. 41-42 ]

५४

वदनगुप्ते ( मंदर )

संस्कृत-कुल्लड, शक ७३८ = सन् ८०८

[ इस ताकन्दके पाँच पद्योंने पद्योंके बीच पद्य द्वितीय भागके लेख क्र. १२३ के समान हैं जिनमें राष्ट्रकुट राजाओंका वंशवर्धन गोविन्द-राजः तक किया गया है । ]

चतुर्थ पद्य : पहली और

५१ वारावर्षश्रावस्तमनदाराजधिरजस्य उग्रः शौचाचारप्रसुगुण-  
गणप्रण-

५२ सितसमस्तलोकः परोयस्त्रक्रगानरः परमेश्वरचरणारविन्दवन्द-  
नासितन्दनः २-

५३ पावनेकर्णकम्मराजः कुल्लड पंडेताडुविषये वदनगुप्ते नाम  
ग्रामः तलव-

५४ ननगरं अविवसति विजयम्कन्धावां । त्रिगुहसरेखर्तानेषु शक-  
वर्षेषु कर्मिक-

५५ मास-योगमान्यां गेहिनानसुते सोमवारं केन्दकुन्देयान्वय  
मिर्मलान-

५६ गूल्याग कुमागन्दिनहारकस्य शिष्यः प्लवाचारिगुरुः तस्य  
शिष्यो वर्षमा-

५७ नगुरुः (I) सर्वशान्तिदितः साक्षात् सिद्धान्तानुगमोद्धतः (I)  
शान्तः सर्वजकल्याणं नयोद्ध-

- ५८ तगुणात्तत (॥) तस्मै त ग्राम अदान् स्वपुत्रश्रीशकरगण  
प्रिज्ञापनन ध्रोकम्भ्द्व श्रीविजय-  
५९ वसतय तलवननगरे प्रतिष्ठितायै । तस्य सीमान्तराणि वडगण  
दिग् पोन्नपुं-

चतुर्थ पत्र दूसरी ओर

- ६० लि वडगण पडुवण कोनेदु पामत्तिगत्तु पडुवणसाम कम्भ-  
गेरय पेवं  
६१ ग पडुवण तेंकण कोनेदु पोणुत्तल्लनिय तेंकोत्त तेंकण सीम  
बेलक्काल तन्ना-  
६२ त्वे तेंकण मूडण कोनेड्डु मुदुपत्ति कोरल्लु मूडणसीम कल्लि-  
वेट्टिन मूडण पोरे  
६३ ये मून् वेट्टु ओल्लु मूडण वडगण कान्तदु वदनिन्निय वडगण  
ओल्ले  
६४ अम्य दानस्य साक्षिण यण्णरतिसत्तविषय प्रकृतय  
६५ योस्यापहर्ता लोमान्माहात प्रमाण्न च स पचमिमहद्मि  
पानकै ( ) सयुक्ता  
६६ भयति या रक्षति स पुण्यभाग् सवति अपि चान्न मनुगीता ( )  
इत्थोक्ता ( ) स्वदत्ता पादत्ता  
६७ वा यो वरत्त वमुत्तरा (१) पट्टि वर्षमहसाणि पिष्टाया जायते  
क्रिमि (॥) स्व दातु  
६८ सुमहच्छक्य दुरय अन्यस्य पालन (१) दान वा पालन वेत  
दानाच्छ्रेयोनुपा-

पौचत्रो पत्र पहली ओर

- ६९ लन (॥) बहुमिदमुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिमि (१) यस्य  
यस्य यदा भूमि ( ) तस्य

७० तस्य तदा फलं (॥) देवस्वं तु विषं घोरं न विषं विषमुच्यते  
(१) विषमेकाकिनं हन्ति

७१ देवस्वं पुत्रपौत्रिकं (॥) विश्वकर्माचार्येण लिखितं (॥)

[ यह ताम्रपत्र राष्ट्रकूट समाट् गोविन्दराज ( तृतीय ) के राज्यकालमे सम्राट् ( ध्रुव निरुपम ) धारावर्षके पुत्र रणावलोक कम्भराज-द्वारा कार्तिक शु० १५ शक ७३०, सोमवारके दिन दिया गया था । कौण्डकुन्देय अन्वय-सिर्मलगेगुरु गणके कुमारणंदि भट्टारकके प्रशिष्य तथा एलवाचार्यके शिष्य वर्धमानगुरुको वदनोगुप्ते ग्राम दान दिये जानेका इसमे उल्लेख है । यह दान तलवननगरकी श्रीविजयवसतिके लिए दिया गया था । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ११२ ]

५५

सूरत ताम्रपत्र ( गुजरात )

शक ७४३ = सन् ८२१, संस्कृत-नागरी

- १ श्रौं । श्रियः पदं नित्यमशेषगोचरं नयप्रमाणं प्रतिपिद्बहुप्पथं ।  
जनस्य मव्यत्वसमाहितात्मनो जयत्यनुग्राहि जिनेन्द्रशासनं ॥  
(१) स धो-
- २ व्याद् वेधमां धाम यन्नाभिकमलं कृतं । हरश्च यस्य कान्तेन्दु-  
कलया कमलंकृतं ॥ (२) आसीद् द्विपत्तिमिरमुद्यतमण्डलाग्री  
ध्वस्तिन्नय-
- ३ नमिसुखो रणशर्वरीपु । भूपद्मशुचिर्विधुरिवास्तदिगन्तकीर्ति-  
गोविन्दराज इति राजसु राजसिंहः ॥ (३) दृष्ट्वा चमूममि-
- ४ सुखीं सुमटाट्टहासामुन्नामितं सपदि येन रणेपु नित्यं । दष्टाभरेण  
दधता भ्रुकुटिं ललाटे खड्गं कुलं च हृद्(यं)-
- ५ च निजं च सत्त्वं ॥ (४) खड्गं कराग्रान्मुखतश्च शोभां मानो  
मनस्तस्ममेव यस्य । महाहवे नाम निशम्य सद्यस्त्र-



- ६ य रिपूणा विगल यकाण्डे ॥ (५) तस्यामजो जगति विश्रुत-  
दाघकीर्तनरातानिहारिहरिविभ्रमधामधारी । मूप-
- ७ त्रिविष्टपनृपानुकृति कृतज्ञ श्रीकर्कराज इति गोत्रमणिवंभूद ॥  
(६) तस्य प्रमिन्नकरटाच्युतदानद-
- ८ न्तिदन्तप्रहारचिरोद्विगितामपोठ । इमाप क्षिर्ता क्षपितशत्रु-  
रभूत्तनूज सदाष्टकृटकनकाद्रिविन्दराज ॥ (७) तस्योपा-
- ९ जितमहसस्तनयश्चतुर्दधिवलयमालिन्या । माफा मुपशान  
त्रनुमदश श्रीदन्तिदुर्गराचोभूत् ॥ (८) काशीशकेर-
- १० लनराधिपचोलागण्ड्यश्रीमयवत्रयत्रिभेदविधानदक्ष । कणाटक  
बलमचिन्त्यमजेयमन्यैभृत्यै कियन्मिर-
- ११ पि यस्यइमा जिगाय ॥ (९) अश्रूविभगमगृहीतनिशातशस्त्र-  
मथ्रान्तमप्रतिहृताजमपेतयत्न । यो बल्लभ मपदि दण्ड-
- १२ बलेन जिगा राजाधिराजपरमेदरतामवाप ॥ (१०) आमेतां-  
विपुलोपलावलिलमल्लालामिमालाजलादाप्रालेयक-
- १३ लकितामलशिलाजालानुपाराचलादा पूवापरमारिराशिपुलिन-  
प्रान्तप्रमिद्धाववेष्टेने जगती स्वविभ्रमबलेनेका-
- १४ तपत्रोदृता ॥ (११) तस्मिन् दिव प्रयाते बल्लभराजे क्षतप्रना-  
याध । श्रीकर्कराजमूनुमहोपति कृष्णराजोभूत् ॥ (१२) यस्य  
स्वभुनप-
- १५ रात्रमनिशेषो मादिनारिद्विक्चत्र । कृष्णस्यैवा(कृष्ण) चरित  
श्रीकृष्णराजस्य ॥ (१४) शुभनुगनुगनुरगप्रदूरणूदन्दरवि-  
किरण । प्रीप्सेपि नमो निगिल
- १६ प्रागृत्कालायते स्पष्ट ॥ (१४) दीनानाथप्रणयिषु यथेष्टचेष्ट  
समोहितमनस्य । तत्क्षणमकालवर्षे वर्षति सर्वार्थिनिर्ग(प)ण ॥  
(१५) राहृपमा-



२६ वीर्य ॥ (२३) रक्षता येन निश्शेष चतुरम्भोधिमयुत । राज्य धर्मेण लोकाना कृता हृष्टि परा हृदि ॥ (२४) योसौ प्रसाधित- (समुन्नत) सारदुर्गा गागौघसन्ततिनिरोध-

२७ विपृद्धकीर्ति । आत्मीकृतोन्नतवृषाकविभूतिस्त्वेव्यञ्ज ततान परमेश्वरतामिर्हैक ॥ (२५) तस्यामजो जगति सत्प्रथितोरु- कीर्तिर्गोविन्दराज इ-

२८ ति गोत्रललामभूत त्यागी पराक्रमधन प्रकटप्रताप सन्तापि- ताहितजनो जनवल्लभोभूत् ॥ (२६) पृथ्वीवल्लभ इति च प्रथित यस्या-

२९ पर ज(ग)ति नाम । यश्चतुर्दधिसीमामक्रो वसुधा वशे चक्रे ॥ (२७) एकोऽयमेकरूपो यो ददशे भेदवादिमिरिवारमा । परवल- जलधिमपार

३० तरन् स्वदोभ्यां रणे रिपुभि ॥ (२८) एको निर्हेतिरह गृहीतशस्त्रा मे परे बहवो । या नैप्रविधमकरोच्चित स्वप्नेपि किमुताजौ ॥ (२९) राज्याभिषेकलक्षैरभि-

३१ पिच्य दत्ता राजाधिराजपरमेश्वरता स्वपित्रा । अन्यैर्महानृपति- मिर्बहुमिस्ममय स्तम्भादिभिर्भुजबलादवलुप्यमाना ॥ (३०) एकोनकनरेन्द्रवृन्दसहिता-

३२ न्यस्तान् ममस्तानपि श्रोत्या(ता)मिलताग्रहारविधुरा बध्वा महामयुगे । वृक्षमी(म)प्यचला चकार मिलमत्सञ्चामरादिर्णो ससाददगुर्विप्रसज्जनमुहद्व-

३३ भूपमोग्या भुवि ॥ (३१) तत्पुत्रोत्र गत नाकमाकम्पितरिपुप्रजे । श्रीमहाराजमर्कार्य ख्यातो राजाभवद् गुणै ॥ (३२) आर्येषु यथार्थता यस्ममभिष्टफलाप्तिलब्धतो-

३४ पेपु । वृद्धिज्ञिनाय परमाममोघवर्षाभिधानस्य ॥ (३३) राजा-

मूत् तत्पितृव्यो रिपुभवविभवोद्भूयमावैकहेतुर्लक्ष्मीवानिन्द्रराजो  
गुणिजननिकरान्तश्चमत्का-

३५ रकारी । रागादन्यान् व्युदस्य प्रकटितविनया यं नृपं सेवमाना  
राजश्रीरेव चक्रे स(कल)कविजनोद्गीततथ्यस्वभावं ॥ (३४)  
निर्वाणावासिवानासहितहितजनो -

३६ पास्यमाना सुवृत्तं वृत्तं जित्वान्यराजां चरितमुदयवान् सर्वतो  
हिंसकेभ्यः । एकार्का दसवैरिस्त्रलनकृतिसहप्रातिराज्येशशंकु-  
र्लाटीयं मण्डलं

३७ यस्तपन इव निजस्वामिदत्तं ररक्ष ॥ (३५) यस्यांगमात्रजयिनः  
प्रियमाहसस्य क्षमापालवेपफलमेव वमू(व) सैन्यं । सुक्त्वा च  
सर्वभुवनेश्वरमादिदे -

दूसरा पत्र : दूसरा नाग

३८ वं नावन्दतान्यममरेष्वपि यो मनस्वी ॥ (३६) श्रीकर्कराज इति  
रक्षितराज्यमारत्सारः कुलस्य तनयो नयशालिशौर्यः । तस्या -

३९ भवद् विन(व)नन्द्रितयन्त्रुसार्थः पार्थः सदैव धनुषि प्रथम-  
श्शुचोनां ॥ (३७) दानेन मानेन सदाज्ञया वा शौर्येण वीर्येण च  
कोपि मूयः । एतेन साम्यांस्ति

४० न वेति कीर्तिस्सर्कानुका भ्राम्यति यस्य लोके ॥ (३८) स्वेच्छा-  
गृहीतविषया(न्)ददमंघमाजः प्रोद्गुत्तदत्तनरशौल्लिकतराष्ट्रकूटान् ।  
उत्पत्तातसङ्गनिज -

४१ बाहुबलेन जित्वा योमोववर्षमचिरात् स्वपदे व्यधत् ॥ (३९)  
तेनेदमनिलविद्युच्चंचलमालोक्य जीवितमसारं । क्षितिदानपरम-  
पुण्यः प्रवर्तितो ध -

४२ मंदायोयन् ॥ (४०) स च समधिगताशेषमहाशब्दमहासामन्ता-

धिपति सुवर्णवर्षश्री(क)र्मराजदेव कुशली भवानेव यथासवध्य-  
मानान् राष्ट्रपति -

४३ विषयग्रामपतिग्रामकूटयुक्त नियुक्तग्रामावकाधिसारिर्महत्तराडि-  
कान् समनुद्देश्यत्यस्तु वरसविदित यथा मया श्रीवर्द्धिकान्त -

४४ स्थापामितत्रिजयस्कन्धावारस्थितेन मानापित्रोरात्मनश्चेदिका  
मुष्मिम्पुण्ययशामिदृद्धये श्रीनागसारिकास्वतलमरिविष्टाहर्चया-  
ल(या)यतननि(बद्ध) -

४५ मन्त्रपुराम्पमण्डितवसतिकाया खण्डस्फुटितनवकर्मचस्वलितान-  
पूजार्थं तथा तथानिवध्यमानचातुष्टयमूलसद्योदयान्यस्य -

४६ मेनमघमलवादिगुरोश्चिन्त्यश्रीसुमतिपूज्यपाद तच्छिष्य श्रीमन्-  
पराजितगुरो श्रीनागसारिकाप्रतिबद्ध अम्बापादकग्रामस्य  
उत्तरदिशि

४७ हिरण्ययोगामिधाना ढापुरापी यस्याघाटनानि पूर्वत श्रीधर-  
वापिका दक्षिणतो वह अपरत पूरामी महानदी उत्तरत-  
स्मस्वपुर -

४८ वापिका । ण्वमिथ चतुरापाटापलक्षिता सधान्यद्विरण्यादेया  
अचाटमटप्रवेश्यस्मघरानकीयानामहस्तप्रक्षेपणीय आच -

४९ न्दार्शन्यक्षितिमस्तिपर्वतममकालोन शिष्यप्रशिष्यान्ययममोप-  
मोग्य शकनृपमालार्तीतमवसरशतेषु मससु त्रिचमारिंशद -

५० धिक्पर्वतीतेषु वैशाखपौर्णमास्या म्ना बोदमातिसर्गेण प्रतिपादि-  
तास्योचितया आचार्यस्थित्या मुनतो भाजयत रूपत कर्षयत  
प्रतिदि -

५१ शतो वा न केनचिन् परिपन्थिता करणीया ॥ तथागामिनृपति-  
मिरस्मद्दर्श्यैरन्यैर्वा सामान्य भूमिदानफलमवेय विद्युहोला-  
न्यनित्यान्यैश्च -

५२ याणि तृणाग्रलग्नचंचलविन्दुचंचलं च जीवितमाकलय्य स्वदाय-  
निर्विशेषोयमनुमन्तव्यः परिपालयितव्यश्च । यश्चाज्ञानतिमिर-  
पटलावृत —

५३ मतिराच्छिन्धादाच्छिद्यमानकं वानुमोदत स पं(च)मिमहापात-  
कैरुपपातकैश्च संयुक्तस्स्यादित्युक्तं च भग(व)ता वेदव्यासेन  
व्यासेन ॥

५४-५८ [ नित्यके शापान्मक श्लोक — पटिं वर्षमहत्त्राणि आदि ]

५९ यथा चैतदेवं तथा शासनदाता लिपिज्ञस्त्वहस्तेन स्वमतमारोप-  
यति ॥ स्वहस्तोयं मम श्रीककराजस्य श्रीमदि —

६० इन्द्रराजसुतस्य ॥ लिखितं चैतन्मया महामन्धिविग्रहाधिपतिना  
नारायणेन कुलपुत्रकश्रीदुर्गभट्सूनुना ॥ जीयाद्दुरितविद्वेषि  
शासनं जि —

६१ नशासनं । यदन्यमतशैलानां भेदने कुलिशायते ॥ (४९)  
जयति जिनोक्ता धर्मप्यडजीवनिकायवत्सलो नित्यं । चूडामणि-  
रिव लो(के)

.६२ विभाति यस्सर्वधर्माणाम् ॥ (५०)

[ यह ताम्रपत्र शक ७४३ में वैशाख पूर्णिमाको दिया गया था ।  
इसमें पहले राष्ट्रकूट सम्राटोंकी वंशावली अमोघवर्ष ( प्रथम ) तक दी गयी  
है । तदनन्तर अमोघवर्षके पितृव्य(चाचा)इन्द्रराजके पुत्र कर्कराज मुवर्णवर्ष-  
का उल्लेख है जो गुजरातमें शासन कर रहा था । अमोघवर्षके राज्यारोहण-  
के बाद कई सामन्तोंने विद्रोह किया था उनपर विजय प्राप्त करनेमें कर्क-  
राजकी ही मदद उपयोगी मिट्ट हुई थी । कर्कराजने उक्त वर्षमें मूलमंघ-  
सेनसंघके मल्लवादिगुप्तके शिष्य नुमतिपूज्यपादके शिष्य अपराजितगुरुको  
नागसारिकाके जिनमन्दिरके लिए हिरण्ययोगा नामक खेत दान दिया था । ]

[ ए. डं. २१ पृ. १३३ ]

५६

राणिवेण्णूर ( धारवाड, मैसूर )

शक ७८१ = सन् ८६०, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष ( प्रथम ) के समयका है । नागुड पोल्स्वे द्वारा स्थापित नागुलवमदिके लिए शक ७८१ में कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें निर्देश है । यह दान मिहवूरगणके नागनन्दा-चार्यको दिया गया था । ]

[ रि० आ० सं० १९३०-३४ पृ० २०९ ]

५७

चेंदूर ( मैसूर )

शक ७८५ = सन् ८६४, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष १ के समय शक ७८५, तारण सवत्सरमें लिखा गया था । चिक्कण नामक अधिकारीको कुछ भूमि दिये जानेका इसमें उल्लेख है । प्रतोका पालन और समयमन इनका भी उल्लेख हुआ है । अतः यह समाधिमरणका स्मारक प्रतीत होता है । ]

( मूल कन्नडमें मुद्रित )

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ६ ]

५८

पेवरमल्लै ( मदुरा, मद्रास )

शक ७९२ = सन् ८७०, तमिल

१ शकर याण्डुल्लु नूरत्तोण्णूरिण्डु

२ पोन्दणवरगुणकुं याण्डु षट्ठु गुणग्रीरक्कु

३ रवडिगल् माणाक्क(र)कालत्तु शान्तिवीरक्कु-

४ कुरवर् तिरुचियैर पोरिश्च (पार्श्व)प(म)यारैयुमिय-

५ किक अन्वैगलैयु पुदुक्कि इरण्डुक्कुमुट्ट-

६ टावच्चियुमोरडिगलुक्कु शोराग अमैत्त पो-

७ ण् ऐन्नूरैन्दु काणम् ॥

[ यह लेख पाण्ड्य राजा वरगुण २ के राज्यवर्ष ८, शक ७९२ का है । इस समय गुणवीरके शिष्य शान्तिवीरने तिरुवयिरै स्थित पार्श्वनाथ मूर्ति तथा यक्षीमूर्तिका जीर्णोद्धार किया था । इसके लिए उन्हें ५०२ काणम् ( नुवर्णमुद्रा)दान मिला था । ]

[ ए० इ० ३२ पृ० ३३७ ]

५६

धर्मपुरी ( सालेम, मद्रास )

शक ८०० = सन् ८७८, कन्नड

किलेमं मारियम्मन देवालयके श्रांगे पदे हुण् स्तम्मपर

[ इस लेखमें पल्लव महेन्द्र नोलम्ब-द्वारा किसी जैन मन्दिरके लिए दान दिये जानेका निर्देश है । इस लेखका समय शक ८००, विलम्बि संवत्सर था । ]

[ इ० म० सालेम ८१ ]

६०

कोप्पल ( रायचूर, मैसूर )

कन्नड, शक ८११ = सन् ८९०

[ इस लेखकी तिथि कार्तिक पूर्णिमा, शक ८११, शोभन संवत्सर ऐसी है । इस समय दण्डनायक अम्मरसने कुपण तीर्थकी यात्रा की तथा महासामन्त कदम्बवंशीय अलियमरस-द्वारा निर्मित वसदिके लिए कुछ दान दिया था । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १५९ पृ० ४१ ]



६१

धर्मपुरी ( सालेम, मद्रास )

शक ८१८ = सन् ८९३, कन्नड

मल्लिकार्जुन मन्दिरके आगे एक स्तम्भपर

[ राजा महेन्द्राग्रि राज नोलम्बके समय शक ८१५ मे यह लेख लिखा गया । इसमे निबियण्ण और चण्डियण्ण-द्वारा मलमघ, सेनावय, पोगरिय-गणके आचार्य विनयसेन सिद्धान्तभट्टारके शिष्य कनकमेन सिद्धान्तभट्टारको मूलपल्लि ग्राम दान देनेका उल्लेख है । ]

[ इ० म० सालेम ७४ ]

६२

सित्तन्नवासल ( पुदुकोट्टै, मद्रास )

९वीं सदी, तमिळ

[ यह लेख पाण्ड्य राजा अवनिपशेखर श्रीवल्लभके समयका है । इलगातमन् ( इसीका नाम मदिरै आशिरियन् भी था ) द्वारा अन्तर्मण्डप-का जीर्णोद्धार तथा बाह्य मण्डपका निर्माण किये जानेका इसमें उल्लेख है । इस मन्दिरको अरिवन् कोयिल् ( अर्हन्मन्दिर ) कहा गया है । इस गुहा-मन्दिरके बाहरी भागपर कई यात्रियोंके नाम खुदे हैं जिनकी लिपि ७वीं सदीकी है । ]

[ रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १६७-१६९ रि० सा० ए०  
१९४०-४१ क्र० २१५ पृ० ९९ ]

६३

द्वेव्वलगुप्पे ( मैसूर )

९वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्तिश्रीनरसीगैरे अप्पोर् दुग्गमार

२ कोयिल्वसदिगे अरुगण्डुगव्वेदे मण् कोट्टर्

- ३ अरमण्डमेगालुमगोकेमोगेयु ओड्डिपा-
- ४ डियुं गोयियन्दम्मगलरुगण्डुग वेदेन्नेल् मण्कोट्टर्
- ५ इदानलित्तु केडिसिदोनोक्कल् केत्तुग पंचम-
- ६ हापात्तकनक्कवन् मक्कलु साग-
- ७ वसदियान्केय्दोन् नारायण पे-
- ८ रुन्तच्चन्

[ यह लेख ९वीं सदीकी लिपिमें है । नरसीगेरे अप्पोर् दुग्गमार ( जो गंगवंशका राजपुत्र था ) द्वारा एक जिनमन्दिर ( गोयिल्वसदि ) को ६ खण्डुग भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इतनी ही भूमि अरमण्डमेगालु, अगोकेमोगे, ओड्डिपाडि इन ग्रामोंके निवासियों-द्वारा तथा गोयिन्दम्म-द्वारा दान दी गयी थी । श्रेष्ठ शिल्पकार नारायणने इस वसदिका निर्माणकार्य किया था । ]

[ ए० रि० मै० १९३२ पृ० २४० ]

६४

मोटे वेन्नूर ( धारवाड, मैसूर )

९वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख ९ वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें किसी वसदिके लिए चन्द्रनन्दि भट्टारको भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । इस लेखकी स्थापना इन्दर पिट्टम्मके सेनवीव कुण्डमय्य-द्वारा की गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १११ पृ० १२९ ]

६५

कलकत्ता ( नाहर म्युजियम )

९वीं सदी, कन्नड

- १ श्री जिनवल्लभन सज्जन
- २ मागियवेय माडिसिद्
- ३ प्रतिमे

[ यह लेख पीतलकी चौबीसतीथवरमूर्तिके पादपीठपर है । लिपि ९वीं सदीकी है । यह मूर्ति जिनवल्लभको स्वजन ( पत्नी ) भागियवे-द्वारा स्थापित की गयी थी । लिपिसे स्पष्ट होता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित हुई थी । ]

[ ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५० ]

६६-६७

तिरुनिडकोण्डे ( मद्रास )

९वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें कहा है कि तिरुनरुगोण्डेके किलेप्पल्लि ( जैन मन्दिर ) का चतुर्मुगतिम्बकोयिल् ( चतुर्मुख वसति ) तथा पूर्वका सभामण्डप तलक्कूडि निवासी विसैयनल्लूल्लान् कुमरन् देवन्ने बनवाया था । लेखकी लिपि ९वीं सदीकी है । यहीके अय दो भागोंमें इसी समयकी लिपिमें वाणकोवरैयर् तथा आरुलगपेरमान्का उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०६-७ पृ० ६६ ]

६८-६९

तिरुनिडकोण्डे ( मद्रास )

९वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें नारियप्पाडि निवासी शिगणार पेरियवडुगणार्-द्वारा दो जैन पल्लियो ( मन्दिरों ) के लिए १० पोण् ( मुद्राएँ ) दान दिये जानेका निर्देश है । यहीके एक अय लेखमें नारियप्पाडि निवासी पेरियन-क्कनार्के पुत्र ( नाम लुप्त ) द्वारा भी कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । लिपि ९वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०८-९ पृ० ६६ ]

७०

कीरप्पावकम् ( चिंगलपेट, मद्रास )

९वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें कीरप्पावकम्के उत्तरमें देशवल्लभ जिनालयका उल्लेख है। इसका निर्माण यापनीय संघ कुमिलिगणके महावीरगुरुके शिष्य अमरमुदलगुरु-द्वारा किया गया था। लिपि ९वीं सदीकी है। ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० २२ पृ० १० ]

७१

वेगूर ( बंगलोर, मैसूर )

९वीं सदी, कन्नड

[ इस निसिधिलेखमें मोन भट्टारके शिष्य.....न्दिभट्टारके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि ९वीं सदीकी है। यह लेख नागेश्वर मन्दिरमें लगा है। ]

[ ए० रि० मै० १९१५ पृ० ४६ ]

७२

वेलगाँव ( मैसूर )

९वीं-१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख नेमिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना 'राष्ट्रकूट वंशरूपी समुद्रके लिए चन्द्रके समान' मणिचन्द्रके गुरु नेमिनाथ ( नेमिचन्द्र ? ) द्वारा की गयी थी। ]

[ रि० आ० स० १९२८-२९ पृ० १२५ ]

७३

अलगरमलै ( मदुरा, मद्रास )

वट्टेलुत्तु लिपि—९वीं-१०वीं सदी

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके समीप खुदा है ]

( मूल- ) १ श्री अच्चणं — २ दि श्रेयल्

[ आर्यनदि आचार्यका यह नामोल्लेख है । त्रिपि ९वी-१०वी सदी-की है ।

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ३९६ पृ० ६२ ]

७५-७५

चिन्हहनसोमे ( मैसूर )

१०वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

[ इस निसिधिलेखमें मूलमघ दसिगण-पनसोमे शाखाके श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिभरणका उल्लेख है । यह लेख १०वीं सदीके प्रारम्भका है तथा इस समय रामेश्वर मंदिरमें लगा है ।

यहीके एक अन्य निसिधिलेखमें नागकुमारकी पत्नी जङ्गियम्बेके समाधिभरणका उल्लेख है । समय १०वीं सदीके प्रारम्भका है । ]

[ ए० रि० मै० १९१४ पृ० ३८ ]

७६

चिन्हहनसोमे ( मैसूर )

१०वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

- |                      |                             |
|----------------------|-----------------------------|
| १ एर्य समु-          | २ इवेष्टितधरात-             |
| ३ लम प्रतिपालिसु     | ४ तुमिस्तेरेग म-            |
| ५ हारिमण्डलिक-       | ६ रि वेमकश्ये विला-         |
| ७ सयैल्गेय म-        | ८ रेवकरुनेन्ने-             |
| ९ निसल आलिपोरी       | १० स्तितसन्ध्यरिन्दु वन्दे- |
| ११ रग समन्तु क-      | १२ हनेलेयदेवर               |
| १३ पादपयोस्ह-        | १४ गलाल् ॥ स्थावरज-         |
| १५ गमतीर्थ भावि-     | १६ सि पेल्लागलोरेदे गो-     |
| १७ म्मटदेवर् स्थावर- | १८ तीर्थ वरुनेलेदेव-        |
| १९ रू भूजलयदोलगे     | २० जगमतीर्थ ॥               |

२१ वेल्देवं वरेदं

२२ इल्वेडे मल्लाचा-

२३ रि ॥

[ इस लेखमें ( गंग राजा ) एरेयके समय एलाचार्यके समाधिमरणका तथा उनके शिष्य कल्नेलेदेव-द्वारा उनकी निमिषिकी स्थापनाका उल्लेख है । गोम्मटदेवको स्थावरतीर्थ तथा कल्नेलेदेवको जंगमतीर्थ कहकर उनकी प्रशंसा की है । लेख १०वीं सदीके प्रारम्भका है । ]

[ ए० रि० मै० १९१४ पृ० ३८ ]

७७

वन्दलिके ( मैसूर )

शक ८२४ = सन् ९०२, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट राजा कृष्ण २ अकालवर्षके समयका है । महामान्त वकेयरसके पुत्र लोकटेयरसके अधीन पेगडे विट्टय्य-द्वारा शक ८२४ में वन्दलिकेमें एक वसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है । लोकटेयरसने इस वसदिके लिए नागर खण्ड ७० विभागका दण्डिपल्लि ग्राम विट्टय्यको दान दिया था । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ३८ ]

७८

असुण्डि ( मैसूर )

शक ८४७ = सन् ९२५, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् गोविन्द ( चतुर्थ ) नित्यवर्षके समय शक ८४७, पार्थिव संवत्सरमें लिखा गया था । इसमें नागय्य द्वारा एक जिनालयका निर्माण तथा उसके लिए कुछ भूमिदान किये जानेका उल्लेख है । यह दान वंकापुरके धोरजिनालयके प्रमुख चन्द्रप्रभ भट्टारके शासनकालमें दिया गया था । ]

( मूल कन्नडमें मुद्रित )

[ सा० इ० इ० ११ पृ० २० ]

७६

हलहरवि ( बेल्लारी, मैसूर )

शक १५४ = सन् ९३२, कन्नड

[ यह लेख शक ८५४ पायिव सवत्सर ( यह वपनाम गलत है ) का है । इसमें राजा नित्यवपक राज्यकालमें कन्नरदेवकी रानी चन्दियब्बे द्वारा नन्दवरमे एक जैन वसडिका निर्माण तथा उसके लिए कुछ करोका उत्पन्न पद्मनदि आचार्यको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५४० पृ० ५२ ]

८०

कोणल ( रायचूर, मैसूर )

शक ८६२ = सन् ९४०, कन्नड

[ यह लेख जिनशामनकी प्रशसामे शुरू होता है । तिथि शक ८६२, विहारि सवत्सर ऐसी दी है । अथ विवरण प्राप्त नहीं । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९६ पृ० ३७ ]

८१

विजापुर ( उदयपुरके समीप, राजस्थान )

सवत् ९९६ = सन् ९४० तथा सवत् १००३ = सन् ९९७

संस्कृत नागरी

१ जप्रस्तव । परिशामनु ना परा(थल्या)पना जिना ॥१  
 ते व पातु(निना)विनाभमम(ये यत्पा)दपञ्चोन्मुखप्रग्यामरय-  
 मयूय(शे)खरनरश्रेणीषु विम्बोदयात् । प्रायैकादशमिर्गुण दश-  
 शती शक्रस्य शुभद्दशा कस्य स्याद् गुणकारका न यदि वा  
 स्वच्छात्मना सगम ॥२

- २ .....नामत्करोलो(१)शोमितः । सुगे(खर).....लौ मूर्ध्नि रुढो मही-  
भृतां ॥३॥ अभिविभ्रट् रुचिं कांतां सावित्रीं चतुराननः । हरिवर्मा  
वमूवात्र भूविभुभुवननाधिकः ॥(४) सकललोकावलोकनपंकजस्फुर-  
दनंबुदवालदिवाकरः । रिपुवधूवदनंदुहृतद्युतिः
- ३ समुद्रपादि विदग्धनृप(स्ततः) ॥(५)स्वाचार्यैर्यो रुचिरवच(नैर्वा)-  
सुदेवामिधानैर्वोध नीतां दिनकरैर्नारजन्माकरो व । पूर्व जैनं  
निजमिव यशो (कारचद् ह-)स्तिकुंड्यां रम्यं हर्म्यं गुरुहिमगिरंः  
शृंगशृंगारहारि ॥६॥ दानेन तुलितवल्लिना तुलादिदानस्य येन  
देवाय । भाग(द्वयं)व्यतीर्यत भागश्चा -
- ४ (चार्यव)र्याय ॥(७) तस्माद्भू(रुद्र)सत्त्वो मंसटाख्यो महीपतिः ।  
समुद्रविजयो इलाध्यतरवारिः सद्गुणिकः ॥८॥ तस्माद्समः सम-  
जनि (ममस्त)जनजनितलोचनानंदः । ध(व)लो वसुधाव्यापी  
चंद्रादिव चंद्रिकानिकरः ॥(९) मंक्त्वावाटं घटाभिः प्रकटमिव मदं  
मेदपाटे मटानां जन्त्ये राजन्य -
- ५ जन्त्ये जनयति जनताजं रणं मुंजराजे । (श्री)-माणे (प्र)णष्टे हरिण  
इव मिया गूर्जरंगे विनष्टे तस्मैन्यानां शरण्यो हरिरिव शरणे यः  
सुराणां वभूव ॥(१०) श्रीमद्दुर्लभराजभृभुजि भुजैर्भुजत्यमंगो  
भुवं दंडैर्भण्डनशाण्डचंडसुमर्दस्तस्याभिभूतं विभुः । यो दैत्य-  
रिव तारक -
- ६ प्रभृतिभिः श्रीमान् महेन्द्रं पुरा सेनानीरिव नातिपांरुपपरोर्नैपीत्  
परां निर्वृतिं ॥(११) यं मूलादुदमूलयद् गुह्यलः श्रीमूलराजो  
नृपो दर्पाधो धरणीवराहनृपतिं यद्दद् द्विपः पादपं । आयातं सुवि  
कांदिशांकममिक्त्रो यस्तं शरण्यो दधौ दंप्रायामिव रुढमृढमहिमा  
कोलो महीमंडलं ॥१२॥
- ७ इत्थं पृथ्वीमर्तुमिनाथमानैः सा.....सुस्थितैरास्थितो यः । पाथोनाथो  
वा विपक्षात् स्वप(क्षं)रक्षाकांक्षै रक्षणे वदकक्षः ॥(१३) दिवा-



करस्येव करं कर्त्रे करान्ति नृपकदम्बकन्य । अशिथ्रियतापहतो  
रुताय यमुन्नत पादपयज्जनोधा ॥ (१४) धनुर्धरशिरोमणेरमलधर्म-  
मन्यम्यता जगा -

८ म जलप्रेर्गुणो (गु)नसुप्य पार पर । मर्मागुरवि ममुग्मा सुमुख  
मार्गणाना गणा मता चरितमद्भुत सकलमेव लोकतर ॥ (१५)  
यात्रासु यम्य त्रियदाणविपुर्विदोषान् बलान्तरमश्वरस्यातमहीरजामि ।  
तेजोनिरुचिन्मनेन त्रितिर्जित्वाद् भास्वान् प्रिलजित इवानितरा  
तिरोभन् ॥ १६

९ न कामना मनो धोमान् ध लता दधी । अनन्योद्धार्यमकार्य-  
मारपुर्धोर्धतोदि य ॥ (१७) यन्तेजोमिरहृकर कर्णया शौदा-  
दनि शुद्धया मीप्सो वचनचिनेन वचसा धर्मेण धर्मात्मज ।  
प्राणेन प्रलयानिलो बलमिदो मन्त्रेण मन्त्री परो रूपेण प्रमदाप्रियेण

१० मदनो दानेन क(र्णो)भवन् ॥ (१८) मुनयतनय राज्ये बालप्रमाद  
मनिष्ठित्त परिणतवया नि यगो या बभूव सुधी स्वय कृतयुग-  
कृत कृत्वा कृत्य कृतमचमन्तृर्तारकृत सुकृती नो कालुष्य  
करोति कलि सता ॥ (१९) कालं कलावति किलामलमतदीय  
लोका विशोक्य कलनातिगत गुणा -

११ य । (पार्थी)त्रिपाथिः(गुणा)न गणयतु मन्थानेक व्यधाद् गुण-  
निधिं यमितीव वेषा ॥ २० गोचरयानि न वाचो तच्चरि । दष्ट-  
द्यद्विकारचर । वाचस्पतर्वचस्वी को वान्यो वर्णयन् पूर्ण ॥ (२१)  
राजधानी भुवो मनुस्तस्यास्ते हन्ति कुण्डिका । अलका धनदस्येव  
धनाद्यन्तमेविता ॥ (२२) नीहारहारहरहाम(हि)—

१२ (मा) शुहारि (मा) र्का(र) चारि (भु)वि राजप्रतिज्ञारण ।  
वान्तव्यमव्यजनचित्तमम (म)भवान् मतामनपदपट्टारपर परंपा ॥  
(२३) धौतकल्धौतकलशाभिरामरामाम्भना इव न यम्या ।

संस्थपरिष्यपहाराः सदा सदाचारजनतायां ॥ (२४) समदमदना  
लीलालापाः प—

१३ नाकुलाः कुवलयदृशां मंदश्यते दृशस्तरलाः परं । मलिनितमुखा  
थत्रोद्भृताः परं कठिनाः कुचा निविडरचना नी(वै) वंधाः परं  
कुटिलाः कचाः ॥ (२५) गाढोत्तुंगानि सार्वं शुचिकुचकलशैः  
कामिनीनां मनोज्ञैर्विस्तीर्णानि प्रकायं सह घनजवनैर्देवतामंदि-  
राणि । भ्राजन्ते दभ्रशुभ्राण्य—

१४ तिगयसुभगं नेत्रपात्रैः पवित्रैः सत्रं चित्राणि धात्रीजनहृतहृदयै-  
विभ्रमैर्यत्र मत्रं ॥ (२६) मधुरा घनपर्वाणो हृद्यरूपा रसा-  
धिकाः । यत्रेक्षुवाटा लोकेभ्यां नालिकत्वाद् भिदंलिमाः ॥  
(२७) अस्यां सूरिः सुराणां गुरुरिव गु(रु)भिर्गौरवाहो गुणौघै-  
र्भूषानां त्रिलोकोवलयविल—

१५ सितानंतराननर्कातिः । नाम्ना श्रीशांतिमद्रोभवदभिमवितुं मास-  
(या)वासमाना कामं कामं सम(र्था) जनितजनमनःसमदा यस्य  
मूर्तिः ॥ (२८) मन्येमुना मुनीन्द्रेण (म)नोभू रूपनिर्जितः ।  
स्वप्नेपि न स्वरूपेण समगंस्तातिलज्जितः ॥ (२९) प्राद्यत्पद्मा-  
करस्य प्रकटितविकटाशेषमात्र—

१६ स्य सूरः सूर्यस्यैवामृतांशुं स्फुरितशुभरुचिं वासुदेवामिधस्य ।  
अध्यासीनं पदव्यां यममलविलसज्ज्ञानमालोक्य लोको लोका-  
लोकावलोकं सकलमचकलत् केवलं संभवीति ॥ (३०) धर्माभ्या-  
सरतस्यास्य मंगतो गुणसंग्रहः । अमग्नमार्गणेच्छस्य चित्रं  
निर्वाणवांछना ॥ (३१)

१७ कमपि सर्वगुणानुगतं जनं विधिरयं विदधाति न दुर्विधः । इति  
कलंकनिराकृतये कृता यमकृतेव कृताखिलसद्गुणं ॥ (३२)  
तदीयवचनान्निजं धनकलत्रपुत्रादिकं विलोक्य सकलं चलं दल-

मिमानिलादो(लि)त । गरिष्ठगुणगोप्यद् समुददीधरद भोरमोर  
दारमतिमुदर प्रथम—

१८ तीर्थकृन्मदिर ॥ (३३) ( रक्त ) वा रम्यरामाणा मणितारा-  
वराजित । इदं मुसमिवाभाति भासमानविरालक ॥ (३४)  
चतुरस्र (पट्टज) तथा(डु)निक शुभशुक्तिकरोदभ्युत्तमिदं बहु-  
भाजनराजि जिनायतन प्रविराजति भोजनधर्मसम ॥ (३५)  
विदग्धनृपकारिते जिनगृहे—

१९ तिर्जोणे पुन सम कृतसमुद्घृताविह भवानुधिरात्मन । प्रणि-  
ष्ठित सोप्यथ प्रथमतीर्थनाथाकृति स्वकातिमिव मूर्ततामुपगता  
सिताशुद्युति ॥ (३६) शात्याचार्यैश्चिपचाशे सहस्त्रे शरदामिय  
मात्रशुक्लत्रयोदश्या सुप्रतिष्ठे प्रतिष्ठिता ॥ (३७) विदग्धनृपति  
पुरा यदतुल तुलादे—

२० दंदौ सुदानमवदानधीरिदमपीपलञ्जाद्भुत । यतो धवलभूपति-  
जिनपते स्वय सात्म (जो) रघटमय पिप्पलोपय (दहू) पक  
प्रादिशत् ॥ (३८) यावच्छेषशिरस्थमंकरजतस्थूणास्थिताभ्युल्ल-  
सत्पातालानुलमद्वपामलतुलामालयते भूतल । तावत्ता—

२१ रवामिरामरमणी(ग)धर्वधीरध्वनिधर्मन्यत्र धिनोतु धार्मिकधिय -  
(स)द्धूपवेलावि(धौ) ॥ (३९) सालकारा समधिहरसा साधु-  
सधानबधा श्लाघ्यश्लेषा कलितविलसत्तद्विताख्यातनामा । सद्-  
वृत्ताख्या रचिरविरतिधुर्यमाधुर्यवर्या सूर्याचार्यैर्व्यरचिरमणीवा—

२२ नि(रम्या) प्रशस्ति ॥ (४०) सवत् १०५३ माघशुक्ल १३  
रविदिने पुष्यनक्षत्रे श्रीरूपमनाथदेवस्य प्रतिष्ठा कृता महाध्वज-  
श्रारोपित ॥ मूलनायक ॥ नाहकजिंदजसशपूरभद्रनागपोचि-  
(स्थ)श्रावकगोष्ठिकैरक्षोपकर्मक्षयार्थ स्वसतानमवाब्धितर—

२३ (गार्थ) च न्यायोपार्जितवित्तेन कारित ॥ वृ॥ परवादिदपंमथन

हेतुनयसहस्रमंगकाकीर्ण । भव्यजनदुरितशमनं जिनेन्द्रवरशासनं  
जयति ॥ (१) आसीद् धोधनसंमतः शुभगुणो भास्वत्प्रतापो-  
ज्वलो वित्पटप्रतिमः प्रभावकलितो भूपोत्तमांगार्चितः ।  
योपित्पी—

२४ नपयोधरांतरसुत्वाभिप्त्रंगमंलालितो यः श्रीमान् हरिवर्म उत्तम-  
मणिः सद्दंशहारं गुरौ ॥ (२) तस्माद् बभूव भुवि भूरिगुणोपपेतो  
भूप्रभूतमुकुटार्चितपादपीठः । श्रीराष्ट्रकूटकुलकाननकल्पवृक्षः श्री-  
मान् विदग्धनृपतिः प्रकटप्रतापः ॥ (३) तस्माद् भूप—

२५ गणा...तमा (कीर्तेः) परं नाजनं संभूतः सुतनुः सुतोतिमतिमान्  
श्रीममद्यो विश्रुतः । येनास्मिन् निजराजवंशगगने चन्द्रायितं  
चारुणा तेनेदं पितृशासनं समधिकं कृत्वा पुनः पालयते ॥ (४)  
श्रीवलमद्राचार्यं विदग्धनृपपूजितं समभ्यर्च्य । आचंद्रार्कं यावद्-  
दत्तं भवते नया—

२६ ....॥ (५) (श्रीहस्ति)कुण्डिकायां चैत्यगृहं जनमनाहरं भक्त्या ।  
श्रीमद्वलमद्रगुरोयंद्विहितं श्रीविदग्धेन ॥ (६) तस्मिन् लोकान्  
समाहूय नानादेशसमागतां । आचंद्रार्कस्थितिं यावच्छासनं  
दत्तमक्षयं ॥ (७) (रु)पक एको देवो बहतामिह विंशतः प्रवह-  
णानां । धर्म—

२७ ....क्रयविक्रये च तथा ॥ (८) संभूतगंध्या देयस्तथा बहंत्याश्च  
रूपकः श्रेष्ठः । वागे वष्टे च कर्पो देयः सर्वेण परिपाट्या ॥ (९)  
श्रो(मट्ट)लोकदत्ता पत्राणां चोल्लिका त्रयोदशिका । पेल्लकपेल्लक-  
मेतद् धूतक(रैः) शासने देयं ॥ (१०) देयं पलाशपाटकमर्यादा-  
वर्तिक—

२८ .... । प्रत्यरव(दं) धान्यादकं तु गोधूमयवपूर्णं ॥ (११) पेट्टा च  
पंचपल्लिका धर्मस्य विशोपकस्तथा मारं । शासनमेतत्पूर्वं विदग्ध-

राजेन सद्धत्त ॥ (१२) (कर्मा)पक्राम्यकुकुमा(पुर)माजिषादिमव-  
मादस्य । (द)श दश पलानि भारे देयानि विक्र—

२९ ॥ (१३) आदानादेतस्माद् मागद्वयमर्हत् कृत गुरणा ।  
शेषस्तृतीयभागो विद्याधनमात्मनो विहित ॥ (१४) राजा  
त-पुत्रर्षीत्रैश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च । गुरुदेवयत्न रक्ष्य नोपेक्ष्य  
द्वितमीप्सुमि ) ॥ (१५) दत्ते दाने फल दानात् पालिते पालनान्  
फल । (मक्षितो)पेक्षिते पाप गुरुदे—

३० (वधने)धिक ॥ (१६) गोधूममुङ्गयवल्बणान्(का)देस्तु मेयजा-  
तस्य । द्रोण प्रति माणकमेकमत्र सर्वेण दातव्य ॥ (१७) बहु-  
मिर्मुखा भुक्ता राजमि सारादिमि । यस्य यस्य यदा भूमि-  
स्तस्य तस्य तदा फल ॥ (१८) रामगिरिनदकलिते विक्रमकाले  
गते तु शुचिमा(मे) ।

३१ (श्रीम)द्वलमद्रगुतोर्विदग्धराजेन दत्तमिद ॥ (१९) नवसु शतेषु  
गतेषु तु पण्यवतीसमधिक्यु भाषम्य । कृष्णैकादश्यामिह सम-  
र्थित भमदनृपेण ॥ (२०) यावद् भूधरभूमिमानुमारत भागीरथी  
भारतो भाम्ब(दमा)नि भुजगराजमव(न) आजद्मवामोक्षय ।  
ति(ष्ठ)—

३२ यत्र सुरामुरेद्रमहित (जै)न च सच्छामन श्रामत्कशवसूरि-  
सतनिवृत्ते तावत् प्रभूयादिद ॥ (२१) इद चाधयधममाधन  
शासन श्रीविदग्धराजा दत्त ॥ सवत् ९७३ श्रीममट(राज्ञा  
समर्थ)त सवत् ९९६ । सूत्रधारोद्भव(शत)योगेश्वरेण उत्कीर्णय  
प्रशस्तिरित ।

[ इस दृष्टान्त शिलालेखके दो भाग हैं । दूसरा भाग जो २३वीं पंक्तिसे शुरू होता है समयकी दृष्टिसे पहलका है । इसमें राष्ट्रकूट कुलवे राजा हरिवर्मके पुत्र विदग्धराजका वर्णन किया है । आचार्य

वासुदेवके उपदेशसे विदग्धराजने राजधानी हस्तिकुण्डिकामें ऋषभदेवका मन्दिर बनवाया था । इसने अपनी मुवर्णतुलाका दो तिहाई भाग इस मन्दिरके लिए तथा एकतिहाई भाग गुरुके लिए दान दिया था । विदग्धराजने इसी मन्दिरके लिए हस्तिकुण्डीके व्यापारियोंके कर्क करोंका उत्पन्न बलभद्र गुरुको दान दिया था । इस दानको तिथि आपाद्, संवत् ९७३ थी । विदग्धराजका पुत्र ममट हुआ । इसने उक्त दानको माघ कृष्ण ११, संवत् ९९६को पुनः सम्मति दी । ममटका पुत्र बवल हुआ । इसकी वीरताका विस्तृत वर्णन लेखमें किया है । जब मुंजराजने मेदपाटकी राजधानी आघाटकी नष्ट किया तब वहाँके राजाको बवलने आश्रय दिया था । दुर्लभराजके आक्रमणने महेन्द्रका रक्षण इसीने किया तथा मूलराजके द्वारा पराजित धरणीवराहको भी आश्रय दिया । बृद्धावस्थामें बवलने अपने पुत्र बाल प्रसादको सिंहासनपर स्थापित किया । इसके समय संवत् १०५३ में वासुदेवके शिष्य शान्तिभद्रसूरिके उपदेशसे हस्तिकुण्डीकी गोष्ठी ( व्यापारियोंके समूह ) ने विदग्धराज-द्वारा निर्मित मन्दिरका जीर्णोद्धार किया । गोष्ठीके सदस्योंके नाम पंक्ति २२में गिनाये हैं । लेखके पहले भागमें जो ४० श्लोकोंकी प्रशंक्ति है वह सूर्याचार्यने लिखी थी । लेखके अन्तमें केगवसूरिका उल्लेख है ]

[ ए० ड० १० पृ० १७ ]

८२

चिलम्पक्कम ( जि. उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् ९४५, तमिल

नागनाथेश्वर मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलालेख

[ यह लेख चोल राजा मदिरैकोण्ड परकैसरिवर्मन् ( परान्तक १ ) के राज्यके ३८ वें वर्षमें लिखा गया था । तिरुप्पान्मलैके आचार्य अरिष्टनेमिकी एक शिष्याके द्वारा एक कुर्था बनवानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ ड० म० उत्तर अर्काट २१६ ]

८३

## नरंगल ( मैसूर )

शक ८७३ = सन् ९५०, काठ

[ यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अकालवर्ष कृष्णगजदेव ( तृतीय ) के सामन्त गणवशीय धूनय्य पैमाडिके समयका है । इनकी रानी पद्मवर्मि-  
द्वारा निर्मित बसदिके दानशालाके लिए नमवर मारसिधय्यने एक  
तालाब अर्पित किया था । यह दान कोण्डकुन्दान्वय देसिग गणके महेन्द्र  
पण्डितके प्रशिष्य तथा वीरगन्धि पण्डितके शिष्य गुणवन्द पण्डितको  
सौंपा गया था । दानका तिथि पौष शु० १० रविवार, उत्तरायण  
सक्रान्ति, शक ८७३ साधारणमवत्सर ऐसी दी है । ]

[ भूल वनडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० २३ ]

८४

## चेमुलयाड ( करोमनार, आंध्र )

१० वीं सत्री—उत्तरार्ध ( लगभग सन् ९६० )

सस्कृत-कन्नड

[ इस मूर्तिलेखमें चालुक्य राजा बहेग-द्वारा गौडमधके आचार्य सोमदेव-  
सूरिके लिए एक जिनालय बनवाये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५८ ]

८५

## घारवाड ( मैसूर )

शक ८८४ = सन् ९६२, कन्नड

[ यह ताम्रपत्र गंग राजा मारसिह ( द्वितीय ) के समय पौष कृष्ण ९  
मंगलवार, शक ८८४, दुन्दुभि संवत्सर, उत्तरायण सक्रान्तिके दिन दिया  
गया था । इसमें राजा-द्वारा मेल्पाडिके स्वधामारसे कोंगल देशमें

स्थित कादलूरु ग्राम एलाचार्यको अर्पण किये जानेका उल्लेख है। उसकी माता कल्लव्वे-द्वारा निर्मित जिनालयके लिए यह दान दिया गया था। एलाचार्यकी गुरुपरम्परामे तिम्न नाम दिये हैं—सूरस्थ गणके प्रभाचन्द्र योगीश—कल्लेदेव—रविचन्द्रमुनीश्वर—रविनन्दिदेव—एलाचार्य। ] [ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ए० २३ पृ० ७ ]

८६

कुडलूर ( मैसूर )

शक ८८४ = सन् ९६२, संस्कृत-कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमे गंग राजा मारसिंह-द्वाग मुंजार्य अपर नाम वादिवंघल भट्टको चैत्र शु० ५ शक ८८४, रुधिराद्वारि संवत्सरके दिन गुरुदक्षिणाके रूपमे पूनाट्टु प्रदेशका वागियूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। मुंजार्य परागर गोत्रका ब्राह्मण था तथा 'स्याद्वादोदयशैल-भास्कर-स्याद्वादरूपी उदयपर्वतके लिए सूर्यके समान था। ]

[ ए० रि० मै० १९२१ पृ० १८ ]

८७

कोकिवाड ( बारवाड, मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख जिनगासनकी प्रशंसाने प्रारम्भ होता है। राष्ट्रकूट राजा खोट्टिग तथा उनके मामन्त गंगवंशीय सत्यवाक्त्र कोंगुनिवर्म धर्म-महाराजका इसमें उल्लेख है। ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ८९ पृ० ३५ ]

८८

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक ८९३ = सन् ९७१, कन्नड

[ यह लेख बहुत घिस गया है। गंग राजा मारसिंहदेवके समय



कातिक शु० (?) शक ८९३, प्रजापति सवत्सरके दिन शसजिनालयको कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३० पृ० १६३ ]

८६

दालबुलपाडु ( जि० कडप्पा, आन्ध्र )

१०वीं सदी ( लगभग सन् १७२ ), सस्कृत—कन्नड

भग्न जैन मन्दिरमें स्थित मूर्तिके पादपीठपर

[ इस लेखमें राष्ट्रकूट सम्राट् नित्यवर्ष ( इद्र ४ )-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेकके लिए यह पादपीठ बनवानेका निर्देश है । ]

[ इ० म० कडप्पा १४८ ]

८७

विडिगनवले ( मैसूर )

शक ८९७ = सन् ९७५, कन्नड

पहली ओर

१ मदमस्तु जि-

२ नशासना-

३ य श्रीमत्

४ मङ्गवर्ध ८-

५ ९७य यु-

६ यमवासर-

७ द आपाद-

८ मासद यु-

७ द दशमियु

१० सोमवार

११ बु स्वातिन-

दूसरी ओर

१२ अत्रमुमा

१३ गे अमृत्त-

१४ व्ये कन्तिय

१५ हरदु नोन्तु

१६ समाधि

१७ यि (मुद्रिपि)

१८ दरवर म-

१९ ककलनिमि-

२० तपरोप-

२१ कारिाल् प-

२२ अनन्दिमहा-

तीसरी ओर

२३ रकरवर्ग

२४ नेय

२५ ....

२६ निलिसिदर

[ यह लेख एक स्तम्भके तीन बाजुओंपर खुदा है । इसमें अमृतव्ये-  
कन्ति नामक महिलाके समाधि-मरणका तथा उसके पुत्र पद्मनन्दिभट्टारक-  
द्वारा इस स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है । तिथि आषाढ़ शु० १०, सोम-  
वार, शक ८९७, युवसंवत्सर, इस प्रकार दी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १९२ ]

९१

वेल्हट्टि ( धारवाड, मैसूर )

( शक ) ५५१ = सन् ९९०, कन्नड

[ जोगीवण्डि नामक पाषाणपर यह लेख है । अज्जरय्यके पेगडे  
आयतवर्मा-द्वारा निर्मित बसदिका इसमें उल्लेख है । वर्ष ९११ दिया है  
जो सम्भवतः शकवर्षका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २०४ पृ० ३८ ]

६२

वेडल ( जि० उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् ९०९, तमिल

आण्डारू मडम् नामक पहाड़ीकी एक गुहाके आगे

[ यह लेख चोल राजा राजकेसरिवर्मन्के १४ वें वर्षका है । इसमें  
गुणकीर्तिभट्टारके शिष्य कनकवीर कुरट्टिका तथा मादेवी अरिन्दमंगलम्का  
उल्लेख है । ]

[ इ० म० उत्तर अर्काट ७४४ ]

६३

खण्डगिरि—ललतेश्वरकेसरि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत-नागरी

१ ओं श्री उद्यांतकेसरि विजयराज्यसंवत् ५

- २ श्री कुमारपर्वतस्थाने निर्णवापि जिर्णं इमण
- ३ उद्योतित तस्मिन् थाने चतुर्विन्सति तीर्थंकर
- ४ स्थापित प्रणिष्ठा (का) ऐं ह (रि) ओप जमनदिक
- ५ श्रीपारम्यनाथस्य कमण्य

[ यह लेख राजा उद्योतकेसरीने ५वें वर्षका है । कुमारपर्वतकी वापी तथा मन्दिरोका जाणोद्वार करके चौबीस तीर्थंकरोंकी मूर्तियोंकी स्थापना-का इसमें उल्लेख है । कुमारपर्वत खण्डगिरिका पुराना नाम है । अन्तिम भागमें जसनदि ( यशोनदि )का उल्लेख हुआ है । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६६ ]

६४

खण्डगिरि—नवमुनि गुहा

१०वीं सदी, सस्कृत—नागरी

- १ ओ श्रीमदुद्योतकेसरिदेवस्य प्रवर्धमाने विजयराज्ये सवत् १८
- २ श्रीआर्यसवप्रतिवद्धप्रहकुलत्रिनिर्गतदेशीगणाचार्य श्रीकुलचन्द्र-
- ३ मट्टारकस्य तस्य शिष्यशुभचन्द्रस्य

[ इसका सारांश जे० शि० स० भाग २में क्रमांक २४५में दिया है । किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हुआ था । इसमें राजा उद्योतकेसरी-के १८वें वर्षमें दर्शगणके आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख किया है । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६५ ]

६५

खण्डगिरि—नवमुनि गुहा

१०वीं सदी, सस्कृत—नागरी

- १ ओ श्रीआचार्यकुलचन्द्रस्य तस्य
- २ शिष्य खल्लशुभचन्द्रस्य
- ३ छात्र विजो

[ इस लेखमे आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रके शिष्य विजो (?) का निर्देश है । ] [ ए० इ० १३ पृ० १६६ ]

६६

ईचवाडि ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

- १ ....वृत्तुग पेर्माडि तदपत्यण् पुरेयपं तत्सुत वीर
- २ ....राचमल्लनदितरमल्ल । अन्ता राचमल्लनिन्देरेयंगनातन मगं
- ३ ....नातन पुत्रं सैगोट्ट....राचमल्ल....
- ४ ....मिहुकदिरलेडद कय्योल् मदमातंगमनं पिदिदु निलिसिद ।
- ५ ....क्काणूरूगणद आचार्यावतारमेन्तेन्दोडे । दक्षिणदेशनिवासि ।  
गंगमहामण्डलिक....
- ६ ....नन्दिमट्टारकरं बालचन्द्रमट्टारकरं मेवचन्द्र त्रैविद्यदेवरं....
- ७ ....पेम्पं तलेदं गुणनन्दिदेव शब्दब्रह्म । अवरिं बलिकं अकलंक  
सिंहासनम....
- ८ ....मदमातंगरं बौद्धवादितिमिरपतंगरं सांख्यवादि कुलाद्रिवज्र-  
धरं नैयायिका....
- ९ सिद्धान्तवार्धिवर्धनमुधाकरं । सकलसाहित्यप्रवीणरं । मनोमव-  
भयरहितरं....
- १० श्रीमतु प्रमाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु अनवद्याचार्यर माधनन्दि-  
सिद्धान्त....
- ११ अवरं शिष्यरु । चतुरास्यं चतुरोक्तियं प्रभुतेयिन्दीशं गुणव्याप-  
कस्थितियं विष्णु सुशुद्धि वि—
- १२ सिद्धान्तविभूषणंगेनिसिदं श्रीमतुप्रमाचन्द्रमं । अवर नधमंरु ।  
नुतसिद्धान्त—

- १३ मप्रतिम तानेने पम्पुवेत्त सुदितोदात्तर जगद्वन्द्वर् ऊजितर-  
द्योतित—
- १४ मनोमनविशालहरनिदिलाक्ष वादिमदरदनिविदुष भेदिपमृग  
राज जयतु श्रुतकीतिबुध ।
- १५ वादिराज दलेनिसिद थोलु । अवर सधर्मरु । चारित्रचक्रि  
सम्यमधारि प्राणूर्गणा
- १६ शिष्यर । वरशास्त्राम्बुधिवर्धनहरिणाक वादिमद निरत  
तानेनलंसेद—
- १७ वारणवागि कीर्ति नर्तिसुबुदु पेम्पुवेत्त नतिमेरुगे दलागेमेबुदु  
सदगुण
- १८ नादि पिरिदु निस्तेजमैदिर्द नोदद 'प्रभुनेय ताल्दिर्ष  
वर
- १९ नुडिगलु सत्यमुवर्णभूषणगण मुरलगल करण्डक तनुतप
- २० धेनुप्रतिरूपम तलेदुदो मूजातवी धायोलु तापस
- २१ मुनिप रत्नाकर । इन्तनिमि नेगल्दाचार्य 'तिलकर नित-  
सन्न
- २२ वारिधिर्शातरोचि स्तुन्य नितपदाब्जद्वयभृग भुजबलगग
- २३ तम्म गगान्वयदवर पडिसडिसुत्त मरवेम नागि माडिमि
- २४ दत्ति तट्टिरे सर्ववाधापरिहारा केरेय केलगे नलवृत्ति
- २५ मारमिगननुज मन्द नक्षियगगक्षितिपालक तदनुज
- २६ बलि येम्पूम्म बमदि मूडलुगदे
- २७ गुडु नक्षियगगदेप एम्पूम्म आगदेयि तें
- २८ सिद्धान्तदेवर गुडु रक्कमगगं नक्षियगग सीमेयि तेंक
- २९ मूडणदेस नद म्पूळुगलु
- ३० मुनिचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुडु । भुजबलदि शत्रुमढीमुज  
( ३१ से ३६ तक पक्तियों घिस गयो हैं )

- ३७ तलप्रहारदोले....नू गुटदिन्दे मीण्डुवं....कबुंगु....  
 ३८ धर्ममहाराजाधिराजपरमेश्वर । कोलालपुरवरेश्वर । नन्दगिरिनाथ  
 सदगजेन्द्र....  
 ३९ मण्डलिकदेवेन्द्रं दर्पोद्धितारातिवनजवनवेदण्डं...  
 ४० देवं माडिसिद्धं....तीर्थद वसद्विचं....  
 ४१ ....चन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यर् मुख्यवागि विट्ट दत्ति....  
 ४२ नन्नियगंगदेवनं पट्टमहादेवि....  
 ४३ काणिकेयं नाडूरगलोलु पणवं कोट्टरा....

[ इस विस्तृत लेखकी पहली कुछ पक्तियाँ टूट गयी हैं तथा अन्य पंक्तियोंके बहुत-से अक्षर घिसे हैं । गंगवंशके राजा रक्कसगंग तथा नन्निय-गंगके समय यह लेख लिखा गया था । इनके द्वारा तट्टिकेरे ग्रामकी कुछ भूमि....चन्द्रसिद्धान्तदेवको दान दी गयी थी । लेखमे क्राणूरगणकी आचार्य-परम्परा इस प्रकार बतलायी है — ....नन्दिभट्टारक, वालचन्द्रभट्टारक, मेघचन्द्रत्रैविद्यदेव, गुणनन्दि शब्दब्रह्म, अकलंक, प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेव, माघनन्दिसिद्धान्तदेव, प्रभाचन्द्र ( द्वितीय ), उनके गुरुबन्धु श्रुतकीर्ति, — (यहाँ कुछ नाम घिसे गये हैं) । अन्तमे मुनिचन्द्र सिद्धान्तदेवके एक शिष्य-का उल्लेख है । राजा नन्नियगंगकी बंशावलीमे बूतुग पेमाडि, एरेयप्प, राचमल्ल, एरेयंग सैगोट्ट तथा राचमल्ल इनका उल्लेख किया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२३ पृ० ११४ ]

६७

दानबुलपाडु स्तंभलेख (जि० कटप्पा, आन्ध्र)

१०वीं सदी, संस्कृत-कन्नड़

पहला भाग

- १ पत्तिय वेसद्विद्ध-                      २ महितरनतिकोप-  
 ३ दिनिकि गेल्लु परिपा-            ४ लि(सि)दं । चतुर्दधि-

- ८ वलयमलमन- ६ तिरयनी दण्ड(ना)य-  
 ७ क श्रीविजय ॥(१) ८ तुरगधलमल-  
 ९ नाड्डिद करिधरे- १० य पिरियनर-  
 ११ (रि)य वल्लणिय । १२ धुरदेहे(यालि)रि-  
 १३ दु गेल्लु करद(मि) १४ करमरिदु रण-  
 १५ दोलनुपमकविय ॥(२) १६ कुपितवति श्रीवि-  
 १७ जये बलिकुन्ति- १८ लक नरेन्ददण्डाधि-  
 १९ पत्तौ । गिरिरगि(रि)वन- २० मवन जलमज-  
 २१ ल रिपुम(मू)द्व- २२ लमवल ॥(३)

## दूसरा भाग

- २३ वसुमतियोल- २४ गिल्देण्डु (दे)सगल  
 २५ कुसुकुहमनेयदि २६ माणद मत्त । (विम)-  
 २७ रद्वगर्माण्डक प- २८ सरिमिदुदु (की)ति ने-  
 २९ दननुपमकविय ॥(४) ३० आश्रितजनकत्पत-  
 ३१ रुविश्रुतरि(पु)नृप- ३२ तितृणदवानलमूर्ति ।  
 ३३ श्रीवनितास्मरपादा ३४ पानुस्तन बाहु म-  
 ३५ दिनी श्रीविजय ॥(५) ३६ चतुरदधिवलय-  
 ३७ वलयितवसुन्ध- ३८ रामिन्द्रशासनान् स-  
 ३९ रक्ष(नू) । श्रीविजय ४० दण्डनायक (जी)व  
 ४१ चिर दानधर्मनि- ४२ रतमनस्क ॥(६)  
 ४३ मगल भाहाधा ॥

## तीसरा भाग

- ४४ मदमस्तु मगवने (जि)नशासना(य) ॥  
 ४५ अट्टविधकर्ममलमनदु- ४६ वरिगोण्डु कोटिरे(ने)वुदे वगैयि ।

- ४७ (पु)ट्टिदनुदात्तमत्वं नेट्टने चित्तु ४८ धेन्द्रवन्धनरिर्विगोजम् ॥ (७)  
 ४९ तानरिट्टु तो(र)ट्टु नेट्टने मानि- ५० सवालावुदेंदु संन्यासनदोल् ।  
 ५१ मानसिके गिडदे कोण्डो(न)नून- ५२ सुग्वास्पदमनलूतियोल्  
 श्रीविजयं ॥ (८)  
 ५३ निर्गतमय नीनर(म)मर्ग- ५४ म नानोल्लेनेन्दु पेसि चिसु-  
 ५५ वं । मर्गद मांगमनुण्डपत्र- ५६ र्गकक्रडियिट्टोनरिदोननुप-  
 ५७ मकवियं ॥ (९) दण्डिन माम ५८ शिगे परमण्डलमल्लाडे  
 ५९ (म)र्वविक्रमतुंगं । दण्डिन वी- ६० रश्रीगाल्गण्डं श्रोदण्डनायकं  
 ६१ श्रीविजयं ॥ (१०) (च)ण्डपराक्र ६२ मनुरदरिमण्डलिकरनट्टि पि-  
 ६३ डिदु पतिगोपियुवाल्गण्ड प्रच-६४ ण्डनीभूमण्डलदोल् दण्डनायकं  
 ६५ श्रीविजयं ॥ (११) अनुपम- ६६ कविय सेनयोवं गु-  
 ६७ णवर्म वरेदं ॥

[ यह शिलालेख दण्डनायक श्रीविजयकी प्रशंसामें लिखा गया है । अरिर्विगोज, अनुपमकवि तथा सर्वविक्रमतुंग ये इसके विरुद्ध थे । यह वलिकुलमे उत्पन्न हुआ था तथा इन्द्रराजकी सेनाका पराक्रमी सेनापति था । इन्द्रराज ( तृतीय ) ही सम्भवतः यहाँ उल्लिखित है जिसका राज्य सन् ९१४ से ९२२ तक था । लेखके तीसरे भागमें कहा है कि श्रीविजयने समस्त वैभव छोड़कर संन्यास धारण किया था । यह लेख श्रीविजयके सेवक गुणवर्मनि लिखा था । ] [ ए० इ० १० पृ० १४७ ]

६८-६९

चोलवाण्डिपुरम् ( दक्षिण अर्काट, मद्रास )

१०वीं सदी, तमिल

[ यह लेख राजा गण्डरादित्य मुम्मूटि चोलके दूसरे वर्षका है । इसमें चेदि सिद्धवडवन् नामक ग्रामकी प्रशंसा है । उसे कोवलका स्वामी तथा



मल्लभकुलोद्भव कथा है । स्थानीय पहाडीपर उत्कीर्ण मूर्तियोंकी पूजाके लिए समने कुछ दान दिया था । कुरण्टिके गुणवीर मठारका भी इसमें उल्लेख है । उत्कीर्ण मूर्तिया महावीर, पार्श्वनाथ, गोम्मटदेव तथा पद्मावती की हैं । यहीँके एक अन्य लेखमें १०वीं सदीकी त्रिपिमें कहा है कि इन मूर्तियों ( तैवारम् ) का निर्माण बलि कोंगरेयर् पुत्तडिगलूने किया था । ]

[ रि० मा० ए० १०३६-३७ क्र० २५१-५२ पृ० ३४ ]

१००

### मसुलिपट्टम ताम्रपत्र ( बान्त्र )

१०वीं सदी, मरुत-तैलुगु

- १ व्याकुष्टरत्नचित्रायतशागंचापा यस्सेन्द्रकामुंकविनीरपयोद-  
वृन्दम् । निमंरमयात्रिव त्रिमा—
- २ नि स कृष्णकान्तिर्विष्णुदिशवन्दिशतु वोवचनत्रिरोक ॥ ( १ )  
स्वस्ति श्रीमता सकलभुवनसस्त्यमानमा—
- ३ नय्यसगोत्राणा हारातिपुत्राणा कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्याता-  
म्मातृगणपरिपालिताना स्वामि—
- ४ नहामेतपादानुध्याताना भगवच्चारयणप्रसादममासान्तिवरवराह-  
लाडनेक्ष—
- ५ णवशीकृतारातिमण्डलानामश्वमेगावमृयस्नानपवित्रीकृतवपुषा  
चालुक्याना कु—
- ६ लमलकरिणोम्मत्यात्रयवल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुम्भविष्णुवर्धननृप-  
तिरष्टादशवर्षाणि—
- ७ वेंगीदेशमपालयत् । तदा मनो जयमिहस्रयस्त्रिंशत्तम् । तनुजे-  
न्द्रराजनन्दनो विष्णुवर्धनो न—
- ८ व । तत्सूनुमंगियुवराज पचविंशतिम् । तत्पुत्रो जयमिहस्रयो-  
दश । तद्वर—

९ जः कोकिलिप्पण्मासान् । तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्धनस्तमुच्चाद्य  
सप्तत्रिंशतम् । तत्पुत्रो —वि

दूसरा पत्र : पहला भाग

१० जयादित्यमट्टारकोष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्धनपट्त्रिंशतम् ।  
नरेन्द्रमृगराजा ( ख्यो ) मृ—

११ नराज ( पराक्रमः । ) विजयादित्य ( भूपालः ) चत्वारिंशत्समा-  
॥ ( २ ) तत्पुत्रः कलिबिष्णुवर्ध—

१२ नो ( ध्यवर्धपंम् । तत्सु ) तो गुणगविजयादित्यश्चतुश्चत्वारिंशतम् ।  
तद्भ्रातुर्योवराज्योन्नतमहि—

१३ ( मभृतो ) विक्रमादित्यभूपाज्जातश्चालुक्यमीमस्सकलनृपगु ( णो-  
त्कु ) ष्टचारित्रपात्रः । दानी

१४ .....रसकरः सार्वभौमप्रतापो राज्यं कृत्वा प्र ( या ) तः त्रिद-  
शपतिपदं

१५ ( त्रिंशदब्दप्रमा ) णं ॥ ( ३ ) तत्पुत्रः कलियत्तिगण्डविजयादित्य-  
प्पण्मासान् । तत्सूनुरम्भराजस्स—

१६ ( स ) वर्षाणि । तत्सुतं विजयादित्यं कण्ठिकाक्रमायातपट्टामि-  
पेकं बालमुच्चाद्य तालराजो राज्यम्मास—

१७ ( मे ) कं । चालुक्यमीमसुतो विक्रमादित्यस्तं हत्वा एकादश-  
मासान् । विजयादित्यो वेंगोनाथः कलियत्ति—

१८ गण्डनामा धोमा ( न् । ) तस्य सती मेलंवा तज्जश्रीराजमीम-  
नृपतिरजेयः॥ ( ४ ) सत्यत्यागामिमानाद्यस्मि—

दूसरा पत्र: दूसरा भाग

१९ लुण्णयुतो राजमार्ताण्डमाजो । जित्वाग्रम्मल्लपाख्यं ससुतमधि-  
यलं द्रोहि ( णो ) प्यन्तकामो । द्विर्भूमो राष्ट्र

२० कृट्प्रबलबलतमस्संहरो द्वादशाब्दं । राज्यं कृत्वागमत्स प्रणिहित  
( सुयशो ) धर्मसन्तानवर्गः॥ ( ५ ) वि—

- २१ एषा पद्मेव शमोखि गिरितनया यस्य देवी सपत्नी । सशुद्धा  
 ( हैह ) नाञ्जिकु ( लवि ) पये पुण्यला ( १ )—
- २२ ण्यगण्या । लोकावातत्सुनोभूद् विजितपरवलोर्वेगिनाथोम्मराजो ।  
 राजद्राजाधिराजो ( जितरिपु ) म—
- २३ कुटोद्घृष्टपादारविन्द ॥ ( ६ ) वेगा ( राज्याभिषिक्तो ) निजरिपु  
 विजयादित्यमुद्यत्समर्थ । जित्वा ( नेकाजिरग )—
- २४ प्रजितपरवल ( कण्ठिमादामकण्ठ । ) दायदद्रोहिवर्गानपि सकर-  
 बल क्षत्रि ( या ) दित्यदे—
- २५ वो । ध्वस्तारिष्वान्तराशिर्विलसितकमलस्मप्रतापो विमानि ॥  
 ( ७ ) यजिर्मानुजिमित्त कृतमिदमखिल विष्टप हि
- २६ त्रिमूर्तेरात्मान चात्मनास्मादिह सकलगुणै ( राजमी )-मोक्षवहो  
 भूत् तेजोराशि प्रजाना पतिरधिकव—
- २७ ( ल ) स्मप्रतापोष्टमूर्तिस्मोयन्देवोम्मराजो जनगुणजनकोन ( न्य )  
 राजाप्रविन्द ॥ ( ८ ) स्वर्याता पूर्व—

### तीसरा पत्र पहला भाग

- २८ नाथा नलनहुपहरिश्चन्द्ररामादयोपि प्रत्यक्षास्ते यशोमिर्गुणवपुर-  
 चला स्वैरिदानी—
- २९ सदृष्टा । यस्योच्चै कीर्तिरा ( शिर्भ ) गण इव जगत्यद्वितीयो-  
 दयोस्मिन् । राजद्राजाधिराजस्म ज—
- ३० यति विजयादित्यदेवोम्मराज ॥ ( ९ ) गद्यम् । स जगतीपतिरम्म-  
 राजो राजमहेन्द्र मोगीन्द्र सह—
- ३१ स्रमोगोपहासिर्दीर्घदक्षिणैरुवाहुसान्द्रितविश्वविश्वमरागार ।  
 नारायण
- ३२ इव निरन्तरानन्तमोगास्पद । विधुरिव सुखविराजित । पिता-  
 मह इव वम—

- ३३ लासनः । गिरिविश इव धराधरमुतारार्धितः । रत्नाकर इव समस्त—
- ३४ शरणागतभूष्टदाश्रयः । सुवर्णाचल इव सुवर्णोत्तुंगोदयः । हिमाचल
- ३५ इव सिंहासनोल्लासितचमरीवालव्यजनविराजमानलीलः ॥ स सम—
- ३६ स्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरम—

तीसरा पत्र : दूसरा भाग

- ३७ भट्टारकः । वेलनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बिनस्समस्त—
- ३८ सामन्ता(न्त):पुरमहामात्रपुरोहितामात्यश्रेष्ठसेनापतिश्रीकरण धर्माध्यक्ष—
- ३९ द्वादशस्थानाधिपतीन् समाहूयेत्यमाज्ञापयति विदितमस्तु वः । श्रीमानुदपा—
- ४० दि महान्निर्णयनकुलसाधु.....ब्रेव्याख्यो । गोत्रः सिंहासनतो
- ४१ विदितो नरवाहनश्चलुक्ये(शानाम् ॥ १० ) श्रीकरणगुर्गुरुर्विविबुधगुरु—
- ४२ स्स(क)लरा(जसिद्धान्तज्ञः) । नरवाहन इत्यासीन्न्यक्कृतनरवाह-  
(नः)प्रकाशित—
- ४३ यशसा ॥(११) यस्याग्रसुतो गुणवान् मेलपराजो गुणप्रधानो दानी । मानी मा—
- ४४ नवचरितो मानवदेवो जिनेन्द्रपदपञ्चालिः ॥(१२) तस्य सती मेण्डांया सीतेव पति—
- ४५ व्रता जिनव्रतचरिता । सत्यवती (वि)नयवती सतताहारप्रदायिनी पृतधर्मा ॥ (१३)तज्जौ

## चौथा पत्र पहला भाग

- ४६ (सु)तौ प्रमिदौ बुद्धिपतौ सकलशास्त्रशस्त्रविवेकौ । भीमनरवाह-  
नाभ्यां विख्यातौ रा—
- ४७ मलक्ष्मणाविव लोके ॥(१४) यौ भीमाजुनसदृशौ बलयुतबलदेव-  
वामुदेव(ममा)नौ । (न)—
- ४८ कुलमहदेवतुल्यौ तौ जातौ जैनधर्मनिरतचरित्रौ ॥(१५) श्रीमत्-  
चालुक्यभीम(क्षितिपतिवृष)—
- ४९ या लब्धमामतचिन्हौ श्रीद्वारौर्वरष्टोवनपदरिलस(द्या)भरच्छत्र-  
(लीलौ) ।
- ५० रिकस्थौ शिखिरहपटलच्छाद्यमन्त्रकरीकौ जातौ चालुक्य-  
(चूलौ)
- ५१ करिहयौ काहलाद्यभ्युपेतौ ॥(१६) जैनाचार्यौ यदीयौ गुप्तरत्नि-  
५२ लगुणश्चन्द्रसेनाख्यशिष्यौ शास्त्रज्ञौ नाथमेनो मुनिनुतजयसेनौ  
मुनिर्दक्षित्तात्मा । सि—
- ५३ दान्तज्ञ कलाज्ञ परसमयपटु मधुतोत्कृष्टतत्त्वसत्पात्र श्रावकाणा  
क्षपणकसु(ज)—
- ५४ नक्षुल्लकार्याज्जकाना ॥(१७) तस्मै ताभ्या राजभीमनरवाहनाभ्या  
विजयवाटिकाया

## चौथा पत्र दूसरा भाग

- ५५ जिनभवतयुगलिमितमेतद्धर्मार्थमस्मामिस्सर्वकरपरिहार देव-  
भोगी—
- ५६ कृत्य पेद्गालिहिरं नाम आमो दत्त । अस्यावधय । पूर्वत  
मण्ड्य—
- ५७ रिपोलगरसुन यिसु कट्टलचेखुन नदिमि दूव । आग्नेयत आल-  
परियु जूदुरि—

५८ युं मुख्यकुट्ट (न) वूरुव पडुव । दक्षिणतः चूट्टरि प्रान्त(पतिं)  
युत्तरंधुन कुण्डि—

५९ विड्डिगुण्ड । नैकृत्यतः चूट्टरियम्मपोटयच्चगुडि । ( पश्चिमतः )  
रेटि(प)हुमट्टिरि । वा—

६० वव्यतः वलिवेरिपोलगरुसुन गारलगुण्ड । उत्तरतः तप्पराल  
प(हु)व । ई—

६१ शानतः कोडगालिडिपतिंयुं ( वलिवेरियुं मु )य्यरुकुट्टुन नडुपनि-  
गुण्ड ॥ तस्य (स्थे)यादलं—

६२ ध्यं सुच्चिरमुरुत्तरं (शास)न राजकोक्तं । सत्कीर्तेवेंगिपस्य प्रकट-  
गुणनिधेरम्मराजस्य पूज्यं ।

६३ तत्रेदं शा(स)नं (पालित)जिननिगमं शौर्यमीतान्यनाथवातो(चै)-  
मौलिमालामणिकमकरिकामलि—

### पाँचवाँ पत्र

६४ कोल्लासितांग्रेः ॥ (१७) अस्योपरि न केनचिद्वाधा कर्तव्या यः  
करोति स पंचमहापातकसं—

६५-६९ युक्तो भवति । तथा चोक्तं व्यासेन ॥ ( नित्यके शापात्मक  
श्लोक )

७० श्राज्ञप्तिः कटकराजः जयन्ताचा—

७१ येण लिखितम् ॥

[इस ताम्रपत्रमें मदनूर तथा कलचुम्भूर लेखोके समान पूर्वीय चालुक्यों-  
की वंशावली कुब्ज विष्णुवर्धनसे प्रारम्भ कर अम्मराज ( द्वितीय ) विजया-  
दित्य तक दी गयी है । अम्मराजके पिता चालुक्य भीम ( द्वितीय ) का एक  
सामन्त नरवाहन था जो त्रिनयनकुलमें उत्पन्न हुआ था तथा जैनधर्मीय  
था । उसका पुत्र मेलपराज था । इसकी पत्नी मेण्डांवाको दो पुत्र हुए —  
राजभीम तथा नरवाहन ( द्वितीय ) । जैनाचार्य चन्द्रसेनके शिष्य नाथसेन

( जयसेनके गुरु ) इन दोनोंके गुरु थे । इनने विजयवाटिकामें दो जिनमंदिर बनवाये थे । उनके लिए अम्मराजने वेलनाण्डु प्रदेशका पेद्दगालिडिपर्न नामक ग्राम दान दिया था । ] [ प० ३० २४ पृ० २६८ ]

१०१

वरुण ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड़

१ श्री श्रीमत्पर यि राजगुरु—

२ मण्डलाचार्य विद्यमकरर् अत्रिगोत्र परशुराम आचन चामुण्डरजु आ—

३ भठरकर वारुणद साधिनाथस्वामिय माडिमिदु आवर प्रिय दुणदुचल—

४ दाचार्य मकलु विजय-धण वमण मडिदर—

[ इस लेखमें आचन चामुण्डर भट्टारक-द्वारा वरुण ग्राममें शान्तिनाथ-मूर्ति अर्पण किये जानेका निदेश है । यह मूर्ति विजयधण और वमण-द्वारा बनायी गयी थी । लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ प० रि० मै० १९४० पृ० १७१ ]

१०२

मण्णो ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड़

[ इस लेखमें देवेन्द्रपण्डित भट्टारकी शिष्या मारव्वेकन्तिके समाधि-मरणका तथा कलिगव्वे कन्ति-द्वारा इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है । लिपि १०वीं सदीकी है । ] [ प० रि० मै० १९१७ पृ० ३९ ]

१०३

उम्मत्तूर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें विमलचन्द्रके शिष्य सोत्तियूरके शासक मारम्मयके पुत्र सिन्दय्यके समाधिमरणका उल्लेख है । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९ ]

१०४

बूवनहस्ति ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इस मूर्तिकी स्थापना बालचन्द्र सिद्धान्तभट्टारके शिष्य क(म)लभद्रगुरु-द्वारा की गयी थी । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१ ]

१०५

अंकनाथपुर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख अंकनाथेश्वर मन्दिरके छतमें लगा है । प्रभाचन्द्र सिद्धान्त-भट्टारकी शिष्या देवियव्वेके समाधिमरणका यह स्मारक है । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१ ]

१०६-१०७

अंकनाथपुर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यहाँके मुक्ताह्वयमन्दिरके छतमें दो निसिधि लेख लगे हैं । एकमें दडिगसेट्टि तथा देवरदासय्यकी माता चामकव्वेका उल्लेख है । दूसरेमें



महानायक रेचय्यके पुत्र अय्यसामिका उल्लेख हैं जो चातुर्वर्ण्य श्रमणमण्डका सहायक था । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० ]

१०८  
होलेनरसीपुर ( भंसूर )  
१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १०वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें भुक्तिमुक्त कहनेकी प्रतीति समाधिमरणका उल्लेख है । ] [ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३२ ]

१०९  
अंकनाथपुर ( भंसूर )  
१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १०वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें कदम्ब वशीय वासवके पुत्र राचयके समाधिमरणका उल्लेख है । यह लेख बलदेवने स्थापित किया था । ] [ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३२ ]

११०  
कोडिहल्लि ( माण्ड्या, भंसूर )  
१०वीं सदी, कन्नड

- |                |               |
|----------------|---------------|
| १ म-           | २ अय्य सन्य-  |
| ३ सन गेटदु     | ४ एरड नों-    |
| ५ तु मुद्विपि- | ६ दन् आतन     |
| ७ मगलप         | ८ विडक्क कल्ल |
| ९ निरुमिद(ल्)  |               |

[ इस निसिधि-लेखमें किसी मय्यके समाधिमरणका निर्देश है । उसकी पुत्री विडक्कने यह समाधि स्थापित की थी । लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है । ] [ ए० रि० मै० १९४० पृ० १६० ]

१११

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

१०वीं सदी, कन्नड़

[ यह लेख रसासिद्धलुगट्ट नामक पहाड़ीपर एक पापाणपर खुदा है । यह श्रीनागसेनदेवका निसिदिलेख है । इसकी लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५१ पृ० १२६ ]

११२

मथुरा

१०वीं सदी, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें १०वीं सदीकी लिपिमें मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२७ पृ० ७७ ]

११३

कीलक्कुडि ( जि० मदुरा, मद्रास )

१०वीं सदी, तमिल

समणरमलै पहाड़ीपर जैन मूर्तियोंके उत्तरकी ओर चट्टानपर

[ इस लेखमें गुणभद्रदेव तथा चन्द्रप्रभका निर्देश है । लिपिके अनुसार यह लेख १०वीं सदीका होगा । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० २४२ ]

११४

चैखर ( मन्दसौर, मध्यप्रदेश )

१०वीं सदी, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें नन्दियहसंघके जैन आचार्य शुभकीर्ति तथा विमलकीर्तिका उल्लेख है । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २०३ पृ० ४५ ]

११५

कमलापुरम् ( बेल्हारी, मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १०वीं सदीको लिपिमें है । इसमें गुणचन्द्रमुनि, इन्द्रनन्दि-  
मुनि तथा एक महिलाका उल्लेख है । ]

[ रि० ३० ए० १९५२-५३ क्र० २२२ पृ० ४८ ]

११६

काशिचल ( विज्नोर, उत्तरप्रदेश )

संवत् १०६(१) = मन् १०००, मस्कृत-नागरी

[ यह लेख एक जैन मूर्तिके पादपीठपर है । इसमें भरतका उल्लेख  
है तथा संवत् १०६ यह तिथि दी है । सम्भवतः संवत्का अन्तिम अक्षर लुप्त  
हुआ है । ]

[ रि० ३० ए० १९५२-५३ क्र० ४३६ पृ० ७१ ]

११७

लक्ष्मकुण्डि ( मैसूर )

शक ९२९ = मन् १०००, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् आहवमन्त ( जो यहां सत्याग्रयका  
उपनाम होना चाहिए ) के सामंत वाजिकुलके नागदेवके समयका है ।  
इसकी पत्नी अत्तियब्बेने लोक्किगुण्डिमें एक जिनालय बनवाकर उसे कुछ  
भूमि दान दी थी । यह दान उसके गुरु मूरस्यगण-कीर्त्तगच्छके अर्हणन्दि  
पण्डितको दिया गया था । दानकी तिथि फाल्गुन शु० ८, शक ९२९,  
प्लवग संवत्सर ऐसी दी है । उस समय अत्तियब्बेका पुत्र पट्टेवल तैल  
मामवाडि प्रदेशका प्रमुख था । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० ३० ३० ११ पृ० ३९ ]

११८

कोष्पल ( रायचूर, मैसूर )

राज्यवर्ष ५ = सन् १००८, कन्नड,

[ यह लेख चालुक्य राजा विक्रमादित्य ५ के राज्यवर्ष १ का है । इसमें सिंहनन्दि आचार्यके इंगिनीमरणका तथा उनकी स्मृतिमें कल्याणकीर्ति-द्वारा एक जिनेन्द्र चैत्यालयके निर्माणका उल्लेख है । ]

[ रि० ड० ए० १९५५-५६ क्र० १९९ पृ० ३७ ]

११९

उदकात्त ( जि० उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् १००९, तमिल

पेरुमाल मन्दिरके एक मण्डपकी उत्तरी दीवालपर

[ यह लेख चोल राजा राजराजकेसरिवर्मन् ( राजराज १ ) के २४वें वर्षका है । जो ब्राह्मण, वैखानस और जैन चोल, पाण्डल तथा तोण्ड-मण्डलके गांवोंके अधिकारी हैं वे यदि भूमिकर दो वर्ष तक न दें तो उनकी जमीन जब्त करानेका इसमें आदेश दिया है । ]

[ इ० म० उत्तर अर्काट ३०८ ]

१२०

चेचारक वोमलापुर ( मैसूर )

शक ९३५ = सन् १०१३, कन्नड

- |                  |                 |                 |
|------------------|-----------------|-----------------|
| १ सकवर्ष ९३५     | २ नैय प्रमादीच  | ३ संवत्सरद आ-   |
| ४ पाठ सु दसमि    | ५ सोमवारदोल्    | ६ माकच्चेगंतिय  |
| ७ सार्दिवद चाचग- | ८ बुड परोक्षवि- | ९ नयं निसिधिगे- |
| १० य कल्लनिरि-   | ११ सिदं         |                 |

[ यह लेख माकच्चेगन्ति नामक महिलाके समाधिमरणका स्मारक है ]

जो बीचगवुडने स्थापित किया था । तिथि आपाढ शु० १०, सोमवार, शक ९३५, प्रभादी सवत्सर ऐमो दी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० २०७ ]

## १२१

तोण्डूर ( ६० अर्कटि, मद्रास )

११वीं सदी पूर्वाध, तमिल

[ यह लेख चोल राजा परक्वेमरिवर्मन् ( सम्भवत राजेन्द्र १ ) के राज्यवर्ष ३का है । विण्णकोवरैयन् वयिरि मलैयन् नामक नामक-द्वारा वञ्जसिंग इलपेरुमानडिगल् नामक जैन आचार्यको गुणनेरिमगलम् अपरनाम वलुवामोलि आरान्दमगलम् नामक ग्राम तथा तोण्डूर ग्रामके कुछ उद्यान आदि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ८३ पृ० १६ ]

## १२२

उदयपुर ( राजस्थान )

संवत् १०७६ = सन् १०१९, सस्कृत-नागरी

[ उदयपुरके वासुपूज्यमन्दिरकी एक मूर्ति । यह मूर्ति संवत् १०७६ में वाहिल सोडक-द्वारा स्थापित की गयी थी ऐमा इस लेखमें कहा है । ]

[ रि० आ० सं० १९३०-३४ पृ० २२६ ]

## १२३

मरोल ( मैसूर )

शक ९४६ = सन् १०२४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेवमल्ल ( प्रथम ) के समय शक ९४६, रक्ताक्षि सवत्सरके उत्तरायण-सक्रमणके अवसरपर लिखा गया था । इसमें

नोलम्बवाडि तथा करिविडि प्रदेशके सामन्त नोलम्बवंशीय घटेयंककार-द्वारा मरवोलल्की वसदिके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है । यह ग्राम उस समय सत्तिग ( सत्याश्रय ) की पुत्री महादेवीके शासनमें था । जैन आचार्य अनन्तवीर्य, गुणकीर्ति सिद्धान्तभट्टारक तथा उनके शिष्य देवकीर्तिपण्डितका भी इसमें उल्लेख है । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ५० ]

१२४

### हैदराबाद म्युज़ियम ( आन्ध्र )

शक ९४९ = सन् १०२७, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा जयसिंह २ के राज्यकालका है । इस राजाकी कन्या सोमलदेवी-द्वारा पिरियमोसंगिके वसदिके लिए कुछ दानका इसमें उल्लेख है । तिथि शक ९४९ प्रभव संवत्सर ऐसी दी है । ]

[ एन्शण्ट इण्डिया १९४९ पृ० ४५ ]

१२५

### होसूर ( मैसूर )

शक ९५० = सन् १०२८, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (१) के समय शक ९५०, विभव संवत्सरकी उत्तरायणसंक्रान्तिके दिन पौष शु० १३, रविवारको लिखा गया था । केशवरसका पुत्र दण्डनायक वावणरस तथा उसका बन्धु महासामन्ताधिपति श्रीपादरस इनके शासनका इसमें उल्लेख है । वावणरस-की पत्नी रेवकव्वरसिके अधीन सिन्दरस पोसवूर नगरपर शासन कर रहा था । उस समय आय्चगावुण्डने पोसवूरमें अपनी पत्नी कंचिकव्वेके स्मरणार्थ एक वसदि बनायी और उसे कुछ भूमि तथा एक उद्यान अर्पण किया । आय्चगावुण्डके पुत्र एरकके पुत्र पोलैगने यह लेख स्थापित किया था । ये मोरक कुलमें उत्पन्न हुए थे । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ५५ ]

१२६

मस्की ( रायचूर, मैसूर )

शक ९५३ = सन् १०३२, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके राज्यकालमें फाल्गुन शु० ९, सोमवार, शक ९५३, प्रजापति सवत्सरके दिन लिखा गया था । इसमें देसिगणके जगदेकमल्लजिनालयके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमि आदिके दानका उल्लेख है । अष्टोपवासि कनकनदिभट्टारके निवेदनपर वह दान दिया गया था । स्थान राजधानि पिरियमोगि यह था । ]

[ रि० ३० ए० १९५३-५४ क्र० २४७ पृ० ४२ ]

१२७

कागिनेरिल ( धारवाड, मैसूर )

(शक ९)५४ = सन् १०३२, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यमें ५४ ( शक ९५४ ) वर्षमें लिखा गया था । इसमें जिनघर्मके भक्त कामदेवके एक पुत्र तथा आयतवर्माका उल्लेख है । इन्होंने एक मन्दिरके लिए कुछ सुवर्ण आदि दान दिया था । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २३ पृ० १२० ]

१२८

रायवाद्य ( मैसूर )

शक ९६३ = सन् १०४१, कन्नड

[ यह लेख आदिनाथमन्दिरके मण्डपमें लगा है । तिथि चैत्र व० १४, शक ९६३, शुक्रवार, विक्रम सवसर ऐसी दी है । अन्य विवरण प्राप्त नहीं है । ]

[ रि० ३० ए० १९५५-५६ क्र० १५४ पृ० ३४ ]

१२६

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[ इस लेखका कुछ भाग दीवालमें दबा है । इसके प्रारम्भमें राजेन्द्र-चोल प्रथमकी ऐतिहासिक प्रशस्ति है । तिरुमण्जेरि निवासी कलिमानन् विजयालयमल्लन्-द्वारा देवमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए ९६ भेड़ें दान दी जानेका इसमें उल्लेख है । यह लेख चन्द्रनाथमन्दिरके वरामदेके बाजूमें खुदा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०० पृ० ६५ ]

१३०

हूत्ति ( जि० वेलगांव, म्हैसूर )

शक ९६६ तथा १०६७ = सन् १०४४ तथा ११४५, कन्नड

१-२ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादादामोवलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ (१)

३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज पर-  
मेश्वर परममहेश्वर-

४ कं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमदाहवमल्लदेवर  
विजयराज्य-

५ मुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्रार्कतारं सलुत्तमिरे ॥ तत्पाद-  
पद्मोपजीवि ॥ मंले-

६ दं पगेवरं निर्मूलिसि जसमं निमिचिं दिग्भित्तिवरं कालडिय  
वोलगाडि तले पालिसिदं तोंवता-

७ रुमं भुजवलदिं ॥ (२) आतन पुत्रं विनयोपेतं पायिम्म-नृपति-  
गोप्सुव सति



८ विरयातियुते हम्मिकब्बेगे सीतेगे सरि माणेणब्बे लच्छलेयोगे-  
दर ॥ (३) इष्टज

- ९ नक्के चट्टममयक्के महाजनमोजनक्केयुत्कृष्टतपोधनगोयलिदायव-  
१० नक्के सकन्यकालिकाग्निष्टंगेय्ये नाद्धुममयक्कनुरागदे बेगवि-  
११ तु सतुष्टे लच्छियन्वरमिगार् सरियर् सच्चराचरोद्वियोलु ॥ (४)  
१२ सकलधरित्रियोलु नेगद वटिजन सले रूपिनेल्गेय प्रकटतेवेत्त दा-  
१३ नगुणम कुलदुनतिय जिनाग्निगल्गकुटिन्चित्तम पोगलुतिपुं-  
१४ दु कूटिय लिक्कदकपालकन कुलोत्तमागनेयनयियं लच्छलदेविय  
१५ जग ॥ (५) शरनिधिमेखलावृतवसुधरयेंब विहासिनीमुत्तातुरह-  
दवोळ्विराजि-  
१६ सुव बेळवलनाल्के पोदल्द शोभेगागरमेनि(मि)पं पूळि तिलका-  
वृत्तिर्यिदेसेदिपुंदा पुर सुरपु  
१७ रम कुबेरनल्कापुरम नगुगु विहासदिं ॥ (६) अलि ॥ सकल-  
व्याकरणाथंशा-  
१८ खचयदोलु काव्यगलोलु सद नाटकदोलु वर्णकवित्वदोलुनेगर्द  
वेदातगलोलु  
१९ पारमाथि(क)दोलु लौकि(क)दोलु समस्तकलेद्योलु वागीशनिंद  
यशोधि-  
२० करादर् पोगल्वल्लिगारलवे पेलु सासिर्वर ख्यातिय ॥ (७) स्वस्ति  
शकनृपकालातीतसवरसर-  
२१ शतगलु ९६६ नेय तारणसवत्सरद पुष्य सुद्ध १० आदिवार-  
मुत्तरायण-  
२२ सन्नान्तियदु ॥ यजनयाजनाध्ययनाध्यापनदानप्रतिग्रहपट्कर्म-  
निरतर श्री-  
२३ (म)चालुक्यचक्रवर्तिमल्लपुरिस्थानपितृपितामहमहिमासरदरक्षणा-

- २४ थैकोविदरुं विदग्धकविगमकवादिवाग्मित्वरुमतिथियभ्यागत-  
विशिष्ट-
- २५ जनपूजनप्रियरुं हिरण्यगर्भब्रह्ममुखकमलविनिर्गतकृग्यजु-
- २६ स्सामाथर्वणसमस्तवेदवेदांगोपमांगानेकशास्त्राष्टादशस्मृतिपुराण-
- २७ काव्यनाटकधर्मागमप्रवाणरुं सप्तमामसंस्थावभृथावगाहन-  
पवित्रीकृ-
- २८ तगात्ररुं कांचनक(ल)शसितपट्छत्रचामरपंचमहाशब्दघटिकाभेरी-  
रवनि-
- २९ नादितरुमाश्रि(तजन)कल्पवृक्षरुमहितकालांतकरुमकवाक्यरुं
- ३० शरणागतवज्रपंज(ररुं च)तुस्तमयसमुद्धरणरुं श्रीकेशवादित्यदेव-
- ३१ लब्धवरप्रसादरुमप्य श्रीमन्महाग्रहारं पुलियूरोड्यप्रमु-
- ३२ ख ग्रासिर्वर्महाजनंगल दिव्यश्रीपादपद्मंगलं (ल)च्छयव्वरसि-  
यरु स-
- ३३ हिरण्यपूर्वकमाराधिसि भूमियं पंडेदु वसुदियं मादिसि खं-
- ३४ दस्फु(टि)तर्जीर्णाद्वरणक्के पडुवण पोलदलु शिवेयंगरियारुमत्तव-
- ३५ सुगेयं मत्तरिंगदुचिन्नलेक्कदिंदरुवणमं मूरु पणमं तेत्तुवं-
- ३६ तागि श्रीयापनीयसंवद पुन्नागवृक्षमूलगणद श्रीचालचंद्रम-
- ३७ टारकदेवर कालं कच्चि विटलु ॥ स्वास्त समस्तभुवनाश्रय  
श्रीपृथ्वीवल्लभ महा-
- ३८ राजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालु-  
क्यामरणं
- ३९ श्रीमत्प्रतापचक्रवर्ति जगदेकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्त-
- ४० राभिवृद्धिप्रवर्धमानचंद्रार्कतारंवरं सलुत्तमिरं । शकव-
- ४१ पं १०६७ नेय क्रोधनसंवत्परदुत्तरायणसंक्रान्तियंदु यमनि-
- ४२ यमस्वाध्यायध्यानधारणमौनानुष्ठानजपसमाधिशीलसंपन्नरूप

- ४३ श्रीमन्महाप्रहार पुलिथूरोडेयप्रमुख सासिवर्महाननग(ल)  
 ४४ दिव्यश्रीपादपद्मगल पैगंड नेमण सहिरण्यपूर्वकमाराधिमि(धा)  
 ४५ (रा)पूर्वक माडिमि को(हु) तम्म मुत्तवे लच्छियच्चरमियरु  
 माडिमिद चम-  
 ४६ दिवलिपं ऋपियराहारदाननिमित्तमल्लियाचार्यर रामचड  
 ४७ देवर काल कचियवर मुत्तवालुव पडुवणपोलद शिवेयगेरियारमत्त-  
 ४८ वंसुगेथि पडु(व)ण (मा)गदलु कलशवल्लिगेरिय स्था(न)दोल-  
 गार मत्तकय्य  
 ४९ मत्तरिगडुधिल्ल(लेक्कदिंडर)वणम भूरु पणम तंतुवतागि विट्टरु ॥  
 ५० पतिमक्ते धेमा सति पायिम्मरसनप्रसुते सकलजनस्तुते मा-  
 ५१ गियच्चेरणिगे सुत दो (नेम)य्यनौदार्यगुण ॥ (८) जिनदेव  
 तनगासन-  
 ५२ (थि)जतताकल्पद्रुम य्यने तम्मय्यननूनदानि कलिदेव साधरा-  
 ५३ प्रेसर तनगण्ण गुणरत्नभूयणने सद्विदं नेमगेनवन्नवद्याच(रण)-  
 ५४ ने भूवल्लयदोलु पेल् ॥ (९)

[ इस लेखके दो भाग हैं । पहला भाग चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल सोमेश्वर प्रथमके राज्यमें शक ९६६ की उत्तरायण सत्रान्तिके समयका है । इनका सामन्त कालडिय बोलगडि था । इसका पुत्र पायिम्म था जिसने हम्मिक्खेसे विवाह किया । उसे भाणिणच्चे तथा लच्छियच्चे ये दो कन्याएँ हुई । लच्छियच्चेका विवाह कूटि प्रदेशके शासकसे हुआ था । इसने पुल्लि नगरमें — जहाँ एक हजार धर्मनिष्ठ ब्राह्मण रहते थे — कुछ जमीन खरीदकर एक जैन मंदिर बनवाया और उसके लिए यापनीय सध-पुद्गामवृक्षमूल गणके बालच द्रभट्टारकको कुछ दान दिया ।

दूसरा भाग चालुक्य सम्राट् जगदेवमल्ल ( द्वितीय ) के राज्यमें शक १०६७ की उत्तरायणसत्रान्तिके समयका है । इसमें नेमण नामक

स्थानीय अधिकारीका उल्लेख है जिसने पूल नगरमें कुछ और जमीन खरीदकर उक्त मन्दिरको दान दी। उस समय रामचन्द्र वहाँके भट्टारक थे। यह नेमण उपर्युक्त लच्छियच्चेका प्रपौत्र था। ]

[ ए. ड० १८ पृ० १७२ ]

१३१

मुगद ( मैसूर )

शक ९६६ = सन १०४५, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल ( सोमेश्वर ? ) के समय शक ९६६, पार्थिव मंवत्सर, चैत्र शु० ५, रविवारके दिन लिखा गया था। इसमें नागावुण्ड चावुण्ड-द्वारा मुगुन्द ग्राममें स्वनिर्मित सम्य-क्त्वरत्नाकर चैत्यालयके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। चावुण्डके पौत्र महासामन्त मार्तण्डय्य-द्वारा इस मन्दिरको एक नाटकशाला अर्पण किये जानेका भी इसमें उल्लेख है। उस समय पलसिगे तथा कोंकण प्रदेशपर कदम्ब कुलके महामण्डलेश्वर चट्टय्यदेवका शासन चल रहा था। लेखमें कुमुदि गणके जैन आचार्योंकी विस्तृत परम्परा भी बतलायी है। ]

[ मूल कन्नडमे मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ६८ ]

१३२

जोन्नगिरि ( कुर्नूल, आन्ध्र )

११ वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमे चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके समय वेगडे सोवरस तथा मल्लिसेट्टिका उल्लेख है। इन्होंने जोन्नगिरिकी बसदिके लिए कुछ भूमि दान दी थी। ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ६१७ पृ० ६० ]

१३३

तिगकूर ( कोइम्बतूर मद्रास )

शक ९६७ = सन् १०४५, तमिल

- |                        |                              |
|------------------------|------------------------------|
| १ स्वस्तिश्रो          | २ को नाट्टन् वि-             |
| ३ किरमशोल-             | ४ देवकुं शे-                 |
| ५ रलामिण्ड-            | ६ याण्डु ना-                 |
| ७ र्पदावदु             | ८ अरत्तुला-                  |
| ९ ण्देवन्              | १० पेरन् आण ना-              |
| ११ ण् कणित मा-         | १२ णिककच्चेट्                |
| १३ टि चन्द्रिवश-       | १४ तियिल् मुकु-              |
| १५ मण्डगम्             | १६ ण्डुपित्ते-               |
| १७ न् (॥) शकर या       | १८ ण्डु ९ १०० (६) (१०) ५ (॥) |
| १९ शिंगला ( न्तरु ) न् | २० एण् पुदु मुकु-            |
| २१ मण्डगम् (॥)         |                              |

[ यह लेख शक ९६७ का है । इस वर्षको नाट्टन् विक्रमचोळ राजाके ४०वें वर्षमे चन्द्रवसतिके मुखमण्डपके निर्माणका इसमे उल्लेख है । यह कार्य अरत्तुलान् देवन्के पोत्र कणित माणिकक सेट्टिद्वारा किया गया था । ]

[ ए० इ० ३० पृ० २४३ ]

१३४

अरसोयीडि ( जि० विजापुर, म्हैसूर )

शक ९६९ = सन् १०४७, कन्नड

- १ स्वस्ति समस्तमुवनाश्रय श्रीगृध्रीवल्लभ महाराजाधिराज-  
परमेश्वर प-

- २ रमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमत्रैलोक्यम-
- ३ ल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्रार्कता-
- ४ रंवरं सलुत्तमिरे । स्वस्ति अरिभृपमकुटघटितचरणारविंदेयर्  
गंगास्नान-
- ५ पवित्रेयर् दीनानाथचिन्तामणिगलेकवाक्यर् गुणद वेडंगियरप्प  
श्रीमद-
- ६ क्कादेवि ( य ) र् गोकानेय कोटेय सुत्तिर्द वीडिनलु विक्रमपुरद  
गोणदवेडंगिय
- ७ जिनालयक्के खण्डस्फुटितसुधाकर्मक्कं गन्धधूपदीपक्कं सरुगिगं  
मूलसंव-
- ८ व ( र ) सेनगणद होगरिय गच्छद नागसेनपण्डितगं अल्लिपं  
क्कपियगं अजिय-
- ९ गं आहारदानक्कं अजियर कप्पढक्कं कडुव भूमि सकवय्यं ९६९ नेय
- १० सर्वजित् संवत्सरद चैत्रदमास्ये आदित्यवारदंदिन सूर्यग्र-
- ११ हणनिमित्तं धारापूर्वकं माडि नगरदनुभवने मुख्यमागि किस्-
- १२ काडेप्पत्तर वलिय सर्वनमस्यमागि थिट्ट थाडं गाणद हाल्लोडु
- १३ विक्रमपुरद यांशान्यद देसेयि तोंटं मत्तरोडु ऊरि तेंक सुरुवदिन पा-
- १४ ल नैरित्यद देसेयि पण्डितनागदेवंगे सर्वनमस्य मत्तर पंनेरडु  
अल्लि तेंक
- १५ परंकार केतोजंगे सर्वनमस्य मत्तरिपत्तनाल्लु ऊरि वडग रायगट्टेयि
- १६ मूड परंकार केतोजंगे तोंट मत्तरोडु अल्लि पडुव कल्लुट्टिग  
सुरोजंग स-
- १७ वंनमस्यं मत्तर पंनेरडु तोंट मत्तरोडु दडिगरसन कय्यलु  
माल्लगोण्डु देवगे कोट

१८ भूमि कप्पडिय केरियि तेंक मन्नेयवोलदलु सर्वनमस्य  
मत्तर ५० ॥

१९ ई धर्मम स्वधर्मदिं रक्षिसिद्वर् मारणासियलु ओन्दु कोटि  
कविलेयु-

२० म वेदपालनर्प ब्राह्मणरिगे कोट्ट फ ( ल ) म पडेवर् ई धर्ममन-  
लिदव

२१ रा स्थानदोलनितु कविलेयुमननिर्पे ( तु ) ब्राह्मणर—

२२ सा ॥ सामा—

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल ( सोमेश्वर प्रथम ) के राज्यकालमें शक ९६९ की चैत्र अमावास्याके दिन लिखा गया था । इस समय अक्कादेवी गोकर्ण किलेके समीप शिविरमें थी । उसने विक्रमपुरके गोणद बेडगि जिनमन्दिरके लिए मूलमध सेनगण होगरि गच्छके नागमेन पण्डितको कुछ दान दिया था । ]

[ ए० इ० १७ पृ० १२१ ]

१३५

नन्दवाडिगे ( मैसूर )

११वीं सदी मध्य, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेवके समयका है । उनको रानी मैल्लदेवी थी । उनके एक सामन्त भागनगधवारणने कई मठ, मन्दिर, तालाब आदि बनवाये थे जो निम्न स्थानोपर थे — कल्याण, अण्णिगेरे, मुलुगुन्द, ( कोल्लु ) गे, न दापुर, कोहल्लि, मण्डलिगेरे, वेल्गलि, बनवासेपुर, करिविडि, नविले, नन्दवाडिगे, पेरुल । उसने पोन्नगुन्दका त्रिभुवनतिलक जिनालय, महाश्रीमत्त बसदि, पुरगूरका वीरजिनालय, कुन्दरगेका जिनालय आदिका जीर्णोद्धार किया था । उसके द्वारा दिये गये

कई दानोंका उल्लेख लेखमें किया है । इसका समय उत्तरायण संक्रान्ति कहा है । वर्ष निश्चित नहीं है । ]

[ मूल कन्नडमे मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ९९ ]

१३६

कल्याण ( नासिक, महाराष्ट्र )

११वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-नागरी

[ यह ताम्रपत्र परमारवंशोय महाराज भोजके सामन्त यशोवर्मन्-द्वारा दिया गया है । ध्वेतपद देशमे स्थित कल्कलेश्वर तीर्थके महीशबुद्धिके स्थानके मुनिमुव्रतमन्दिरके लिए कुछ जमीन, तेलघानियां, दूकानें, और १४ द्रम्म दान दिये जानेका इसमें निर्देश है । ]

[ रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११८ ]

१३७

हेव्वैल्लु ( मैसूर )

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

- १ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वी-
- २ वल्लभ महाराजाधिराज परम-
- ३ श्वर परममहाराज सत्त्वाश्रयकुल-
- ४ तिलक चालुक्याभरण श्रीमत् त्रैलोक्य-
- ५ मल्लदेवर विजयराज्यमुत्त-
- ६ रत्नराभिष्टुद्धिप्रवर्धमानमाचं-
- ७ द्रार्कतारं मल्लुत्तमिरे स्वस्ति स-
- ८ मधिगतपंचमहाशब्द महाम-
- ९ ण्डलेश्वरं पट्टिपोम्बुचैपुरवरेश्वरं पद्मा-



- १० वतीलब्धवरप्रसाद मृगमदामोद  
 ११ कन्दुकाचार्य मन्दरघैर्य सुमदमस्तु-  
 १२ त्य सान्तरादिन्य रिपुकोटिकठोरव रण-  
 १३ रगभैरव कीर्तिनारायण सौर्यपा-  
 १४ रायण रिपुमहलिकगोत्रगोत्राचञ्चल-  
 १५ दण्ड विरदभैरव महोग्रान्वयनमस्त-  
 १६ लगमस्तिमालियतुलबलसौर्य-  
 १७ शालि वन्दिस दोहामन्दोहनसुन्दरकलाल-  
 १८ ताकुरनरिमहलिकपतगदीपाकु-  
 १९ रं विमिमनविजयविपुलीकृतकृत  
 २० प्रतिज्ञ विरदसर्वज्ञ नामाद्यनेका-  
 २१ कमालाममलकृत् श्रीमत्  
 दूसरी ओर

- २२ वीरसान्तरदेवर् सान्तलिगे-  
 २३ गि प्रतिपालिसि सुखसंक-  
 २४ मिर तस्यादपद्मोपजीवि  
 २५ तीमकुमस्यलीविदारुणदा-  
 २६ पलमालालकार वारनारीम-  
 २७ तमहावाहिनीमदीधरव-  
 २८ निजगोत्रनिस्तार धर्मरना-  
 २९ हिताजनेय सौर्यंगा-  
 ३० दृ वैरिकोटिघरट्ट रण-  
 ३१ वरलदेयसूल डलदि  
 ३२ रं सुकविकोकिरमद-  
 ३३ छाधर धैर्यमहोधरन्  
 ३४ रायणं वीरगनगरद-  
 ३५ सासिरमुम निष्कटकमा-  
 ३६ याविनोददि राज्य गेयुत्त-  
 ३७ स्वस्ति ममस्तदुस्तरारा-  
 ३८ रणकरासिधारासक्तसुक्ता-  
 ३९ गिहारायितभुजादण्डमहि-  
 ४० ज्रदण्ड जिनधर्मप्राकार  
 ४१ कर सुमटारिमीकर पति-  
 ४२ गेय सरामिद्रोहदिशाप-  
 ४३ रगक्षेत्रपाल मच्चरिमु-  
 ४४ मुच्चिरिव आयुम मे-  
 ४५ कारनेकागवीर विलासवि-  
 ४६ उपायनारायण नीतिपा-  
 ४७ नामादिसमस्तप्रशास्त्वस-

- ४८ हित श्रीमन् नकुलरसर्  
 ४९ स्मरूपरुन्नतर नकुलर-  
 ५० सन तनयर् जनक्के रा  
 ५१ मन् लक्ष्मीधररेन्दे-  
 ५२ न्दडे चावुण्डराय-  
 ५३ नुं नागवर्मनुं कर-  
 ५४ मेसेदरे ॥ मंगल

तीमरी ओर

- ५५ वृत्त ॥ केडेयद पे ( म् ) महामहिमराज-  
 ५६ सुतप्रतिपत्तियेविवं तडेयदे वीरसान्त-  
 ५७ रमहीपति ता दयेगेय्दु कोद्वोडं वि-  
 ५८ डे निजपुत्र नीं वरिसेनिपी नेगलत्तेयनेय्दे  
 ५९ कोट्टनेन्दडे दोरेयार्पार नगुलभूप-  
 ६० नोली वसुधातलाग्रदोल । परम-  
 ६१ श्राजिननिष्टदैवमेनेपोर् शास्त्राग-  
 ६२ मांमोधिगल् गुरुगल् भाविसे पु-  
 ६३ प्पसेनमुनिपर अत्तिप्रियं वीरसा-  
 ६४ न्तर भूमिपति तन्दे तां पडियरं  
 ६५ श्रीकाटि ताय् पॅपलंकरिसुत्तिल्दरे-  
 ६६ यव्वे ये ( ने ) नगुलभूपालं महा-  
 ६७ धन्यनो ॥ नगुलरसन चित्तप्रिये  
 ६८ मृगलोचने दण्डनायकोडुम्मन  
 ६९ प्पेत्तुं मन्दिन सासि-  
 ७० वरकण्डु काप्प-  
 ७१ रक्के इदंनलिदं क-  
 ७२ विलेयनलिदं  
 ७३ चित्तारिकेतोजन मगं बहु  
 ७४ गि आय्वोजं ईं शासनद  
 ७५ गेय्दं कल्लं  
 चांथी ओर  
 ७६ पुत्ति गुणान्विते चट्ट-  
 ७७ वरसिगे दोरेयार् दान-  
 ७८ धर्मशीलोन्नतियोल्  
 ७९ सकवर्ष ९७५ नेय दु-

- ८० मँतिसवत्सर प्रवर्तिसे ८१ वैशाखमासदृक्कणप  
 ८२ क्षदेकादशि आदित्य ८३ वारददु श्रीमन्महा-  
 ८४ मण्डलेश्वर वीरमान्तर ८५ नगुलरसगे पर्वय-  
 ८६ ल् पन्नरडर किरुदरे ८७ चिटियुम कादु परिहा-  
 ८८ र बिट्टेगेडु कत्ताडिन्ती ८९ मर्यादयनलिङ्ग वा-  
 ९० रणासियोल् कुरुक्षे ९१ त्रदोल् सामिरकविलेयु  
 ९२ पार्परमनलिङ्ग पातकन- ९३ ककु । स्वदत्ता परदत्ता वा यो  
 ९४ हरेत वसुधरा पट्टिर्वर्षम- ९५ हम्माणि विद्याया जायते क्रि-  
 ९६ मि । विप्रकुलावरचद्र ९७ श्रीप्रतिमंय मारसिंग-  
 ९८ तनय विद्वद्विप्र गगननृपनि- ९९ योगप्रभु कविराज वटलम गो  
 १०० विन्द १०१ पर्वयल् पन्नरडु  
 १०२ पौत्रुचैनाडोले १०३ मत्तगावे हदिगा-  
 १०४ ल कदगोड मैसेपन्नर- १०५ डुम नेलिबयलु पा-  
 १०६ लिगार । बीरसिनु नगुल- १०७ रसनुमय्दिवेत सासिर-  
 १०८ गछाण ॥ मगल

[ यह लेख एक स्तम्भके चारो बाजुओपर लिखा है । चातुर्व्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके अर्पित पट्टिपोंबुचके महामण्डलेश्वर वीरमान्तरके समयका यह लेख है । इसके मन्त्रीका नाम नकुलरस था । ये दोनों जैन कहे गये हैं । इनके गुरु पुष्पसेनदेव थे । नगुलरसके पिता पडियर काटि, माता अरेयव्वे तथा पत्नी चट्टुरसि थी । इनके दो पुत्र चातुण्डराय और नागवर्म थे । लेखमें वीरमान्तर-द्वारा अक्केगेडु ग्राम और पर्वयल विभागके कुछ करोका उत्पन्न नकुलरसको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । इस लेखके पाठकी रचना गोविन्दने की थी जो मारसिंगका पुत्र था और गगराजाओंके समयसे कवियोंमें प्रिय था । लेखको चित्तारि केतोर्जके पुत्र आय्वोजने उकेरा था । लेखनिर्दिष्ट दानकी तिथि वैशाख व० ११, रविवार, शक

९७५ दुर्मेति संवत्सर है ( यह अनियमित है क्योंकि शक ९७५ विजय संवत्सर था ) । ]

[ ए० रि० मे० १९३१ पृ० १९० ]

१३८

### मुत्तगुन्द ( मैसूर )

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

- १-२ श्रीमद्भक्तिभरानतामरकिरीटानर्घ्यरत्नप्रमाजालालीढपदारविन्द-  
युगलः कन्दर्पदर्पापहः । त्रैलोक्योदरवर्तिकातिविशदश्चन्द्रप्रभः  
सुप्रभो मध्यानां निवहं निराकुलमलं पायादपायाज्जिनः ॥ १
- ३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमे-  
श्वर परमभट्टारकं सत्या-
- ४ श्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत् त्रैलोक्यमल्लदेवर विजय-  
राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रव-
- ५ र्द्धमानचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे । तत्तनयं समधिगतपंचमहाशब्द-  
महामण्डलेश्वरं वेंगी-
- ६ पुरवरेश्वरं समरप्रचण्डं कुमरमार्तण्डं परकरिमदनिवारणनम्भन  
गन्धवारणं परिवारनिधानं
- ७ दानकानीनं हयवत्सराज रूपमनोजं रिपुनृपतिहृदयसेल्लं भुवनै-  
कमल्लं मण्डलिकशिरो-
- ८ मणि चालुक्यचूडामणि विद्विष्टसंहारं कटकप्राकारं श्रीमत्-  
त्रैलोक्यमल्लदेवपादपंकजभ्र-
- ९ सरं श्रीमोमेश्वरदेवं वेल्बोलमूनूरुं पुलिगेरमूनूरुं सुखसंक-  
थाविनोददिनालुत्तमि-

- १० रे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ वृत्त । विनयवक्काधारभूतं पतिहितचरित-  
वकाश्रय सद्दिवैककके निवास—
- ११ सपत्तिगे, कुलमवन सन्ततानूनदानकके निधान मान्तनवकागर-  
मेने नेगल्द सद्द्वचोभूषण भूयिनु ( त ) ( बे- )
- १२ ल्देवनुद्यद्विधुविशदयशोव्याप्तद्रिक्चक्रवाल ॥२ ईव गुण गुण  
पतिहिताचरित चरित परोप ( का- )
- १३ रायसथार्थमथमघमिज्जनतत्त्वमे तत्त्वमेव सद्भावने तम्मोलोन्दि  
नेलेवेत्तिरे कीतिगे नोन्तरिन्तु
- १४ बेल्लदेवनुमोलपनाळ बलदेवनुमकद शान्तिधर्मनु ॥ (३) वचन ॥  
अन्तु सकलगुणगणोत्तुगर जिनधर्म-
- १५ निर्मलर निसिळजनोपकारनिरतरमुदात्तकीसिळतानिकेतनरम-  
गलदेवप्रियतनूमवर गोजि-
- १६ काम्बिकाकृशोदरनिविडनिबद्धपट्टरमागि पोगत्तेवेत्त तरसहोदर-  
त्रयदोल् अग्रमवनप्प सन्धिविग्र-
- १७ हाधिकारि ॥ वृत्त । जिनपादावुजभृगनगजनिम गम्यार्थरत्नाकर  
मनुमार्गं विनयाणव कलिमलप्रध्वस-
- १८ क केशिराजन धटि नयसेनसूरिपदपञ्चाराधनारक्तचित्तनुदात्त  
नेगल्द विवेक—महोभाग-
- १९ दोल् ॥ ४ आ महानुभाव धर्मप्रभावप्रकटीकृतचित्तनागे ॥  
कन्द । सिन्द—वनबलानन्दनकरू-
- २० पनसमसाढसनिलय सिन्दनृपनन्दन लसदिन्दुकरप्रतिमकीर्ति-  
कान्ताकान्त ॥ ५ जिनधर्मनिर्मल सत्यनिधा-
- २१ नननूनदान—अनन्दिन कचरस पचेपुनिम मुलुगुन्दसिन्ददेश-  
ललाम ॥ ६ एव पपिंग जसक्कमागरमा—

- २२ द कंचरसं तन्न सीवटदोलगे धर्मानुरागचित्तं सहिरण्यपूर्वकं  
कुडे कोण्डु ॥ श्रीमूलसंघवारा-
- २३ शौ मणीनामिव सार्चिपां । महापुरुषरत्नानां स्थानं सेनान्वयो-  
जनि ॥ ७ व । आ चन्द्रकवाटान्वयवरिष्ठ-
- २४ रजितसेनमटारकर् तदन्तेवासिगल् कनकसेनमटारकरवरशिष्यर् ॥  
कन्द । चान्द्रं कातंत्रं जैनेन्द्रं श-
- २५ व्दानुशासनं पाणिनि मत्तैन्द्रं नरेन्द्रमेनमुनीन्द्रं गेकाक्षरं पेरंगिदु  
मोगे ॥ ८ अन्तु जगद्विख्यातरादर
- २६ रवर शिष्यर् ॥ वृत्त । निनगेनेत्रेनो शाकटायनमुनीशनन्ताने  
शब्दानुशासनदोल् पाणिनि पाणिनीयदोले चन्द्रं चा-
- २७ न्द्रदोल् तज्जिनेन्द्रने जैनेन्द्रदोला कुमारने गडं कौमारदोल्  
पोलपरन्तेने पोलर् नयसेनपण्डितरोलन्यर्वाधि-
- २८ वीतोर्वियोल् ॥ ९ इन्तु समस्तशब्दशास्त्रपारावारपारगर् नयसेन  
पण्डितदंवर पादप्रक्षालनगे-
- २९ रदु । शकवर्षमोवयन्नूरेल्पत्तयूदनय विजयसंवत्सरदुत्तरायण-  
मंक्रान्तिर्यदु तीर्थद व-
- ३० सद्दिगाहारदाननिमित्तं निजाविकेयप्प गोजिकव्येगे परोक्षविनयं  
नगरमहाजनमुं पंचमटस्था-
- ३१ नमुमरियं नगरंरवरद् गद्वियद् कोलोललेदु क्रिस्तेरेय कंय्योलगे  
सर्वयाधापरिहारमा-
- ३२ गे विट्ट केय्मत्तर पन्नेरदु । आ कंय्यो गुड्डे इंदान्यदोल् कविलेय  
कल् आग्नेयदोलादित्यन कल् नैक्क-
- ३३ त्यदोल् चन्द्रन कल् वायव्यदोल् पद्मावतिय कल् असगगेरेय  
तंक सासिर वल्लिय तोंटवोन्टु ॥ स्वदत्तां—

३४ ( परदत्ता वा ) यो हरेत वसुन्धरा । पण्डित्वं सहासि  
विप्राया जायते कृमि ॥५०

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् सोमेश्वर ( प्रथम ) त्रैलोक्यमल्लके राज्य-  
में शक ९७५ में लिखा गया था । उस समय बेल्वोल तथा पुलिगेरे  
प्रदेशपर सम्राट्का पुत्र सोमेश्वर ( द्वितीय ) शासन कर रहा था । वहाँके  
सन्धिबिग्रहाधिकारी बेलदेव थे । ये अगलदेव तथा गोर्जिबल्लेके पुत्र थे ।  
बलदेव तथा शान्तिवर्मा उनके बन्धु थे । बेलदेवको प्रेरणास सिन्दकुलके  
सरदार कंचरसेन नयसेन पण्डितदेवको कुछ भूमि दान दी । नयसेनकी गुरु-  
परम्परा इस प्रकार थी — मूलमध-सना-वय-चन्द्रकवाट अन्वयके अजितसन-  
कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन । नरेन्द्रसेन तथा नयसेन दोनों व्याकरणशास्त्रके  
विशेषज्ञ थे ।

[ ए० इ० १६ पृ० ५३ ]

१३६-१४०

नन्दिबेवूर ( बेल्लारो, मंसूर )

शक ९०६ = सन् १०२४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९७६, उत्तरायण  
सक्रान्ति, रविवार, जय सवत्सरका है । इसमें नोलम्ब पल्लव पैमानडिके  
राज्यकालमें देसिगणके अष्टापवासि भटारकी रेञ्चूरुके महाजना-द्वारा  
भूमि, उद्यान आदिके दानका उल्लेख है । लेखमें जगदेकमल्ल नोलम्ब  
ब्रह्माधिराजका सामन्तके रूपमें उल्लेख किया है । इस लेखके पीछेकी ओर  
प्रायः ऐसे ही लेखमें अष्टोपवासिमुनिको बहुरूपमें दिये हुए दानका वर्णन है ।  
इसमें वीरणादिसिद्धान्तिका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २०१ पृ० १६ ]

१४१

कोगलि ( जि० वेल्लारी, मैसूर )

शक ९७७ = सन् १०५१

जैन मन्दिरके आगे एक श्रेष्ठमें, कन्नड

यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालका है । इसमें कहा है कि इस मन्दिरका निर्माण गंग राजा दुर्विनीतने किया था । लेखके समय जैन आचार्य इन्द्रकीर्तिने इस मन्दिरको कुछ दान दिया था । इन्द्र-कीर्तिका वर्णन इस प्रकार किया है—

श्रीमदरुहचरणसरसिहभृंग, कोण्डकुन्दान्वयसमूहमुखमंडन, देशीयगण कुमुदवनशरच्चन्द्र, कोकलिपुरेन्द्र, त्रैलोक्यमल्लसदःसरसिकलहंस, कविजना-चार्य, पण्डितमुखाम्बुरुहचण्डमार्तण्ड, सर्वशास्त्रज्ञ, कविकुमुदराज, त्रैलोक्य-मल्लेन्द्रकीर्तिहरिमूर्ति ]

[ इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७४, इ० म० वेल्लारी १९६ ]

१४२

डम्बल ( मैसूर )

शक ९८१ = सन् १०५९, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेव ( सोमेश्वर १ ) के समय चैत्र शु० १३, रविवार शक ९८१, विकोर्ति संवत्सरके दिन लिखा गया था । इसमें धर्मबोल्लके नगरजिनालयके लिए वाचय्यसेट्टिके जमात वीरय्यसेट्टि द्वारा कुछ सुवर्णदान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ८९ ]



१४३

मोरव ( धारवाड, मैसूर )

शक ९८१ = सन् १०६०, सस्कृत-कन्नड

[ यह लेख मार्गेश्वर शु० २ शक ९८१ विकारि सवत्सरका है। इसमें यापनीय सधके जयकीर्तिदेवके शिष्य नागचन्द्र सिद्धातदेवके समाधि-मरणका उल्लेख है। उनके शिष्य कनकशक्ति सिद्धातदेवने यह निसिधि स्थापित की थी। नागचन्द्रको मन्त्रचूडामणि यह विरद दिया है। ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई० २३९ पृ० ५६ ]

१४४

छुब्बि ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक ९८० = सन् १०६०, कन्नड

[ इस लेखमें सच्चि नगरके घोरजिनालयके आचार्य कनकनदिके समाधिमरणका उल्लेख है। इनकी निसिधि भागियब्बे द्वारा स्थापित की गयी। इस लेखकी रचना वज्रने की तथा नाकिगने उसे उत्कीर्ण किया। तिथि वैशाख शु० ५, रविवार शक ९८२ शर्वरी सवत्सर ऐसी थी। ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० १५ पृ० २५६ ]

१४५

तोललु ( मैसूर )

शक ९८३ = सन् १०६२, कन्नड

इस लेखकी पहली ८ पक्तियाँ धिस गयी है।

९ कम्बुकन्धरे केलेयन्नरिसि वीरगग पोयिसलग

१० पेम्पनवद्यु विनयार्क पो-

११ यिमलजनप माडि ॥ श्रीवर्धमानस्वामि-

- १२ गल धर्मतीर्थ प्रवर्तिसुत्रलि गौतमस्वामिगलि भद्रवाहुस्वामि-  
गलिबलि
- १३ पुण्यदन्तमट्टारकरि....मेघचन्द्र
- १४ ...श्रीमूलसंघ-
- १५ द. बेलवेय अमयचन्द्रपण्डितगे विनयादित्यहोयिसलदेवर शक-  
वर्ष ९८३ शुभकृतमवत्सरद
- १६ उत्तरायणमंक्रमणद. इतार्थदेमण धारापूर्वकं कोट अद्रकें तरे ह
- १७ णवयुदु हणवारमत्तदि देवर चरुपिगे यिप्पत्तयरदु सलगेय  
धारापूर्वकं माडि
- १८ विट दत्ति तोल्ललहल्लिय मुद्दगोडनु तिप्पगोडनु घुरत्तंकलु  
यिरमुगाम्भ होर-
- १९ गेरिय मूदणभूमि विग्गुड्डेय भूमिय अमयचन्द्रपण्डितरिगे धारापू-  
२० वंका माडि विट्टरु इं धर्मवन् अवनोव्वनु....

[ इस लेखमें होयसल राजा विनयादित्य-द्वारा शक ९८३ में उत्तरा-  
यणसंक्रमणके अवसर पर मूलसंघके पण्डित अमयचन्द्रको कुछ भूमिदान  
दिये जानेका उल्लेख है। अमयचन्द्रको पूर्वपरम्परामें गौतमस्वामी,  
भद्रवाहुस्वामी, पुण्यदन्तमट्टारक तथा मेघचन्द्रका उल्लेख किया है।  
मुद्दगोड तथा तिप्पगोड द्वारा भी कुछ भूमिदान दी गयी थी। ये दोनों तोल-  
लहल्लिके निवासी थे। ] [ ए० रि० नै० १९२७ पृ० ४३ ]

१४६

पालियड ( गुजरात )

संवत् १११२ = सन् १०६६, संस्कृत-नागरा

१ सिद्धं विक्रम संवत् १११२ चैत्र सुदि १५ अघेह आकाशिका-  
ग्रानावासे समस्त-

- २ राजावलीविराजितमहाराजाधिराजश्रीमीमदेव ॥  
वायडाधिष्ठानप्रति-
- ३ वद्धवो (पो) दशोत्तरग्रामशतान्त पातिसमस्तराजपुराण् ब्रा(ह्म)  
णोत्त ( रान् ) ज-
- ४ नपदाश्च बोधयत्यस्तु व सविदित यथा भय सोमग्रहणपर्वणि  
चराचर-
- ५ गुरु सपञ्जमभ्यर्च्य वायडाधिष्ठानीयवसतिकायै अत्रैव वायडा-  
(धि)ष्ठाने
- ६ (च) रीशेत्रान्तरितया गुडहुलापालिसकग्नयावणिकसादाकभूम -  
स ( वध्य )-
- ७ मानया कलसिकाद्वयवापभुवा सहास्यैव सादाकस्य सत्का  
इलद्वयस्य २
- ८ भू शासन (ने) नौदकपूर्वमस्माभि प्रदत्तास्याश्च भूमे पूर्वस्या  
दिशि कल्य
- ९ पालकेमस्मिन् क्षेत्र दक्षिणस्यां च राजकीया चरी । पश्चिमा
- १० या च वाणिय (ज) कमामलीय क्षेत्रमुत्तरस्या च पालवाड-  
ग्राममा-
- ११ ग इति चतुराधाटोपलक्षिता भुवमतामवगम्य पुतलिमासि-  
जनपदै-
- १२ यथा दीयमानमागमोगरहरिण्यादि सर्वमाजा(धर)णविधेयै-
- १३ भूवास्तै वसतिकायै समुपनेतव्य सामान्य चैतत्पुण्यफल  
मत्वास्म-
- १४ द्दशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृमिरस्मत्पदत्तधर्मदायोयमनुमन्तव्य
- १५ - १६ नित्य के शापात्मकश्लोक
- १६ लिखितमिद कायस्य-

१७ कांचनसुतवटेश्वरेण । दूतकोत्र महासांधिविग्रहिकश्रीमोगादित्य  
इ (ति)

१८ श्रीभीमदेवस्य ॥

[ इस ताम्रपत्रमें चीलुव्य राजा भीमदेव ( प्रथम ) द्वारा वायड  
अधिष्ठानकी एक वसतिका ( जिनमन्दिर ) के लिए चैत्र शु० १५ संवत्  
१११२ के दिन कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । ]

[ ए० इ० ३३ पृ० २३५ ]

१४७

मोटे बेन्नूर ( धारवाड, मैसूर, )

शक ९८८ = सन् १०६६, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९८८, पुष्य  
शु० ५, सोमवार, पराभव संवत्सरके दिनका है । इसमें महामण्डलेश्वर  
लक्ष्मरस-द्वारा मूलसंघ-चन्द्रिकावाटवंशके शान्तिनन्दि भट्टारकको भूमि दान  
दी जानेका उल्लेख है । यह दान बेन्नेवुरमें आचिमय्य नायक-द्वारा  
निर्मित वसतिके लिए था । ]

[ रि० सा० ए० १६३३-३४ क्र० ई० ११३ पृ० १२९ ]

१४८

चांदकवटे ( विजापूर, मैसूर )

शक ९८९ = सन् १०६७, कन्नड

[ इस लेखमें फाल्गुन व० ३ शक ९८९ प्लवंग संवत्सरके दिन मूरस्त  
गणके माघनन्दि भट्टारककी निसिधिका उल्लेख है । सिन्दिगे निवासी  
जाकिमन्वेने यह निसिधि स्थापित की थी । ]

[ रि० सा० ड० १९३६-३७ क्र० ई १४ पृ० १८२ ]

१४६

मत्तिकट्टि ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक ९९० = सन् १०६८, कन्नड

[ यह लेख टूटा हुआ है । मत्तिकट्टि ग्रामकी कुछ जमीन पेगडे कालि-  
मय्यने मत्तिसेन भट्टारकको दान दी इसका इसमें निर्देश है । ( यह नाम  
मत्तिसेन अथवा मत्तिलसेन हो सकता है ) । यह दान कालिमय्य-द्वारा  
निर्मित एक जिनालयके लिए दिया था । कालिमय्यको ( चालुक्य ) सम्राट्  
त्रैलोक्य ( मत्तदेव ) का पादपद्मोपजीवी कहा है । ]

[ रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ४२ ]

१५०-१५१

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् १०६८, तमिल

[ इस लेखमें चोल वंशके राजा राजकेसरिवर्मन् वीरराजेन्द्रदेवके राज्य  
वर्ष ५ में तिरुक्कामकोट्टपुरम्के निकट करन्दै ग्रामके जिन मन्दिरके लिए कुछ  
भूमि ग्रामसभाके तीन सदस्यों-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है । यहीके  
दूसरे लेखमें इस मन्दिरमें सततदीप रखनेके लिए कुछ वक्करियोंके दानका  
उल्लेख है । इस लेखमें मन्दिरके देवताका उल्लेख अरुणर् देवर् वीर-  
राजेन्द्रपेरुम्बल्लि आल्वार् ऐसा किया है । यह दान कालियूर प्रदेशके  
परम्बूर ग्रामके तुगिलिकिलान् अरयन् उडयान्-द्वारा दिया गया था । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १२९-१३० ]

१५२

मत्ताचार ( मैसूर )

शक ९९१ = सन् १०६९, कन्नड

१ श्रीमत्परमगमीरस्याद्वादामोघलाछ-

- २ नं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जि-
- ३ नशासनं ॥
- ४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्व-
- ५ रं द्वारावर्तीपुरवराधीश्वरं यादवकुलां-
- ६ वरद्युमणि सम्यक्तचूडामणि मल-
- ७ परोलुगण्डाद्यनेकनामावलीविराजितरप्प श्री-
- ८ मत्तं ( लो ) क्यमलु विनयादित्य होय्सल-
- ९ देवर् गंगवाडितोमत्तत्सासिरमनाल्लु
- १० सुखदि पृथ्वीराज्यं गेय्ये सकवर्ष ९९१ ने-
- ११ य पिंगलसंवत्सरद् वैशाख शुद्धत्रयोदशि बृह-
- १२ वारदल् पिंदु देवमं हांयपलदेवर् मत्तवुरके
- १३ कालं तिर्वितंदु विजयंगेय्दंदु वसदिगे वंदि
- १४ देवरं कंडि वेट्टोले कल्दरव विल्लियकं माडि-
- १५ सिद्धरुलगे माडिसिवंदडे माणिकसेट्टि
- १६ यिन्तंदु चित्रपंगेय्दम् देवर् नीयूरुलेंदु
- १७ वसदियं माडिसि भूमियं विट्ट मा-
- १८ नमहिमेगलं कोट्टडे वडवव्यर् निर्मद-
- १९ ढ्ढर्थक्कं प्रमाणुंटे देवरर्थगं मलेय-
- २० रसुगल हडद मत्तमुं समानमदर
- २१ माणिकसेट्टिय मारि मेच्चि नक्कु करवोहितं-
- २२ दु वसदियनूरुलगे माडिसि मामियं
- २३ माणिकसेट्टि राजगावुण्ड मुद्दगावुण्डरि वे-
- २४ सायिदेन्नु (?) मत्तक्के विडिसि ॥ तेरेयोल् प-
- २५ ढं नाडलियलि सिद्धायदल्लि मत्तनूल नेल वि-
- २६ नयायितनू पम्पेलेरेगल मत्तवूर व-
- २७ सदिगे विट्टं ॥ अंतु विट्टु वसदियवसदलिपक्क-

- २८ मनेगल माडिसि रिपिहसिलयेंदु पेमरनिदु  
 २९ मनेदेरे माहुवदेरे ऊरट्टिगे तौदे सु-  
 ३० रदु ववर्ते सेसे ओमगे मनकरे कूट क-  
 ३१ कन्दि बीरवण कोट्टतिपण कत्तरिचण अडेकलु-  
 ३२ उण हडवलेय हदियराय कुवर वि-  
 ३३ ट्टि कमर विट्टि यिचोलगागि इलयु महिम-  
 ३४ गल विनयादित्यहोयमलदेवर् आचट्टार्क-  
 ३५ तारवर सट्टगे ॥ इन्ती धर्मदोलापनानु तप्पिद-  
 ३६ व गगेयलु गगेय कोदु तिन्द लिंगालि-  
 ३७ प गेय्दनिस्थानवे कट्टेगल स्थान जागवडल  
 ३८ मत्तापुर हल्लिय गावुण्ड तानित्तुदक्के पे-  
 ३९ न्दे नित्तुदक्के देवगृह  
 ४० वह नानवक—होलहा-वागिर्प ॥ ४०००००

[ यह लेख होयमल वंशके राजा विनयादित्यके समय वैशाख शु० १३, वहस्पतिवार, शक ९९१ पिंगल मवत्सरके दिन लिखा गया था । मत्तूर ग्रामके लिए एक नहर बनवायी थी तब राजा विनयादित्य वहाँ गये थे । इस ग्रामकी बसदि ग्रामके बाहर एक पहाड़ीपर थी । उसे देखकर राजाने ग्रामीणोंसे पूछा कि ग्राममें बसदि क्यों नहीं है ? इसपर माणिकसेट्टिने कहा कि ग्राममें बसदि बनानेकी हमारी इच्छा है किन्तु हम गरीब हैं । तब राजाने ग्राममें बसदि बनवाकर नाडलि ग्रामके कुछ करोका उत्पत्त उमे दान दिया । माणिकसेट्टि, राजगावुण्ड तथा मुद्गावुण्डने भी बसदिके लिए कुछ भूमि दान दी । ]

१५३

## सोरटूर ( मैसूर )

शक ९९३ = सन् १०७१, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव ( सोमेश्वर २ ) के समय माघ शु० १, रविवार, शक ९९३, विरोधकृत् संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था ( यहाँ माघ स्पष्टतः गलत है जो पौष होना चाहिए । ) उक्त समय महाप्रधान सेनाधिपति कडितवेगडे दण्डनायक बल-देवदय-द्वारा सरटवुर ग्राममे स्थित बलदेवजिनालयके लिए कुछ भूमि अर्पण की गई थी । बलदेवदयके पिता गंग कुलके अगलदेव थे, माता गोज्जिकब्बे थीं तथा उसके ज्येष्ठ बन्धुका नाम बेलदेव था । इस दानकी व्यवस्थापिका हुलियव्वाज्जिके मूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके सिरिणंदिपण्डितकी शिष्या थी । उक्त मन्दिरको सरटवुरके दो-सी महाजनोंने भी कुछ भूमि, तेलघानी तथा घर अर्पण किये थे । सिरिणन्दिपण्डितकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है - चंदणंदि - दावणंदि - सकलचन्द्र - कनकनंदि - सिरिणंदि । ]

[ मूल कन्नडमे मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० १०७ ]

१५४

## गावरवाड ( जि० बारवाड, मैसूर )

शक ९९३-९४ = सन् १०७१-७२, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादाभांवल्लंछनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥
- २ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभं महाराजाधिराजं परमेश्वर परममहारकं स-
- ३ त्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमद्भुवनैकमल्लदेवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तरामिदृदिप्रवर्धमानमाचं-



- ४ प्राक्तार सलुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजोवि समधिगतपचमहाशब्द  
महामडलेश्वरनुदारमहेश्वर चलेके बलुगड ( शौर्यमार्तंड )  
पतिगे-
- ५ कदाड सग्रामगरड मनुजमान्धात कीर्तिविप्यात गोत्रमाणिक्य  
विवेकचाणाक्य परनारीसहोदर वीरवृकोदर को-
- ६ ददपार्थ सौजन्यतीर्थ मडलीककडीरव परचक्रमैरव रायदडगोपाल  
मलेय मडलीकमृगशार्दूल श्रीमदमुव-
- ७ नेकमल्लदेवपादपकजभ्रमर श्रीमन्महामडलेश्वर लक्ष्मरसक  
बेल्वोलमूनूरम पुलिगेरेमूनूरमन्तेरडरूनूर-
- ८ म दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनेयि प्रतिपालिसुत्तमिरे ॥ वृ ॥ अणुगाल्  
कार्यंद शौर्यदाल् विजयदाल् चालुक्कराज्यक्क कार-
- ९ णमादाल् तुलिलाल्तनक्के नेरेदाल् कट्टायदाल् मिक्क मन्नणैयाल्  
मान्तनदाल् नेगल्तेवडेदाल् विमान्तदाल् मेलदाल् रणदाला-  
ल्दनेन-
- १० चुवावेडेयोल विश्रामदोलु लक्ष्मण ॥ कलितनमिल्ल चागिगे  
वदान्यते मेय्गल्लिगिल्ल चागि मेय्गल्लियेनिपगे शौचगुणमि-
- ११ ल् कर कलि चागि शौचिग निले नुडिवोजेयिल्ल कलि चागि  
महाशुचिसत्यवादि मडलिकरोलीतनेन्दु पोगल्गु बुधमड-
- १२ लि लक्ष्मभूपन ॥ कुदुरेय मेले विल् परसु तोरिगे सुलिगे पिंढि-  
वालमेत्तिद करवालवार्दिहुव कर्कडे पारुव चक्रमेन्दोडेन्तो-
- १३ दरवरेन्तु पायिसुवरेन्तु तरुन्नुपरेन्तु निल्यरेन्तोदरवरेन्तु लक्ष्मण-  
नोलान्तु बटुंक्करन्यभूभुजर् ॥ एने ने-
- १४ गल्द लक्ष्मभूपति जनपतिभुवनैकमल्लदेवादेश तनगेमदिरे माडि-  
मिद [ जिनशा- ] सनवृद्धिय प्रवर्धेनमागलु ॥ आ चैत्याळ-

- १५ यद् पूर्वावतारमेन्तेने ॥क॥ श्रीवसुधेशन चावं रेवकनिर्मडिय  
वह्मं वृतुगनात्मावगतसकलशास्त्रनिलाविश्रुतकीर्ति
- १६ गंगमंडलनाथ ॥ वृ ॥ रुडिगे रुडिवेत्तेसेद् वेल्वलदेशमनाल्द  
गंगपेर्माडिगलिन्दमण्णिगेरे नालकेरेवट्टेनिसित्त नाड नाडा-
- १७ डिगलुंघमेंविनेगमा पुरदोलु जयदुत्तरंग पेर्माडियिनाय्तु वृतुग-  
नरेंद्रनिनल्लि जि-
- १८ नेंद्रमंदिर ॥ वृ ॥ संगतमागे माडि तलवृत्तियनल्लिगे मूडगेरि  
गुम्मुंगोलनादियागे नेगल्दिट्ट-
- १९ गे गावरिवाडमेंव वाडंगल शासनं वेरसु सर्वनमस्यमिवेंदु चिट्ट  
कोट्टं गुणकीर्तिपंडितगे मक्ति-
- २० यिनुत्तमदानशक्तियि ॥क॥ उदितोदितमेने विमवास्पदमेने भुवन-  
यक्वन्धमेने मंचलमागदे गंगा-
- २१ न्वयमुल्लिनमिदु सर्वनमस्यवागि नडेयुत्तमिरलु ॥ वृ ॥ परम-  
श्रीजिनशासनक्के मोदलादा मूलसंधं
- २२ निरन्तरमोप्पुत्तिरे नन्दिसंधवेमरिंदादन्वयं पेप्पुवेत्तिरे सन्दर्  
वलगारमुख्यगणदोलु गंगान्वयक्कि-
- २३ न्तिवर्गुखलु तामेने वर्धमानमुनिनाथर् धारिणीचक्रदोलु ॥  
श्रीनाथर् जैनमार्गोत्तमरेनिसि तपःख्यातियं
- २४ ताल्दिदर सज्जानात्मर् वर्धमानप्रवरवर शिष्यर् महावादिगलु  
विद्यानन्दस्वामिगल् तन्मुनिपतिगनुजर् तार्किंका-
- २५ कर्मिधानाधीनर् माणिक्यनंदिव्रत्तिपतिगलवर शासनोदात्त-  
हस्तर ॥ तदपत्यर् गुणकीर्तिपंडितर् अवर तच्छास-

- २६ नग्यातिकोविदरा सूरिगणात्मजर् त्रिमलचन्द्रर् तत्पादामोचषट्-  
पदर् उद्यद्गुणचद्वरन्तवर शिष्यर् नोडिशस्त्रा-
- २७ र्थदोलु विदितर् गण्डविमुक्तरिन्नमयान्द्याचार्यार्योत्तमर् ॥  
वृ ॥ पोले चोल नेलेगेट् तन्न कुल-
- २८ धर्माचारम विदु बेलवलदेशकडियिद देवगृहसदोहगल  
सुद्द करयले पाप बेलेदेत्त-
- २९ नल्के धुरदोलु त्रैलोक्यमलयगे पदलेय कोटमुव विसुद्द निज  
वशोच्छित्तिय माडिद ॥क॥ श्रीपेर्मा-
- ३० नडि माडिमिदी परमजिनालयगल पोलेवदिदी पाण्डयचोलनेव  
महापातकतिवुल्लनलिदधोगतिगिलि
- ३१ द ॥ वृ ॥ बलिकी बेल्लदेशम पडेद दडाधोशसामन्तमडलिकर्  
धर्मद बट्टेगेट् नडेयुत्तिर्दल्लि तज्ज मन-
- ३२ गोले कालीयगुणेतर कृतयुगाचारान्वित लक्ष्ममडलिक निर्मल-  
धर्मयत्तदेय नष्टोद्धारम माटि-
- ३३ द ॥ ई नेलदोलु नेगहतेय पोमहतेय वाल्तेय पुण्यतोर्थ-  
मन्तानदोलिन्निरुल्लेनिमि सदुद्द दक्षिणगगे तुगम-
- ३४ दानदि तनदीतट्टाकोप्पुव क्वकरगोण्डर्मेवधिष्टानदोलुवराधिपति  
चक्रधर नेलमिदं वीडिनोलु ॥
- ३५ वृ ॥ शककाल गुणलब्धिरध्रगणनाविख्यातमागल् विरोधकृद्वद  
वरे चैत्रमागे विपुवरसक्रान्तियोलु पु-
- ३६ प्यतारके पूर्णागिरमागे चक्रधरदत्तादेशर्दि देशपालकचूडामणि  
धर्मवत्तलेयनत्तुरमाहिर्दि

- ३७ माडिद ॥ क ॥ त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्ररनमिवंदिसि मक्तिर्यिदे  
काल्गचि जगत्प्रभुवनि बेसदि लक्ष्मणविभु
- ३८ कोटं हस्तधारैयि शासनम ॥ वृ ॥ परडनूर वाडदोलगी जिन-  
गेहवे पूज्यमंदक्करसर कां-
- ३९ के विल्दुवियमुंवलमुंवलिदायमादियांगेरडरुवत्त पोन्नरुवणं  
समकट्टेने माडि शासनं ।
- ४० वरंयिसि कोटु धर्मगुणमं मेरंदं नृपमेरु लक्ष्मण ॥ जिननाथा-  
वामसं वासवरित्तुनिममं कष्ट-
- ४१ कालेयदुर्मावनेयि चांडालचोलं सुडिसि किडिसं विच्छित्तियागि-  
दुंदं नेदने नष्टोद्वारमं शाश्वतमतिशय-
- ४२ माय्तेविनं माडि तच्छासनमाचंद्रार्कतारं निले निलिसिदनें  
धन्यनो लक्ष्मभूपं ॥ अरसगे संसेयेन्द-
- ४३ रसर काणिकेयेन्दु दायधर्मद तरेयेन्दुरुवणदिंदगलमेन्दरेवीसम-  
नक्कि कौडवर् चांडालरु ॥
- ४४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्त भुजयलोपाजित-  
विजयलक्ष्मीकान्तं समस्तारिविजय-
- ४५ दक्षदक्षिणदोर्दण्डं कत्तलेकुलकमलमातण्डं मयूरावतीपुरवराधोश्वरं  
ज्वालिनीलवधवरप्रसाद क-
- ४६ पूरवर्षं जिनधर्मनिर्मलं नेरेकट्टियंककार नामादिसमस्तप्रशस्ति-  
सहितं श्रीमन्महासामन्त वे-
- ४७ ल्वलाधिपति भुजयलकाटरसर ॥ क ॥ जगमेल्लं देसेगे कय्मुगि-  
गेम कोट्टिरियनोन्दु कागिणियुम-
- ४८ ना गगनदोलिर्पादित्यं वगेदुदनित्तपने वेल्वलादित्यन वोलु ॥  
इन्तेनिसिद् वेल्वलादित्य नकवर्ष ९९४ ने

- ४९ य परिभाविसवत्सरद पुण्यसुद्ध पचमि बृहस्पतिवारदद भणिण-  
गेरेय गगपेर्माडिय वस-
- ५० द्विय ठानसालेगहिलगालव गावरिवाडद तम्म सिवटद मत्तर-  
खत्तुमन् भण्डिगेरेयोलु क्रयविक्रय-
- ५१ दिं यहिलयाचार्यर त्रिभुवनचन्द्रपडितर काल कर्चि धारापूर्वक  
माडि विट् कोट्टर ॥
- ५२ स्वस्ति समस्नविनमदमरमकुटतटवग्निशोणमाणिक्यमौक्तिक-  
मयूखकु कुमलयनाभ्यर्चि-
- ५३ तश्रीमद्भक्तपरमेस्वरप्रणीतपरमागमविशारदरत्नवरतपरमागमो -  
पदेशप्रसंगरमण्य श्रीमदु-
- ५४ दयचन्द्रसैद्धान्तदेवर दिव्यश्रीपादपद्माराधकर श्रीमत्बलात्कारग-  
णानुजमरोवरराजहसरमण्य श्री-
- ५५ मत्सकलचक्रदेवर श्रीमद्राजधानीबहणमणिणगेरेय महास्थान  
श्रीमद्गगपेर्माडिय वस-
- ५६ दिगालव ग्रामादि वाडदलु याचार्यर चनुडगावुडमुग्यवागि  
हेगगडे सहित मूवत्तुमनुष्य-
- ५७ देवपुत्रगे कोट्ट वृत्तिय क्रम ॥ चडवेय मग हेगगडे मल्लय्यनु  
यादिनाथस्वामिगेयल्लियाचा
- ५८ रियगे वेसकेट्टुव वृत्ति मत्तर (प)न्नेरडु केतगावुड याचार्यगे पाद-  
पूजेय कोट्टु
- ५९ तम्म सेनगणद वसदिगे हूलिगोलद सीमेडिट्टु कुलपल्लिदि  
पडुवलु मत्तरेंडु यस्वण गद्याण
- ६० नाल्कारेंदधिक कौडवर् चाडालर ॥ पम्मय केति सेदिय साम्यहे  
मत्तरेंडु मने जौडु मोगवाडगे गद्याण ना-

६१ ल्कु कणविय सेहिय वम्मि सेहिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौटु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु कत्ते-

६२ य दारि सेहिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौटु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु हव्वेय देवि सेहिय

६३ साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौटु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु गोलिय चवुडि सेहिय साम्यक्के मत्त-

६४ रेट्टु मने वौटु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु रुडुलिय संकि सेहिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने

६५ वौटु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु कंदल मल्लि सेहिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौटु भोगवाडगे गद्याणं

६६ नाल्कु मल्लव्वेय पुत्ररु चण्डि सेहिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौटु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु माध-

६७ वसेहिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौटु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु

[ इसी तरह ८३वीं पंक्ति तक वय्सर वोप्पि सेट्टि, नेमिसेट्टि, गोखर वम्मि सेट्टि, मयिलि सेट्टि, गोखर वोसि सेट्टि, चंदि सेट्टि, एम्मियर चवुडि सेट्टि, होय्मर चवुडि सेट्टि, केल्लर गोरवि सेट्टि, तालवम्मि सेट्टि, कटवर देवि सेट्टि, मंचल वोसि सेट्टि, वेणिल मल्लि सेट्टि, वेण्णेय नालि सेट्टि, दोडुर केति सेट्टि, मंजडिय येचि सेट्टि, गडि सेट्टि, मुरियर कलि सेट्टि, वयिसर वसवि सेट्टि, नूति सेट्टि, चिक्कि सेट्टि, इनके वारेमें निर्देश है ।]

८३ नाल्कु चिक्कि सेहिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौटु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु यिन्ती देवपुत्रिकरोलगे याव-

८४ नांवांनु धम्मक्कं याचार्यं विरोधियागि राजगामित्वं माड्ढिन-  
प्पडं वृत्तिच्छेदममयवाह्य ॥

८५ स्वस्ति ममस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महाप्रधानं वसुधैकवान्धवं  
श्रीरेचिदेवदंडनाथ वट्ठक्रे-

- ८६ य श्रीकलिदेवस्वामिजिनश्रीपादार्चनगे कर्पूरकुङ्कुमश्रीगधसहित  
यष्टविधार्चनेगे
- ८७ कोट कयिपरकेरेयि मूडलु मत्तर् पन्नेरडुम याचार्यर दनपुत्रि-  
कर सर्वाशाय-
- ८८ रिहारवागि प्रतिपालिपर ॥ दक्षिण पेयावोलेयुमण ग्रामादि  
वाडकक श्रीगगपेर्माडि-
- ८९ य वसदिय पुरद मयादेय घले मूवच्छेदु गेणु हस्त वेगोहलदगे  
वृत्ति सरलदु ॥ वर्धता जिनशा-
- ९० सन ॥
- ९१ गगासागरयमुनासगमदोलु बाणारमि गयेयेम्बी तीर्थगालोहारम-  
कुलद्विजपुगवगोकुलमनलिदरिन्निदनलि-
- ९२ दरु ॥ स्वदत्ता परदत्ता मा यो हरेत वमुधरा । पष्टिवर्षसहस्राणि  
विष्टाया जायते कृमि ॥
- ९३ याचार्यर येष्टिगनागि बेसकंय्दुव वृत्ति कुरिवर केने
- ९४ न्दु ॥ याचार्यर चवुड गवुडन हंसरिदुदक्के मूगवाड रन
- ९५ लद सोमंथलु काट वृत्ति मत्तर चोदु यदु होलगेर ॥

[ इस बृहत् खिलालेखके चार भाग है । पहले भागमें (पविन १-४३)  
अणिगेरे नगरके गगपेर्माडि जिनमन्दिरका वणन है । यह मन्दिर रेवकनि-  
मंडिके पनि बूतुगके स्मरणार्थ वेल्बल प्रदेशके शासक गगपेर्माडिने बन-  
वाया था तथा उसने उस मूडगेरी, गृम्मुगोल, इट्टगे और गावरवाड ये  
चार गाँव दान दिये थे । यह दान मूलसधनदिसध-बलगार गणके गुणकोनि  
पण्डितको दिया गया था । गुणकोतिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी—गग

१ रेवकनिमडि राष्ट्रकूट सम्राटकृष्ण ( तृतीय ) की बहन थी जो गग राजा  
बूतुगको ब्याही गयी थी । गग पेर्माडि इनके पुत्र मारसिद ( तृतीय ) ( सन् ६६०-  
७४ ) अथवा पौत्र राजमल्ल ( चतुर्थ ) होंगे ।

वंशके गुरु वर्धमान — विद्यानन्द स्वामी — उनके गुरुबन्धु तार्किकार्क माणिक्यनन्दि — गुणकीर्ति — विमलचन्द्र — गुणचन्द्र — गण्डविमुक्त — उनके गुरुबन्धु अभयनन्दि । कालान्तरसे चोल राजाने वेल्लवल प्रदेशपर आक्रमण किया<sup>१</sup> तब इस मन्दिरको नष्ट-भ्रष्ट किया किन्तु शीघ्र ही इस चोल राजा-को अपने पापका प्रायश्चित्त करना पड़ा क्योंकि चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्य-मल्ल सोमेश्वर ( प्रथम ) द्वारा वह युद्धमे मारा गया ।<sup>२</sup> तदनन्तर वेल्लवल प्रदेशके कई शासक हुए जिनने इस मन्दिरकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया । चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर ( द्वितीय ) के समय वेल्लवल तथा पुलिगेरे प्रदेशका शासन महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसको सौंपा गया । उसने इस मन्दिरका जीर्णोद्धार किया तथा उसके लिए मुनि त्रिभुवनचन्द्रको समुचित दान दिया ।<sup>३</sup> इस दानकी अनुज्ञा देते समय सम्राट् सोमेश्वर तुंगभद्रा नदीके तीरपर कवकरगोंडके सेनाशिविरमें थे तथा शक ९९३ वर्ष चल रहा था ।

इस शिलालेखके दूसरे भागमें वेल्लवलके अगले शासक काटरसका उल्लेख है जो मयूरावती नगरका स्वामी था । तथा ज्वालिनी देवीका उपासक था । इसने उपर्युक्त मन्दिरको शक ९९४ मे कुछ दान दिया । यह दान भी त्रिभुवनचन्द्रको दिया था ।

तीसरे भागमें इस मन्दिरके व्यवस्थापक उदयचन्द्रके शिष्य सकलचन्द्रका उल्लेख है । इतने मन्दिरकी जमीन जोतनेके लिए मल्लय्य आदि तीस श्रेष्ठियोंको सौंपी थीं ।

चौथे भागमे महाप्रधान रेचिदेव - द्वारा वट्टकेरे नगरके जिन तथा कलिदेवकी पूजाके लिए कुछ जमीन दान दिये जानेका उल्लेख है ।

१. यह राजा चोल राजाधिराज होगा । ( सन् १०१८-५२ )

२. यह युद्ध सन् १०५२ के आरम्भमें हुआ था ।

३. पूर्वोक्त गुरुपरम्परासे त्रिभुवनचन्द्रका सम्बन्ध अगले लेखमें स्पष्ट किया है ।



यह शिलालेख अन्तिम रूपसे सन् ११५० के करीब लिखा गया होगा । ]

[ ए० इ० १५ पृ० ३३७ ]

१५५

अणिगोरि ( मंसूर )

शक ९९३-१४ = सन् १०७१-७२, कन्नड

[ यह लेख अक्षरशः गावरवाड लेखके पहले दो भागों-जैसा ही है— सिर्फ चार श्लोक इसमें अधिक है । यथा— (१) भगलाचरणम्—जगत्-त्रितयनाथाय नमो जमप्रमाथिने । नयप्रमाणवागूरश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥ (२) महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसके वर्णनम्—मले यतो (दृ) लतुलिद मलेयोल् मर्मलेव मलेपर मगिसिद मलेयेल् कोर्पिर्दुमनलेद जलनिधियोर्ले प्रतापियो लक्ष्म ॥ (३-४) गुणकीर्ति पण्डितकी शिष्य परम्पराके वर्णनम्—कृतकृत्यरभयनन्दिगल तनूजर् सकलचन्द्रसिद्धान्तिकरप्रतिमर् सर्वांगमलान्वितगण्डविमुक्तदेवरा मुनिशिष्यर् ॥ एनिसिद गण्डविमुक्तर तनूभवर चरणकरणपदविद्यापावन मन्त्रवाददो त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्ररत्ने बुधजनवन्द्यर् ॥ इससे अभयनन्दि — सकलचन्द्र — गण्डविमुक्त — त्रिभुवनचन्द्र इस परम्परा का पता चलता है । इस लेखमें गावरवाड लेखके अन्तिम दो भाग नहीं हैं । अतः प्रतीत होता है कि यह शक ९९४ में ही खुदवाया गया होगा । ]

[ ए० इ० १५ पृ० ३४७ ]

१५६

हैदराबाद म्युजियम ( आन्ध्र )

स० ११ (२) ८ = सन् १०७२, संस्कृत-नागरी

[ इस मूर्तिलेखमें वीतरागकी उपासिका रावदेवी-द्वारा देवागना तथा क्षोणीपतिकी मूर्तियोंकी स्थापना किये जानेका उल्लेख है । समय सबत्

११ (२) ८ है । इसका तीसरा अंक कुछ अस्पष्ट है । ]

[ रि० ड० ए० १९४६-४७ क्र० १५३ ]

१५७

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक ९९६ — सन् १०७४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लके समय चैत्र शु० ८, रविवार आनन्द संवत्सर, शक ९९६के दिन लिखा गया था । मणल कुलके महासामन्त जयकेसियरसने पुरिगेरेके पेर्माडिवसदिके दर्शन किये तथा मूलमंघ-वला-त्कारगणके गण्डविमुक्त भट्टारकके शिष्य त्रिभुवनचन्द्र पण्डितके निवेदनपर उसे पुरके रूपमें परिवर्तित किया ऐसा इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ड० २९ पृ० १६३ ]

१५८

हनगुन्द ( मैसूर )

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव सोमेश्वर (२) के समय पौष शु० ५, रविवार, शक ९९६, आनन्द संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था । इसमें सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके अरुहण्दि-भट्टारकके शिष्य आर्यपण्डितको पोन्नगुन्दकी अरसर वसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान श्रीकरण देवणय्य नायक, पेगंडे नाकिमय्य, पेगंडे रेवणय्य, करण आय्चप्पय्य, तथा पसायित काटि-मय्यने सर्व प्रवानों-द्वारा की गयी जिन पूजाके अवसरपर दिया था । उस समय वेल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशोंपर महामण्डलेश्वर संग्रामगरुड लक्ष्मरस का शासन चल रहा था । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० ड० इ० ११ पृ० १११ ]

१५१

सोमापुर ( धारवाड, मैसूर )

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा भुवनेकमल्लके समय शक ९९६), आनन्द सबत्सर, पुष्य शु० ५, बुधवारका है । इसमें किसी सेट्टि-द्वारा एक जैन बसदिको दिये गये दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ७७ पृ० १२६ ]

१६०

लक्ष्मेश्वर ( मिरज, मैसूर )

शक ९९९-१००० = सन् १०७७ ७८, कन्नड

[ इस निषिधिलेखमें सूरस्य गणके श्रोनदि पण्डितदेव तथा उनके बन्धु भास्करनदि पण्डितदेवके समाधिभरणका उल्लेख है । पुरिकर नगर ( लक्ष्मेश्वर ) के आनसेज्जेबसदिमे इन्होंने सल्लेखना ली थी । मृत्युतिथियाँ क्रमशः आपाढ शु० १२, बुधवार, पिंगल सबत्सर, शक ९९९ तथा चैत्र अमावास्या, रविवार, कालयुक्त सबत्सर, शक १००० इस प्रकार दी हैं । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई ६ पृ० १६१ ]

१६१

अक्कलकोट ( सोलापुर, महाराष्ट्र )

चालुक्यविक्रमवर्ष ४ = सन् १००८, कन्नड

[ इस लेखमें एक जैन मठके लिए कुछ उद्यान, भूमि आदिके दानका उल्लेख है । तिथि पुष्य व० २, रविवार, उत्तरायण सक्रान्ति, सिद्धार्थ सबत्सर, चालुक्य विक्रम वर्ष ४ ऐसी दी हैं । ( वस्तुतः उस वर्षका नाम कालयुक्त सबत्सर था । ) चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य ६ के समयका यह लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ९६ पृ० ३५ ]

१६२

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८०, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लके राज्यवर्ष ६, पुण्य व० (६) गुरुवार, दुर्मतिसंवत्सरका है । इस समय महामण्डलेश्वर जोयिमय्यरसको पत्नी नाविकव्वेने कोण्डकुन्देयतीर्थमें चट्टजिनालयका निर्माण किया तथा उसे कुछ भूमि दान दी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६५ पृ० ५५ ]

१६३

अलनावर ( धारवाड, मैसूर )

शक १००३ = सन् १०८१, कन्नड

[ यह लेख शक १००३ का है । कदम्ब राजा गोवलदेवके समय अलनावरके जैन वसदिके लिए नरसिगय्य सेट्टि द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४७० पृ० ७८ ]

१६४

वनवासि ( मैसूर )

सन् १०८१, कन्नड

[ यह लेख कादम्बचक्रवर्ति वीरमके राज्यवर्ष १२, दुर्मति संवत्सरमें कार्तिक कृ० ५, सोमवारके दिन लिखा गया था । इसमें तिप्पिसेट्टि सातय्य की पत्नी भोगव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है । इनके गुरु देसिगण - पुस्तक-गच्छ - कुण्डकुन्दान्वयके सकलचंद्रभट्टारक थे । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० १४३ पृ० १७२ ]

१६५

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८१, कलह

- १ श्रीमत्परमगमोरस्याद्वादामोषलाहन(१)जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जिनशामन ॥१॥
- २ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज  
परमेश्वर परममहार्क सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्या-
- ३ मरण श्रीमत्त्रिभुवनमल्लदेव ॥वृत्त॥ यस्य वाराशिपयंभूत-  
मनवयदि दुर्विनीतावनीपाला बेर कितुं नीरोल् गलगल्लनलेदी-
- ४ डाडि मुल्लिन्नु चक्रेश्वरार् निष्कटक माडिदरेने महि निष्कटक  
माडि चक्रेश्वरस्य सन्तु पालिसिद्वननिगल विक्रमादित्येव ॥२॥  
अन्तु धीम-
- ५ त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धिप्रवर्धमानमा-  
चद्वतार सलुत्तमिरे ॥ तदनुज स्वस्ति समस्तभुवनसस्त्यमान  
छो-
- ६ कविल्यात पल्लवान्वय श्रीमहीवल्लभ युवराज राजपरमेश्वर  
वीरमहेश्वर विक्रमामरण जयलक्ष्मीरमण शरणागतसहामणि  
चालु-
- ७ क्यचूडामणि कदनत्रिनेश्वर क्षत्रियपवित्र भक्तगङ्गागाराज सहज-  
मनोज रिपुरायसुरेकारणनरुकार धोमत्त्रैलोक्यमल्ल
- ८ धीरनोल्लव पल्लवपेर्मानिदि जयसिंहदेव ॥वृत्त॥ परचक्र-कालचक्र  
नल्लनहुपुत्रगाद्यादिभूपालकालोचरित चालुक्य चूडामणि  
सहजमनोज नतारा-

- ९ तिभूर्माध्वरसंवातोत्तमांगामरणमणिगणज्योतिरुत्तंसभास्वच्चरणं  
सामान्यने भूपरोलपगतविद्विद्वत्कदंबं नोलंब ॥ ३ वचन ॥  
एनिमिद पोगल्लेगं नेगल्लेगं नेलेये-
- १० निसि ॥क॥ अरसुगुणंगल मेय्वेत्तिरे पगे मिगदिरे जनानुरागं  
पिरिदागिरे कीर्तिलतिकं निमिरुत्तिरे वीगनोलंबन-वनतारिकदंबं  
॥४ व॥ एरहु[ मू]नूरुमं वनवासेपनिर्छासिरमु-
- ११ मं सान्तलिगेमासिरमुमं कंहरू सासिरमुमं सुखसंकथाविनाददिं  
प्रतिपालिसुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि । समधिगतपंचमहाशब्द  
महासामन्ताधिपति महाप्र-
- १२ चण्डदण्डनायकं रिपुमस्तकन्यस्तसायकं साहित्यविद्यांगनाभुजंग  
सरस्वतीमुखकमलभृंगनाराधितहरचरणस्मरणपरिणतान्तःकरणं ।  
सरस्वतीकर्णामरणं
- १३ श्रीमन्महाप्रधानं मनेवेगंडे दण्डनायकनेरंयमय्यं ॥कंद॥ सकल-  
कलाग्रहं ब्रह्मकुलाकं वत्सगोत्ररत्नाकरशीतकरं किरियने भुवन-  
प्रकरदोल-
- १४ रिमृत्युभूपनेरंगचमूपं ॥ ५ वृ ॥ एलेयोलु सादृश्यमप्पंदेरंगविभुगे  
विण्पिंगे गुण्पिंगे विण्पिंगेले पारावारमिंद्राचलमवसुरणिं रामनिं  
कृष्णनिं मंचलम—
- १५ श्लिष्टगंभीरमुमगुत्तुयागिल्दुवारय्ये वेरोंदेले वेरोन्द्विध वेरोन्द-  
निमिपनगमेत्तानुमुंत्प्यो ढवकुं ॥ ६ कंद ॥ परिकिपोडे हस्ति-  
मशकान्तरमेनिपुदु तन्न
- १६ गुणद नेगल्लदर गुणदन्तरमेने गुणेणु को मत्सर पंथ बुधोक्त परंग-  
विभुगे सदुक्तं ॥ ७ सदमलकीर्तिवत्तरि दिशान्तरमं तेरपिल्ल-  
दन्तु पर्विदुदु पराक्रमं

- १७ ममिदृद्दु विण्पेपमाणवाद्यभाट्टु चरित शिखापटमनेय्दिदु-  
 दार्पिन स्रु मत्ते पुट्टिदनेनिपन्नुशयत्तेरिगनुव्रनिय पोगल्  
 ममयैरार् ॥ ८
- १८ एनिमिल्दो रयाति विरयानिगे सलुतिरे मन्त वसन्त तदीया-  
 वनिगैवुदानि पेत्तुत्तिरे पुट्टिगेरेमूनम्म स्वामित्तनिय पेप ताल्दि  
 कैकोण्डनुमवि—
- १९ सुत्तमांदायडि सत्यडि कणैनुमं मिक्कु सवपेत्तिरेरगचमूप  
 वळोत्ताय्यस्त्ररूप ॥ ९ कद ॥ तदनुचनपरिमित गुणासदनेमेद  
 सुवनवुभुक सुरप—
- २० तिमपदनतुलमुनजल परमुदतोप्रकरप्रसूनवाण दौणं ॥ १० ॥  
 कलितनदोल् कुस्कुलसकुलमयनन तम्मननुपमानावृत्तियोल्  
 बलदेवन तम्म भुजवल—
- २१ दोल् यममुतन तम्मनेरेगन तम्म ॥ ११ ॥ परेगनडिमोदलो-  
 लरिनृपरेरगिदोडदनरियेनेरगदिरल्बोतागेरगिसुगु गृध्रादि गलेरे-  
 गल् पत्तिकार्ये—
- २२ मरधुरीण दौण ॥ १२ वृत्त ॥ केणमुदारदोल् कोरटे सजन-  
 वृत्तियोलेगु शीकडोल् काणले वारदेदोडे पेर् ससनप्परे मात्थ्य-  
 लोकदोल् दौणनो
- २३ लगनाकुसुमवाणनोलिष्टविशिष्टमकुलत्राणनोल् अन्नसमव-  
 समानसमस्त्वकलाप्रवीणनोल् ॥ १३ परमात्तस्वामीदेव्य पशुपति  
 जितविद्विष्टकदव नोलव
- २४ पोरंदाल्द तद शुमत्तरगुणगणार्दि मिक्क रिक्क विमास्वन्नरिता-  
 लकारं कल्वविके जगनि तदीयाग्रन दण्डनायोत्तरन रुद्धिचे-  
 तिल्देरकपनेने दौणं जमक्किक्कदा-

- २५ णं ॥१४ (हं) कलिकालदोल् विषमकालदोल् उव्वयेयाय्तु धर्म-  
रत्नाकरनेविनं पल्लु कालदिनीक्षिसलाहुदिंतु कोल्पोकुमे धर्म-  
मेन्दोसेदु तन्न कौतुकमागे मे-
- २६ दिनीलोकमशेषमोदे कोरलोल् पोगलल् पडिचंदमप्पिनं ॥१५  
कमनीयक्रमविक्रमाद्दततिपट्कं दुर्मतिप्राब्द पुष्यमशुवलं  
भृगुपट्टियोप्पलवरोल् कूडलु
- २७ व्यतीपातमेव महायोगमुमुत्तरायणमहासंक्रान्तिथुं मानवा-  
त्तमनन्दुज्वलकीर्ति दोणनुरुधर्मत्राणनुत्साहदि ॥१६ कंद॥ परम-  
जिनसमयरत्ना-
- २८ करहिमकरमूलसघसंभवदोभाकरसेनगणनमःस्थल- सरसिजधान्ध-  
वर सितयशःश्रीधवर ॥१७ वरमुनिपर विनतक्षितिपर निरवधर  
नरेंद्रसेन-
- २९ त्रैविधर पादप्रक्षालनपुरःसर दिव्यपुरदोली पुरिकरदोल् ॥१८  
चांद्रं कातंत्रं जैनेंद्रं शब्दानुशासनं पाणिनि मत्तेंद्रं नरेंद्रसेनमु-
- ३० नीद्रंगेकाक्षरं परंगिवु मोगे ॥१९ अवरग्राक्षप्यं॥ निनगंनेवेनो  
शाकटायनमुनीशं ताने शब्दानुशासनदोल् पाणिनि पाणिनीय-  
दोल् चांद्रं चांद्रदोल् तज्जिनेंद्र-
- ३१ ने जैनेंद्रदोला कुमारने गढं कातंत्रदोल् पाल्परन्तेने पालर्  
नयसेनपण्डितरोलन्यर् वाधिवीतोविंथोल् ॥२० सरसतियं  
मनामुददं ताल्द्रिदनेन्नवज्जेगेय्दन्नानिरेनवालिके चिः-
- ३२ सवतियोल् पुट्टुवाल्लुट्टु कष्टमेन्दु निष्ठुरचचनंगलं नुडिदु  
दिक्करियं परिद्वेर कीर्ति तां पुस्तडिस्सि दूरिपल् चरतपोनिधियं  
नयसेनसुरियं ॥२१ अवरग्राक्षिष्यर् ॥ नतभू-
- ३३ पेंद्रकिरीटताडितपदांभोजद्वयं नूतनप्रतिमाभारवि नारहार-



हरहासाकाशनीहारविश्रुतकीर्तिप्रमदाननाब्जमुकुर हा बाणु  
सामान्यमे श्रुतवाराशि नरेंद्र-

३४ मेनमुनिप त्रैत्रिद्यचक्रेश्वर ॥२०॥ जितविद्विष्टप्रतापान्वितदिनधिक-  
शौर्यस्वदाट्टापदिदुर्जितमास्वजैनधर्मापितदृढमतिरि विप्रवशा-  
वराहपतिर्येबोदुद्धतेजस्वदिनतु-

३५ लबलैश्वर्यादि त्यागदौदुनतिरिदि सत्यदिद दिनकरनतिशोभाकर  
पुण्यपुज ॥२३॥ दिनकरनादयदोल् तममानितु तूल्दोडुवन्ते  
मिथ्यात्प्रतम दिनकरनुदयिमे निजकुल-

३६ वनदिं तूल्दोडि किडुवुदें त्रिस्मयम ॥२४॥ आतन तनयर्  
जनविख्यातर् जिनपदपयोजभृगर् विनयान्वितरने नेगदर-  
ग्विलक्षमातलदोल् राजिमय्यनु दृढमनु ॥२५॥ वृत्त॥

३७ जिनपादामोजभृग सुजनजनमनोरजन त्रिश्रधान्नोविनुत दिग्द-  
न्तिदन्ताश्रितविशदयशोभासि शिष्टेष्टकरपावनिज सत्पात्रदाना-  
धिकमेनुते मनोरागादिं कृतुं विद्वज्जनम-

३८ ह्म वणिगु राजननमललमत्तेजन निच्चनिच्च ॥ २६॥ मनुमुनि-  
मार्गनेम झिनपूजेयोलतिगनेंदु दानियेदनुपमतेजनेंदु शुचियेदु  
दयापरनेंदु निच्चलु मनमो(मे)-

३९ दक्करिं बिडदे वणिगुसुगु जगमेयूदे कूडे राजननिनतेजन पसुगे  
गोजननाश्रितकल्पभूजन ॥ २७॥ तत्प्रियानुनन शौर्यदलव  
पेटवडे ॥ कदपिन्द

४० धरणीश्वर धेमसे चौरासीशन बन्दिय पिडिद साहसदिन्दम  
सुगेयनिन्दोर्वीशन कोपदिं पिडिदुयदा सेरेयिट सोमननत्याश्चर्यादिं  
बन्दिय पिडि

४१ द तानेने शौर्यदोन्डलवदें सामान्यम दूडन ॥ २८॥ निजपतिय

तथा नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन ( द्वितीय ) को पौष कृष्ण ६, शुक्रवार, उत्तरायणसक्रांतिके अवसरपर कुछ दान दिया । इसके बाद लेखमें दिनकर, उसके पुत्र राजिमय्य तथा दूदम, दूदमकी पत्नी एचिकब्बे तथा पुत्री हम्मिकब्बे, हम्मिकब्बेका पति अरसय्य तथा पुत्र वैद्य कन्नप एवं कन्नपके पुत्र इन्दप, ईश्वर, राजि, कलिदेव, आदिनाथ, शांति, एवं पार्श्वका वर्णन है । संभवतः इन लोगोंकी प्रार्थनापर दोणने उक्त दान दिया था । ]

[ ए० इ० १६ पृ० ५८ ]

१६६

अरसीबीडि ( बिजापुर, मैसूर )

चालुक्यविक्रम वर्ष १० = सन् १०८५, कन्नड

[ इस लेखकी तिथि आपाढ शु० १, बुधवार, जोधन सवत्सर, चालुक्य वर्ष १० ऐसी है । इस समय मुकवेर्गडे मन्तर बर्मणने विक्रमपुर ( वर्तमान अरसीबीडि ) स्थित गोनद बेडगि जिनालयके ऋषि-अजिकाओं-को आहारदान देनेके लिए कुछ करोका उत्पन्न दान दिया था । सिद्धवशके मन्दिरसके पुनर्बर्मदेवरसके अधीन प्रान्तीय शासकके रूपमें मुकवेर्गडे नियुक्त था । ]

[ मूल लेख कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० २३९ ]

१६७

मरुत्तुवक्कुडि ( तञ्जोर, मद्रास )

तमिल, सन् १०८६

[ यह लेख ऐरावतेश्वर मन्दिरके आगे मण्डपकी दक्षिणी दीवालपर है । त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तु गञ्जोलदेव, जिमने मदुरा जीतकर पाण्ड्य

राजाका शिरच्छेद किया था—के १६वें वर्षमें यह लेख लिखा गया था । इसमें जननाथपुरम्के दो जैन मन्दिर चेदिकुलमाणिक्य पेरुम्बल्लि तथा गंगरुलमुंदर पेरुम्बल्लिका उल्लेख है । ]

[ इ० म० तंजोर १००३ ]

१६८

दोणि ( धारवाड, मैसूर )

चालुक्यविक्रम वर्ष २० = सन् १०९६, कन्नड

[ यह लेख फाल्गुन शु० १३ गुरुवार, चालुक्यविक्रम वर्ष २० के दिन लिखा गया था । सम्राट् त्रिभुवनमल्ल ( विक्रमादित्य पण्ड ) के राज्यका यह लेख है । इस समय यापनीय संघ-वृक्षमूल गणके मुनिचन्द्र त्रैविद्य भट्टारकके शिष्य चारुकोर्ति पण्डितको सोविसेट्टि द्वारा एक उद्यान दान दिया गया था । ]

[ मूल लेख कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० १६९ ]

१६९-१७०

तुम्बदेवनहल्लि ( मैसूर )

चालुक्यविक्रम वर्ष २१ = सन् १०९६, कन्नड

- १ श्रीमदेरेयंगदेवर असवच्चर(सि)माडिसिद वसदि मंगल महा श्री
- २ स्वस्ति समस्तमुरासुरमस्तकमणिमकुटरश्मिरंजितचरणप्रस्तुत-  
जिनेन्द्रशासन-
- ३ मस्तु चिरं सकलभव्यचन्द्रजनानां ॥ (१) मद्रमस्तु जिनशासनाय  
संभद्रतां प्रति-
- ४ विधानहेतवे अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटी-  
यसे ॥ (२)

- ५ जयवर्मं मुददिन्द इरुदु निथत पट्टलिगेय सान्यलीलेयिनाल्-  
दुन्नतिरिं मन-
- ६ गोलिमि विद्विष्टजक्केय्दे भीतियनिष्ठायमनण्णुक्केय्दु चलम  
कैकोण्डु लोकप्रामि-
- ७ द्वियुत मााडदनामगन् निले कदम्बाम्नायवित्थायित्थिय ॥(३)  
श्रीमत्कदम्बवशललामा-
- ८ वनिनाथरोलगे रणकिक्षितिथ मोमपराक्रमनेनिसिदन्ता मद्वियोल्  
अरातिनृपजयोद-
- ९ यद्विद ॥(४) आतन मगनमलगुणापेतनतिप्रथलजलदधनपवन-  
नेनिष्पाततय-
- १० शोत्रिलासविनृततेगेडेयागि नेगल्द वलि इदुवनृप ॥(५) तत्त-  
नेयनतुलवलमुदवित्तरिपु-
- ११ क्षितिपकुधरवत्त धीरोदातनेने नेगल्दनकुदिलक्षित पोष्वायिनृत-  
पूत वृत्त ॥(६)
- १२ आतगे पुट्टि इलवदरातिमहीभुज्जरनिरिदु गेल्दमिनात्तुवात्तलमे  
पोगळे तौरिदनात-
- १३ तमितकोति नोसलकण्ण चिण्ण ॥(७) एने नेगल्द चिण्णनृपतिग  
अनवयलतागि सुगियच्चरसिग
- १४ सुर्विनदोमगे पुट्टे पुट्टिद तनेयनतिप्रकटविशदयशनेरेयग अक्कर  
नेगल्द नृ-
- १५ पस्तनाल्वरनेवेट्टे मीतिरिं वन्दु पोगळे तन्ननवर पट्टियोडेयन  
पेरगिक्कि कादुनिन्दाल्परन वगयद्-
- १६ आन्तरिसेनेयनोदिसि गेल्दमिनेसकदिं मिन्नुजग मिगिलुदप्र-  
वलावलेपन भुजादण्डनी नन्निमात्तण्डदेव ॥(८)
- १७ मलेट्टिदिरनान्त चालिकवलमेत्तदोदान्तुमदिरद्वयगन दोत्रल-  
दल्वनेवोगल्बुदो जक्कलदेवननेय्दे

- १८ कादुकलिपिद चलमं ॥ (९) अन्तु नेगल्देरेगनृपतिगनन्तसुखास्य-  
देयेनिष्प येचांविकेगं कन्तुवेनिष्प
- १९ चिण्णं कान्तं पुट्टिदनुदारतेजोनिलय ॥ (१०) पुट्टलोडं निन्नये  
पेसरिट्टपरी जगद मनुजरन्दोडे पेसरों-
- २० दिट्टलमादडे कोलु पट्टलिगेय चिण्णनेम्ब भयरसदिदं ॥ (११)  
आतंगे बुट्टिदं विख्यातितशितकीर्-
- २१ तिं नेगल्द गण्डतरण्डं भूतलके कल्पवृक्षसमोपेतनेनिष्प दानि  
येरेगमहीश ॥ (१२)
- २१ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरं वनवासिपुर-  
वराधीश्वरं कादम्ब-
- २३ चक्रेश्वरं नुदारमहेश्वरं नुभयवलगण्डं नन्निमातंडं तनगिल्लदीवं  
कगंसहादे-
- २४ वं मानिनोमनोहर हरचरणशेखरं हरिपादसरसीरुहोत्तंसं  
सरस्वतीक-
- २५ णावतंसं विकलकुलनृपतिहृदयसंतापकरं विवेकविद्याधरं भृगुमता-
- २६ चायं मन्दरधैर्यं कादम्बकुलकमलविकाशनादित्यं विजातिराजता-  
रागणतरुणादि-
- २७ त्यं विक्रमप्रक्रमकिशोरकण्ठीरवं कादम्बकण्ठीरवं मागधिकमा-  
निनीमदहरिपु-
- २८ लक लाटवधूटीमाललीलातिलकं विरुद्रिनेत्रं हयशालिहोत्रं तूगितु-
- २९ त्तिडुव विरुद्रपेण्डरगण्डं गण्डतरण्डं भरिविरुद्रचायोलं सुरि-  
गेयं किरिपु
- ३० व द्दोडुंकं वडिव गीतप्रगीतं गेयविनोदं निजकुलोत्तुंग श्रीमदेरे-  
यंगदं-
- ३१ व स्थिरं जीयात् ॥ कन्द ॥ गंगेगडलगल नोरेगं तिगल वेल्-  
पिंगमोदवलडकिल्वेल्पि

३२ सगलसि तीविदत्तेरेयगन जसमखिलभुजनातरदोलु । नटनिट-  
लेक्षणा-

३३ गिन नृगणगण उज्ज्वलकीर्तिपाण्डुरभू कुरलु जडेयागे जगक्क

३४ दवनादरिविन्दत्रिनेत्रनेमगी कोण्टकुन्दान्वयो-

३५ त्पञ्चे विरयाते देसिगे गणे रविचन्द्राप्यमै यमनियम

३६ स्वाध्यायपराणैयरण्य माचवेगन्तिय तावरेयकेरय कलग-

३७ ण आदणमण्ण धारापूर्वक कोट्टर् चालुक्यविक्रमकालद २१ने  
धातुमवत्सरद कार्तिक न-

३८ न्दीश्वरदष्टमियन्दु मगलमहाश्री स्वदत्ता परदत्ता त्रा यो हरंत  
वसुन्धरा पष्टिर्वप-

३९ सहस्राणि विष्टाया जायते क्रिमि ॥

[ यह लेख स्थानीय जिनमंदिरके निर्माणके समयका है । यह बसदि  
एरेयगदेवकी रानी असत्रब्बरसि द्वारा बनवायी गयी थी । लेखमें एरेयगका  
वक्षत्रर्णन इस प्रकार दिया है—कदम्ब कुलमे रणकि राजा—तत्पुत्र हृदुव-  
तत्पुत्र बूत—तत्पुत्र चिण्ण—तत्पुत्र एरेयग—तत्पुत्र चिण्ण २—तत्पुत्र एरेयग २ ।  
इस मंदिरके लिए कोण्डकुन्दान्वय देसिग गणके रविचन्द्र सै(द्वातदेव)के  
उपदेशसे माचवेगन्ति द्वारा कुछ भूमि दान दी गयी थी । लेखकी तिथि  
कार्तिककी मन्दोश्वर-अष्टमी ( शुक्ल ८ ), चालुक्य विक्रम वर्ष २१, धातु  
सवत्सर इस प्रकार दी है ।

इसी मन्दिरकी एक प्रतिमाके पादपीठपर ११वीं सदीकी लिपिमें  
निम्न वाक्य खुदा है—

बस(दिगे) वासवुरदे विदू ग २ भत्त ५०

अर्थात्—इस बसदिके लिए वासवुर ग्रामके उत्पन्नसे २ गद्यान  
( मुद्राएँ ) और ५० भत्त ( चावलके परिमाण ) दान दिये गये हैं । ]

[ ए० रि० मै० १९३९ ए० १४५-१५२ ]

१७१

हनगुन्द ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[ इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव ( विक्रमादित्य पण्ड ) का उल्लेख है । तिथि शक ९००० दी है । मूलसंघ-देशीय गण-पुस्तक गच्छ-कुन्दकुन्दान्वयके ( इन्द्र ) णंदिके शिष्य बाहुवलि आचार्य द्वारा एक जिन-मन्दिर बनवानेका तथा उस मन्दिरके लिए कुछ भूमिदान प्राप्त करनेका इसमें उल्लेख है । ]

[ मूल लेख कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० ३० इ० ११ पृ० १४१ ]

१७२

तोललु ( मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

- १ स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर....त्रिभुवनमल्ल तलका-
- २ कमाडि विट्टन्दु                      ३ नदसुविरि
- ४-७ ( ये पंक्तियाँ विस्र गयी हैं )
- ८ स्वस्तिश्रीमतु तोललु वसदिगेनाडु.... ९.....
- १० हिरिय सुद गनुण्ड....गनुण्ड विलग
- ११ वुण्ड वूलुवनड....वुण्ड वूरय्वर् ओक्कल
- १२ ....उत्तराण संक्रान्तियन्दु नविल-
- १३ रं नेमिचन्द्रपण्डितगे धारापूर्वकं माडि कोट्टर आ-
- १४ नविल्लोलगे आवनागि-वटुकुववनु....हण
- १५ वेन्दु हिडिसिद्व....हन्नोन्दु
- १६ तलेयं नरकद्रलिलिवरु गंगेयतडियलि कविले-

१७ य द्राह्मणर नोय्सिद् फलमन् प्पुदुवरु

१८ स्वदत्ता परदत्ता चा यो हरेत वसुन्धरा प-

१९ प्पिर्वर्षसहस्राणि विष्ठाया जायते क्रिमि ॥

[ इस लेखमें तोललके जिनमन्दिरके लिए नेमिचन्द्र पण्डितको नविलूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान हिरियमुद्गोण्ड, बिलिगोण्ड तथा अय ५२ निवासियो द्वारा दिया गया था । लेखमें प्रारम्भमें त्रिभुवन-मल्ल ( विक्रमादित्य पण्ड ) के किसी माण्डलिकका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४४ ]

१७३

तिरुनिडकोण्डै ( मद्रास )

तमिल, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[ इस लेखके प्रारम्भमें कुलोत्तुग चोल ( प्रथम ) की ऐतिहासिक प्रशस्ति है । राजेन्द्रचोलचेदिराजन् द्वारा देवमन्दिरमें दीपके लिए कुछ धान अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । उडियार् मल्लिपेयका उल्लेख है जो स्पष्टतः कोई जैन आचार्य थे । लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०१ पृ० ६५ ]

१७४

ऊन ( मध्यप्रदेश )

११वीं सदी, सस्कृत-नागरी

[ इस स्थानमें कई जैन मन्दिरोंके ध्वस्त अवशेष हैं । इनमें एक मन्दिरके एक छोटे-से लेखमें मालवराज उदयादित्यका उल्लेख है । अतः यह मन्दिर ११वीं सदीका बना है यह स्पष्ट होता है । ]

[ रि० आ० स० १९१८-१९ पृ० १७ ]



१७५

सागरकट्टे ( मैसूर )

११वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमद्राविलसं	२ घद आरुंगला-
३ न्वयद नन्दिगण	४ द शान्तिमु-
५ निगल शिष्यसन्त-	६ ति श्रीवादिरा-
७ जदेवर शिष्यरु	८ श्रीवर्धमानदे-
९ वरु होयसल-	१० कारालियदलु
११ अग्रगण्यरु स-	१२ न्यसनदि मुडि(पि)
१३ दरवर सध-	१४ मरु कमलदे-
१५ वरु निसिधियं	१६ निरिसिदरू

[ इस लेखमे द्राविल संघ-अरुंगल अन्वय-नन्दिगणके शान्तिमुनिकी परम्पराके वादिराजदेवके शिष्य वर्धमानदेवके समाधिमरणका उल्लेख किया है । वर्धमानदेवके गुरुवर्यु कमलदेवने उनको यह निसिधि स्थापित की थी । वर्धमानदेवको होयसल राज्यमे प्रमुख कार्यकर्ताका स्थान प्राप्त था । लेखकी लिपि ११वीं सदी की है । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०८ ]

१७६

वेणगि ( जि० वेलगांव, मैसूर )

११वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखकी लिपि ११वीं सदीकी है । लेखके समय ( रट्ट वंशके ) कार्तवीर्य ( द्वितीय )का शासन कूण्डि ३००० प्रदेश पर था । इसे जिनेन्द्रपादसरोजभृंग तथा सेननसिग कहा है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८४ पृ० २४७ ]

१७७-१७८

चिक्कहनसोगे ( मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी

[ यह लेख आदिनायमूर्तिके पादपीठपर है । इसमें हनसोगेके तीर्थ-वसदिकी स्थापना रामचन्द्र-द्वारा की जानेका तथा कालान्तरमें शक, नल, विक्रमादित्य, गग एव चगाल्व राजाओं-द्वारा उसकी सहायताका उल्लेख है । प्रस्तुत लेखके समय नागचन्द्रदेवके शिष्य समयभरण भानुकीर्ति पण्डितदेवों इस वसदिका जीर्णोद्धार किया था । इसी पादपीठके दूसरे लेखमें अयकीर्ति भट्टारकके शिष्य बाहुबलिदेव द्वारा वसदिके निर्माणका उल्लेख है । इन लेखोंका समय ११वीं सदी प्रतीत होता है । ये आचार्य मूलसध देसिगण-मुस्तकगच्छके प्रमुख थे । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५० ]

१७९

चिकमगलूर ( मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी

- १ स्वस्ति श्रीमतु बूचव्वे-
- २ गन्तियर सिष्य नेचटिम-
- ३ ताय निमिधिगेय नि-
- ४ लि मज वरेद ॥

[ यह निषिधि लेख बूचव्वेके समाधिभरणका स्मारक है जो उसके शिष्य नेचटिमतायि-द्वारा स्थापित किया गया था । इसकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६२ ]

१८०

कोप्पल ( रायचूर, मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी

[ यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें कोण्डकुन्द अन्वयके मलघारिदेव तथा अन्य आचार्योंका वर्णन है । एक गृहस्थ जैनका भी वर्णन है । ]

[ रि० ड० ए० १९५५-५६ क्र० १९८ पृ० ३७ ]

१८१

मदचित्तगम् ( वेल्लारी, मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी

[ यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है । किसी जैन मन्दिरके लिए दानशाला, उद्यान आदिकी व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० ३९२ पृ० ५७ ]

१८२

वेल्लूर ( हासन, मैसूर )

११वीं सदी, कन्नड

- १ ....युतं जिनेन्द्रप्रगुणि-
- २ ....द्र द्रपं....मले महे-
- ३ .....
- ४ नेयद्रिवं....ने....
- ५ पृवाकमन् पृख्वं....माणद....य
- ६ महीतलकति मुददि....
- ७ विलोक बुध बोध....भाग्य....

- ८ न्त दिविजविमवम सन्द मामावि वम्मं ॥ पत्तिहितवृत्तिथो-  
 ९ लिबन् भप्रतिमन् एनल् दिविज पद्म महोपतिपोडने  
 १० कूडि पोक्क चतुर मामावि वम्मं आ नेगल्ड भूमि-  
 ११ य मुन्नाल्डग सले काक्षिय माध्य देनेत्ताल्डनोडने सग्गम-  
 १२ न् आल्ड द्यम्हु वम्मं

[ इस लेखमें मामावि वम्मं नामक व्यक्तिके देहत्यागका वर्णन है । अपने स्वामीकी मृत्युपर खेद व्यक्त करनेके लिए समने सम्भवन देहत्याग किया था । यह प्रथा होयमल राजाओंके समय म्द थी । लेखकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९४३ पृ० ५९ ]

१८३

हट्टण ( मैसूर )

१२वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

[ इस लेखमें होयमल राजा वल्लाल १के समय मरियाने दण्डनायक द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । आचार्य शुभचन्द्रका भी इसमें उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५ ]

१८४

चिकमगलूर ( मैसूर )

शक १०२२ = सन् ११०१, कन्नड

- १ सच्चत सकवर्ष १०२२ नेय
- २ विक्रमवत्सरद फाल्गुन शु (४)
- ३ सोमवारदु द्व-विन

- ४ सनंगेरट्टु दिचक्के सुन्दरव(र)सद
- ५ मिं मालेयव्वगन्तियप्परो.....वि(ने)
- ६ यमं माडि निसिदिगेय माडि
- ७ अवर गुडु जगमणचारि व-
- ८ रंद

[ यह लेख फाल्गुन शु० ४, सोमवार, शक १०२२ विक्रमसंवत्सरमें लिखा गया था । एक व्यक्तिके ( जिसका नाम लुप्त हुआ है ) समाधि-मरणके बाद उसके सहाय्यायी मालेयव्वेगन्ति-द्वारा इस निषिधिकी स्थापना का इसमें उल्लेख है । उसके शिष्य जगमणचारिने यह लेख उत्कीर्ण किया था । ]

[ ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६१ ]

१८५

टोंक ( राजस्थान )

संवत् ११५८ = सन् ११०२, संस्कृत-नागरी

[ इस मूर्तिलेखमें आलाक नामक व्यक्तिका उल्लेख है । तिथि वै ( शाख ) शु० ७, संवत् ११५८ ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४७२ पृ० ६९ ]

१८६

होसूर ( जि० बेलगांव, मैसूर )

शक १०३० = सन् ११०८, कन्नड

[ इस लेखकी तिथि सोमवार, पीप शु० ५, शक १०३०, सर्वधारि संवत्सर, उत्तरायण संक्रान्ति ऐसी है । ( रट्ट वंशके ) लक्ष्मीदेव-द्वारा एक बसदिके लिए राजधानी बेणुपुरसे कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । यह बसदि लक्ष्मीदेवने ही बनवायी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० १५ पृ० २४१ ]

१८७

## मुडिगोण्डम् ( मैसूर )

शक १०३ (१) = सन् ११०९, कन्नड

[ इस लेखमें मुडिगोण्डचोलपुरके नगरजिनालयको हदिनाडुका एक गांव दान दिये जानेका उल्लेख है । यहाँकी मुख्य मूर्ति चन्द्रभक्तस्वामीकी थी । तिथि शक १०३ (१) ]

[ रि० सा० ए० १९१० क्र० १० पृ० ५४ ]

१८८

## श्रवणनहत्तिल ( मैसूर )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगम्भीरश्याद्रादामोघलाज-
- २ न जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं त्रिनशासनं ह्यस्ति
- ३ श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल तल-
- ४ काडुगोण्ड भुजबलवीरगग विष्णुवर्धन होय्स-
- ५ लदेवर विरियरसि चन्तलदेवियरु त्रिभुवनतिल-
- ६ तीर्थद वीरकोंगादयजिनालय-
- ७ द देवर अगमोगवक्क विरियरादारदानवक्क त-
- ८ म्म बप्प पृथ्वीकोंगात्त देवर वग बलियलि वि-
- ९ द मन्दगेरेय श्रितियोलगे कावनहत्तिलय तम्म
- १० तम्म दुदमल्लदेवनु तावु इल्लु श्रीमूलसघ
- ११ देसिगगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमेघ
- १२ चन्द्रत्रैविद्यदेवर शिष्यर प्रमाचन्द्रसिद्धा (न्तदेव-)
- १३ र काल कर्चि धारापूर्वक माडि स(र्वबाधा-)
- १४ परिहार माडि बिट्ट दत्ति म(गल महा-

१५ श्री ॥ इदं आवन् ओवं प्रतिपालिसिद्ध

१६ (क) विलेय कोहुं कोलगमं

१७ गंगेय....

[ इस लेखमें होयसल राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी-द्वारा तथा उसके वन्धु दुद्धमल्ल-द्वारा वीरकोंगाल्व जिनालयके लिए कावनहल्लि ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान मूलसंघ-देसिगणके मेघचन्द्र-त्रैविद्यदेवके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवको दिया गया था । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० १०३ ]

१८६

अंकनाथपुर ( मैसूर )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[ इस लेखमें एक जिनमन्दिरके जोर्णोंद्वारके लिए राजा दुद्धमल्ल-द्वारा हेण्णेगडंग नगरसे अय्यवल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है । यह दान प्रभाचन्द्रदेवको दिया गया था । लिपि ११वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३ ]

१६०

कण्णूर ( मैसूर )

चालुक्यवर्ष ३७ = सन् १११२, कन्नड

[ चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य ( पण्ड ) के समय चालुक्यविक्रम वर्ष ३७ ( सन् १११२ ) में कालिदासदण्डनाथ-द्वारा कन्नवुरीके पार्श्वनाथ-वसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है । मूलसंघ-देशिगण-पुस्तकगच्छके आचार्य वर्धमानमुनिके प्रशिष्य तथा बालचन्द्रव्रतीके शिष्य अर्हणन्दिबेट्टदेवको यह दान दिया गया था । ]

[ रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २४२ ]

१९१

जङ्गलि ( बिजापूर, मैसूर )

चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ = सन् १२१६, कन्नड

[ इस लेखमें चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ में उत्तरायण सत्रातिके समय एक जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए कुछ दानका उल्लेख है । ]

[ रि० मा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० १९६ पृ० १७ ]

१६२

कोल्हापुर ( महाराष्ट्र )

शक १०३७ = सन् १११५, संस्कृत-कन्नड

पहला पत्र

- १ स्वस्ति । जयत्याविष्कृत विष्णोर्वाराह क्षोभितार्णव (१) दक्षि-  
णोन्नतदक्षाम्रविश्रा-
- २ न्तभुवन वपु ॥ (१) जयति जगति रुढो राजलक्ष्मीनिवास-  
प्रविजितरिपु-
- ३ वर्गस्वीकृतोत्कृष्टदुर्ग ( ) मकलसुकृतवासो वीरलक्ष्मीविलासो  
जनितसुजन-
- ४ राग श्रीशिलाहारवश (॥२) श्रीमत्शिलाहारनरेन्द्रवशे श्री-  
कीर्तिकान्ता कमनी-
- ५ यरूपा (१) विरयानशौर्या बहवो नृपेन्द्रा सपालयामामुरिमां  
धरि-
- ६ त्रीं (॥३) तद्वशे नृपतिर्वभूव जतिगो गोमन्धदुर्गाधिपो माम  
श्रीवनितापतिस्सु-
- ७ चरितो गगस्य पेर्मानडेस्तस्याभूत्तनय प्रतापनिलय ( ) श्री-  
नायिमा-



- ८ को नृपः कर्णाटीकुचकुङ्कुमांकिततनुर्विद्याधराधीश्वरः (॥४)  
तस्यात्म-
- ९ जस्सुपरिवर्धितराज्यलक्ष्मीः प्रादुर्बभूव समुपार्जितपुण्यपुञ्जः (॥१)  
१० चन्द्राह्वयो जगति विश्रुतकीर्तिकान्तत्यागार्णवो बुधनुतो नयनाभि-  
११ रामः (॥५) तस्यापि पुत्रो जतिगो नरेन्द्रो जातः प्रवीरो गज-  
यूथनाथः (॥१) तस्या-
- १२ त्मजौ गोंकलगूवलाख्यौ जाताबुमौ वैरिकुलाद्रिवज्रौ (॥६) तद्-  
गोंकलस्य तनुजी रिपुदन्ति-
- १३ सिंहः श्रीमारसिंहनृपतिर्मरुवक्कसर्पः (॥१) प्रादुर्बभूव समरां-  
गणसूत्र-
- १४ धारो विख्यातकीर्तिरिह पण्डितपारिजातः (॥७) तस्याग्रसूनुर्जग-  
देकवीरो वी-
- १५ रांगनाबाहुलतावगूढः कीर्तिप्रियो गूवलदेवनामा बभूव भूपाल-  
१६ वरो नरेन्द्रः (॥७) तस्यानुजस्सकलमंगलजन्मभूमिरासीन्नृपाल-  
तिलको भुवि मोज-
- १७ देवः (॥१) प्रोत्तुंगवीरवनिताश्रयबाहुदंडश्चंडारि-मंडलशिरोगिरि-  
चन्द्रदंडः (॥९)  
दूसरा पत्र : पहला भाग
- १८ श्रीमत्कदंबावरतिग्मरश्मेक्षितस्सरोजं खलु शान्तरस्य (॥१) पूजां  
प्रचक्रे स च चक्रवर्तिश्रीचक्र-
- १९ मादित्यनृपेन्द्रपादे (॥१०) किं वर्ण्यते जगति वीरतरः प्रसिद्धः  
कोपात्तु कौगजनृपोपि-
- २० पपात यस्य (॥१) सूर्यान्वयांवररविस्स च विज्जणोपि चक्रे गृहं  
सुरपतेर्भुवि य-
- २१ स्य कोपात् (॥११) यत्प्रतापप्रदीपेस्मिन् कोक्कलशालमायितः  
(॥१) पलायिता न गण्यन्ते सोयं

- २२ भोजनृपालक (॥१२) वेणुग्रामदवानलो विजयते बैरीमकण्ठीरवो  
गोविन्दप्रलयान्त-
- २३ क शिसरिणो वत्र कुरजस्य च (१) भोज स्वीकृतकौकणो  
भुजगलान् तद्मिलुमोद्वन्ध-
- २४ कृत् सोय कर्णदिशापटो रिपुकुभृद्दोर्दण्डकण्डूहर (॥१३)  
तस्यानुजातो गुणराशि-
- २५ रामीन् बल्लालदेवो जितवैरिभूष (१) जीमूतवाहान्वयरत्नदीपो  
गभीर-
- २६ मूर्तिमुंवि शौर्यशाळी (॥१४) अजनि तदनुजातस्तिग्मरश्मि-  
प्रतापो दिविजयतिवि-
- २७ भूतिस्मर्वलक्ष्मोनिधास (१) कृतरिपुमदमगो राजविद्याप्रसगो  
भुवनवि-
- २८ नुतमूर्तिगण्डरादित्यदेव (॥१५) चक्रे चालुक्यचक्रेशो विक्रमा-  
दित्यवल्लभ (१) निदश-
- २९ कमल हृत्पारया गण्डरादित्यभूपते (॥१६) धन्यास्ते माज-  
घास्मर्ध्वे धन्याश्च मृगजात-
- ३० य (१) म देशस्सफलो यत्र गण्डरादित्यभूपति (॥१७) यन्-  
खड्गाद्भुततीव्रघा-
- ३१ तचक्रितस्तत्कृण्दिदशाधिपो दण्डवहानृपा जगाम सदन ससेव्य-  
मान सुरै-
- ३२ स्थक्त्वा राष्ट्रमतीपरम्यमतुला लक्ष्मीं भुजोपार्जिता सोय गण्डर-  
देवम-
- ३३ ण्डलपतिस्सप्तोमने भूतले (॥१८) रत्नानि यत्नेन ददाति तस्मै  
रत्नाक-
- ३४ रो मगमयाज्जडात्मा (१) आपूर्य सम्यक् मतत वहिन्न सूक्ष्माणि

- ३५ वासांसि हयाश्च तस्मै (॥१९) किमिह बहुमिरुक्तैरल्पगर्भैर्व-  
चोभिर्भुवन-
- दूसरा पत्र : दूसरा भाग
- ३६ विदितवीरः क्रूरसंग्रामधोरः (१) भपरनृपतिकोशं देशमत्यन्तशोभं  
यदि स कुपितचित्तः
- ३७ कारयत्यात्मकीयं (॥२०) समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरः  
तगरपुरवरा-
- ३८ पीश्वरः । श्रीशिलाहारनरेंद्रः । जीमूतवाहनान्वयप्रसूतः सुव-  
र्णगरुड-
- ३९ ध्वजः । मवक्कशसर्पः । अय्यनसिंहः (१) रिपुमण्डलिकभैरवः  
(१) विद्विष्टगजकण्ठी-
- ४० रवः । गणिकामनोजः । हयवत्सराजः । शौचगांगेयः । सत्पराधेयः ।
- ४१ इन्दुवरादित्यः रूपनारायणः । कलियुगविक्रमादित्यः । शनिवार-
- ४२ सिद्धिः । गिरिदुर्गलंवनः श्रीमन्महालक्ष्मीलब्धवरप्रसादादि-  
समस्तराजाव-
- ४३ लीविराजितः श्रीमन्महामण्डलेश्वरः श्रीगण्डरादित्यदेवः श्रीम-  
द्वल्लय-
- ४४ चाण्डगिरिं सुखसंकथाविनोदेन राज्यं कुर्वाणः । सप्तत्रिंशदु-  
त्तरसह-
- ४५ ज्येष्ठे शुक्लपक्षे १०३७ अतीतेषु मन्मथसंवत्सरे कार्तिकमासं  
शुक्लपक्षे ।
- ४६ अष्टम्यां बुधवारं मिरिजदेशे । मिरिजंगम्पणमध्ये । अंकुलगं घोष्ये-
- ४७ यवाट इति ग्रामद्वयं आदगेनामग्रामस्य प्रविष्टं कृत्वा तद्ग्रा-
- ४८ मारुषण त्यक्त्वा तत्रत्यनार्गावुण्डा यदि नायकत्वं कुर्वन्ति तेषां  
शरी-

- ४९ रजोवितार्थं सुवर्णं न ददाति यदि नायकत्वं नेच्छन्ति स्वेच्छया  
तिष्ठन्ति त-
- ५० दा कोदेवण नास्ति । एवमनेन क्रमेण ० श्रीमत्पवित्रे निगु व-  
तोसरा पत्र
- ५१ दशे जात पुमान् होरिमनामधेय (१) कीर्तिप्रिय पुण्यधन  
प्रसिद्ध श्री-
- ५२ जैनसघावुजतिग्मरश्मि (॥२१) तस्यात्मजोभूदिह वीरणाख्यस्त-  
स्यानुजोभू-
- ५३ दरिकेमरीति (१) तद्वीरणस्यापि तनूमवोय बभूव कुदातिरिति  
पनिद्ध (॥२२)
- ५४ तस्यानुजस्मुपरिपालितवन्धुवर्गं श्रानायिमो जिनमताबुधिच-
- ५५ द्र ण्य (१) त्यागान्वितस्सुचरितस्सुजनो बभूव प्रत्यातकीर्ति-  
रिह धर्मप-
- ५६ र प्रसिद्ध (॥२३) तस्यापि वीर सुजनोपकारी नोलबनामा  
तनयो बभूव (१)
- ५७ श्रीगण्डरादित्यपदाब्जभृगो धर्मान्वितो वैरिमतगसिद्ध (॥२४)  
तस्मै
- ५८ समस्तगुणालङ्कृताय निगु वकुलकमलमार्तण्डाय । सुवर्णम-
- ५९ त्त्योरगेंद्रध्वजविराजिताय सम्यक्त्वरत्नाकराय पद्मावतोदेवो-  
लङ्घवर-
- ६० प्रसादाय नोलबसामन्ताय सर्वनमस्य सर्वबाधापरिहार पुत्र-
- ६१ पौत्रकमाचन्द्रार्कं दत्तवान् ०

[ यह ताम्रपत्र चान्दक्य मन्नाट् विक्रमादित्य ( पृष्ठ ) के माण्डलिक  
शिलाहार राजा गण्डरादित्यदेव-द्वारा कार्तिक शुक्ल ८, बुधवार, शक  
१०३७ के दिन दिया गया था । निगु वशके सामन्त नोलबको मिरिज

प्रदेशके अंकुलगे तथा वोप्पेयवाड इन दो ग्रामोंका अधिकार अर्पण करनेका उल्लेख इसमें किया है । नोलंवकी वंशावली इस प्रकार थी—होरिम-वीरण-कुंदाति — उसका वन्धु नायिम-नोलंव । नोलंवको सम्यक्त्वरत्नाकर तथा पद्मावतोलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं ।]

[ ए० ई० २७ पृ० १७६ ]

१६३

होले नरसिपुर ( मैसूर )

१२वीं सदी : पूर्वार्ध ( सन् १११५ ), कन्नड़

[ इस लेखमें महामण्डलेद्वर वीर कोगात्वदेव-द्वारा भूलसंघ-देसिगण-के मेघचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवके उपदेशसे सत्यवाक्य जिनालयके निर्माणका तथा उसे हेण्णगडलु ग्राम दान देनेका उल्लेख है । ( समय लगभग सन् १११५ । )]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३ ]

१६४

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् १११५, तमिल

[ यह लेख चोल सम्राट् कुलोत्तुंग राजकेसरिवर्मन्के ४५वें वर्षमें लिखा गया था । तिरुप्परम्बूरकी ग्रामसभा-द्वारा तिरुक्काट्टाम्पल्लि आल्वार जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि विक्रय किये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३५ ]

१९५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् ( चिगलपेट, मद्रास )

राज्यवर्ष ४६ = सन् १११६, तमिल

[ यह लेख राजकेसरिवर्मन् कुलोत्तुंग चोलके ४६वें राज्यवर्षका है ।

इसमें तिस्पर्त्तिकुण्डके ऋषिसमुदायके लिए एक नहर बनवानेके लिए कैतडुप्पूरकी ग्रामसभा-द्वारा कुछ भूमि करमुक्त रूपमें बेची जानेका उल्लेख है । यह लेख त्रिकूटवसतिके छतमें लगा है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८२ पृ० ३७ ]

१६६

पुदुप्पट्टु ( विंगलपेट, मद्रास )

११वीं-१३वीं सदी, तमिल

[ स्थानीय जैन मन्दिरके मण्डपके एक स्तम्भपर यह लेख है । अस्पष्ट और अधूरा है । इसमें चोल राजा परक्सेसरिवर्मनका उल्लेख हुआ है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० ७९ पृ० १२ ]

१६७

अनमकौंडा स्तम्भ लेख ( वरगलके समीप, आन्ध्र )

चालुक्य विक्रम वर्ष ४२ = सन् १११७, कन्नड़  
पूर्वकी ओर

- |                             |                                    |
|-----------------------------|------------------------------------|
| १ श्रीमज्जिनेन्द्रपदपद्म-   | २ शेषमव्यानव्यात् त्रिलोकनृ-       |
| ३ पतौद्रमुनीन्द्रवद्य नि -  | ४ शेषदोषपरितडनचडका-                |
| ५ ण्ड रत्नग्रयप्रमयमुद्ध-   | ६ गुणैकतान॥(१)स्वस्ति समस्त-       |
| ७ भुवनाश्रयध्रीपृथ्वीवल्लभ- | ८ महाराजाधिराजपरमेश्वर-            |
| ९ परममह्यारक सत्याश्रयकु-   | १० लतिलक चालुक्यामरणश्रीम-         |
| ११ त्रिभुवनमलदेवरविजयरा-    | १२ ज्यमुत्तरोत्तरामितृद्धिप्रवर्ध- |
| १३ मानमाचद्रार्कतार सलुत्त- | १४ मिरे। तत्पादपद्मोपजीवि समधि     |
| १५ गतपचमहाशब्द महाम(ड)      | १६ ऐश्वरनन्मकुडापुरवरेश्वर         |
| १७ परममाहेश्वर पतिहितच-     | १८ रित विन(य)विभूषण श्रीम-         |

- १९ न्महामण्डलेश्वरं काकतीवेत(भू) २० पालकुलक्रमागतं तदीयरा-  
 २१ ज्यमरनिरूपितमहामात्यप- २२ द्रवीविराजमान मानोज्ञत प्र-  
 २३ भुमंत्रोत्साहशक्तिव्रत्यसं- २४ पन्नना(गि)॥घनशौर्याटोप(दिं)  
 २५ मान्तनद्रमहियेयि चारुचारि- २६ त्रदिं(दो)ल्पिन तेल्पि सत्क-  
 २७ लदिनो)द्विदाश्चर्य(सौं)- लाकौश-

### उत्तरको ओर

- २८ दर्यदिंद(धिं)निकायप्राथितार्थ-  
 २९ (प्र)द वितरण(वि)ख्यात- ३० (वि)नुतं श्रीकाकतीवेतरसन  
 नादं धरित्री सचि-  
 ३१ वं वैज दंडाधिनाथ ॥(२)अगणितशौर्य-  
 ३२ दिं नेगल्द काकतिवेतनरेंद्रनं जगं  
 ३३ पोगले च्लुक्यचक्रिचरणं सले का-  
 ३४ णिसि तत्प्रसाददिं वनेगोले मट्टिवमा-  
 ३५ यिरमनालिसि(द्रु)द्धयशो- ३६ धिनाथनं पोगलदरारो मंड(लिं)  
 ३७ ककाकतिवेतन मंत्रिद्वैजन ॥- ३८ तंगं विकसितकंजातानने या-  
 (३)आ-  
 ३९ कमल्येगं जनिविसिदं ख्यातं ४० धरेयोलु पेगंडे वेतं मं-  
 ४१ त्रिजनमकुटचूडारत्न ॥(४) ४२ आतं मां(धा)तरामोपम-  
 ४३ नेविसिद श्रीकाकतीप्रोलभू- ४४ पख्यातामात्यं विवेकाग्रणि  
 ४५ सकलकलाकोविदं सच्चरित्र- ४६ प्रीतं साहित्यविद्यानिधि दु-  
 ४७ धविदुधोर्वोल्हं सत्यधर्मो- ४८ पेतं स्वग्रामदोल् माद्विदनतिसु  
 ४९ ददिं हत्तु देवालयंगलु ॥(६) ५० अतिशयजैनधर्मसमयोचित-  
 ५१ शासनदेवि भारतोसनि शशिविवव(क्त्र)-  
 ५२ दशनच्छदे शुद्धसुवर्णकुंभसन्नुतत-

५३ नुवर्णपीवरपयोधरि मेल (म या-)

५४ कमाबिकासुततदमात्यवेतद-

५५ दयेइवरि निइचललक्षिम भाविसलु ॥ (६)

पश्चिमकी ओर

५६ पददिंदाटुलितालक बेरेग (म) गो-

५७ पागम पचरत्नदिनागोचितमागे ५८ निमिसि सुरस्त्रीभायसौमाग्य-

५९ सम्म (द) सौंदर्यमनारदु हीवि ६० पदेद कजातसजातमी

सु(दती)-

६१ रत्नमनेटु मेलमननारार् वणिम-६२ लोंकदोह् ॥ (७) नुतरूपवति

क्ला (व)-

६३ ति रतिरति श्रोसतिघटान्तकी- ६४ णासतिर्येदमाध्यवेतन सतिथ

सति वा-

६५ क्षितियेल्लमेय्दे नुतियिसुतिकुं- ६६ मुददिंदेने नेगदरमास्पदे मै-

॥ (८)

६७ लम भक्तिरिंदे मादिमि तन- ६८ यकरमागिरलु बेहद (म) गण

गभ्युद-

६९ कदलालयवसदियनेमेयलु ॥ (९) ७० अदकें नित्यपूजेग धूपनीप

(नि) वेद्य-

७१ कक पूजारिगाहा (र) वस्त्रादि- ७२ श्रीमत्रिमुवमलमडलिकभू-

गल्ग

(पा)-

७३ लपुत्रनप्प काकतियपोलरसन रा- ७४ ज्यमुत्तरोत्तरामिट्टिप्रनर्ध

मानमा-

७५ गमम्मकुन्देयलाचदार्कतार स- ७६ लुत्तमिरे श्रीमद्यालुक्क-

विक्रमवर्ष-



७७ द् नाल्वत्तेरडेनेय हेमलंवि(सं)- ७८ वत्सर पौष्यबहुल १५.सोमवा-

७९ रदंदिनुत्तरायणसंक्रांतिनिमि- ८० त्तं धारापूर्वकमागि तन्न  
वल्लमनप्य

८१ वेतन-पेगंडे तन्न पेसरिदं माडि- ८२ सिद करेयेरिय केलगनेरहुं

८३ हासरेगल्लुगल नहुवण गर्दे(य) ८४ मत्तरेरहुं मत्तमाकरेय प-

८५ हुवण नेल दोणेय तंकलेरेय ८६ मत्तर्नालुकुं करंवं मत्तराह-

८७ मं कोट्टु निरिसिदलाशासनगंम ॥

दक्षिणर्का ओर

८८ मत्तर्मा धर्मक्के तेह्णटियागे ॥

८९ अ(ष्टां) दन्तिसहस्राणि दशको- ९० टां च वाजिनामनन्तं पादसं-

९१ घातमित्येते माधववर्म- ९२ वंगोद्धवरप्य श्रीमन्महा-

९३ मण्डलेश्वरनुग्रवा (डि)- ९४ य मेलरसं तन्ना (लि) के-

९५ योहंगल कृचिकेरे- ९६ येरिय केलगे कालुवेय

९७ मोदल गर्देय मत्तरोन्दा स- ९८ मीपदले करंवं मत्त-

९९ रु हत्तुमनित्त ॥ निरुतमि- १०० दनलिदवं सासिरकवि (ले)-

१०१ यनलि (द) पापमं (पो) दुं- १०२ गुमादरदिं रक्षि (सि) दं सा-

१०३ सिरयज्जद पलमनेयदि १०४ शुम (मं) पडेगु॥ (१०) स्वद-

१०५ त्तां परदत्तां वा यो हरंत १०६ वसुंधरां । पट्टिवर्पसहस्रा-

१०७ णि विष्टायां जायते १०८ बहुमिर्वसुधा दत्ता राजमिस्स-

कृमिः ॥ (११)

१०९ गरादिमिः । यस्य यस्य य- ११० दा भूमिस्तस्य तस्य तदा

फलं ॥ (१२)

१११ अलिउ वसदियकसं गलेव वो- ११२ यपदंगे पाग वोडु ॥

[ यह स्तम्भ चालुक्यविक्रमवर्ष ४२ ( सन् १११७ ) में पौष अमा-  
वस्याको उत्तरायण संक्रान्तिके समय स्थापित किया था । उस समय

चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्ल विक्रमादित्य (पण्ड) के माण्डलिक काकतीय  
 बेतका पुत्र पालरस ( प्रोल ) सब्बि प्रदेशपर शासन कर रहा था । बेतका  
 महामात्य वैज था । वैजकी पत्नी याकमन्ने थी तथा पुत्र बेत वेगडे था ।  
 बेत वेगडे प्रोलका मन्त्री था । इसकी पत्नी मैलम थी । इसने अम्मकुन्द  
 पहाड़ीपर कदललायदेवीका मन्दिर बनवाया तथा उसे उक्त तिथिको कुछ  
 जमीन दान दी । इसी मन्दिरको उग्रवाडिके मेलरसने जो मायववमके  
 कुलमे उत्पन्न हुआ था—भी कुछ जमीन दान दी । कदललायदेवी सम्भवत  
 पद्मावतीका नाम है । इस समय यह मन्दिर ब्राह्मणोंके अधिकारमे है तथा  
 वे उसे पद्माक्षी देवी कहकर पूजा करते हैं ।]

[ ए० इ० ९ पृ० २५६ ]

१६८

कोविलगुलम् ( रामनाड, मद्रास )

सन् १११८, तमिल

[ एक भग्न मन्दिरके दक्षिण तथा पश्चिमकी आधारशिलापर यह  
 लेख त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलीत्तु गचोलदेवके ४८वें वर्षका है । कुम्बनूरके २५  
 जैनोन्द्वारा मुक्कुटैयारके लिए एक मण्डप तथा सुवर्ण विमान बनवानेका इसमें  
 निर्देश है । कुम्बनूर गाव वेम्बुवलनाडु प्रदेशके शेंगाट्टिम्बके विभागमे था ।  
 इसी लेखमे त्रिष्ठवाधिपति देव तथा एक यक्षीकी ताबेकी मूर्तियोंकी  
 स्थापनाका भी उल्लेख है । इस मन्दिरके लिए जमीन और प्याउके लिए  
 भी दान दिया गया था । इस लेखकी तमिल भाषा साहित्यिक दृष्टिसे  
 बहुत अच्छी है । ]

[ इ० म० रामनाड १७ ]

१६९

पेहोले ( विजापुर, मैसूर )

चालुक्य विजयवर्ष २४ = सन् १११९, कन्नड

[ यह लेख त्रिभुवनमल्लदेव विक्रमादित्य पण्डके समय वैशाख शु० ३,

सोमवार, विकारी संवत्सर, चालुक्य विक्रमवर्ष ४४ के दिन लिखा गया था । इसमें जेमपार्य तथा जातियक्कके पुत्र केशवय्य सेट्टिका उल्लेख है जिसने स्थानीय जिनमन्दिरमें पूर्व और पश्चिमकी ओर बसदिर्मा, एक पट्टशाला तथा कूपका निर्माण कराकर लोकपाल-मूर्तियोंकी स्थापना की थी और देवपूजाके लिए कुछ भूमि आदि दान दिया था ।]

[ मूल लेख कन्नडमें मुद्रित ] [ सा० ६० ६० ११ पृ० २१९ ]

२००

### कुमारवीडु ( मैसूर )

शक १०४४ = सन् ११२२, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्थाट्वादामोघलांछनं (१) जीयात्
- २ त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं (॥) स्वस्ति सप्तधिग (त) पंच-
- ३ महाशब्द महामण्डलेश्वरं कुलात्तंगचोलभुजव-
- ४ लवीरगंगहोयसलदेवरु गंगवादि तौमट्टर-
- ५ सासिरमनेकच्छत्रदि तलकाडलिटुं सुखसकतावि-
- ६ नोददिं राज्यं गेयुत्तमिरं शकवर्ष १०४४ ने-
- ७ य प्लवसंवत्सरद मार्गसिर सुध ५ सोमवार-
- ८ दंटु महाप्रधान दण्डनायक गंगपथ्य-
- ९ गलु तम्म सोवणदण्डनायकंगे हादरिचागिल-
- १० वीडिनलु परोक्षविनयक्के माडिसिद वसदिगे
- ११ विट्ट दत्ति मैसंनाड चन्दवनहल्लियुं वीडिद
- १२ मूडण कम्माडिय केरेय गद्दे ३० सलगुयुं
- १३ आ केरेयि बटगलु एरिय बेटले वोल २
- १४ आ केरेय हल्लुवण कट्टद केलगे तौट
- १५ ५०० गुलियुं वीडित २ गाणद एण्णेशुं

- १६ सोडरिगे सल्लुबुदु ॥ बसदिगे बिट्टीधर्मम-  
 १७ नोसदु कर सलिसुतिदंगवकु पुण्य भमव-  
 १८ मदि केडिसिदवगलु पसुबु ब्राह्मण-  
 १९ न कौद वधे ममनिमुगु ॥ स्वडत्ता पर-  
 २० दत्ता वा यो हरेत वसुधरा पष्टिर्वपस-  
 २१ हन्नाणि त्रिष्टाया जायते क्रिमि ( )

[ यह लेख होयसल राजा विष्णुवर्धनके राज्यमें मागशिर शु० ५, सोमवार, शक १०८४, प्लव मवत्सरके दिन लिखा गया था । दण्डनायक गगपय्य-द्वारा सोव्रणदण्डनायककी स्मृतिमें हादरवागिलु ग्राममें एक जैन मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे दिये गये दानका उल्लेख इस लेखमें किया है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६६ ]

२०१

बेलूर ( मैसूर )

१२वीं सदी — पूर्वार्ध, कन्नड

- १ पुणिसममूपनेभ्येमेव शासनवाचकचक्रजर्निगिन्तेनिमलोड पोगर्त  
 तनगागिरे पुष्टिद चामराज नाकण कुमरय्यनेम्ब इत्तजयमू-  
 २ तिंगे पुन्ननोप्पिद पुणिसमदण्डनाथनुदितोदितचामचमपसभय (।)  
 नम सिद्धेभ्य (॥)

[ यह लेख किमी जैन मन्दिरके स्तम्भपर था । वह स्तम्भ बादमें केशवमन्दिरमें लगाया हुआ पाया गया । इसमें सेनापति पुणिस तथा उसने तीन पुत्र चामराज, नाकण तथा कुमरय्यकी प्रशंसा की है । यह पत्र अन्य लेखोंमें भी पाया गया है । पुणिस राजा विष्णुवर्धनका जौ सेनापति था । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० ८३ ]

२०२

अरताल ( जि० धारवाड़, मैसूर )

शक १०४५ = सन् ११२३, कन्नड

[ यह लेख चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका है । उस समय बनवासि तथा पानुंगल प्रदेशोंपर कदम्ब कुलका महामण्डलेश्वर तैलपदेव शासन कर रहा था । मूलसंघक्राणूरगणके कनकचन्द्रके शिष्य गंगर वम्मि-सेट्टिने कोन्तकुलि विभागके प्रमुख नगर पयिट्टणमे एक मन्दिर बनवाया । वम्मिसेट्टि वट्टकोरेका निवासी था । इस लेखकी तिथि पौष अमावास्या, सूर्यग्रहण, रविवार, शक १०४५, शुभकृत् संवत्सर ऐसी दी है ।]

[ रि० सा० ए० १९४३-४४ एफ् १ ]

२०३

हिरेशिंगनगुत्ति ( विजापुर, मैसूर )

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[ इस खण्डित लेखका समय चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमादित्य पण्ट) के राज्यका है । देसिगण-पुस्तक गच्छके आचार्य बालचन्द्रका इसमें उल्लेख है । किसी मन्दिरके लिए उन्हें कुछ भूमि अर्पण की गयी थी ।]

[ मूल लेख कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० २६२ ]

२०४

तोगरकुण्ट ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लके समय एक सूर्यग्रहणके अवसरपर लिखा है । इसमें तोगरकुण्टके चन्द्रप्रभदेववसदिके लिए दण्डनायक

कोम्मणार्थ-द्वारा कुमारनैऋतदेवकी गुण्यवृद्धिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मूलसंघके पद्मनन्दिदेवके निष्यको अर्पित किया गया था।]

[ रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ३४४ पृ० ६६ ]

२०४

उगरगोल ( बेल्गांव, मैसूर )

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख जिनशामतकी पश्चिमी प्रारम्भ होता है। चालुक्यमहाराट्र त्रिभुवनमल्लदेवके किमी महाप्रधानका इममें उल्लेख है। लेख क्षण्डित है। ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८० पृ० २४७ ]

२०६

सिरसगि ( जि० बेल्गांव, मैसूर )

१२वीं सदी, कन्नड

[ चालुक्यमहाराट्र त्रिभुवनमल्लके समयका यह लेख है। तिथि पौष शु० १३, रविवार, उत्तरायण संक्रान्ति ऐसी है। ऋषिशृंगीके छह गावुण्डोंका इममें उल्लेख है। वाचि गावुण्ड तथा अन्य व्यक्तियों-द्वारा किमी बमशिकी जमीन आदिके दानका उल्लेख है। गण्डवि ( मुक्त ) मिद्वानदेव, अत्तिमन्ने, देवरस, तथा कलिदेवसेट्टिका भी उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ७६ पृ० २४६ ]

२०७

हलि ( जि० बेल्गांव, मैसूर )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-कन्नड

१ ( श्रीमत्परमगमी)रस्याद्रवादासोद्यलाउन। जीथात् त्रैलोक्य-

नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ (१) श्रीवीरनाथस्य गणेश्वरोम्भूत्  
सुधर्मनामा प्रविधूत....

२ चापनीये सांघे) पुनस्तत्र च चारुमाने ॥ (२) कण्डूरविख्यातगणे  
बभूवुः पुरा मुनीन्द्रा बहवो महा....

३ ....दैकसिंहो मुनीश्वरो बाहुवली बभूव ॥ (३) जयतु शुभचंद्रदेवः  
कण्डूर्गणपुंडरीकवनमार्तडश्चंडात्रिदंड....

४ ....पारगो बुधचिनुतः ॥ (४) नुतयापनीयमंवप्रतांतकण्डूर्गणाश्वि-  
चंद्रनरेदी भित्तिवलयं पोगल्विनमुनतिवेत्तर् मोनि (दे-

५ वदिभ्यमुनीन्द्र) ६ ॥ (५) श्रीमावनंश्चित्रतिनाथमोडे कामारिमोमो  
(२) गवैनतेयं । नन्नावनीपालकविद्वर्कति सि(द्वा)त त(त्वा)  
णंवपूर्णचंद्रं) ॥ (६)

६ ( स्वस्ति । समस्तभुव ) नाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभं महाराजाधि-  
राज परमेश्वरं परममद्वारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं  
श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-

७ ( देवर विजय ) राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्राकंतार-  
वरं सलुत्तमिरे । भित्तिगेलं तन्न तेजं तालगि बेलगे तन्नाज्ञे चोला  
( वनी )-

८ ....लु नतिमुतिरे सले तन्नापुं लोककके करणभित्तिजातं बृडे पणूततिरे  
कलियुगदोल पुष्टियुं राघवादिभित्तिपालानीकरोलु पा....

९ ....(विक्र)नादित्यदेव ॥ (७) जलधिपरावभूतलवधूदिगे कुंतलदंदिदि  
ननंगोलिमुयुदेतु नोपंडने कुंतलदंगमद्वकके चिन्नपूगक तेरदंते  
रंजि....

१० ....ट मौक्तिकावलिय पोटिलद्वहाद चोलिपुटु नोपंड पुलि लीलेयि  
॥ (८) नत्तं । पोगलसंगलिदेसेव देवगृहंगलिनोपुवेत्त वारांग-  
नेयकल्....

- ११ पोद) लूद वेदगले मूर्तिगोडुदनिषददलोप्पुत्र विप्ररिंदे ग्रामगल  
चक्रगतियेसेदिदुंदु नोपेडं पुलि कांलेयि ॥(९) मत्तमत्तिलय विप्रर  
महिमेये (न्तेदोडे) ।
- १२ पोंठनेनिष श्रीकृष्णदेव सविस्तरदि तन्न सहस्रमप्य पेसर रूपा-  
गिरलु माडि साक्षरवेदाक्षरजीवमत्रचयम तीगिट्ट पुष्कीमद्वापुर
- १३ ( एमेदर ) सामिर्वरितुर्वियोलु ॥(१०) उपमातीतमनिष पेपु  
गुणमांदायं चल साहस जपहोम नियम महोन्नतिकसत्य  
शौचमा
- १४ शास्त्रोदवि श्रीकेशवादित्यदेवपादामोजवरप्रसादरसेदर सासि  
वरितुत्रियोलु ॥(११) हरि किलेनेलेयि चलिसिद हरिवदबेदि
- १५ कण्डेदु निरानरिपुदु सासिर्वरचितठे चलितवचन ॥(१२) स्व-  
स्थनवरतविनमदम (र) राजत्किरीटकोटिताडितजिनेन्द्रचरणा-  
रविंदम—
- १६ (चल) दुत्तरग। वीरविद्विष्टमहरणप्रतापकातिनेय । गगगागोय ।  
चपलयेरिवादिनीसहननप्रतापलकेस्वर । कोलाळपु(स्वराधीश्वर) ।
- १७ (एते) दोडे । मडलिकजगदल मार्कोडर जवनाधिजनके कटप-  
महोन गडर तीर्थ सितगर गड मार्कोल भैरव पिट्टनृप ॥(१३)  
मत्त
- १८ पुट्टिदरोप्पेपेर्मनृप जिज्जमहीपतिकोर्तिभूपनु जेट्टिग गोमंनु नेगदं  
(त्त) मैल्लदयियुमते रूपिर्निघिट्टलवागि
- १९ ॥(१४) लिक्कडकदरिभूभुजर तवेकोडु गृजंराष्ट्र जयसिंहदेव  
धरणीश्वरन निजराज्यलक्ष्मियोलु पट्ट
- २० पोगलुतिपुंदु बिज्जलभूमिपालन ॥(१५) मत्त । स्वस्निर्मडि  
कन्हारदेवगैतक्कनते भूनुते सिरिया (देयि)



- २१ ....॥(१६)....हु दल्ल्ताय्वनेयेंहु विज्जलनृपं चउवीसतीर्थरक्कलं  
मुददिं माडिसि कल्लेसं समेसि....
- २२ ....दिं विट्ट—वेल्लवलदोल्लितोप्पिप्प पेर्गुम्मियं ॥(१७) हरलारु-  
वाडकंसि....
- २३ ....चालुक्यचक्रवर्ति पेर्माडिरायन् कल्लोल्....
- २४ ....माडिसिद माणिक्यतीर्थ....

[ यह लेख चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य (पृष्ठ) के राज्यकालका है । इसमें प्रथम मुधर्म गणधरकी परंपरामे यापनीय संघ—कण्डूर् गणके बाहुवली, शुभचंद्र, मौनिदेव तथा माघनंदि इन आचार्योंका उल्लेख है । इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है । अनन्तर एक पूलि नगरके पिट्ट नृपका उल्लेख है जो गंगवंशमें उत्पन्न हुआ था । इसके चार पुत्र थे—पेर्म, विज्जल, कीर्ति, गोर्म—तथा एक कन्या थी—मैललदेवी । विज्जलके सम्बन्धमें गूर्जराष्ट्रके जयसिंहका उल्लेख किया है किन्तु इसका ठीक अर्थ स्पष्ट नहीं क्योंकि यहाँके कई अक्षर धिस गये हैं । इसी तरह कृष्णराजकी वहिन रेवकनिर्मटिकी एक श्लोकमे सिरियादेवीसे तुलना की है उसका पूर्वापर सम्बन्ध भी स्पष्ट नहीं है । अनन्तर कहा है कि विज्जलने एक जैन मन्दिर बनवाया तथा उसे पेर्गुमि ग्राम दान दिया । लेखके अन्तिम भागमें माणिक्यतीर्थका उल्लेख है । इसका सम्बन्ध भी स्पष्ट नहीं है । ]

[ ए० ई० १८ पृ० २०१ ]

२०८

वेलवत्ति ( वारवाड, मैमूर )

१२वीं सदी - पूर्वाध्वं, कन्नड

[ इस लेखमें सवणूरके वम्मिसेट्टि-द्वारा एक ब्रह्मजिनालयके निर्माणका उल्लेख है । इस जिनालयके लिए वम्मिसेट्टिने वेलवत्तिके ३०० महाजनों-

को कई दान दिये थे । इस स्थानके कुछ आचार्योंके नाम भी लेखमें दिये हैं । निधि आपाढ शु० प्रनिपदा, सोमवार, उत्तरायणमक्राति, शोभकृत सवत्सर ऐसी दी है । उस समयके चातुर्व्यमम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके राज्यका उल्लेख किया है । ]

[ रि० ३० ए० १९४६-४७ क्र० २१६ ]

२०६

बैल होंगल ( बेलगाँव, मैसूर )

११वीं - १२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लदेवके समयका है । शक वषके अक अम्पष्ट हुए हैं । इसमें रट्टवशीय महामामन्त अक, शातियक्क तथा कूण्ड प्रदेशका उल्लेख है । अनन्तर यापनीयमघ-मैलाप अवय-कारेय-गणके मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवसूरिका उल्लेख है । यह सम्भवत किसी जिनमंदिरको दिये गये दानका उल्लेख है । ]

[ रि० ३० ए० १९५१-५२ क्र० ३३ पृ० १२ ]

२१०

गोलिहल्लि ( जि० बेलगाँव )

सिद्धेश्वरमन्दिरके ममीप शिलापर

१२वीं सदी, कन्नड

[ मैललदेवी तथा जयकेशिन्के पुत्र वीर पेमाडि तथा विजयादित्यके शासनका इस लेखमें निर्देश है । अगडिय मल्लिसेट्टि-द्वारा किरुसपगाडिमें बनवाये गये जैन मंदिरके लिए भूमिदान देनेका इसमें उल्लेख है । मूलसघ, बलात्कारगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य वासुपूज्य भट्टारकको यह दान दिया गया । वासुपूज्यकी गुहपरम्परा कुछ विस्तारमें दी है । लेखके समय फाल्गुन शु० १५, गुरुवार, मन्मथ सवत्सर था तथा चातुर्व्य भूलोकमन्त्र सम्राट् थे । ]

[ रि० ३० ए० १९५०-५१ क्र० १५ ]

२११

वरांग ( मैसूर )

१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[ यह लेख आलुप राजा कुलगेखरके समयका है । इसमें माधवचन्द्र, प्रभाचन्द्र, तथा श्रीचन्द्र इन आचार्योंका उल्लेख किया गया है । ]

[ रि० आ० स० १९२८-२९ पृ० १२७ ]

२१२

दडग ( माडया, मैसूर )

१२वीं सदी - पूर्वार्ध, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांजनं ( । ) जी-
- २ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ( ॥ )
- ३ कुलरत्नाकरदोलु कौस्तुभादिगल बोलु पलरं लोकोपकारपरिणतरू  
एकीकृ-
- ४ तसकलराजगुणरू.....सकलजनोक्ति यादवकुलदोलु पुलि पाये
- ५ सलेयिं पुलियं पोय् सल येने पोय्दुदरिं पोय्सणवेसरवनिंद  
वाटुद-
- ६ लिंदे.....नयं प्रद्वारण.....नना.....युरदिं जग-
- ७ नयनिसि पोरेंदं विनयादित्यं समस्तभुवनस्तुत्यं आतंगतिमहिम-
- ८ समालयातकीति सन्मूर्तिमनोजात मर्दितरिपुनृयजातं तनुजात-  
नादन् एयंग-
- ९ नृपं ॥ च.....धर्मार्थकामसिद्धिबोल् अवनोवल्लभर् आतन तन-
- १० यरु यल्लालं विट्टिदेवन् उदयादित्यं ॥ नृचर्- तनयरोलं तां  
भाविसे म.....

११ ध्यमनागियु सद्गुणसद्भावदिन् उत्तमनाद त्रिभुतविभवद्भूत-  
निष्णु वि-

१२ ध्युमहीश । स्वमिति समधिगतपचमहाशब्द महामडले-

१३ इवर द्वारावतीपुरवराधीश्वर यद्वकुलावरयुमणि स-

१४ ग्यवत्त्रचूडामणि मलपरौलुगण्ड गण्डभैरवद्व शशकपुरनिवास

१५ वासतिक्रादेरीलञ्चपरप्रसाद दानसन्मानसपादितविप्रप्रगामोद

१६ नामादिममस्तप्रशस्ति संहित तलकाडु कौगु नगलि गगवाडि नो-

१७ णववाडि वनवास दानुगलु गौड मुनवलपौरगग प्रताप

१८ होय्मण्डवर् पृथ्वीराज्य गेयुत्तमिरे तत्यादपत्रोपजीविगलप्य ॥  
मोम अ-

१९ जुनलवकुशरी माल्केयनल् अते पुष्टिय मरकर श्रीमन्मरियाने

२० यु उडामगुण मरतराजदण्डाधिप ॥ करिगति मिहमध्य कल-

२१ मस्तनि दोस्त्रजपुण्यवाधि मित्ररचिरकटाश्वे वलिमुखि वेण्यहि

२२ गंहविलामलस्मि मासुरे मुमनोप्रिमाने गुणरत्नयशोहारि की-

२३ तिगोपति स्थिरमत्त्व जक्कियक्कनेने पोत्तवर् भार् जमलकान्त  
तनुय ॥

२४ वल्लेननधीशं चरितार्थ नेगलद तन्दे मारायर् ॥ तत्तरमजित-  
देवप्रमेन्द्र

२५ हरियवेयन्तेरुद मोन्त कान्तेयरोलर ॥ श्रीमूलमघ कुण्डकुदान्व-

२६ य काणूरुगण त्रिप्रिणिगच्छद जप्रल्लिनेय मुनिमद्रमिद्वान्तदेवर  
शिष्य

२७ मघचन्द्रमिद्वान्तदेवर् श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक मरिया-

२८ नेयु श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक मरतिमर्यगल उडिग-

२९ नकेरय पचवमदियोल्लगे वाहुवलिकूटम धारापूर्व-

३० क माडि कोट्टर मरियापेसमुद्रद ययलुम

- ३१ मलेहल्लिय मुंदण किरुकरेयं अल्लिय होलगुत्त-  
 ३२ गेयुं कोडियहल्लिय मुंदण किरुकरेयं आवेदलेय  
 ३३ हिरियकरेय केलगण अडकेय तोटमुं ॥ अन्तु सर्वाय सुद्धवागि  
देशियगणद वसदि ४ ककं काणूरगणद व-  
 ३४ मदि वोन्दक्कं अन्तु पंच वमदिगे समानवागे इल्लि हुट्टि-  
 ३५ द माचिगोडनु कसवगोडनु ॥  
 ३६ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरंत वनुंधरा पण्टिवर्प सह-  
 ३७ साणि विष्टायां जायते क्रिमि

[ डम लेखमे हांयसल राजा विष्णुवर्धनके महाप्रधान दण्डनायक मरि-  
 याने तथा भरतिमय्य-द्वारा दडिगनकरे स्थानको पाँच वनतियोंमें बाहुबलि-  
 कूट नामक वसतिका दान तथा कुछ भूमिके दानका निर्देश है । यह दान  
 काणूरगण-तित्रिणिगच्छके मुनिभद्र मिद्धान्तदेवके शिष्य मेघचन्द्रदेवको दिया  
 गया था । ]

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १५६ ]

२१३

कस्वदहल्लि ( मैनूर )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध (सन् ११३०), कन्नड

१ (द्रोह)वरट्ट दण्डनायक गंगराजन मग वोप्पदेवरिगे रुवारि

२ द्रोहवरट्टाचारि कञ्जेवसदिमं माडिद ॥ मंगल महाश्री

[ यह लेख स्थानीय शान्तीश्वर वसदिके भग्नावशेषोंमें है । यह वसदि  
 दण्डनायक गंगराजके पुत्र वोप्पदेवके लिए द्रोहवरट्टाचारि नामक शिल्पकार-  
 ने बनवायी ऐना लेखमें कहा गया है । यह कञ्जेवसदि अर्थात् निर्माता-  
 द्वारा बनवायी पहली वसदि थी । अतः इसका समय लगभग सन् ११३०  
 है क्योंकि वोप्प-द्वारा सन् ११३३ में हलेविठ्ठमें निर्मितआ दीग्वरवसदि  
 विद्यमान है । ]

[ ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९३ ]

२१४

सालूर ( मैसूर )

सन् ११३०, कन्नड

- १ श्रीमन्परमगर्भोरस्याक्षादामावलाटन जायान् ब्रह्मकथ-
- २ ( नाथस्य शासन जिन ) शायन ॥ स्वस्ति समस्तभुवना-
- ३ (म)हाराजाधिराज परमेश्वर पर
- ४ (सस्या)श्रयकुलनिलक चालुक्यामरण
- ५ श्रीम(द्भूलोकमह)देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभितृ-
- ६ ( द्विप्रवर्धमान ) माचट्राक्तार सलुत्तमिरे । समधिगतपचम-
- ७ ( हाशब्द महाम )डलेश्वर वनवासिपुरवराधीश्वर त्रिशयश्मा-
- ८ ( समव चतुराशोतिनग )राधिष्ठितल( लाटलोचन )चतुर्भुज
- ९ श्रीजयतीमधुकेश्वरदवलब्धवरप्रसाद नामादि-
- १० समस्तप्रशस्तिमहित श्रीमन्महामण्डलेश्वर मयू-
- ११ रवमदव तत्पादपद्मोपजीवि श्रीमन्महामण्डलेश्वर
- १२ मगर कारगरसर् सान्तलिगेमाधिरमुम दुष्टनि-
- १३ ग्रहविशिष्टप्रतिपालनदिनालुत्तिरे ॥ श्रीमूलसधको-
- १४ (ण्ट) कुन्दान्वय काणूरगणद मंग(पा)पाणगच्छद श्रीप्रमाच-
- १५ द्रसिद्धातदेवर शिष्य कुलचद्रप(डिव)देवर गुड्ड(म)-
- १६ दरायिसेट्टि श्रीमदनादियग्रहार सालियूर सामिर्व-
- १७ २ ब्रह्मजिनालयद वसद्रिय निवेद्यक्के भूलोकवर्षद
- १८ ५ नेय साधारणमवत्सरद पुष्य सुद्ध ३ सोमवारद बुत्त

[ यह लेख चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लके ५वें वर्षमें पौष शु० ३ सोमवारको लिखा गया था । उस समय कदम्बवशीय मण्डलेश्वर मयूरवर्मा-के शासनातर्गत सान्तलिगे प्रदेशपर मगर कारगरसर् शासन कर रहा था । उक्त तिथिको सालियूर अग्रहारमें स्थित ब्रह्मजिनालय वसदिको मद्र-

रायिसेट्टिने कुछ दान दिया था। मूलसंघ-काणूरगण-मेपपापाणमच्छके प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवके जिण्य कुलचन्द्रपण्डित भद्ररायि सेट्टिके गुरु थे। ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० २४५ ]

## २१५

तिरुप्परन्तिकुण्डम् ( चिगलपेट, मद्रास )

राज्यवर्ष १३ तथा १७ = सन् ११३१ तथा ११३५, तमिल

[ यह लेख चोल राजा परकेसग्विर्मन् विक्रमचोलके राज्यवर्ष १३का है। इसमें विलयार्की ग्रामसभान्द्वारा त्रैलोक्यनाथजिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि करमुक्त रूपमें देची जानेका उल्लेख है। इसीके बाद इसी राजाके १७वें वर्षमें तिरुप्परन्तिकुण्डकी कुछ भूमि आरम्बनन्दिको देची जानेका भी उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८१ पृ० ३७ ]

## २१६

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

सन् ११३२, कन्नड

[ इस लेखमें गोरिगयवसदिके इन्द्रकोटि पण्डितका उल्लेख है। उन्होंने तथा पेगडे मल्लियण्ण आदिने वसदिकी भूमिमें घर आदि बनवानेके कुछ नियम बनाये थे। हैमदेव-द्वारा वसदिके पुजारीको कुछ भूमि दान दी जानेका भी उल्लेख है। तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, परिव्रावि संवत्सर, भूलोक-वर्ष ( चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लका राज्यवर्ष ) ७, बुधवार इस प्रकार दी है। ]

[ रि० ना० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ४८ पृ० १६४ ]

२१७

बहुरीयद ( जि० जवलपुर, मध्यप्रदेश )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, सस्कृत-नागरी

स्वस्ति वट्टि ९ सोमं धामद्गयाकर्णदेवविजयराज्ये राष्ट्रकूटलोद्-  
भनमहासामताधिपतिश्रीमद्गोतृहणन्वस्य प्रवर्धमानस्य ॥ श्रीमद्गोला-  
पूर्वाग्नाथे वेङ्गप्रभाटिकायामुत्कृताग्नाथे तर्कनाकिकचूडामणिश्रीमन्माधव-  
नदिनानुगृहीत साधुश्रीसर्वधर तस्य पुत्र महाभाज धर्मदानाध्ययन-  
रत्न । तेनेद कारित रम्य शान्तिनाथस्य मन्दिर ॥ स्वलायममज्जकसूत्रधार  
श्रेष्ठिनामा वित्तान च महाश्वेत निर्मितमनिमुदर ॥ श्रीचन्द्रकराचार्या-  
ग्नाथदेशीगणान्वये समस्तविद्याविनयानदितविद्वज्जना प्रतिष्ठाचार्य-  
श्रीमत्सुमद्रादिवर जयन्तु ॥

[ यह लेख कलचुरि राजा गयाकर्णके सामन्त राष्ट्रकूट गोन्टणदेवके राज्यकालमें लिखा गया है । वेङ्गप्रभाटिका गाँवमें गोलापूर्व जातिका महाभोज नामक आदक था जो माधवनदिके शिष्य सर्वधरका पुत्र था । उसने शान्तिनाथका एक सुन्दर मन्दिर बनवाया । इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा चन्द्रकराचार्याग्नाथ-देशीगणके आचार्य सुभद्रके हाथों हुई थी । ]

[ डिम्फ्रिगशन्स ऑफ दि कलचुरि-चेदि एग पृ० ३०९ ]

२१८

आदिनाथमन्दिर, नाडलाई ( जि० देमूरी, राजस्थान )

संवत् ११८९ = सन् ११३३, सस्कृत-नागरी

१ ओं ॥ संवत् ११८९ माघसुदि पचम्या श्रीचाहमातान्वय श्री-  
महाराजाधिराज ( रायपा ) ल



- २ देव तस्य पुत्रो रुद्रपालश्चमृतपा (लौ) ताभ्यां माता श्रीराज्ञी मा (न) लदेर्वा तथा (नट्ट) ल (डा) गिका-
- ३ यां सतां परजतीनां (रा)ज कुलपल (म) ध्यात् पलिकादयं घाण (कं) प्रति धर्माय प्रदत्त । मं० वागमि-
- ४ चप्रमुग्वसमस्तग्रामीणक । रा० तिमट्टा वि० मिरिया वणिक पोसरि । लक्ष्मणा एते सा ।
- ५ खि कृत्वा दत्तं । लोपकस्य यदु पापं गोहत्यासरसूण । ब्रह्म- हत्यासतेन च । तेन
- ६ पापेन लिप्यन्ते सः ॥ श्री ॥

[ यह लेख संवत् ११८९ में चाहमान राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था । इसके दो पुत्र थे—रुद्रपाल तथा अमृतपाल । इनकी माता मानलदेवीने नट्टलडागिका आनेवाले यतियोंके लिए कुछ दान दिया था । ]

[ ए० ड० ११ पृ० ३४ ]

२१६

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

सन् ११३४, तमिल

[ यह लेख परकेशरिवर्मन् विक्रम चोल राजाके १६वें वर्षमें लिखा गया था । इसमें वैशाख मासमें उत्सवोंके अवसरपर अरुमोलिदेव (अर्हत्) तथा नित्यकल्याण देवकी पालकी-यात्राकी व्यवस्थाके लिए मल्लयन् मल्लन् अर्थात् विक्रमचोलमल्लन-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१० पृ० ६६ ]

२२०

शेरगढ़ ( वाटा, राजस्थान )

संवत् ११६१ = सन् ११३५, सस्कृत-नागरी

- १ माहिलेमायान्तिमा—स्य तिलके सूर्याश्रमे ष ( त्त ) न । श्रापालो गुणपालकश्च विपु
- २ ले खण्डि ( लुगा ) ले कुले सुय ( या ) चन्द्रमसात्रिपाम्बरतले प्राप्ता प्रमान्मालवे ॥१॥ श्रापालादिह देवपालतनयो दानेन चिन्तामणि ( ) शा-
- ३ ( न्ते श्री ) गुणपालठञ्जुरमुत्ताद् रूपेण कामोपमात् । पूर्णमर्थ-जनेल्लुकप्रभृतय पुत्राश्च येन नव तै सर्वरपि कोशवर्धनत-
- ४ ले रत्नत्रय कारित ( ) ॥२॥ वर्षे दृढशर्तर्गते शुभतमेरकान-त्याधिकैर्वैशाख ( म् ) धवले द्वितीयदिने देवान् प्रतिष्ठा-
- ५ पितान् । यन्मन्त मतदेवपालतनया माहू सधान्मादय पूर्ण-शान्तिमुतश्च नेमिभरता श्रीशान्तिसखुन्धवान् ।
- ६ ॥३॥ दादिमूत्रधारोत्पन्न शिलाश्रीसूत्रधारिणा । शान्तिकुन्धरना-मानो जयन्तु घटिता जिना ॥४॥ देवपालसु-
- ७ तेल्लुक गोष्टिगोसललल्लुक मौक हरिश्चन्द्रादि गागासुपुत्र ( ) अल्लक ॥५॥ संवत् ११९१ वैसाख सुदि २ ( म )-
- ८ गलदिने प्रतिष्ठा कारापिता ॥

[ यह लेख वैशाख शु० २, मगन्वार, संवत् ११९१ का है । इस समय खण्डिल्लवाठ कुलके शान्तिके पुत्राने रत्नत्रय अर्थात् शान्ति, कुन्ध तथा अर इन तीन तीर्थकरोकी मूर्तिया स्थापित की थीं । इनका निर्माण सूत्रधार दादिके पुत्र शिलाश्रीने किया था । ]

[ ए० इ० ३१ पृ० ८३ ]

२२१

## कोल्हापुर ( महाराष्ट्र )

शक १०१८ = सन् ११३५ कलङ्क

- १ श्रीमत्परमगंभीर्याद्वादामोवलांछनं । जीयान् त्रैलोक्यनाथस्य  
शामनं जिनशामनं ॥ (१) न्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द  
महाम-
- २ ण्डलेश्वरं । तगरपुरवराधेश्वरं श्रीशिलाहारनरेंद्रं । जीमूत-  
वाहनान्वयप्रभूतं । सुवर्णगलदध्यजं मर्यादोक्कम्पं । अद्यन
- ३ सिंगं । रिपुमण्डलिकर्भारवं । विद्विष्टगजकर्णधारवं । इन्दुवरादित्यं ।  
रूपनारायणं । कलियुगविक्रमादित्यं । शनिवारसिद्धि गिरिदु-
- ४ गंलवनं । श्रीमहालक्ष्मीदेवालयव्यवस्थाप्रसादादिममस्त राजावली-  
विगजितः पर श्रीमन्महामण्डलेश्वरं गण्डरादित्यदेवरु वल-  
वाडद ने-
- ५ लेखोडितल् सुखसंकथाविनोददिं राज्यंगेत्युत्तमिने । तत्पादपद्मोप-  
जीवि समधिगतपंचमहाशब्द महामामन्तं । विजयल-
- ६ क्ष्मीकान्तं । रिपुमामन्तसीमन्तिनीसोमन्तभंगं । वीरवरांगना-  
प्रियभुजंगं । वैरिसामन्तमेवविषटनसर्मारणं । नागलदेविय  
गन्धवा-
- ७ रणं विद्विष्टमामन्तविलयकालं । सामन्तगण्डगोपालं । दायदमा-  
मन्तगारासुखीकुमारं । सामन्तकेदारं । तोष्टमामन्त-  
पुण्डरीक-
- ८ षण्डप्रचण्डमन्देदण्डं । गण्डरादित्यदेवदक्षदक्षिणभुजादण्डं ।  
याचकजनमनोमिलिपितचिन्तामणि । सामन्तशिरोमणि । जिन-  
चरणसरमिर-

- ९ ह्रमधुकर सम्यक्त्वरत्नाकरनाहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोद  
पद्मावर्तादेवोलब्धवरप्रसाद । नामादिममस्त्रप्रशस्तिरसहित श्रा-  
मन्महा ।
- १० सामन्त्र । निवेदंवरमन् । कवडैगोबलद वलिय सन्नेय मुद्गोडे-  
यल् माडिसिद् वसद्रिय पाश्चात्ताथद्वारविधार्चनक्कमा यमद्विय  
जीर्णोद्धारक्क-
- ११ मल्लिप्प ऋषियराहारदानक्क । स्वस्ति । समस्तभुवनत्रिरयात-  
पचक्षतवीरशासनलब्धवानेऽगुणगणाल्लूत सत्यगौचाचारचार-  
चारित्रनयप्रिनय-
- १२ विज्ञान वीरवल्लुधर्मप्रतिपालन विभुद्ध गुड्डध्वजविराजमानानून-  
साहसोत्तुग कीर्त्यङ्गनालिंगित निजभुजोपाजितविजयलक्ष्मी-  
निवासवधस्थलम्
- १३ भुवनपराक्रमोज्ञत वासुदेवखण्डलीमूलमन्त्रशोद्धवर । भगवती-  
लब्धवरप्रसादर । तावु काडि सोल्लुद्ध । महत्तक्कमारिगलु  
परस्त्रोपर
- १४ धनवर्जितर चतुर्पट्टिकलेगल्लोल् प्रवीणरप्पुदरि । महानक्षर ।  
चक्रमुल्लुदरि नारायणनक्षर । दृष्टियोल् मोडि कोल्लुदरि ।  
कालाग्निरद्वनक्षर । को-
- १५ न्दरनरमि कल्लुदरि । परशुरामनक्षर । तुल्लिद्धु कोल्लुदरि ।  
मदान्धगन्धविन्दुरदक्षर । गिरिदुर्गम मरेवोक्कर तेगेद्दु कोल्ले-  
डेयोल् सिंहदक्षर ।
- १६ पातालम पोक्कर कोल्लेडेयोल् वासुगियार । आकाशदोल्लिर्दर  
कोल्लेडेयाल् गरमनक्षर । पॅपिनल् पृथ्वियक्षर । विष्ण्विन्नल्  
कुलगि-
- १७ त्रियक्षर । गुण्पिनल् महासमुद्रदक्षर । उद्योगदल् रामनक्षर ।

पराक्रमदोल् पार्थनन्नरं । शौचदोल् गांगियनन्नरं । साहसदोल्  
मामनन्न-

१८ रं । धर्मदोल् धर्मपुत्रनन्नरं । ज्ञानदोल् महदेवनन्नरं । भागदलि-  
द्रनन्नरं । त्यागदोल् कर्णनन्नरं । तेजदलादित्यनन्नरं । श्रद्धिच्छत्र-  
मेनिसुवय्यवालंपुरप-

१९ रमेडवरुमप्पयन्तूर्वरस्वामिगलु गवरंयरं । गात्रियरं । सेंटियरं ।  
सेट्टिगुत्तरं । गामण्डरं । गामण्डस्वामिगलुं । वीर

२० रं । वीरवणिगरं । कोल्लापुरद विल्पाणसेट्टियुं । गोविन्दसेट्टियुं ।  
कोमर अण्णमय्यनुं । मिरिंजैय विज्जसेट्टियुं । वाप्पिसे-

२१ ट्टियुं । गण्डरादित्यदेवर राजश्रेष्ठि वेसपय्यसेट्टियरं । आ मण्ड-  
लेश्वरन वीढिन वम्मिसेट्टियुं । कूट्टिपट्टनदादित्यगृह-

२२ द सासनिगं हेग्गडे रावसेट्टियुं । चांधोरं वाप्पिसेट्टियुं । तोरं-  
वगेय प्रभु कन्नपय्यसेट्टियुं । मयिसिगेय काजगारं चांधो-

२३ रं गोरविसेट्टियुं । वल्लेयवट्टणद शान्तिसेट्टियुं । अय्यवाल्लेय-  
न्तूर्वर सिंगं हालियसेट्टियुं । कवडंगोल्लद प्रभु खप्परय्यना-

२४ दिपाणि समस्तदेशं नेरेट्टु । शकवपंद सामिरदय्यवत्तेट्टेनेय  
राक्षसमंवल्लरद कातिकयहुल पंचमि सोमवारदट्टु श्रीमल्लसंव-

२५ देसीयगण-पुस्तकगच्छद कोल्लापुरद श्रीरूपनारायणयसदिया-  
चार्यरप्प श्रीश्रुतकीर्तित्रिविद्यदेवर् कालं कच्चिं । धारापू-

२६ र्वकमाणि कोट्टायमेन्तेट्टाडे अट्टके हेरिगे अय्यत्तु । जवलक्किपत्तु  
हमरकरट्टु । एले हेरिगे नूरु । तल्लेवोरेगय्यत्तु । हमरकिर्प-

२७ त्तरट्टु । तुप्पमेण्णेर्येवियु कोट्टक्के मोल्लगे सिद्धिगेगरवाणं संगटि-  
गोर्माणं दूमिगवसरक्कमक्कमालेगं होंगे हणं । हत्ति मल्लवेग-

२८ य्वलं । मण्डिय करुसेय मल्लवेगेरट्टु वीसिगे । जवलक्के पलं

पत्त । लकरोक्कलल्लि आर निंगल्लगे मणेनिच्चिगे मरवियेविचो-  
न्दक्कु । वर्षक्क म०

२९ चवोन्दक्कु । अल्लवरिसिन शुण्डि वेरुत्तिल वजे मडमुस्त्येविनु  
मोदलागि तूगि मास्त्र मण्डगल्लगे हेरिंगय्वल जवलक्किप्पल  
हम०

३० रकोप्पल जीरगे मेल्लमु सामवियेविनु हेरिंगोम्मान जवलक्क-  
रवन हसरक्के सोल्लगे । उप्पु मोदलागि इदिनेट्टु ध्यान०

३१ गल्ल मडिगे कोलगवौदु हेरिंगे मानवेरडु तलेवोरेगोमान वाटु  
कायेविनु मडिगे हत्तु तलेवारंगे नालक्कु । मण्डिगे दण्डिगे  
वौदु ।

३२ मेवेयरडु हूयेरडक्क दण्डिगे वौदु मेवेयरडु हूविन हेडलिंगे  
माले वोन्दु कुवरल्लि हसरक्के मडक्क वोन्दु ॥ इन्तीया०

३३ यमनल्लिताते वाणराशिकुरक्षेत्रादिगलोल् पचमहापातकम  
माडिक्क फलमकु ॥

[ इस लेखका सागस्य द्वितीय भागमें क्र० ३०२ में दिया है किन्तु उस समय मूल लेख प्रकाशित नहीं हुआ था । यह लेख शिलाहार वंशके महामण्डलेदार गण्डरादित्यके समय शक १०५८ में लिखा गया था । इसका सामान्त निम्बदेव था जिसने तोण्डमण्ड्यके युद्धमें मृत्ता प्रदर्शित की थी । निम्बदेवने कवट्टेगोल्ल नगरमें एक जिनमन्दिर बनवाया था । इसके बाद कीर्त्तल्ल लोगोके सघका विस्तृत वर्णन है । उसके प्रतिनिधियोने कोल्हापुरके रूपनारायण जिनमन्दिरके व्यवस्थापक मुत्तमघ-देशीय गणके श्रुतकीर्त्ति त्रैविशुको कवट्टेगोल्ल जिनमन्दिरके लिए उक्त तिथिको कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया । ]

२२२

कोल्हापुर ( महाराष्ट्र )

१२वीं सदी-पृर्वार्ध कन्नड

महालक्ष्मी मन्दिरमें छतके खम्भोंपर

[ यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके समयका है । इनके सामन्त निम्बने एक चैत्यालय बनवाया था । नाकिराजकी कन्या कणदिवीका भी उल्लेख है जो एक रानी थी । कोण्डकुन्दान्वयके माघनन्दि आचार्यका भी उल्लेख है । ]

[ रि० ड० ए० १९४५-४६ क्र० ३५१ ]

२२३

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

सन् ११३७, तमिल

[ यह लेख कुलोत्तुंग चोलदेव ( द्वितीय ) के राज्यवर्ष ४ में लिखा गया था । आलप्पिरन्दान् भोगन् उपनाम कुलोत्तुंगशोलकाडवरायन्-द्वारा कच्चिन्नायनार् (चन्द्रप्रभ) की पूजाके लिये जननाथमंगलम् गाँवके उत्पन्न-से ४२० कलम् ( नापका प्रकार ) चावल अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३११ पृ० ६६ ]

२२४

गणपवरम् ( गुण्टूर, आन्ध्र )

११वीं-१२वीं सदी, तेलुगु

[ यह लेख श्रावण शु० ३ का है — शक्रवर्षके अंक लुप्त हुए हैं । कुलोत्तुंग राजेन्द्रके पुण्यवृद्धिके लिए अक्कसाल कामोजु-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । अन्तमें चन्द्रप्रभजिनालयका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ पृ० ४३ क्र० ४५८ ]

२२५-२२७

तिरुक्कोल ( उ० अर्वाट, मद्रास )

११वीं-१२वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें तण्डपुरम्की पल्लि ( जैनवसति ) के लिए एरणन्दि उपनाम नरतोग पल्लवरैयन्-द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम पोन्नूरनाडुमें सम्मिलित था। यहीके एक अथ लेखमें शेम्बियन् शेम्बोत्तिलाडणार्-द्वारा कनकबोर शिस्तडिगलको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह चोल राजा पन्केमरिवर्मन्के १२वें वषका लेख है। तीसरा लेख स्थानीय वर्धमानमन्दिरके शैल स्तम्भोपर है। ये स्तम्भ अरमोलिदेव-पुरम्के इटैयारन् आटकोण्डान् भावोरन्-द्वारा स्थापित हुए थे। ]

[ रि० मा० ए० १९१५-१६ क्र० २७६-२८० पृ० ९१ ]

२२८-२३०

चस्तिहल्लि ( मैसूर )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[ यहाँ तीन लेख हैं। एक जिनमूर्तिके पादपीठपर मूलसध देमियगणके-कुक्कुटामन-मलघारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्तिदेवके शिष्य दण्डनायक गगपय्यका नामोल्लेख है। एक दूसरे मूर्तिके पादपीठपर मूलसध-देसिगणके दिनकरजिनालयमें हेमडे मल्लिमय्य-द्वारा मूर्तिस्थापनाका उल्लेख है। इस मन्दिरके द्वारके लेखमें इस मन्दिरकी स्थापनाका वर्ष सन् ११३८ दिया है। ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४४ ]

२३१

नाडलाई ( जि देमूरी, राजस्थान )

संवत् ११९५ = सन् ११३९, संस्कृत-नागरी

१ ओं नमः सत्रज्ञाय ॥ संवत् ११



- २ ९५ आसउज वदि १५ कुजे ।  
 ३ अद्येह श्रीन (डू) लडर (गि) कायां महा-  
 ४ राजाधिराजश्रीराय (पा) लदेवे । विज -  
 ५ यी राज्यं कुर्वतीत्येतस्मिन् काले  
 ६ श्रीमदुजिततीर्थः श्री (ने)मिनाथदेव-  
 ७ स्य दीपधूपनैवे(द्य)पुष्पपूजाद्यर्थे गू-  
 ८ हिलान्वयः राउ० ऊधरणसूनु  
 ९ ना मोक्तारि ठ० राजदेवेन स्वपु-  
 १० ण्यार्थे स्वीयादानमध्यात् मार्गे[ग]  
 ११ च्छत्तानामागतानां वृषमानांशेके (पु)  
 १२ यदामाद्यं भवति तन्मध्यात् विं(श)  
 १३ तिमा भागः चंद्रार्कं यावत् देवस्य  
 १४ प्रदत्तः ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा  
 १५ केनापि परिपंथा न करणीया  
 १६ अस्मदत्तं न केनापि लोप(नी)यं ॥  
 १७ स्वहस्ते परहस्ते वा यः कोपि लोप -  
 १८ यिष्यति तस्याहं करे लग्नो  
 १९ न लोप्यं मम शासनमिदं । लि०-  
 २० (पां)सिलेन ॥ स्वहस्तोयं सामि -  
 २१ ज्ञानपूर्वकं राउ० रा(ज)देवे-  
 २२ न मनु दत्तं ॥ अत्राहं माक्षि-(णा)-  
 २३ ज्योतिषिक (दूदू)पाम्नुना गूणि-  
 २४ ना । तथा पला० पाला० । ग्रथिं  
 २५ वा १ मांगु(ला) ॥ देपसा । रा  
 २६ पसा ॥ मंगलं महा (श्रीः) ॥

[ उक्त लेख सन् १९५५ मे चाहमान राजा गणपतिके राज्यमे छिया गया था । इसमें नदूलडागिकाके नेमिनाथमदिङ्के लिए ठा० राजद्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है ]

[ ए० इ० ११ पृ० ३६ ]

२३२

नाडलाई, ( जि देगुगी, राजस्थान )

सन् १२०० = सन् ११४२, सस्कृत-नागरी

१ आ सव(त्) । १२०० जेष्ठ (सु)दि ५ गुरो श्रीमहाराजाधिराज-  
श्रीरायपालदेवराज्ये—हाम —

२ समये रथयात्राया आगतेन रा० राजदेवेन आ-म-पाडलामध्यात्  
( सर्गसाउतपुत्र ) विंसी-

३ पको दत्त । आत्मोयघाणकृतेल(ल)मध्यात् । मातानिमित्त  
पलिकाद्वय । प्ली २ दत्त ॥ म-

४ हाजनप्रमीण । जनपन्थमश्राय । धर्माय निमित्त विंसीपको  
१ पलिकाद्वय दत्त ॥ गोह —

५ त्याना महत्त्वेण ब्रह्महत्यामतेन च । स्त्रीहत्याभ्रूणहत्या च ऽनु  
पाप तेन पापेन लिप्यते स ॥

[ यह लेख सन् १२०० मे राजा रायपालके राज्यमे छिया गया था । यानाके लिए आये हुए रा० राजद्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें निर्देश है । ]

[ ए० इ० ११ पृ० ८१ ]

२३३

कम्बदहलिल ( मेमूर )

सन् ११४५, कन्नड

[ इस लेखमे होयमल राजा नरसिङ्गके दो दण्डनायक मरियाने तथा

भरतिमय्य-द्वारा शान्तीश्वरवसदिके लिए मोदलियहल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है। यह दान क्रोधनमंभवत्सर्गा है। तदनुसार सन् ११४५ का यह लेख है। ये दण्डनायक आचार्य गण्डविमुक्तदेवके शिष्य थे। ]

[ ए० रि० मै० १९१५ पृ० ५१ ]

२३४

चालेहल्लि ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ८ = सन् ११४५, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लदेवके राज्यवर्ष ८, क्रावन् संवत्सरमे फाल्गुन शु० १, रविवारके दिन उत्कीर्ण किया गया था। बम्मिसंहतिने चालेहल्लिमे पार्श्वनाथमन्दिरका निर्माण किया तथा उसको रक्षाके लिए देसिगण, पुस्तकगच्छ, ( कोण्डकुन्द ) अन्वयके मलधारिदेवको कुछ दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है। मन्दिरको दिये गये कुछ अन्य दानोंका भी इसमें उल्लेख है। ]

[ रि० ड० ए० १९४७-४८ क्र० १७६ पृ० २२ ]

२३५

नाडलाई ( जि० देमूरी, राजस्थान )

संवत् १२०२ = सन् ११४६, संस्कृत-नागरी

- १ श्री ॥ संवत् १२०२ आमोज वदि ५ शुक्ले श्रीमहाराजाधिराज-  
श्रीरायपालदेवराज्ये प्रवर्त(माने)
- २ श्रीनटूलडागिकायां रा० राजदेवट्टकुरेण प्रव(र्त)मानेन श्रीमहा-  
वीरचैत्ये साधुन-
- ३ पौधननि(प्याधे) श्रीश्रमिनवपुरीय वदायां अ(त्रे)षु स(म)त्त-  
वणजारकेषु देमी मिलित्वा वृ -

४ (प) स (म) रिन जनु पाइलालगमान तनु चीस प्रति रुभा २  
किराडडभा गाड प्रति रु १ वण -

५ जारकै घर्माय प्रदत्त ॥ लोरकम्य जनु पाप गोहृत्यामहमेण  
ब्रह्मदत्थासतेन पापेन लिप्यते स ॥

[ यह लेख सवन् १२०० मे चाहमान राजा रायशालके राज्यमें  
लिखा गया था। इसमें नटूलडामिकामे मठावीर मन्दिरमें आये हुए मायुओं-  
के लिए ठ० रानदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है । ]

[ ए० इ० ११ पृ० ४२ ]

२३६

कुण्टन होसरिल ( जि० धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कच्छड

बघवण्ण मन्दिरके समीप शिलापर

[ यह लेख खराब हुआ है। चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय  
दसवें वर्ष, प्रभव भवत्सरमें यह लिखा गया था। नागिमेट्टि-द्वारा किसी  
जैन देवताको कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। वदम्ब-  
वगोय तैल मण्डलेश तथा आचलदेवीका भी इसमें उल्लेख है । ]

( रि० इ० ए० ११५०-५१ क्र० ६८ )

२३७

नीरलगि ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कच्छड

[ यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यवर्ष १० मे पुष्य शु०  
१३, गुरुवार, उत्तरायण मकरान्तिके दिनका है। इसमें नीरलगिके नाल्पनु  
मल्लगावुण्ड-द्वारा स्वनिर्मित मल्लिनाथ-जिनालयके लिए कुछ भूमि भूखमध-

सूरस्थ गण-चित्रकूट गच्छके हरिणन्दिदेवको अपित की जानेका उल्लेख है ।  
मल्लगावुण्ड चतुर्थजातिका व्यक्ति था । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ६१ पृ० १२४ ]

२३८

करगुदरि ( जि० धारवाड, मैसूर )

सन् ११४८, कन्नड

[ यह लेख पौष शुक्ल १, सोमवार, प्रभव संवत्सर, के दिन लिखा गया था । महावदुव्यवहारि कल्लिसंष्टि-द्वारा करेगुदुरेमे विजयपार्श्वजिनेन्द्र मन्दिर बनवाया गया उसे कुछ जमीन दान देनेका इसमें निर्देश है । यह दान सूरस्थ गण, चित्रकूट अन्वयके वामुपूज्यके शिष्य हरिणन्दिके शिष्य नागचन्द्र भट्टारकको दिया गया था । उस समय महाप्रचण्डदण्डनायक सोवरसका शासन हानुंगल ५०० के प्रदेशपर चल रहा था तथा उसके एक भागपर मण्डलेश कदम्बवंशीय तैलका अधिकार था । इस समय चालुक्य प्रतापचक्रवर्ती जगदेकमल्ल सम्राट् थे । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६७ ]

२३९

हुलगूर ( जि० धारवाड, मैसूर )

१२वीं सदी - मध्य, कन्नड

[ यह लेख अधूरा है । चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय पुरिगेरे तथा वेलवोल प्रदेशोंपर महाप्रचण्डदण्डनायक वावणरस शासन कर रहा था । इसका सामन्त मणलेर कुलका जयकेजी था जो पुरिगेरेके राष्ट्रकूट पदका अधिकारी था । इसके समयकी एक जैन श्राविका नीलिकट्टेका इस लेखमें निर्देश है । ]

( रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ३२ )

२४०

## शृंगेरी ( मैसूर )

शक १०७१ = सन् ११२०, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगर्भास्त्र्याद्वादामाधला-
- २ छन जायात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशामन
- ३ स्वस्ति श्रो(म)तु सकवरपगल १०७१ ने प्रमोदू-
- ४ तमवत्सरद् वयिमाग्यमासद् शुद्ध सप्तमि
- ५ स दन्तु श्रोकाण्णरगण मूलसघ
- ६ पुस्तकगच्छद् हरिय
- ७ मगल

[ यह लेख पाश्वनाथदेसदिके मुखमण्डपके एक पाषाणपर है । वैशाख शु० ७, शक १०७१, प्रमोदूत सवत्सर इस तिथिका तथा मूलसघ-काणूर-गण-पुस्तकगच्छका इसमें उल्लेख है । लेख अस्पष्ट होनेसे इसका उद्देश आदि विवरण ज्ञाति नहीं हो सकता । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० ११३ ]

२४१

## अरसीघीडि ( विजापूर, मैसूर )

चालुक्यविक्रम वर्ष ७६ = सन् ११२१, कन्नड

[ इस लेखमें चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके मामान वीरचाण्डरस तथा उसकी पत्नी देमलदेवी-द्वारा पीप व० २, बुधवार, चालुक्य विक्रम वर्ष ७(६)के दिन मूलसघ दशियगणके आचार्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र पण्डितदेवको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ३३ पृ० ४३ ]

२४२-२४३

छतरपुर ( मध्यप्रदेश )

सं० १२०८ = सन् ११५१, संस्कृत-नागरी

[ ये दो लेख लखनऊ म्युजियमकी दो मूर्तियोंके पादपोठोंपर हैं । ये मूर्तिया छतरपुरसे प्राप्त हुई थी । मुविधिनाथ तथा नैमिनाथकी इन मूर्तियोंकी स्थापनातिथि आपाढ शु० ५, गुस्वार, सं० १२०८ थी ऐसा लेखमे कहा है । ]

[ मे० आ० सं० ११ ( १९२२ ) पृ० १४ ]

२४४

स्टेट म्युजियम, भरतपुर ( राजस्थान )

सं० ११०९ = सन् १०५३, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमे ज्येष्ठ शु० (?) रविवार, संवत् ११०९ के दिन पार्श्व-नाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । लेख मूर्तिके पादपीठपर उत्कीर्ण किया है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६३ पृ० २१ ]

२४५

शेडवाल ( बेलगाँव, मैसूर )

शक १०७५ = सन् ११५३, कन्नड

[ यह लेख वनवण्णमन्दिरमे लगा हुआ है । इसमे सेणित कोत्तलि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ करोके उत्पन्नके दानका उल्लेख किया है । तिथि चैत्र शु० ५, रविवार, श्रीमुख संवत्सर शक १०७८ ऐसी दी है । किन्तु तिथि आदिकी गणनानुसार यह शक १०७५ का लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १८७ पृ० ३६ ]

२४६

## बेल्ह (मंभूर)

शक १०७६ = मन् ११२३, कच्छ

- १ निक्षेपशास्त्रवारागिपारगै । धावधमानस्वामिगल धर्मतार्थं प्र -
- २ मन्त्रवहुमहारकरिंद । भूतबलिपुष्पतन्त्रस्वामिगलिंद । षष्ठ्यधि-  
मु(मतिगलिंद अ) -
- ३ कलकटवरिंद । वज्रप्रोवाचावरिंद । वज्रगदिमहारकरिंद  
मिहण(दि कनक-)
- ४ मेन वादिराजवरिंद । आविजयदेवरिंद । गानिदेवरिंद पुन-  
मेन(देवरिंद ।)
- ५ अजितमेनपडितदेवरिंद । कुमारमेनदेवरिंद । महिपेण मलधा-  
रिंद(वरिंद)
- ६ (ध्रु)तकीर्ति श्रीगल वरगणिश्रीपाल विन्दवादिमदविस्फाल ॥  
तमगे -
- ७ (अ)मन्त्रेति धरगन्दे तम्म भुवदाल् पट्टकं वारागिविभ्रमनापां
- ८ त्म कीलपडिमित्तु पेरिनेमक श्रीपात्योगेन्द्र ॥ आवन  
रिपयमो
- ९ (ग)पण्यवचोविम्याम निमगविजयविलाम । कश्चिद् वाद-  
विनोटकोविद
- १० द्रज कश्चन कश्चनापि गमको वारगो पर कश्चन । पाटिय  
सुचनुविदेपि निपुण श्रीगलदेव पुनस्तकं व्याकरणागम-
- ११ प्रवणधोस्त्रैविद्यविद्यानिधि । अवर मधमर् । वगंथाप  
मूचितमार्गेन्द्रव्यामन्त्रम मानुंदियल्कामगंगवरेदे-
- १२ नल्के निर्गलमादत्तनन्तवीर्यव्रतियोल् ॥ आ श्रीपालत्रैविद्येश्वर  
शिष्यर् ॥ श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापतिपदकमलारा-



- १३ धनालब्धवृद्धिः सिद्धांतांभोनिधानप्रविसरदमृतास्वादपुष्टप्रमोदः ।  
दीक्षाशिक्षासुरक्षाक्रमकृतिनिपु-
- १४ णः सन्ततं भव्यसेव्यः सोयं द्वाक्षिण्यमूर्तिर्जगति विजयते  
वासुपूज्यव्रतोद्भूतः ॥ मत्पुत्राचक्रणागुणोत्कर्षस्त्य-
- १५ क्तलोभमदमानरोपणैः । शुद्धवृत्तियुतवाधदर्शनैर्वादिराज मुनिराज  
राजसे ॥ श्रीपालत्रैविद्यश्रीपादप-
- १६ मान्तरंगमंगतभृङ्गं श्रीपरिपूर्णं होयसलभूपालकमन्त्रि माचदण्डा-  
धीशं ॥ जिननासं पोरंद नृपालतिलक श्री-
- १७ विष्णु (भूपा)लकं जनकं सं एर्यंगवेगडे जगद्विरुथाते राजब्बे  
ताय् तनगिन्निम्मडिदण्डनायकने तां मावं महामन्त्रि
- १८ येन्देनला माचिणदण्डनायके वलं धन्यं परं धन्यने ॥ सुरगुरु-  
मन्त्रक्रमदोल् धुरदोल् सिंहप्रतापनप्र-
- १९ तिमतैर्जं सुरतरु वितरणगुणदिं नरसिंहमर्हाशमन्त्रि माचचमूपं ॥  
स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्री-
- २० मन्महाप्रधानं माचियणदण्डनायकं तनगे व्रतगुरुगलुं श्रुतगुरु-  
गलुमेंनिसिद् परवादिमल्ल-
- २१ वादीमसिंह महामण्डलाचार्य श्रीपालत्रैविद्यदेवर् माडिसि-  
दादिदेवर वसदिय केलसद कोरतेगं देवर्
- २२ अष्टविधार्चनेन कपियराहारदानक्कवागि शकवर्षं १०७६ नेय  
श्रीमुखसंवत्सरदुत्तरायणसंक्रमण-
- २३ दंडु महादानंगलं माडु तिर्पा समयदोले माचिणदण्डनायकं  
विन्नपं गेय्यल् होयसलश्रीनारसि-
- २४ हदेवर् कम्भुणाड नागरहालं सर्ववाधापरिहारवागियाददेवर्गे  
धारापूर्वकं माडि कौट्ट दत्तिर्य-
- २५ तु देवदानवादा नागरहाल चतुर्सीमंयप्पुदु मूढलु कल्ल द्रोणे  
संचरिबल्ल । आग्नेयदलु कडवदको

- २६ लट्ट हारयणि मागवागि बन्द हेन्वहे । तेंकण् जाल्दहल्ल रनि  
दहुवलु कालिरहरल । नैरुन्यदल्ल हलियरु-
- २७ लणल हहुवलु हलियदहल । धायन्यदल्ल मूलट हिरियकणि ।  
बडगल् मागडेगे डाह हहारियव-
- २८ डगण मोरटि । ईशान्यदाल् कोडेयाळगलि तेंकलु नट करलु ।  
इता चनु साम वेरु मागरहाल बल्लजिना (न)य-
- २९ कक मरुनमम्यगामि पडिमलिमुववगे गगेय तडियल् मायिर  
कविल्य कोहु कोलगुम होक्षलु कडिमि चनु-
- ३० गुत्तरायणसक्रमणग्रहणव्यर्तापान्दु दान माडिड पलवी  
धर्मम कि-
- ३१ यला कविलेयुमना बाळणरमना तियिवारदलु-
- ३२ मम प्रतिपालिसुवुदु ॥ स्वत्ता परदत्ता वा या इरत
- ३३ जायते क्रिमि ॥ मगल महा धा थो पालित
- ३४ जालोल विशदयशोलोल गुणमेनपडित बुधनि
- ३५ पुरदर गुणमेनपडित

[ यह लेख केशवमन्दिरके छतमें लगा पाया गया । हममें पहले धर्म-  
मानस्वामी ( महावीर ) ने प्रारम्भ कर कई आचार्योंकी परम्परामें श्रीपाल  
त्रैविन्दवरी वणन किया है । इनके द्वारा निर्मित आदिदेवकी वयदिके  
लिए होयमल राना नरसिंहके सेनापति मानियणने नागरहाल ग्राम दान  
दिया था । दानकी तिथि शक १०५६ को उत्तरायणसक्रांति थी । लेखमें  
श्रीपाल त्रैविन्दके गुम्बधु अनन्तवीर्य तथा सिद्ध वामुपूज्य एव बादिराज-  
का भी वणन है । जन्तमें गुणमेन पण्डितका भी उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मे० १९२८ पृ० १०२ ]

२४७

चलगेरि ( वेल्गाव, मैसूर )

शक १०७८ = मन् ११५६, कन्नड

[ इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालमें कलनुरि वंशके विज्जल ( द्वितीय ) तकके सामन्तोंकी वंशावली दी है । विज्जलके बन्धु मैलुगि तथा उसकी पत्नी लक्ष्मादेवीका ग्रामन वेल्गल ३०० प्रदेशपर चल रहा था उस समय राजाके मन्त्री कालिदास चमूपने पार्श्वनाथतीर्थकी यात्रा कर एक मन्दिर बनवाया तथा उसके लिए कुछ दान दिया । इसकी तिथि पुण्य शु० (१२), वानु संवत्सर, शक, १०७८, उत्तरायण-संक्रान्ति ऐसी दी है । ]

[ रि० ड० ए० १९५३-५४ क्र० १७५ पृ० ३५ ]

२४८

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

मन् ११५६, तमिल

[ यह लेख चोल सम्राट् राजराजदेवके १०वें वर्षमें लिखा गया था । इस मन्दिरमें मन्व्यासमय दीप प्रज्वलित रखनेके लिए मन्दिर-अधिकारी-द्वारा ३०० काशु स्वीकार किये जानेका इसमें निर्देश है । ]

[ रि० मा० ए० १९३९-४० क्र० १४१ ]

२४९-२५०

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

मन् ११५६-५७, तमिल

[ इस लेखमें जयंगोण्डशोलमण्डलम् प्रदेशके ऊन्वकाट्टु ग्रामके एक चेल्लाल-द्वारा करन्दैस्थित जिनमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए कुछ

गाये दान दी जानेका उल्लेख है । यह चोल सम्राट् गजराजदेवके १०व वषमें दिया गया था । राजराजदेवके ११वें वषका एक लेख यही है । इसमें पनैयूरनाडु प्रदेशके अम्मोलिदेवपुरम स्थानके नगरत्तार् लोग-द्वारा तिम्परम्पूरके जिनमन्दिरमें प्रबोवन ममारोहके अवसरपर दिये गये दीप-दानाका विवरण दिया है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३१-१३२ ]

२५१

करडकल ( रायचूर, मैसूर )

शक १०८१ = सन् ११५९, कन्नड

[ यह लेख कलचुर्य राजा त्रिभुवनैकवीर विज्जलके राज्यकालमें आपाढ, दक्षिणायन सक्रांति, शक १०८१, प्रमायि सवत्सर, गुरुवारके दिन लिखा गया था । इसमें एक सेनापति तथा पञ्चलदवीका उल्लेख है तथा मूळसघ देमिगण-गुम्तकगच्छने किमी आचायको दान दिये जानेका उल्लेख है । इस समय यह लेख वीरभद्रमन्दिरमें लगा है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २३८ पृ० ४१ ]

२५२

केरेसन्ते ( कटर, मैसूर )

१२वीं सदा ( सन् ११५० ), कन्नड

- १ बहुधान्यसवत्सरद् माघ सु १५ रवु
- २ श्रीमा प्रतापचक्रवर्ति होयसण श्री
- ३ वीर नारसिंहदेवरसरु अडकेय पा-
- ४ रिशन्वेन मग चिक्कमल्लणगे केरेयसथे-
- ५ य द्विलसघट्ट आदिनाथदेवर पाद्वंदवर
- ६ वसद्विगलिंगे आ केरेयसथेय हिर्यकेरेय

- ७ केलगुलंतह त्थलवृत्तिय तांठ गहे वेत्तु म-  
 ८ ने आ देवहगलिगुलंतह ममस्ततेजस्वा-  
 ९ स्यवनु आ आर्वारनारसिंहदेवरमरु आ सल-  
 १० णगे डानवागि भारापृर्वकं साडि आचद्राकं-  
 ११ तारंवरं सलवंतागि काट्टरु मंगल महा आ आ

[ इस लेखमे होयसल राजा नरसिंह-द्वाग केरेयमथे स्थित द्रविलगंधकी आदिनाथ-पाश्र्वनाथ वसदिके लिए चिक्कमल्लण्णको कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । निपि १२वीं सदीकी है तदनुमार यह लेख बहुधान्य संवत्सर = मन् ११५९ का होगा । तब नरसिंह प्रथमका राज्य चल रहा था । इस समय यह लेख जनार्दनमन्दिरमे लगा है । ]

[ ए० रि० मै० १९४५ पृ० ११२ ]

२५३

हुलियार ( मैसूर )

१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[ इस लेखमे होयसल राजा नरसिंह १ के समय चान्द्रायण देवके शिष्य सामन्त गोवकी पत्नी श्रीयादेवी-द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । इस समय यह पादपीठ विष्णुमूर्तिके लिए उपयोगमे लाया जाता है । ]

[ ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५ ]

२५४

हरिद्वार ( उत्तरप्रदेश )

सं० १२१६ = सन ११५९, संस्कृत-नागरा

[ यह लेख पीतलकी चौबीसी-मूर्तिके पीठपर है । इसमे मूर्तिकी स्थापनातिथि आपाढ़ ९, सं० १२१६ दी है । मूर्ति इन समय लखनऊ म्युजियममे है । ]

[ मे० आ० सं० ११ ( १९२२ ) पृ० १५ ]

२५५

## शृंगेरी ( मंमूर )

शक १०८२ = सन् ११६०, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगर्मास्याद्वादाभोत्रलठन (१)
- २ जायान् शैलोक्यनाथस्य शामन त्रिनशामन (॥)
- ३ स्वस्ति श्रीमन् सकवर्णं द १०८२
- ४ विजयसवत्परद कुम्भ शु-
- ५ द्वादशमि वृहत्वारदन्दु श्रीमन्निडुगोड
- ६ विजयनारायण शान्तिमेष्टिय पुत्र वा-
- ७ मिसट्टियर अक्क सिरियबेमेष्टियर म-
- ८ गलु नागबेमेष्टियर मगलु मिरिय-
- ९ लेमेष्टितिग हेम्माडिसेष्टिग सुपुत्रन-
- १० प्प मारिसेष्टिगे परोक्षविनयक्के मा-
- ११ डिसिद् वसदिगे बिट्ट दत्ति केरेय केलग-
- १२ ण हिरिय गदेय वसत्रिय वडगण होम-
- १३ यु मद्रियु हालेयु नडुवण दुडुविन होरद
- १४ मण्णु कण्डग सुल्लिगोड अरगण्डुग मण्णु
- १५ वणजमु नानदेसियु बिट्टय
- १६ मलवेगे हाग हज हात्तिय मल
- १७ ले मेलमिन मारक्क हागमु
- १८ मत्त पोत्तोञ्जलुप्पु हेरिगय्वत्तेले अरिमिनद मलवेगे वीसक्के विट्ट  
तपिदडे तप्पिदवन्नु गगोय-
- १९ लु साडर कविलेय कोण्ड पातक

[ यह लेख पार्श्वनाथमन्दिरके सभागृहमें है । इसकी तिथि शक

१०८२, विक्रमसंवत्सर, कुम्भ मास शु० १० गुरुवार ऐसी है। इस दिन इस मन्दिरके लिए कुछ भूमि तथा व्यापारियों-द्वारा कुछ करोंका उत्पन्न दान दिया गया था। यह मन्दिर हेम्माडिसेट्टिकी पत्नी सिरियबेके पुत्र मारिसेट्टिकी स्मृतिमें बनवाया गया था। मन्दिरके गर्भगृहकी पार्श्वनाथ-मूर्तिके पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है-श्रीमत्-पारिसनाथाय नमः । ]

[ ए० रि० मै० १९३३ पृ० १२२, १२५ ]

२५६

दावानगर ( बिजापूर, मैसूर )

शक १०८३ = सन् ११६१, कन्नड

[ यह लेख कलचुर्य राजा विज्जणदेवके समय शक १०८३, विक्रम संवत्सरका है। इसमें मूलसध-देसिगणके गंगलिवेडके आचार्य माणिक्य-भट्टारकका तथा मैलुगि नामक शासकका उल्लेख है। इसने कन्नडिगैके जैन वसदिको कुछ दान दिया था । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ पृ० १३० क्र० ई १२० ]

२५७

गुत्तल ( धारवाड, मैसूर )

शक १०(८४) = सन् ११६२, कन्नड

[ यह लेख गुत्त वंशके महामण्डलेज्वर विक्रमादित्यरसके समय पाप शु० १५, सोमवार, शक १०(८४) का है। इसमें केतिसेट्टि-द्वारा निर्मित पार्श्वदेवमन्दिरके लिए राजा-द्वारा भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। पुस्तकगच्छोके मलयारिदेव तथा सोमेज्वरपण्डितदेवका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई ५१ पृ० ९६ ]

२५८

## हालुगुड्डे ( मैसूर )

शक १०८४ = मन् ११६२, कन्नड

- १ नमस्तुगशिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारवं । त्रैलोक्यनगरभूमस्त  
स्माय शम्भवे ॥ स्वस्ति समधिगतपचमहाशन्द
- २ अदापमहामण्डलेदवरनुत्तरमधुराधीश्वर पट्टिपोम्बुचपुरवश्वर  
पद्मावतीलन्धवप्रसाद मृगमदामोद सन्तत-
- ३ सज्जननस्तुत्य नोतिशास्त्रन-विरदमर्वज-नामादिप्रशस्तिमहित  
श्रीमन्महामण्डलेदवर प्रतापभुजवल
- ४ शान्तरदेवर मान्तल्लिगेमार्गिरम सुखसकथाविनोददि राज्य  
गैद्युत्तमिरे तत्पदपद्मोपजीवि समधिगतपच-
- ५ महाशब्द महाप्रचण्डकुमार वेदण्डपचानन रिपुकुमारतारक-  
पडानन अरसकगाल विजयलक्ष्मीलोल श्रीमनु-
- ६ होसगुन्दद बीररसर मल्लमान्तल्लिगेयुन अग्रहारमुन सुखदि-  
नालुत्तमिर शकवर्ष १०८४ नेय चित्रमानुसवत्परद
- ७ वैशाख सुद १० बह्वारदन्दु कट्टद दण्डु अलिय वग्मणेयनु  
पाण्ड्यरमनुमल्लिगारनु समस्तमाधन वेरसि वूरलु विट्ट
- ८ वसि बहलि नेल्लिरडेयलु जिनपादशेखर सन्निविग्रहि माच्चि-  
राजन ॥ क० तल्लपारिनायकगे एलेयल् ओप्पेयच्चे नायकित्ति
- ९ मग भूवल्लयदोल् अचिर पुट्टिद कल्लिगल् सुम्बतिलक गोमिग-  
मण्डरदव । रूपिनालु कामसत्तिम कूर्पिनोला नरननूज अभिमन्नु
- १० ता वेप जन्कवेडेयोतु नार्पडे कलि गोमिग वररवृक्ष जगदोल्  
धुरदोल् अगतिभूभुत्तरनन्वघट्टिरमकगाल वीर
- ११ नल्लुर्केरि त्रेमस गागणन्तिरिवलि विद वीरर नोरनेत्तरि नेणन  
रण्डद दिण्डेगस्ल्लिगलि मयकर एन विक्कम कल्लिग



- १२ ना जगदेकवीरन । अणियरमोड्डिदड्डणद वीररनान्तिसुतिर्प विल्ल  
वल्लणिय तुरंग साधनमनान्तिरिवल्लि महामयं
- १३ (ने)णमय खण्ड दिण्डि नोरेनेत्तर कार्पुर्मन्दु नोर्पेडेणकमो  
गोगियान्तिरिद विक्रममाहवरंगभूमियो (ल्)
- १४ कलहदोलान्त वीरचतुरंगवल्लगलनान्तु गोगि ताल्वालयटिन्दे  
तूल्दिरिये विहरिमेनेय लांहिताम्बुविं पलवु सिरंगल्”
- १५ रत्तद चालोप्पिरे वीररट्टेगल् तोलतोलेगन्दु तल्लतिरिव सम्भ्रम  
संगररंगभूलियोल्
- १६ ””णमय लोहितचारि नेणद केसरगल कुणिवट्टेगल् पन्दडिदेन-  
णकमो विक्रमद
- १७ ””वागलोन्दु तिरुविं विडुवाग्लु नूरु परिये सायिरवरियं  
नेडुवल्लि कोटियेने पोडवियोल्”
- १८ ””रु ॥ तरिमन्दोड्डिदरातिय मरुवक्कमनान्तु गोगि यिरियल्  
धुरदोलु परिदलेयोल् मह”
- १९ ””दलव ॥ नायकतन मुम्बरिसिद नायकरिदिरागि गोगियोल्  
तागुडहुं मायकदिनेच्चु तू”
- २० ””देवरदेन पेलुवे ॥ मारमलंदोड्डिदन्यनृपसैन्यपयांधिगे वीरभूभुजं  
नूर्मडि वाडवानल
- २१ ””नोर्पुहुं कूर्मनखास्त्रमम्बुरिय नालगेगल् विडेयट्टिवेवेहुं मुम्म-  
लियायत्तु वैरिव”
- २२ ””कृतास्त्रनो ॥ धुरदोलरिसेनेयं निर्मरमिरियल् गोगि वैरिवि-  
क्रान्तसरल् भरदिन्”तनुवनुचा
- २३ ””दोला सिन्धुसुतनं पोल्लं ॥ सन्ततमोड्डि निन्दरिवल्लाल्लगल-  
नान्तिरियाल्ल वैरिविक्रान्तसराल्लगल् तनुवनुचा
- २४ ””ग्रदोल्ल ॥ सन्तनसूनुवेन्तु सरमैयेयोलोप्पिदन्ते गोगि  
विक्रान्तमनासेवट्टु सरलोट्टिदनाह”

- २५ योल् ॥ सगरदोलिदि दीरमे शृगारममक्केवत्त गोमिगय  
तम्मुत्तमगदोल् इट्टुय्दि निलिपागनेयर्
- २६ (अ)मरापतिथ ॥ अन्नु तलप्रहारिनायकन मग गोमिगय  
नायक कटकमनान्तिरिट्टु तुमुल्
- २७ ममान्तरननिमिद थीवल्लमन्वनग्रपुत्र प्रतापभुनवल सान्तर-  
मेनिमिद तैलपदेवर विदियम्मरसन पुत्र थीमनु
- २८ ए तम्मरसर हेमरलु (?) गोट्टनेन्दु (?) हालुगुड्डेय त्रिमोगा-  
म्यन्तरविद्वियागि कल्लु नट्टु कारणय गेट्टु कोट्टु होस
- २९ वर मने वडि (?) इविन कैयोल्लगे हाद कैय मक्कि (?)  
सहितभागि कोट्टु ॥ मगल महा श्री श्री

[ यह लेख वेशाख शु० १०, बुधवार, शक १०८४, चित्रभानु  
सवत्सरके दिन लिखा गया था । पट्टिपोम्बुच्चके सात्तरवर्षीय राजा  
थीवल्लभदेवके पुत्र तैलपदेवद्वारा हात्तुगुट्टे ग्राम दान दिये जानेका इसमें  
उल्लेख है । तलप्रहारि नायकके पुत्र सेनापति गोमिगमी पाण्डुरमके  
विरुद्ध लड़ते हुए मृत्यु हुई थी । गोमिगके कुटुम्बियोंको यह ग्राम दान  
दिया गया था । लेखमें तैलपदेवको पद्मावतालम्बरप्रसाद यह विनोदण  
दिया है तथा गोमिगको जिनपादशेखर कहा है । तैलपदेवके अधीन मेलु-  
सात्तलिंगे प्रदेशके शामक धीररसका भी उल्लेख किया गया है । ]

[ ए० रि० मे० १९२३ पृ० ७४ ]

२५९

एकसम्वि ( वेलगांव, मैसूर )

शक १०८० = म० ११६५, कन्नड

[ यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके पुत्र विजयादित्यके समय-  
का है । रट्टवर्गीय कत्तम (कातवीय) का सेवक माग्गोड था । इसकी

वंशपरम्परा इस प्रकार दी है — मारगीड — आचगीड — होल्लिगीड — जिन्नण, कालण तथा मटुवण । इनमें जिन्नण गण्डरादित्यका सेनापति था तथा कालण विजयादित्यका । कालणकी पत्नी लच्छले थी तथा उसे तीन पुत्र थे — जिन्नण, आचण तथा रामण । कालणने एवकामम्बुगेमें नेमिनाथवमदि वनवायी तथा उसके लिए यापनीय मंघ — पुन्नागवृक्षमूलगणके महामण्डलाचार्य विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी । विजयकीर्तिकी गुरु-परम्परा यह थी — मुनिचन्द्र-विजयकीर्ति-कुमारकीर्ति त्रैविद्य-विजयकीर्ति ( प्रस्तुत ) । इस मन्दिरकी कीर्ति मुनकर राजा कार्तवीर्यने भी इसके दर्शन किये तथा फाल्गुन शु० १३ शक १०८७ को विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ४८ ]

२६०

मन्तगि ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १० = मन् ११६५, कन्नड

[ यह लेख कलचुर्य राजा विज्जणदेवके राज्यवर्ष १०, पार्थिव संवत्सरमें (?) मामके शु० ५, गुरुवारके दिन लिखा गया था । पान्थिपुर ( वर्तमान हनगल ) के कलिदेवसेट्टि-द्वारा चतुर्विंशति तीर्थकरमूर्तिकी प्रतिष्ठा तथा मन्दिरके निर्माणका इसमें उल्लेख है । इसके लिए नागचन्द्र भट्टारकको कुछ दान दिया गया था । हानुंगल नगर तथा कलिदेवसेट्टिकी विस्तृत प्रशंसा की है । ]

[ रि० ड० ए० १९४७-४८ क्र० २०७ पृ० २५ ]

२६१

अरसीवीडि ( विजापूर, मैसूर )

राज्यवर्ष १२ = मन् ११६७, कन्नड

[ इस लेखमें कलचुर्य राजा भुजबलमल्लके राज्यवर्ष १२, सर्वजित

सवसरमे पुष्य शु० १४, सामभारके दिन सिद्धकुलके विट्ठलमके पुत्र  
हालरम द्वारा गुणवेदगिय वमदिके लिए कुछ वगाक उत्पन्न दान देनेका  
उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९०८-२९ क्र० ई ४० पृ० १८ ]

२६२

नदिहरलहरि ( धारवाड, मंसूर )

शक १०९० = मन् ११६८, कन्नड

[ इस लेखमे कलचुय राजा विज्जणदेवके समय शक १०९०,  
सवधारि सवत्सर, चैत्र पूर्णिमा, सोमवारके दिन जैन साधु-माध्वियोंके  
आहारदानके लिए कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५८ पृ० १५२ ]

२६३

हलसगि ( विजापूर, मंसूर )

शक १०९० = मन् ११६८, कन्नड

[ इस लेखमें शक १०९० मे चन्द्रग्रहणके समय धोरजिनालयके लिए  
कुछ भूमिदानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८, क्र० ई० २५ पृ० २०१ ]

२६४

हिरेमन्नूर ( धारवाड, मंसूर )

शक १०९१ = मन् ११७०, कन्नड

[ यह लेख पुष्य शु० ५, गुरुवार, शक १०९१ विरोधि सवन्मरका  
है । इसमे मिन्द कुलके महामण्डलेश्वर चानुण्डरम-द्वारा हिरियमणिपूरके  
जैनशालाके अधिष्ठायाके दामबोवकी प्रार्थनापर कुछ भूमिके दानका  
उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ई ४ पृ० २० ]

२६५

## त्रिजोतिया ( गजस्थान )

संवत् १२२६ = मन् ११७०, संस्कृत-नागरी

- १ सिद्धम् ॥ ॐ नमो वीतरागाय । चिद्रूपं सहजोदितं निरवधिं  
ज्ञानैकनिष्ठापितं नित्योन्मीलितमुल्लसत्परकलं स्यात्कारविस्फा-  
रितं । सुध्यक्तं परमाद्भुतं शिवसुखानन्दास्पदं शास्वतं नमि-  
स्तामि जपामि यामि शरणं तज्ज्योतिरात्मो(स्थितं) ॥ ॥ नास्तं  
गतः कुग्रहमग्रहो न नो तीव्रतेजा...
- २ ...नैव सुदुष्टदेहांऽपूर्वो रविस्तात् स मुदं वृषो वः ॥२॥ [म]  
भूयाच्छीशांतिः शुभविभवभंगोभवभृतां विमोयस्यामाति  
स्फुरितनेत्रोच्चि. करयुगं । विनम्राणामेषामग्निलकृतिनां मंगल-  
मयीं स्थिरीकर्तुं लक्ष्मीमुपरचितरज्जुं व्रजमिव ॥३॥ नासाश्वा-  
सेन येन प्रबलबलभृता पूरितः पांचजन्यः
- ३ ...वरदलमलि(नीपाद्)पद्माग्रदेशैः । हस्तांगुष्ठेन शार्ङ्गं धनुरतुल-  
बलं कृष्टमारोप्य विष्णोरंगुल्यां दालितोयं हलभृदवनितं तस्य  
नेमेन्तनोमि ॥४॥ प्राञ्चुग्राकारकांतात्रिदशपरिवृढव्यूहरुद्धाचकाणां  
वाचालां केतुकोटि(वच)णदण्डगुणमणीकिंकिणीभिः समन्तान् । यस्य  
व्याख्यानभूर्भामदह किमिदमिन्याकुलाः कौतुकेन प्रेक्षन्ते  
प्राणमाजः
- ४ ( स भुवि ) त्रिजयतां तीर्थकृन् पार्श्वनाथः ॥ ५ ॥ वर्धतां  
वर्धमानस्य वर्धमानमहोदयः । वर्धतां वर्धमानस्य वर्धमान-  
( महो )दयः ॥६॥ सारदां सारदां स्तामि सारदानविसारदां ।  
भारतीं भारतीं भक्तभुक्तिभुक्तिविशारदां ॥७॥ निःप्रव्यूह-  
मुपास्महे जिनपतीनन्यानपि स्वामिनः श्रीनाभेयपुरःसगन् पर-  
कृपापीयूषपाथोनिर्धान् । ये ज्योतिःपरमागमाज-

- ५ ततया मुक्तस्मृताभा(धि)ता श्रीमन्मुक्तिनिनविनीस्तनतटे  
 हारश्रय विभ्रति ॥१०॥ मन्याना हृदयामिरामयमनि मद्धम-  
 (मम)स्थिति कमान्मलनसगति शुभनति निग्रा(वा)धा-  
 द्दरति । जीयानामुपकारस्तराणि श्रय श्रिया समृति  
 देयान्ते मयमभृति शिर(म)ति जने चतुर्विंशति ॥ ९ ॥  
 श्रीचाहमानशिनिराजवश पौर्वोप्यपूर्वा न जडापनद्ध । मिगे  
 न चा
- ६ ( गो न च ) रधयुक्तो नो नि फल सारयुतो नतो नो ॥१०॥  
 लावण्यनिर्मलमहाज्वलितागयधिरुच्छ्रोत्रलक्ष्मिचिरय परिधानधा-  
 ( श्री । उच्चु ) गपर्वतपयाधरमारभुना शकमराचनि जनीव  
 ततोपि विष्णो ॥११॥ विप्र श्रीवरपगोत्रेभूदहिच्छत्रपुरे पुरा ।  
 मामतीततसामन्त पूर्णतल्लो नृपस्तत ॥१२॥ तस्माच्छ्री-  
 जयराजविग्रहनृपो श्रीचन्द्रगोपेन्द्रो नस्माद्गु(ल)मगृवको शशि-
- ७ नृपो गूवाकमञ्जना । श्रीमद्वप्पयराजविध्यनृपती श्रीमिह-  
 राड्विग्रहो । श्रीमद्गुलमगुदुवाक्पनिनृपा श्रीवीररामोऽनुज  
 ॥१३॥ ( चामुडो ) यनिपोऽतिश्व राणकवर श्रीमिधरो दम-  
 लस्तभ्राताथ ततोपि वीमलनृप श्रीराजदेवीप्रिय । पृथ्वाराज-  
 नृपोथ तत्तनुमयो रासल्लदेवीविभुस्तत्पुत्रो जयदेव इयवनिप  
 सोमल्लदेवीपति ॥१४॥ इत्या चक्षिगमिधलामिधयसोराजादि-  
 वीरत्रय ।
- ८ क्षिप्र क्रूरकृतानवक्रकुहरं धाजार्गटुहान्मित । श्रीमत्सा(ल्ल)ण-  
 दण्डनायकवर सम्रामरगागणे जीवज्ञेव नियत्रित करमके  
 येन (जि)मात् ॥१५॥ अण्णाराजोस्य सुनुरेतहृदयहरि मत्व-  
 वाशिष्टमीमा गामीर्यादायवर्थ सममवद(चि)रालम्भमथो न  
 दीन । तच्चित्र ज न जाड्यस्थितिरवृत महापक्वहतुर्न मन्या न  
 श्रीमुक्तो न दोषाकरचित्ररतिर्न द्विचिह्नाधिमन्य ॥१६॥

- ९ यद्राज्यं कुशवारणं प्रतिकृतं राजांकुशेन स्वयं येनात्रैव नु  
चित्रमेतत् पुनर्मन्यामहे तं प्रति । तच्चित्रं प्रतिभासते सुकृतिना  
निर्वाणनारायणन्यक्षाराचरणेन मंगकरणं श्रीदेवराजं प्रति ॥१७॥  
कुवलयविकानकर्ता विग्रहगजोजनि (स्तु) नो चित्रं । तत्तनयस्त-  
च्चित्रं य(स) जडर्क्षोणमकलंकः ॥१८॥ मादानत्वं चक्रे मादान-  
पदेः परस्य मादानः । यस्य दधत्करवालः करतलाकलितः
- १० करतलाकलितः ॥१९॥ कृतांतपथमज्जोभूत् मज्जनो सज्जनो  
भुवः । वैकुण्ठं कुंतपालोगा(द्यत) वै कुं(त)पालकः ॥२०॥  
जात्रालिपुरं ज्वाला(पु)रं कृता पल्लिकापि पल्लाव । नट्टल-  
तुल्यं रोपातदूल येन शौर्येण ॥२१॥ प्रतोल्यां च वलभ्यां च  
येन विश्रामितं यशः । द्विल्लिकाग्रहणश्रांतमाशिकालामलमितं  
॥२२॥ तज्ज्येष्ठभ्रातृपुत्रोऽभूत् पृथ्वीराजः पृथूपमः । तस्माद-  
जितहंगांगो हेमपर्वतदानतः ॥२३॥ अनिधर्मरतेना-
- ११ पि पाश्वर्नाथस्वयंभुवे । दत्त मोराझराग्रामं भुक्तिभुवितश्च  
हेतुना ॥२४॥ स्वर्णादिदाननिवर्द्धनमिर्मदभित्तोदानरंरंगर-  
दानचर्यश्च विप्राः । येनाचिताश्चतुरभूपतिवस्तुपालमाक्रम्य  
चारुमनसिद्विकरी गृहीतः ॥२५॥ सोमेश्वराल्लब्धराज्यस्ततः  
सोमेश्वरो नृपः । सोमेश्वरनतां यस्माज्जनः सोमेश्वरोभवत्  
॥२६॥ प्रतापलंकेस्वर इत्यभिख्यां यः प्राप्तवान् प्रादृष्टुप्रतापः ।  
यस्यामिमुख्ये वरवंगिमुख्याः केचिन्मृता केचिदभिद्रुताश्च ॥२७॥  
येन श्रा-
- १२ पाश्वर्नाथाय रंवातीरे न्वयंभुवे । सामने रेवणाग्रामं दत्तं स्वर्गाय  
कांश्रया ॥२८॥ छ ॥ अथ कारापकयंशानुक्रमः ॥ तीर्थं श्रीनेमि-  
नाथस्य राज्यं नारायणस्य च । अंमं धिमथनादेवचरिभिर्वल-  
गालिमिः ॥२९॥ निर्गतः प्रवरो वंशां देववृद्धैः समाश्रितः ।  
श्रीमालपत्तने स्थाने स्थापितः शतमन्युना ॥३०॥ श्रीमालशैलप्र-

- वरावचूल पूर्वोत्तरसत्त्वगुर सुवृत्त । प्राग्याटवशीस्ति ध्रुव तस्मिन्  
मुक्तापमो वेश्रवणामिधान ॥३१॥ तडागपत्तने यत्न कारित
- १३ तिनमदिर । ( तीव्रा ) आत्रा यशस्तचमस्त स्थिरता गत  
॥३२॥ याचोकरचद्रमुचिप्रभाणि व्याप्रेरकादौ जिनमदिराणि ।  
कीर्तिद्रुमाराभसमृद्धिहताविभाति रुद्रा इव यान्यमदा ॥३३॥  
कल्लोलमामलितकीर्तिसुवासमुद्र मद्बुद्धिब्रधुरव्यूधरणे  
ध(रश) । पाकारररणप्रगुणातरात्मा श्रीचच्चुल्लम्पननय  
पद्भूत् ॥३४॥ शुभकरस्तस्य मुतोन्निए शिष्टेसहिष्टै परि-  
कायकार्ति । आजामटोसूत तदगनन्मा यदगनन्मा खलु  
पुण्यराशि ॥३५॥ मदिर वर्ध
- १४ मानस्थ आनाराणकस्थित । माति यत्कारित स्वीयपुण्य-  
स्त्वधमिवोज्ज्वल ॥३६॥ चत्वारश्चतुराचारा पुत्रा पात्र शुभ-  
ध्रिय । अमुप्यामुप्यधर्माणां भूवुभाययोर्द्वयो ॥३७॥ एकस्या  
द्वावजायेता श्रीमदाश्वत्थपद्मौ । अपरस्या (मुनीं जतीं श्रीमत्सु)  
क्षमददसत्ता ॥३८॥ पाकाणा नरवरं धीरवेश्मकारणपाटय ।  
प्रकटित स्वीयवित्तेन धातुनेव महातल ॥३९॥ पुत्रौ पवित्रा  
गुणरत्नपात्रौ विशुद्धगात्रौ समशालमर्त्यौ । बभूवतुल्लक्ष्मदकस्य  
जैत्रौ मुनींदुरामंद्विभिधौ प्रशस्तौ ॥४०॥
- १५ षट्पद्मागमबद्धमौहदमरा षट्पत्नीपरशैश्वरा षड्भद्रप्रियवश्यता  
परिकरा षट्कर्मावृत्तादरा । षट्पटावनिर्कीर्तिपालनपरा षड्-  
गुण्यचिंताकरा षडदष्टरत्नमास्करा सममय षट् देशलभ्या-  
गजा ॥४१॥ श्रेष्ठो दुधकलायक प्रथमक आमोमलो वीरगडि-  
देवस्पर्श इतोपि मीयकर श्रीराहको नामत एते तु व्रमतो  
जिनव्रजयुगाभानैरुभृगोपमा मान्या राजशतैवदान्यमनयो  
राजति जवृत्पवा ॥४२॥ इत्यं श्रीवर्धमानस्याजयमरोविभूषण  
कारित यैर्महामार्गवि



१६ मानसिच नाकिनां ॥४३॥ तेषामंतः श्रियः पात्रं (सीय)कः  
 श्रेष्ठिभूषणं । मंडलकरमहादुर्गं भूषयामास भूतिना ॥४४॥  
 यो न्यायांकुरनेचनैकजलदः कोनेर्निधानं परं सौजन्यांतुजिनो  
 विक्रान्नरविः पापाद्रिभेदं पविः । कारुण्यामृतवारिश्रेष्ठिलमने  
 राकाशशांकोपमो नित्यं माधुजनोपकारकरणव्यापारवद्भादरः ॥४५॥  
 येनाकारि जिनारिनेमिमवनं देवाद्रिशृंगोद्धुरं चंचत्कांचन-  
 चारुदंडकलशश्रेणाप्रमामास्वरं । खेलन्-खेचरसुन्दरीश्रमभरं  
 मंजद् ध्वजांहीजनैर्धत्तेष्टापदश्लेष्मजिनभृतप्रांटासमन्त्रश्रियं  
 ॥४६॥ श्रीसीयकस्य भार्ये द्वे

१७ मानागश्रीमामटामिधे । आद्यायान्तु त्रयः पुत्राः द्वितीयायाः  
 सुतद्वयं ॥४७॥ पंचाचारपरायणात्ममतयः पंचांगमंत्रोज्ज्वलाः  
 पचज्ञानविचारणासुचतुराः पंचेन्द्रियार्थोज्जयाः । श्रीमत्पंचगुरु-  
 प्रणाममनसः पंचाणुशुद्धव्रताः पंचैते तनया गृही(तवि)नयाः  
 श्रीसीयकश्रेष्ठिनः ॥४८॥ आद्यः श्रीनागदेवोऽमूलालाकश्चोच्च-  
 लस्तथा । महीधरो देवधरो द्वाघेतावन्यमातृजो ॥४९॥ उज्ज्वल-  
 स्थांगजन्मानौ श्रीमदुर्लभलक्ष्मणौ । भमूतांभुवनोद्गामियशो  
 दुर्लभलक्ष्मणौ ॥५०॥ गांभीर्यं जलधेः स्थिरत्वमचलात्तेज-

१८ स्वितो मास्वतः सोम्यं चंद्रमसः शुचित्वममरत्नोत्स्वितः परं ।  
 एकैकं परिगृह्य विश्वविदितो यो वेधसा मादरं मन्ये बीजकृते  
 कृतः सुकृतिना सल्लोलकश्रेष्ठिनः ॥५१॥ अथागमन्मं (दिरमे)  
 पकीर्तेः श्रीविं(ध्यव)ल्लीं धनधान्यवल्लीं । तत्रालु(लोके त्वमितल्प-  
 नुप्तः ) कंचिन्नरेशं पुरतः स्थितं सः ॥५२॥ उवाच कस्त्वं  
 किमिहाभ्युपेतः कुतः स तं प्राह फणोश्चरोहं । पातालमृलात्तत्र  
 देशनाय (श्री) पार्श्वनाथः स्वयमेप्यतीह ॥५३॥ प्रातस्तन  
 समुत्थाय न किंचन विवेचितं । स्वप्नस्यांतर्मनोमात्रा यतो  
 वातादिदूषिताः ॥५४॥ लोला-

१९ क(स्य) प्रियास्तिस्त्री बभूवुर्मनस प्रिया । ललिता कमलप्राश्न  
लक्ष्मीर्लक्ष्मीसनामय ॥५५॥ तत स मत्ता ललिता बभापे  
गत्वा गिया तस्य निशि प्रमुखा । शृणुष्व मन्त्रे धाणोहमहि  
श्री (पाश्वनाथ स्वलु द)शंयामि ॥५६॥ तथा स चोक्तो  
( यत्त्व न हि ) सत्यमेतत् । श्रीपाश्वनाथस्य समुद्भूति स  
प्राप्तादमर्चा च करिष्यतीह ॥५७॥ गत्वा पुनर्लोलिमवमूचे  
भो भक्त शक्तानुगतातिरिक्त । दवे घने धर्मविधा जिनाष्टो श्री-  
रवतीतारमिहाप पाश्व ॥५८॥ समुदरन कुरु धर्मकार्यं त्व  
कारय आजिनचे-

२० त्यगेह । येनाप्यसि श्रीकुलकर्तिपुत्रपौत्रादसतान-सुत्वादिबृद्धिं  
॥५९॥ त(दत्तो) माय्य वनमिह निवामो जिनपतेस्त एते  
प्रावाण शठकमठमुक्ता गगनत । सदा(म) (शश्वत्स)  
दुपचयत कुदसरितोस्तदत्रैतन् स्थान (नि)गम प्रायपरम ॥६०॥  
भत्रारत्युत्तममुत्तमाद्रिसिखर साधिष्ठमचोच्छ्रित तोय श्रीवर-  
लाङ्कात्र परम देवोतिमुक्ताभिध । सत्यश्चात्र घटेश्वर  
सुरततो देव कुमारेश्वर सीमाग्येश्वरदक्षिणेश्वरसुरो मार्कंड-  
रिच्छेश्वरो ॥६१॥ सत्योवरेश्वरो देवो ब्रह्ममण्डेश्वरावपि कुटि-

२१ लेश कर्करशो यत्रास्ति कपिलेश्वर ॥६२॥ महानाल-महा  
का(लम)रथेश्वरसशका श्रीत्रिपुङ्करता प्राप्ता( सति) त्रिभुवना-  
चिता ॥६३॥ कीर्तिनाथश्च (केदार) मिस्वामिन । सगमेश  
पुटीशश्च मुखेश्वरेश्वरा ॥६४॥ नित्यप्रमोदितो देवो सिद्धेश्वर-  
गणेश्वरा । (गगाभेदश्च) सोमेश गगानाथत्रिपुरातका ॥६५॥  
मस्तार्त्रा कीर्तिलिगाना यत्रास्ति कुटिला नदी । स्वर्णचालेश्वरो  
देव सम कपिलधारया ॥६६॥ नाल्पमृत्युर्न वा रोगा न  
दुर्मिश्रमवर्षण । यत्र देवप्रभावेन कलि-

२२ पक्प्रधर्षण ॥६७॥ षण्मासे जायते यत्र शिवलिंग स्वयभुव ।

तत्र कोटीश्वरे तीर्थे का श्लाघा क्रियते मया ॥६८॥ इत्येवं...  
कृत्वावतारक्रियां । कर्ता पार्श्वजिनेश्वरोऽत्र कृपया सोपाय वासः  
पतेः शक्तेर्वैक्रियिकः श्रियस्त्रिभुवनप्राणिप्रबोधं प्रभुः ॥६९॥ इत्या-  
कर्ण्य वचो विभाव्य मनसा तस्योरगस्वामिनः स प्रातः प्रतिबुध्य  
पार्श्वमभितः क्षोणीं विदार्य क्षणात् । तावत्तत्र त्रिभुं ददर्श  
सहसा निःप्राकृताकारिणं कुंडाभ्यर्णत एव धाम दधतं स्वायंभुवं  
श्रीधितं ॥७०॥

२३ नासीद्यत्र जिनेन्द्रपादनमनं नो धर्मकर्माजनं ( न स्नानं ) न  
विलेपनं न च तपो ध्यानं न दानार्चनं । नो वा सन्मुनिदर्शनं  
(न)....॥७१॥ तत्कुंडमध्यादथ निर्जगाम श्रीसीयकस्यागमनेन  
पद्मा । श्रीक्षेत्रपालस्तदधांविका च (श्रीज्वा)लिनी श्रीधरणोर-  
गेंद्रः ॥७२॥ यदावतारमकार्पादत्र पार्श्वजिनेश्वरः । तदा नागहृदे  
यक्षगिरिस्तंभः पपात सः ॥७३॥ यक्षोपि दत्तवान् स्वप्नं  
लक्ष्मणब्रह्मचारिणः । तत्राहमपि यास्यामि यत्र पार्श्वविभुर्मम  
॥७४॥ रेवतीकुण्ड-

२४ नीरेण या नारी स्नानमाचरेत् । सा पुत्रं मर्तृमौमान्यं (लक्ष्मीं  
च) लभते स्थिरं ॥७५॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यो वा शूद्र  
एव वा । रेवतीस्नानकर्ता यः स प्राप्नोत्युत्तमां गतिं ॥७६॥  
धनं धान्यं धरां धाम धैर्यं धीरेयतां धियं । धराधिपतिसन्मानं  
लक्ष्मीं चाप्नोति पुष्कलां ॥७७॥ तीर्थाश्चर्यमिदं जनेन विदितं  
यद्गायते सांप्रतं कुप्रेतपिशाच-कुञ्जररुजाहीनांगगंटापहं ,  
संन्यासं च चकार निर्गतमयं वृकसृगालोद्वयं काली नाकमवाय  
देवकलया किं किं न संषद्यते ॥७८॥ दशाध्यं जन्म कृतं धनं  
च मफलं नीता प्रसिद्धिं मतिः ।

२५ सद्धर्मापि च दर्शितस्तनुरुहस्वप्नोर्पितः मत्स्यतां म.....रदृष्टिदूषित-  
मनाः सदृष्टिमार्गे कृतो जै(ने)....ना श्रीलोकक्षेत्रेष्ठिनः ॥७९॥

किं मेरो श्रगमेतत् किमुत हिमगिरे कूटकोटिप्रसाड कि वा  
 कंठासकूट किमथ सुरपते स्वविमान विमान । इत्थं यत्तत्कृतं  
 स्म प्रतिदिनममरमर्त्यराजोत्कर्षां मन्ये श्रीलोकस्य त्रिभुवन-  
 भरणादुच्छित् कीर्तिपुज ॥८०॥ पवनधुतपताकापाणिनो भव्य-  
 सुरया पटुपटहनिनादादाह्वयत्यथ जैन । कश्चिदलुपमथोच्चैर्दूर-  
 मुत्सारयेद्वा त्रिभुवनाव

२६ (मुला) मान्नृत्यतोवालयोय ॥८१॥ (काश्चिन् स्था) नकमाधर नि  
 दधते काश्चिच्च गातोऽसच काश्चिद् विभ्रति तालक मुल्लित  
 कुर्वन्ति नृत्य च का । काश्चिद् वाद्यमुपानयति निभृत वीणास्वर  
 काश्चन यन्नोच्चैर्ध्वजं किंकिणीयुवतय कथा मुदे नामवन् ॥८२॥  
 य सद्वृत्तयुत मुदीसिकलितस्त्रामादिदोषोऽत्रितश्चिताग्यात-  
 पदार्थदानचतुरश्चितामणे सोदर । सोभूच्छ्राजिनचद्रसूरिसुगुर-  
 स्तस्त्रादपकेन्द्रे यो भृगायत एव लोलकवरस्तीर्थं चकारैष स  
 ॥८३॥ स्वस्था सरितस्तटे तस्वरा यन्नाह्वयते भृश

२७ शाखाबाहुलतोन्वरैः ( रसु ) रान् पुष्कोकिलाना रुतै । मत्पुष्पो-  
 चयपत्रमफलचयैरानि(मल्लै)र्वारिमिर्मो मांभ्यर्चयतामिपेकयत  
 वा श्रीपाश्वर्नाथ विभु ॥८४॥ यावत्पुष्करतोथमैकतकुल यावच्च  
 गगानल यावत्तारक्चद्रभास्करकरा यावच्च दिक्कुजरा । याव-  
 च्छ्राजिनचद्रशासनमद यावन्म(हं) द्र पद तार्वात्तिष्ठतु तत्  
 प्रशस्तिमहित जैन स्थिर मन्दिर ॥८५॥ पूर्वतो रेवतीसिंधुदेव-  
 स्यापि पुर तथा । दक्षिणस्या मठस्थानमुदीच्या कुण्डमुत्तम  
 ॥८६॥ दक्षिणोत्तरतो वाटी नानागृक्षैरलकृता । कारित

२८ लोलिकनैतत् मप्तायतनसयुत ॥८७॥ श्रीमन्मा(धु) रसधेभूद्  
 गुणमद्रो महासुनि । कृता प्रशस्तिरपा च ऋषि (क)ठ (वि)  
 भूषणा ॥८८॥ नैगमान्वयकायस्यलोतगस्य च सूनुता । लिखिता  
 केशवेनेद मुक्ताफलमिवोज्ज्वला ॥ ८९ ॥ हरमिगमूत्रधाराय

तत्पुत्रो पाल्हणो भुवि । तदंगजेमाहडेनापि निर्मापितं जिनमंदिरं  
॥६०॥ नानिगः पुत्रगोविंदपाल्हणसुतदेल्हणौ । उत्कीर्णा प्रश-  
स्तिरेषा च कीर्तिस्तर्म्मं प्रतिष्ठितं ॥६१॥ प्रसिद्धिमगमदेवः काले  
विक्रममास्वतः पङ्क्तिंशे द्वादशशते फाल्गुने कृष्णपक्षके ॥६२॥

२६ (तृ)तीयायां तिथौ चारे गुरुस्तारे च हस्तके । धृतिनामनि योगे  
च करणे तैतिले तथा ॥६३॥ (सं) वत् १२२६ फाल्गुन वदि ३  
कांतारेवणाग्रामयोरंतराले गुहिलपुत्र रा० दाधरमहं घणसीहाभ्यां  
दत्त क्षेत्र डोहली १ खटुंबराग्रामवास्तव्य गांडसोनिगवासुदेवा-  
भ्यां दत्त डोहलिका १ आंतरीप्रतिगणके रायताग्रामीय महंतम-  
लीवडिपोपलिभ्यां दत्त क्षेत्र डोहलिका लघुवोझोलिग्राम संगुहिल-  
पुत्र राव्याहरूमहंतममाहवा—

३० (भ्यां द) त्त क्षे (त्र) डोहलिका १ बहुमिर्वसुधा भुक्ता राजभि-  
र्भरतादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥छ॥

[ इस लेखका निर्देश जै० शि० सं० के तृतीय भाग में क्र० ३७४ पर  
हुआ है किन्तु उस समय इसे श्वेताम्बर लेख समझकर मूल पाठ नहीं दिया  
गया था । इसमें पहले २८ श्लोकोंमें सांभरके चौहान राजाओंकी वंशावली  
चाहुमानसे सोमेश्वर तक दी है । इसमें कुल ३१ राजाओंके नाम हैं । इनमें  
अन्तिम दो राजाओंने इस स्थानके पार्श्वनाथ मन्दिरको दो गाँव दान दिये  
थे—पृथ्वीराज ( द्वितीय ) ने मोराझरी गाँव और सोमेश्वरने रेवणा गाँव  
दिया था । तदनन्तर इस मन्दिरके निर्माताकी वंशावली विस्तारसे ५१वें  
श्लोक तक दी है जो इस प्रकार है —

प्राग्वाटवंशीय वैश्रवण ( इसने तटागपत्तन, व्याघ्रेरक आदि स्थानोंमें  
मन्दिर बनवाये ) — उसका पुत्र चच्चुल — उसका पुत्र शुभंकर—उसका  
पुत्र जासट ( इसने नाराणक स्थानमें वर्धमान मन्दिर बनवाया )—उसकी  
दो स्त्रियोंसे दो दो पुत्र हुए — आम्बट, पद्मट, लक्ष्मट तथा देसल ( इनने

नरवर नगरमें वीरजिनमन्दिर बनवाया ) - लक्ष्मणके पुत्र मुनीन्दु तथा रामेन्दु - देमलके पुत्र दुय्यक, मोसल, वीगडि, देवस्पर्श, सीयक तथा गहक - सीयकने मण्डलहर दुर्ग विभूषित किया और नेमिनाथ मन्दिर बनवाया - उमको स्त्रिया नागथी तथा मामटा - नागथीके पुत्र नागदेव, लोलक तथा उज्ज्वल - मामटाके पुत्र महीधर तथा देवधर - उज्ज्वलके दो पुत्र हुलभ तथा लक्ष्मण । इनमें सीयकके पुत्र लोलकने यह मन्दिर बनवाया । मन्दिरके निर्माणका वर्णन ८७वें श्लोक तक किया है । कहा है कि लोलक तथा उसकी पत्नियाँ ललिता, कमलथी और लक्ष्मी विध्यवल्लो नगरमें थे उस समय धरणेन्द्रने स्वप्नमें लोलाक श्रेष्ठोको इस मन्दिरके निर्माणका आदेश दिया । तदनुसार जमीन खोदते हुए एक पार्श्वनाथमूर्ति मिली और उसके लिए लोलकने यह मन्दिर बनवाया । इस स्थानको वरलाडका तीर्थ कहकर यहाके कई शिवमन्दिरोंका माहात्म्य भी इस लेखमें दिया है । यहाके रेवतीकृष्णमें स्नान करनेसे कोढ़ आदि रोग दूर होनेका भी वर्णन है । लोलाकके गुरु जिनचन्द्रमूरि थे । इस लेखकी रचना मायुर सघके महामुनि गुणभद्रने की । इसे केशवने शिलापर लिखा और गोविन्द तथा देव्हणने उत्कीर्ण किया । यह कार्य फाल्गुन कृ० ३ सवत् १२२६ को सम्पन्न हुआ । अन्तमें इस मन्दिरको दानरूपमें प्राप्त कुछ जमीनोका विवरण दिया है । ]

( ए० ३० २६ पृ० १०२ )

२६६

### इन्दौर म्युजियम ( मध्यप्रदेश )

सवत् १०२७ = सन् ११७१, मसूत-नागरी

[ इस लेखमें सख चिह्न है जिसमें प्रतीत होता है कि यह नेमिनाथकी मूर्तिका पादपीठ होगा । इसमें देशीगणके गुणचद्र, श्रीकीर्ति, रत्नचद्र तथा भावचद्रका उल्लेख है और गुजर जातिके दोन नामक व्यक्तिको भी उल्लेख है । समय सवत् १२२ ( ७ ) । ]

[ रि० ६० ए० क्र० ( १९५०-५१ ) १६१ ]

२६७

नदिहरलहसि ( धारवाड, मैसूर )

शक १०९(५) = सन् ११७३, कन्नड

[ यह लेख कलचुर्य राजा रायमुरारि सोविदेवके समय श्रावण शु० (?) गुरुवार, शक १०९ (५), नन्दन संवत्सरका है । इसमें उल्लेख है कि दण्डनायक महेस्वरदेवके अधीन कर संग्रह करनेवाले अधिकारियोने गोदृगडि स्थित नागगावुण्डकी वसदिके लिए कुछ करोका उत्पन्न दान दिया । उस समय वनवासि प्रदेशपर कासिमय्य दण्डनायकका शासन चल रहा था । ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई० ५९ पृ० १५२ ]

२६८

वोगाडि ( मांड्या, मैसूर )

शक १०९५ = सन् ११७३, कन्नड

१ श्रीमत् पार्थिवकुलचंद्र यदुवंशवाधिर्वर्धनचंद्रं मांमभुजं ललना-  
जनकामाभिरामन् बल्लालं ॥ दिगिमंगलु मदविहलंगल मलुंकलु  
कूर्मनिन्तोर्मेयुं मोगमीयं भुजगाधिपं बहुमुखं सारल्लु यार्संग-  
मेन्दुगुणोदग्रसमग्रलक्ष्णलसद्दोर्दण्डदोल संतोपं मिगे भूकामिनि  
यिर्दल्लु आपदुलदि बल्लालभूपालन ॥ आ नृपनगण्यपुण्यं  
मानसरूपादुर्देविनं भुवनजनं मानोज्ञतकनकाचलन् आनतरक्षैक-  
दक्षरत्ननिधानं ॥ महांगमन्त्रकमनीयालंघितसुरराजपूज्यचरणा-  
क्यन् एनलु सचितकीर्तिपराक्रमप्रभावनन् एनिसि

२ माचिराजं नेगल्लं ॥ तनुविं कामन(न)र्थिगीव गुणदि कल्पाद्रियं  
हेमाचलमं चारुचरित्रदिदुदधियं गांभीर्यदि स्थैर्यदि कनकाद्रीन्द्र-

मनित्रन विमत्रदि गेलिदना माचिराजनन् भार्मणि ( सलापर  
ई ) विश्वमरामागदोलु ॥ आ विभु माचिराजन मात्र बल्ययन्  
अययन् ई धरंगेल्ल काव गुणन्नि आदन् अदाव गुणगणदिन्  
आतन् पणोयप्पन ॥ अधिगमसम्यग्दृष्टियन् अधिगतमकलाग-  
मार्थन कविबुधमागधर्मानजैनजनतानिधिय पोगल्लुके बल्लर्  
आर बल्लयन विरिदवन् ईयलु बल्ल सरणंदेडे करुणादिद कायलु  
बल्ल पुरपातरम बल्ल परिकिपहन्तल्ले

३ ल नाद्र बल्ल ॥ परकान्तासकजालकके पर दाराहरलकके  
पानतरात्तुगस्तनद्वन्द्वसुदरमगके परागनामुज्जलतासद्वेषणको-  
डिस निरुत आ बल्लदेव निद परिहृतपरदार दीनाधनाथ  
विदितविशदकीर्तिविश्रुतान्तरमूर्ति स जयतु बल्लेव श्रीजिने-  
न्द्राग्निमेव ॥ अन्ता बल्लालमहीकातन वरमन्त्रिवल्लम बल्लय्य  
सन्ततजिनपूजनेगागन्तुकम भोग(ग)वदिय बसदिगे विद ॥  
नीचेकी ओर

४ होरवारु ओलवारु मगदरे कालवोवनहल्लिय यिनितर भत्तु  
भनेसुक नेरे मलवत्तियसुक विनित ॥ ॥ वनपालम सुक-  
वनित मनुभाग मदनमूर्ति विभु बल्लय्य मनमोसहु भोगवमदि-  
योलु जिनपूजेगे भक्तिरिददा

५ दिदिन्निदनेयदे काव पुरपगायु जयथी द कायदे काव्य  
पाणिगे वारणासियोल् एक्कोटिमुनीन्द्रर कपिलेय वेदाध्यर  
कोन्दुदोदयश पादुंगुमैदु सारिदपुटीशैलाक्षर धात्रियोल् ॥ विप  
न विपमित्याहु देव-

६ स्व विपमुच्यते विपमेकाकिन हन्ति देवस्व पुत्रपौत्रक ॥  
स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुधरा पष्टिर्वपसहस्राणि  
विष्टाया जायते क्रिमि ॥ मगल



७ सामान्योयं धर्मसेतुर्नृपाणां काले-काले पालनीयो भवद्भिः  
 सर्वानेतान् भाविनः पार्थिवेन्द्रान् भूयो-भूयो याचते रामचंद्रः ॥  
 स्वस्ति श्रीमन्महामंडलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल वीरगंग वल्लालदेवरु  
 दोरसमुद्रदल्ल सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेयुत्त विरलु तत्पाद-  
 पद्मोपजीवि महाप्रधान सर्वाधिकारि हेगगडे वल्लय्य शककालं  
मासिरद् तौमत्तैदनेय विजयसंवत्सरद् कार्तिक शुद्ध पंचमि  
सोमवारदंदु कालवोवनहल्लिसहितवागि वोगवदियलुल समस्त-  
सुंकवं श्रोकरणजिनालयद् श्रीपार्श्वदेवर् अष्टविधाचनेगंदु  
श्रीमदक्कलंकदेव(सिंहा-)

८ हासनस्थितरूप श्रीपद्मप्रभस्वामिगलगे धारापूर्वकं माडि कोदरु

( इस लेखमें होयसल राजा वल्लालके महाप्रधान हेगगडे वल्लय्य-द्वारा भोगवदिके पार्श्वजिनालयके लिए अकलंकदेवकी परम्पराके पद्मप्रभ स्वामी-को कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका निर्देश है । यह दान कार्तिक शु० ५, शक १०९५, विजयसंवत्सर, के दिन दिया गया था । हेगगडे वल्लय्य महाप्रधान माचिराजका माव ( समुर या चाचा था )

[ ए० रि० मं० १९४० पृ० १५० ]

२६६

सोगि ( जि० वेल्लारी, मैसूर )

१२वीं सदी, कन्नड (वीरप्पके घरके आगे एक शिलालेखण्डपर)

[ इस लेखमें होयसल राजा विष्णुवर्धन वीरवल्लाल-द्वारा कार्तिक कृ० ५, गुस्वारको किसी जैन मंस्थाकी भूमिदान दिये जानेका निर्देश है । ]

[ ड० म० वेल्लारी २३७ ]

२७०

चिक्कहन्दिगोल ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ८ = सन् ११७५, कन्नड

[ इस लेखमें कलचुर राजा सोविदेवके राज्यवर्ष 'जयभवत्तरमे शम्भु-  
जिनालयको दिये गये दानका वर्णन है । इस लेखकी रचना 'अनुपमकवि-  
कालिदाम' हित्तिन सेनबोव-द्वारा की गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० ११२६-२७ क्र० ई० १५० पृ० १२ ]

२७१

कलसापुर ( कडूर, मैसूर )

शक १०६८ = सन् ११७६, कन्नड

१ ( घिस गयी है )

२ कैवत्यबोधेन्द्रिराधाम षोडशतत्रय(तीर्थ)कर्तृ विमलजानासिय  
सत्सुखाराम माल्के विनेयसन्ततिगे नित्य शान्ति-

३ तीर्थेश्वर ॥ (१) श्री स्वस्ति होयिमलवशाय प्रतापार्जितकीर्तये ।  
यदुवशनृपान भूभृ-

४ ते ॥ (२) तदन्वयावतारमेन्तेन्दोडे ॥ सरसीजोदरनामिपञ्चजनज  
सत्पुत्रनन्तत्रियत्रिरुदोद्भूतबु-

५ ध पुरुरवने तज्ज तत्तनूजायुगायुरपय नहुप ययानिमहिप  
तत्सम्भव नरथरजा-

६ त । यदु सत्कुल सलनृप लोकोत्तम पुष्टिद । (३) यादवरांछे  
होयिमलवेमरादुदु सलनिन्दे हुलि-

७ य सल्लेयुण्डिगेयादुदु चिह्न वरमन्तादुदु सले शशकपुरद  
वामन्तिकेयि ॥ (४) सलनृपनि य-

- ८ लियिं यद्दुकुलदोल् पलम्बरोगेद् अवरन्वयदोल् । बलवद्-  
विरोधिकुलिशं जनियिसिदनेसेयेवि-
- ९ नयादित्यं ॥ (५) घनमार्गानुगतं जगत्प्रणुतमित्रं मण्डलाग्र-  
प्रतापनियुक्तं रिपुभूषसन्तम-
- १० मभेदं सज्जनं...नसन्तोपकरं स्वचन्धुजनचक्राह्लादकं पुट्टिदं  
विनयादित्यनृपाल-
- ११ कं यद्दुकुलान्तुगोदयाद्रान्द्रदि ॥ (६) विनयादित्यनृपालन कुल-  
वधुवेनिमि मिरियोल्-
- १२ बाणियोलं तनगे केलेयोल्न्दु धुधजनवेने केलियच्चरसि  
सरसिजानेनेयेसेदल् ॥ (७) सर्ति केलियच्चरसिगमा-
- १३ विनयादित्यनृपतिगं पुट्टिदमुद्धतवैरिदर्पदलनोद्यतमयनयशौर्य-  
शालियेरेयंगनृपं ॥ (८)
- १४ विनयादित्यावनिपालन सुतनेरेयंगं सगवितं भू...निरव्ये  
धर्मदीक्षागुरुविनतमहीभृतसम्-
- १५ हैकरक्षावनधिप्रियं ममस्ताश्रितनटनटीसिन्धम् कलनिव निजतं-  
सत्यवाणिमुखमणि मा-
- १६ पुरनिर्मलायोधसुतं हिमरुचियन्ते सेवादरवियं लतियं सरसिजमं  
मनोरमकुसुमंगलं कद-
- १७ नयं मदनं विदियागि ताने तोय्दमृतदिनेय्दे निमिसिदनेन्नदे  
केलदेयं...भूरमणन कान्तेयं पेरत-
- १८ नेन्नदिर् एचलदंविराणियं ॥ (९) अन्तेरेयंगमहीशन कान्तेगे  
जनियिमिदरंसेव बल्लालमहीकान्तं विष्णुमहिपननन्तगुणं
- १९ नृपललामनुदयादित्यं । (१०) अवरोधद्रुमनागियुं धुधनिकाय-  
स्तूयमानि श्री...विशेषोन्नतियिन्दुमु -
- २० त्तमनेनिष्पं सच्चरिताद्रि वगगाजलधौतनिर्मलकुलदृष्टारिदर्पापहं  
भुव...विमवं...श -

- २१ आविष्णुभूपालक ॥ (११) जनिथिमिद विष्णुमहीशन ल  
चिदनुपम नरसिंहावनिप नतरिपुभूगल-निकायलला -
- २२ ततटविघटितचरण देवनृसिंहन प्रियमहिषोपट्टदालरन्तु पट्टमहि-  
षिये देवलदवा लसत्लतागि
- २३ राजीवदलाक्षि पत्तलवनिभाधर पाटलकण्ठि काकिलारावे शानीव-  
नल य । यनेय साल्दिदल् ॥ (१२) कालनिमग्रत -
- २४ जनरसिंहमहापतिग मदमलालसयानेकम्बुनिमकन्धर यचल-  
देविग श्रीललनेशन्तानेने पुट्टिदन्तुजित -
- २५ पुण्यमूर्ति बत्तालनृपाल समदवेरिमहीभुजदर्पमजन ॥ (१३)  
का वादिधरावनितेय चातुयदि नाडी (?)
- २६ निरमणि रमणाशकुलम आयोलायशानुरत्यागदि घन्दिदृन्द-  
मनित्यानतसरयदि चरितदि सन्नतमु तन्नोल् क्रमदि निश्चल -
- २७ मपूर्व तलेद बत्तालभूपालक ॥ (१४) निजपादानत दित-  
लक्ष्मोवल्लम - ला मूर्ति विबुधाराध्य
- २८ जगन्नेत्र नीरजमिग्र स दे कान्तनेनिप प्रतापदेव समस्त-  
जगद्व चपदारविन्द शरा नल ॥ (१५) पुट्ट (त)
- २९ प्यातमोग शिखिनिभजनतेज यमावार्यशौर्य नरवाहातोष वायु-  
सत्र धनार्थीश्वरस -
- ३० धर महेशप्रकटिमहिम लोकपालप्रभावान्तरनाड दिग्वधूमण्डत-  
विशदयश वीरवल्लालदेव ॥ (१६) भृगुगेनि वसराज
- ३१ हयदिनिमसमारुढप्रौढियिन्द मगदत्त वेषदिन्द्र दिविजपति क  
सत्त्वगुण प्रभूति
- ३२ राघवन् हुनतनय त्यागदि वादिभूपाल नडिदतप्रतिमनेनिसिद  
वीरवल्लालदेव ॥ (१७) स्वरित समधिगतपच -
- ३३ महाशब्दमण्डलेश्वर द्वारायर्तपुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बर-  
धूमणि सम्यक्वचूडामणि तलकाहुकौगुणिव -

- ३४ नवामिवुच्छंगिहानुंगलगोण्ड भुजवलवोरगंगनसहायशूर निशं-  
कप्रताप होयमलवोरवलालदेवरसर् द्वारसमु -
- ३५ द्रदोल् सुखदि राज्यं गेयुतिरं नत्पादपद्मापजीविगल् पुनिसिद  
श्रीमन्महावहुव्यवहारि कवडेमय्यं नति
- ३६ द्यवर गुरुकुलान्वय क्रममन्तन्दाडे ॥ विमलश्रीजैनधर्मकमल-  
तोऽचिनन्ताप्पुगुं मूलसंघं कमनीयं
- ३७ कोण्डकुन्दान्वयमं वरगणं देशि... गच्छ...क्रमदि तत...वधं...  
गेसंये श्रीवधूटीरम -
- ३८ ण देवेन्द्रसैद्धान्तिक मुनियेसंदं महोत्साहधामं ॥ (१८) तच्छिष्यं  
नाडे विष्टतगुण वृपनमन्दि मुनि कायो -
- ३९ स्वर्गगोण्डुपवासदिन्द्र...चतुर्मुखाख्येयनाल्दम् । (१९) अवरप्र-  
शिष्यरोलश्रन्तदि द्विजराजिकुमतवाद्मददर्पद -
- ४० नावर्तिकीर्तिवृक्षनुं श्रीगोपनन्दिपण्डितदेवर् ॥ (२०) जिनसमय-  
यशश्चन्द्रं जिनागमाम्मोनिधिप्रवर्धनचन्द्रं जिनमुनिकु -
- ४१ बलयचन्द्रं जिनचन्द्रं विबुधनिकरराकाचन्द्रं ॥ (२१) निरवद-  
ययोधदर्शनचरणयुतर् मावनन्दिस्सैद्धान्तिकदेवरशि -
- ४२ प्यरार् शमान्वितनिरुपमधर्मेन्द्र रत्ननन्दिमुनीन्द्रर् ॥ (२२)  
तत्सधर्मर...संहिताद्याखिलागमार्थनिपुणव्याख्यानसंशुद्धि -
- ४३ यि...रु सैद्धान्तिकतत्त्वनिर्णयवचोविन्यासदि श्रुतिसम्यक्...  
तयनार्थशास्त्रमरतालंकारसाहित्यदिरुदानूह
- ४४ बालचन्द्रमुनियं विद्याधर... (२३) चक्रे श्रीमूलसंघ...पद्माकर-  
राजहंसो...निपुणप्रवरावतंसः जीया -
- ४५ जितनेन्द्रसमयाणंदपूर्णचन्द्रः...क्रुधाः । (२४) चन्तेनिमिद  
श्री...दलाचार्यर गुह्यं देदी -
- ४६ उजयान्वयवारिधिचन्द्रमनुं...ग् अहंन्य...चरितनुं वरजैनसमय-  
कुमुदेन्दु...अन्यायाजितधनम -

- ४७ नेयूदे कजडमय्यन् अणुवन्तय्यम् ॥ (२५) वरसुगुणसमन्वित  
कजडमय्य तत्र पूज्ययश सद्गुणि कैतिसद्विमुदात्त -
- ४८ प्रणयरेचिसेद्विगमन्ता पूणुमसद्विगमिलासस्तु य देववेग प्रियपुत्र  
प्रभु काम सम्पूर्णमव्योदय
- ४९ अनुपम सेद्वि यदा कान्ते अनूनशोय निधि
- ५० नामादि अपूर्व जनरिनुत जक्रिमद्वि वनिते सु -
- ५१ दामे तिय तलेढल् ॥ (२७) अवराटमीयोदयपुण्यादय
- ५२ निखिळगुणक्कास्यान वमन पुण्य कुलवधु देव-
- ५३ द्वितोदात्तलक्ष्मीनिवास ॥ (२८) नीतिलता दानधमपयो-
- ५४ धिचन्द्रम रादिमनु वंदनानकटपभूज निशे-
- ५५ तनुजोत्त निसेद्वि ॥ (२९) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर  
भुजवरवीरगंगनसहायशूर नि शक्र-
- ५६ ताप होय्मलद्वारमन् शक्रवर्ष १०१८ नय दुर्मुषिमवत्परद  
उत्तरायणसक्रमणदोल् भमरदानव-
- ५७ माडुवलि श्रीमन्महावड्डव्यवहारि कवडमय्यन देविसेद्वि  
ता माडिसिद श्रीवीरवल्लालजिनाल-
- ५८ यद यकलाहारदानकक मण्डस्फुटितजीर्णद्वारकमन्दु विद्यप  
गेठयलवर
- ५९ गणद तंद श्रीमन्महामण्डलाचार्य बालचन्द्रसिद्धान्त-  
देवर्षे धारा-
- ६० पूर्वक बालचन्द्र होसनाडोलगण कोरटिकेरयनदर काल्वा-  
द्विगको-
- ६१ लनादि नाचहलि मडवद भरियहटिळयोळगाद हलिगल  
सामासम्बन्धमन्तेन्दाड मू-
- ६२ वनाल पण्डु - रि - वकय हलेयिलेय मारदि तेंकलारडिगेरे  
नैरित्य-

- ६३ ....यदोल् वायव्यदोल् नेरिलकरंयोलगण माविनमर....दंवर  
अरगल्लो....
- ६४ ....वडसुं नगर मुन्ता वायव्य....
- ६५ ...लाल तिगुल तेलुंग कर्नाडिग देश मुख्यमाद सु-
- ६६ ...द्रद नेरंपुलिय चिकहरिय केतलदेविय गडिय वाचलेश्वरदे  
सम-
- ६७ स्तनख ...श्रीशान्तिनाथदेवर....कर कैकर्यक्के विट्टायमेन्तेन्द्रोडे  
होयमल नाडाल
- ६८ ....त्ति हेरिंगे हागवेरट्टु कत्तेय हेरिंगे हाग ओन्टु कुटुरे
- ६९ ....कर्पूरपट्टनूलण्ड-क्के हणवोन्टु श्रीगन्धद मालवेगे
- ७० ....हणनय्व ...वडिय मलवेगे हण नाल्कु येत्तिन मलवेगे हण  
चोण्
- ७१ ....हसुवेगे हाग वोन्टु पडसालेय गडिगे वरिसके हण वोन्टु  
आविडिव....
- ७२ ....रल देविय गडिगे वरिसक्के हाग वोन्टु निच्च सेडिवत्त  
दवसद हेरिंगे मान वोन्टु
- ७३ ....मेलसु दड हेरिंगे मान वोन्टु....गणदोल् धारंयेर
- ७४ ....गेय तडियोल् शतसहस्रब्राह्मणगंलंकारसमन्वित शतसहस्र-  
कविलेगलं
- ७५ ...क्षेत्रदोलनिवरू ब्राह्मणरुमननितुकविलेगलं कोन्द महापताक-  
नक्कु परिपालिपु
- ७६ ...गन्ते चर....निन्निरे धरंगे शिलाशासनाक्षरावलियेसंगुं ॥  
स्वदत्तां
- ७७ ....हरेत वसुन्वरां पट्टिर्पमहस्त्राणि विष्टायां जायते क्रिमिः ॥  
सामान्योयं धर्मसे -

७८ लनीयो भवद्भि । सर्वानतान् माविन पार्थिवेन्द्रान् भूयो-  
भूयो याचते राम -

७९ य स्थलद् चतुस्मांमेय निवेशनमेन्तेऽग्रे मूढलु हिरिय  
राजवीडि मोदल्

८० य घलेयलु पदिचमके नीलविष्पत्तु वदगण मोदलो  
तैकलु अ

[ यह विस्तृत लेख दुर्मुखि सवत्सर, शक १०९८ में लिखा गया था। इसके प्रारम्भमें होयसल वंशके राजाओंका कुलवर्णन वीरबल्लालदेव (द्वितीय) तक किया है। इनके समय देवसेट्टि नामक धनिकने वीरबल्लालजिनालय नामक मन्दिर बनवाया। मूलमघ-दमिगण कोण्डकुदायके आचार्य बालचन्द्रकी प्रेरणामे यह कार्य हुआ। इस मन्दिरके लिए राजा वीरबल्लालने कुछ गांव तथा कुछ करोंका उत्पन्न अर्पण किया था। बालचन्द्रकी गुरुपरम्परा देवेन्द्र मैट्टातिक - वृषभनदि-चतुर्मुख-शोफनदि-जिनचन्द्र-माघनन्दि रत्ननदि-उनके गुम्बन्गु बालचन्द्र इस प्रकार दो हैं। ]

[ ए० रि० मै० १९२३ पृ० ३६ ]

२७२

कुचंगि ( तुकूर, मैसूर )

१२वीं सदी ( सन् ११८० ) कन्नड

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इसकी स्थापना मूलमघ-देशीगण-पनमोगे शास्त्राके नयनीतिसिद्धात चक्रवर्तिके शिष्य अध्यात्म बालचन्द्रके उपदेशमे बम्मिसेट्टिके पुत्र केसरिसेट्टिने वेङ्गूरमें की थी। (ममय लगमग ११८० ई० )। ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८३ ]



२७३

पाटशीवरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

शक ११०७ = सन् ११८५, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा वीर सोमेश्वरके समय शक ११०७ विश्वा-  
वसु संवत्सरका है । इसमें राजाके सामन्त भोगदेव चोल महाराजाका तथा  
वीरणन्दिसिद्धान्तचक्रवर्ति और उनके शिष्य पद्मप्रभमलधारिदेवका  
उल्लेख है । [ रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० २८ पृ० ७२ ]

२७४

लक्षकुण्डि ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ४ = सन् ११८५, कन्नड

[ यह लेख त्रिभुवनमल्ल वीरसोमेश्वरके राज्यवर्ष ४, विश्वावसु  
संवत्सरमें पुष्य शु० २ बुधवारका है । इसमें कुछ सेट्टियों द्वारा अष्ट-  
विधार्चनके लिए नोम्पियवसदिको कुछ दान देनेका उल्लेख है । कुछ  
गिल्पकारो द्वारा शान्तिनाथदेवको दिये हुए दानोंका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ५५ पृ० ५ ]

२७५-२७६

कुमट ( उत्तर कनडा, मैसूर )

१२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख कदम्ब राजा वीर कावदेवरसके राज्यकालमें चैत्र व० १,  
मंगलवार, श्रीमुख संवत्सरके दिन लिखा गया था । चन्द्रकीर्ति भट्टारकके  
शिष्य तथा वर्धमानसेट्टिके पुत्र सातिपेडके समाधिमरणका इसमें उल्लेख है ।  
यहीके एक अन्य लेखमें एक सेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० ई० रा० १९४७-४८ क्र० २३८-२४० पृ० २७ ]

२७७-२७८

वम्बई ( महाराष्ट्र )

१२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख भायखळाके जैन मंदिरमें है । कदम्ब राजा कावदवके राज्यवर्ष ४४, ईश्वर सवत्सरमें भाद्रपद शु० १२, सोमवारके दिन नागध्वज समाधिमरणका इसमें उल्लेख है । यहीके एक अथ समाधिलेखमें दी हुई तिथि इस प्रकार है — भाद्रपद शु० ७, सामवार विजय सवत्सर । ]

[ रि० इ० ए० १०५३ ५४ क्र० १९९०-२०० पृ० ३७ ]

२७६

नागपुर म्युजियम ( महाराष्ट्र )

संवत् १२४५ = सन् ११८८, सस्कृत-नागरा

[ यह लेख एक मूर्तिके ऊपर है । माणिकसेनदेव, वीरसेनदेव तथा बाजसेन (?) देवका इसमें उल्लेख है जो सम्भवत जैन आचार्य थे । तिथि संवत् १२४५ दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २६७ पृ० ५० ]

२८०

घिलिगिरि रंगनचेट्ट ( मैसूर )

शक १११२ = सन् ११६०, कन्नड

- |                                 |                            |
|---------------------------------|----------------------------|
| १ शुभमस्तु श्रीमत्परमगर्भा      | २ रस्याद्वाढामोघलाटन जी-   |
| ३ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन     | ४ जिमशासन स्वस्ति श्रीप्र- |
| ५ तापचक्रवर्ति होयिमल श्रीर्वी- | ६ खल्लाळदेवरसर पृथुविरा-   |
| ७ ज्य गेयुत्तिरलु सकवरम         | ८ १११२ साधारण सवरद बै-     |
| ९ साकमुद्ध पचमि त्रिह           | १०                         |

[ यह लेख रंगनवेष्टके समीप जंगलमें श्रवणनअरे नामक पाषाणपर खुदा है । होयसल राजा वीरवल्लाल ( द्वितीय ) के राज्यमें वैशाख शु० ५, गुरुवार, शक १११२, साधारण संवत्सरके दिन यह लिखा गया था । लेख टूटा होनेसे इसका उद्देश ज्ञात नहीं हो सकता । किन्तु प्रारम्भमें जिनशासनकी प्रशंसा है अतः यह किसी जैन व्यक्तिका निसिधिलेख या किसी जैन मन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख प्रतीत होता है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १९३ ]

२८१

होसनगर ( मैसूर )

शक १११२ = मन् ११९०, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादासोघलाञ्छनं

२ र्जायात् त्रैलोक्यनाथस्य शामनं जिनशामनं

३ स्वस्ति श्रावणलालदेवरसर-

४ ...

५ जेयं उत्तरांत्तरामिरुद्धमिरलु सक वरुप

६ १११२ एरटनेय सर्वधारिसंवत्सरद

७ ज्येष्ठ शुध एकादनि बहुवारदलु गु-

८ णसंपन्नरप्य पुष्पसेनदेवर गुट्टि श्री-

९ मनु सर्वाधिकारि दम्माचारिय ऐण्टति द-

१० चवककनु मुरलोकप्राप्त्यादलु

[ इस लेखकी तिथि ज्येष्ठ शु० ११, शनिवार, शक १११२, सर्वधारि संवत्सर है ( यह तिथि अनियमित है क्योंकि शक १११२ साधारण संवत्सर था ) । उक्त समय होयसल राजा वल्लाल ( द्वितीय ) का राज्य था । सर्वाधिकारी दम्माचारिकी पत्नी हव्वककाके समाधिमरणका इस लेखमें निर्देश है । इनके गुग पुष्पसेनदेव थे । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० १७२ ]

२८०

## सोमपुर ( मंगूर )

सङ् १११४ = सन् १९९२, क०३

- १ श्रीमत्परमगर्भारस्याद्वादाभोधलाञ्छन जायात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शामन जिनशासन ॥ (१) जयति सकलविद्यादेवता -
- २ रत्नपीठ हृदयमनुपलेप यस्य दीर्घं स देव (१) जयति तदनु  
शास्त्र तस्य यत् सर्वमिध्याममयतिमिरघातिः शोतिरेक  
नराणा (॥२)
- ३ द्वाप्रदि सकलेस्त्रनाग पुलिय पोय्दा सल पोय्मळ थोग
- ४ पल्लव्वर राज्य गेयुत्तिपिन । (३) विनयप्रतापमेम्बी जननाथो-  
चितचरित्रयुगदि जगम जननयनवेनिमि नेगल्ल विनया-
- ५ दिव्य ममस्तमुवनस्तुत्य । (४) आतगतिमहिम हिमसेनुममा-
- ६ स्यात्तस्मिन्नि मन्मन्त्रिमनोज्ञात् मदितरिणुनृप नात् ननु नातनादने-  
रेयगनुप । (५) चरित्तरवतीपतिसम्पादितधर्माय-
- ७ कामसिद्धिबोलवनीवल्लभरातन तनयर् दहल्ल विद्धिद्वमुद्रया-  
दित्य । (६) भूवररमुगल्लोल ता भाविम मध्यमनडागिधु
- = नृगुगपद्मावदिनुत्तमनाट भाविमवद्भूतजिण्ण रिण्णुनृपाल ।  
(७) मलय साधिमि मागूदने तल्लन कावापुर कोयत् -
- ८ मलेनाडा तुलुनाडु नीलगिरिया कोलालमाकेंगु नन्गन्तिनु-  
चगि विराटराजनगर वल्लुखिवेल्ल दुवार्सिनेर्वलदि
- १० लल्लेयि साध्यमाट्टवेगेयार् विण्णुधमापालनोल् । (८) येन-  
लाल्ल चूडामणि हारमने
- ११ कित्तेश्वरशिर प्रात्तुग फणि गुणमणि
- १२ सम्यक्तचूडामणि आ विण्णुवर्धनग यनिसिद्ध लक्ष्मादेविगमुद्-  
मविमिदनी भूविध्रुत नरसिंहनाहव-

- १३ सिंहं ॥ (६) पडेमातेम्बन्दु कण्डंगमृतजलधि तां गर्वदिं गण्ड-  
चातं सुडिवातंगेननेम्बै प्रलयसमयदोल् मेरेयं मीरि वर्षा  
कडलन्-
- १४ नं कालन्न्नं मुलिद कुलिकनन्नं युगान्ताग्नियन्नं मिडिलन्नं  
सिंगदन्नं पुरहरनुरिगण्णनन्नं नारसिंहं । (१०) रिपुसपददर्प-  
दात्रानलवहलशि-
- १५ खाजालकालाम्बुवाहं रिपुभूपालप्रदीपप्रकरपटुतरस्फारज्ञंभासमार्ं  
रिपुनागानीकताक्ष्यं रिपुनृपालिनां-
- १६ षण्डवेतण्डरूपं रिपुभूभृद्भूरिवज्रं रिपुनृपमदमातंगसिंहं नृसिंहं ॥  
(११)....पोगल्द तीव्रप्रताप....गिट्टु पोगल्दुदं मा--
- १७ ण्डोडं शत्रुगात्रप्रगलद्भक्तप्रवाहप्रबलगुरुध्वानमुं शत्रुभूभृद्भूरि-  
सन्दोहदाहप्रचुरचिडिचिडिध्वानमुं निर्विक-
- १८ वपं पोगलुत्तिकुं नृसिंहप्रबल भुजबलाटोपमं धात्रिगेल्लं ॥ (१२)  
था विभुविन पट्टमहादेविगे सद्गुणचरित्रदिन्दं सीतादेविगे मि-
- १९ गिलादेचलदेविगे बल्लालदेवनुदयंगेय्दं ॥ (१३) कलिकाल-  
क्षत्रपुत्रप्रबलतरदुराचारसन्दोहदिन्दं-पोल् पोर्दल् पेसि बेसत्तलव-
- २० लिद महाकान्तेयं रक्षिसल्का जलजाक्षं ताने वन्दिन्तवत्तरिसि-  
दवोल् वीरवल्लालदेवं कुलजात्याचारसारं नृपवरनुदयंगेय्द-
- २१ नाश्चर्यशौर्यं ॥ (१४) तिनयश्रोनिधियं विवेकनिधियं ब्रह्मण्यनं  
पूर्णपुण्यननुदामप्रशोधियं जितजगत्प्रत्यर्थियं सर्वसज्ज-
- २२ नसंस्तुत्यननुद्भवद्वितरणश्रोविक्रमादित्यनं मनुजेशर् मलेराज-  
राजनन्दं बल्लालनं पोलवरं । (१५) उरिगण्णि वेन्द चण्डा  
तिपुर-
- २३ मुरिदवोल् सुचुरिलिद्दाहगार्ग....रि दन्दर धगिल धन्धग धग  
चेत्ते चेल्चेल्चिडिलगट्टु पोर्देम्बरवंकैगण्मे दिक्पालकर् अलवलिय-

- २४ ल् बीरबल्लालनिं ( दिं ) दुरित्तुच्छगियोडे रिपुनृपति पेल-  
लुण्टे ॥ ( १६ ) रणरगागणशूडक नडेदोडिन्नुच्छगि मुर्चलित्त
- २५ तन्क्षणादि नोडे विराट्गजपुर वोत्तुत्तायन् मुछन्नु सेनुगराशे-  
नमात्रक नेरेदरिलेन्दन्नु बल्लालक्षार्गुणय वाणिमलण्ण
- २६ बल्लवरदारी भूरिभूचक्रदोल् ॥ ( १७ ) विलयाट्टि येनिप मनुण-  
बलन निचयाविल मकराकुलवा यदुकुलपरितलग
- २७ तवाय्त्तु वन्नु ॥ ( १८ ) कन्दनदृष्टारिरक्त दूडे हयगुर-  
दिन्ना गेलिगेत्तागद या दोल् मुम्पण पेणन वेत्ति-
- २८ भूतालि पुण्यराशोक्तविपुलतल बीरबल्लालदेव ॥ ( १९ )
- २९ इवस्ति समस्तमुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवत्सम राणाधिराजपरमेश्वर  
परममहारक द्वारावतीपुरस्वराधीश्वर वासन्तिकान्तीलब्ध-
- ३० वरप्रसाद रिपुभम्मर्दनविनोद यादवकुलाश्वरसुमणि सम्यक्त्व-  
चूडामणि शत्रुक्षत्रिय-
- ३१ मानमर्दन बीररिपुदपशर्पद्विज्ञानिल श्रीमन्मैयै पराक्रमैक-  
प्रभाव । निरुमात-
- ३२ क्यप्रताप नयविनयस्वभाव । सकलजनमन्याशोर्वाद । सुद्वार-  
ममरकलिमम-
- ३३ वत रिपुविजितादित्यप्रताप । सप्ताग विलाम सरस्वती  
रतम्बेरम राज-
- ३४ कण्ठीरव । पाण्डपकुल दण्ड । पल्लपकुल्यशोविपिनदात्रानल ।  
मिहलमराल कुरगकुलपलायनकार-
- ३५ ण कशेरनिजविजयदोर्दण्ड । सकलरिपुनृपकुल हत्यादि-  
नामादि-
- ३६ समस्तप्रशस्तिमहित श्रीमन्मार्वमौम सप्रामराम मिल्लमदिशा-  
पट धरित्रोपट मलेराजराज मलेपरोल्गण्ड

- ३७ तलकाहु-गंगवाडि-नोलम्बवाडि-वनवासे - पानुंगल्-हुलिगेरं-हल-  
मिगे-वेल्बल-तलवलि-तलियूगगोण्ड भुजवलवारंगं-
- ३८ गनेकांगवार सानिवारसिद्धि गिरिदुर्गमल्ल चलदकरामनसहाय-  
शूर निश्चक्रप्रतापचक्रवर्ति श्रीवीरवल्लालदेवनसंख्यातनिजचतु-  
रंगवलं
- ३९ वेरसु संचुणवलमेल्लमं वारविलामनेम्ब पट्टमानदिं तालूदुलदुलिये ।  
संचुणवलजलधि-वडवानलनेकांगदिं सप्तांगमा-
- ४० स्राज्यमनलवडिसि राष्ट्रकूण्टकर निर्मलमं माडि कल्याणपर्यन्त-  
मागि मुग्धमंकथाचिनोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे
- ४१ तद्राज्यपूज्यमप्प राजधानि दोरममुद्रदोलु श्रीमद्वादीमसिंह  
तार्किंकचक्रवर्ति श्रीपालत्रेविद्यदेवस्मवर गुडुगल् मा-
- ४२ रिसेट्टियुं कण्णिसेट्टियुं मरतिसेट्टियुमिन्ती नालवरं नानादेमियुं  
नगरसु श्रीमदमिनवशान्तिनाथदेवर मध्यजिनालयमेनि-
- ४३ प नगरजिनालयमं माडिमिद राजसेट्टियन्वयमुमाचार्यवलियु-  
मन्तेन्दोडे(१)श्रीमद्भूमिलसंघेस्मिन् नन्दिमंघोस्त्य-
- ४४ रंगलः(१)अन्वयां माति निश्शेषशास्त्रवाराशिपारगैः(॥)श्रीवध-  
मानस्वामिगल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुवल्लि गांतमस्वामिगलिं मद्रवा-
- ४५ हुरस्वामिगलिं भूतयलिपुष्पदन्तस्वामिगलिं...सुमतिमटारकरिन-  
कलंकदेवरिन्दं वक्रप्रीवाचार्यरिं वज्रनन्दिगलिं सिंहनन्दिगलिं  
परवादिमल्लरिं
- ४६ श्रीपालदेवरिं श्रीहेमसेनरिं दयापालमुनीन्द्ररिं श्रीविजयदेवरिं  
शान्तिदेवरिं पुष्पसेनदेवरिं चक्र-
- ४७ वर्ति श्रीवादिं राजदेवरिं श्रीशान्तदेवरिं शब्दब्रह्मस्वामिदेवरिं  
अजितमेनपण्डितदेवरिं मल्लिपेणमलधारस्वामिगलिं
- ४८ श्रीपालत्रेविद्य गद्यपद्यवचोविन्यासं निसर्गं विजयविलासं । तद-  
नन्तरं श्रीमत्त्रेविद्यविद्यापाति-पदकम-

- ४६ लाराधनालब्धबुद्धि मिद्धान्ताम्मोनिधान मृतास्याद दीक्षा-  
शिक्षासुरक्षा ऋवाक्पतिनिपुण सन्तत अव्यमेय सोय
- ५० दाक्षिण्यमूर्तिजगति विजयतेवासुपूज्यवर्तान्द्र (॥) तदनन्तर  
सुरराजेंद्रमदेभदन्तचयदाल दिग्गासि मन्दिरदाल् म-
- ५१ गंकराल वि लतमो हिमाद्रिवृदगलोल् धरण न्द्रोद्धिरीरकृद-  
तलदाल् चान्नि यन्दरिगल् श्रीमुनि वज्र-
- ५२ नन्दिय गमोरोदार वत्सित ज-
- ५३ गल कोडिनोल् पोदल्दमद्रु मन्दरमनेय्द्र यशालतेय मुनि  
वज्रनन्दिय
- ५४ इगडलक्षरगलि वज्रनन्दिग्रतिथा । तत्स-
- ५५ मयदोल् कुमारनन्दु समस्तप्रभुगायुण्डगलि नाड कायु प्रताप-  
चक्रवर्ति वीरवल्लाल
- ५६ देवन काणल्पेडि वन्दिर्दलि अमिनवध्रीशान्तिनाथदेव समष्ट-  
विधाचनेयुम पूज्युम अपियराहारदानमुम
- ५७ कण्डु पिरिदु सन्तम माडि देवर श्रीकार्यक्क नाडगौण्डगल्  
तम्मोल्कमत्यवागि प्रतापचक्र-
- ५८ वर्ति वीरवल्लालदय वन्दु शान्तिदेवरष्ट-विधाचनेग राण्डरफु-  
दित नीर्णोद्धारक्क अपियराहारदानक्कवागि
- ५९ शम्बर्प १११४ नेय विरोधिहृत्सवत्परद उत्तरायणसकवाण-  
दन्दु वज्रनन्दिसेद्धान्त-देवरिगे धारापूरक नाड मैसेनाड
- ६० गुम्मनवृत्तियोल् मुचण्डिय कडलहल्लिय कडलहल्लिय ईशा-  
न्यद मोरना-
- ६१ इ मन्तेनाडा गणिनाड नडदु येलुवलद सोमय नट्ट कल्लु  
अलि गुरविनगुण्डिये मरनितालेयमो -
- ६२ रडि मोरडि चचरिवल्लद तडि कडलेयहल्लिय आग्नेयदल्लुरिद-  
वाल्लियेय लुविडल्लिय गुम्मनवृत्तिय ना-



६३ गव....य मोरडि चंचरिवल्लं मत्तवी कडलेयहल्लिय नैकृत्यद  
वल्लरेय कणि--

६४ यकलु....खडेय....कांलवूरवल्लं मत्तिय मरन....गल्लुतट्टु  
मत्तवी कडलेयहल्लिय वायव्य--

६५ द तोरेनाड हल्लियवीडिन त्रिसन्धियोलु....कगल्लमोरडि अल्लि  
चंचरिवल्लं तेन्तट्टु वटंघुक्ष अ

६६ ल्लि मत्तवी कडलेयहल्लिय ईशान्य गुम्मनवृत्तिय त्रिसन्धिय  
नहुगणाय कूडित्तु इन्तिट्टु सीमाक्रम । मंगल महाश्री

६७ भूमिदानात् परं दानं....॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो

६८ हन्त वसुन्धरां पटिर्वपसहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमिः

[ इस लेखके प्रारम्भमें होयसल राजाओंकी वंशावली वीरवल्लाल ( द्वितीय ) तक दी है । वीरवल्लालने मैसेनाड प्रदेशके दो ग्राम-मुच्छण्डि तथा कडलेहल्लि अभिनवशान्तिनाथमन्दिरको अर्पण किये थे । इस दानकी तिथि शक १११४ की उत्तरायणसंक्रान्ति थी । यह मन्दिर कई नाडुगौण्डोंने तथा सेट्टियोने मिलकर बनाया था । मन्दिरके कार्यका निरीक्षण कर युव-राजके प्रसन्न होनेपर राजाने यह दान दिया था । वामुपूज्य व्रतीन्द्रके शिष्य वज्रनन्दि सिद्धान्तदेव इस मन्दिरके प्रमुख थे । इनकी गुरुपरम्परामें द्रमिलसंघ-नन्दिसंघ-अमंगलान्वयके निम्नलिखित आचार्योंके नाम दिये हैं- गौतम, भद्रबाहु, भूतवल्लि, पुष्पदन्त, मुमति, अकलंक, वक्रग्रीव, वज्रनन्दि, सिंहनन्दि, परवादिमल्ल, श्रीपाल, हेमसेन, दयापाल, श्रीविजय, शान्तिदेव, पुष्पसेन, वादिराज, शान्तदेव, शब्दब्रह्म, अजितसेन, मल्लिपेण, श्रीपाल ( द्वितीय ) । श्रीपाल त्रैविच्यके शिष्य वामुपूज्यव्रतीन्द्र ही वज्रनन्दिके गुरु थे । वर्तमान समयमें यह लेख सोमपुरके निकट नंजदेवरगुट्ट नामक पहाड़ीपर है । वहाँके मन्दिरका रूपान्तर शिवमन्दिरमें हो गया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२६ पृ० ४७ ]

२८३

इगलेश्वर ( विजापूर, मैसूर )

शक १११७ = सन् ११६१, कन्नड

[ इस लेखमें तीर्थ चन्द्रप्रभदेवकी मिष्या पेण्टर वाचि मृत्तवके समाधिमरणका उल्लेख है । शक १११७ का उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १४ पृ० ८५ ]

२८४

ताडपत्री ( जि० अनतपुर, आंध्र )

शक ११२० = सन् ११६८, कन्नड

रामेश्वर मन्दिरके प्राकारके उत्तर पश्चिम कोनेपर

[ इस लेखमें सोमिदेव तथा काचेलादेवीके पुन उदगादित्यका उल्लेख है जो जैन था और ताटपिपर ताडपत्रीमें रहता था । ]

[ इ० म० अनतपुर २०३ ]

२८५

वेलगामि ( मैसूर )

सन् ११६९, कन्नड

[ इस लेखमें होयमठ राजा बीरबलालके समय सन् ११९९ में महाप्रधान मल्लियण दण्डनायकके अधोन हेगडे मिरियण्ण-द्वारा मल्लिका-मोदशास्तिनाथजिनालयके लिए आचार्य पद्मनन्दिको कुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४६ ]

२८६

## कान्तराजपुर ( मैसूर )

१२वीं सदी, कन्नड

- १ श्रीमतपरमगंभीरस्याद्वादामोघ-
- २ लांछनं (१) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य जा-
- ३ सनं जिनशायनं ॥
- ४ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रतापचक्रवर्ति गण्डभेरुण्ड मलपरोल्
- ५ गण्ड गनिवारनिद्धि गिरिदुर्गमल्ल चलदंकराम होयसलवी-
- ६ खल्लालदेवरु सुखसंकथाविनोददिं पृ(थ्वी) राज्य गेयुतु-
- ७ तमिरे ॥ ततुश्रीपादसेवकरु कव्यहिनवृत्तिय अधिष्ठा-
- ८ यकरु महापमायतरु परमविश्वासिगल् सामिमन्-
- ९ तोपकरु सेवुणकटक सूरकारुं शरणागतवज्रपंजर-
- १० रुमप्प वेहूरमोतद सुगियनहल्लिय भरकरेय वो-
- ११ केयनायक होनहल्ल मादेयनायक कलियनायक
- १२ वाचिहल्लिय वोकयनायक वेल्लूर माचयनायक मोन्-
- १३ गलाचार्य केमवेयनायक चलुवन माचयनाय-
- १४ क श्रमयनायक वरजियन माचयनायक मसण्य-
- १५ नायक कोलेयादिनायक वचन मारयनायक कोलेयत-
- १६ न माचयनायक वलेयन मारयनायक हल्लवनाद-
- १७ कन वचेयनायक वोम्मेर कयिदालद वयक कसविय-
- १८ नायक हेगडेनायक मैलेयनायक मारदेव बालना-

- ११ यरु काचिनायक पम्पणनायक भाचियनाय (क)
- २० सावुक्रनायक चिन्त्यनायक मादियनायक धडचर विज-
- २१ पनायक वटुगेयनायक मनियमनायक हे-
- २२ माडिनायक हरियणनायक पूमयनाय-
- २३ क जत्रनेयनायक मैलयनायक वैजयणनायक मा-
- २४ धेयनाय (क) धमय नायवेयनायक गुडेयनायक
- २५ भारतमनायक मल्लेयनायक हरियचूर माचगाड मि-
- २६ गगोड सोमगौड वदिय गौडन मादिगाड उत्तगौड बयचिगौड
- २७ भारगौड मादिगौड अत्रिगौड हलुवाटिगट्ट वुदरय क-
- २८ चगौड मकरनायकर नायक मलिगौड वसिय-इल्लिय वा-
- २९ हुबलिमेट्टि पारिमसट्टि त्रिजेमट्टि अवर पुत्रक बल्लगौड व-
- ३० सवगौड माच्य भरतय मादय अलय माचयटत्त-
- ३१ गौटन मारय पापय चिक्कम्म त्रिशेट्टिय मग आल्लगौ-
- ३२ ड चिक्कगौड सामगौड चिण्णयगाड मारगौड कमडगौड  
श्रीमन्महा(म)ण्-
- ३३ डलाचार्य राजगुरुगलु नयकीर्तिमिहानदेवर शिष्यर नेमि-
- ३४ चट्टपडिनदेवर बालचन्द्रदेवर नयकीर्तिदेवरगुडु-
- ३५ गलु बाहुबलिमेट्टि पारिमसट्टि माडिसिद एक्कंठिजिनालय-
- ३६ व पद्मप्रभदेवर अष्टत्रिधाचनगे वूर मुन्दे आरिय मार-
- ३७ यनायक कट्टिसिद कर आ कीलेरिय गडे आ मूडलु मुत्तलु नट
- ३८ बेंदलेय हिरियकरय मोदलेरि-
- ३९ गर्दय श्रीमुखमवाप्परद वयि

४० वोम्म नातिवेथ सा....सेनचोव सामन्त....

४१ पूर्वकं माडि चिट्ठ दत्ति यिधर्मवं प्रतिपालिसिद् गंगे

४२ .....

[ यह लेख होयसल राजा वीरवल्लालदेवके राज्यकालमें वैशाख, श्रीमुखसंवत्सरमें लिखा गया था । ब्राह्मवलिमेट्टि तथा पारिससेट्टि-द्वारा निर्मित एककोटि जिनालयके पद्मप्रभदेवकी पूजाके लिए अरेय मारेयनायक-द्वारा एक तालाब तथा अन्य कई नायको, गौड़ों तथा सेट्टियों-द्वारा जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इनमें नयकीतिसिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र तथा बालचन्द्र पण्डित भी सम्मिलित थे । ]

[ ए०रि० मै० १९२७ पृ० ४५ ]

२८७

वेरावल ( सीराप्त्र, गुजरात )

१२वीं सदी, अन्तिम चरण संस्कृत-नागरी

- १ ....न्नवम्प्रति नित्यमद्यापि वारिर्धा ॥ १ भूयादमीष्टसंसिद्ध्यं सु-
- २ ....पाटकाख्यं पत्तनं तद्विराजते ॥ २ मन्त्रं वेधा विधायैतद्विधित्सुः  
पुनरीदृश-
- ३ ...रैर्द्रैर्नयमन्त्रैर्यत्र लक्ष्मीः स्थिरीकृता ॥ ५ तन्निःशेषमहीपाल-  
मालिगृष्टाहि....
- ४ ....सौ नृपः । तेनात्खातासुहृन्मृत्यो मूलराजः स उच्यते ॥ ७  
एकैकाधिकभूपालाः नम - -
- ५ ...जिघ्रज्जुराढनं । अतुच्छमुच्छलत्सूर्यपर्वभ्रममजीजनत् ॥ ६  
पौरुषेण प्रतापेन पुण्येन - -

- ६ रन्यूनविक्रम । श्रीमीमभूपतिस्तेषां राज्यं प्राज्यं करोत्यय ॥११  
मालाक्षराण्यनघ्राणा यो बभञ्ज स--
- ७ न्नदिमघे गणेश्वरा । बभूवुः कुदकुदाय्या साक्षात्कृत  
जगत्त्रया ॥१३ येषामाकाशगामिव त्या--
- ८ तपचक्रमुज्ज्वल । रचयित्वाथ जल्पति येऽन्यत्रियमपूर्वक ॥१५  
कालेऽस्मिन् भारते क्षेत्रे जाता--
- ९ राणास्तत्त्ववत्सनि तेषां चारित्रिणां चशे भूरयः सूरयोऽभवन्  
॥१७ सद्गेषां अपि निर्द्वेषाः सकला भक्त-
- १० भावस्याहरोह तत् । श्रीकान्तिं प्राप्य सहातिं सूरिः सूरिगुणं तत  
॥१६ यदीयं देशनावारिं सम्यग्वि-
- ११ कश्चित्कृटाञ्चालं स । श्रीमन्नेमिजिनार्धशतीर्थयात्रानिमित्तत  
॥२१ अण्डितलपुरं रम्यमाजगाम
- १२ नीद्राय ददौ नृपः । विन्दुमदलाचायः सऽत्र समुत्थासन  
॥२३ ॥२३ श्रीमूलवसनिकाव्यं निनमबन् तत्र
- १३ सज्जयन् यतीश्वरः । उच्यतेऽजितचद्रा यस्त्रतोभूय गणीश्वर  
॥२५ चारुकीर्तियशः कीर्ता ध-
- १४ मुक्तो यो रत्नत्रयवानपि । यथावत् विदितार्थोभूत् क्षेमकीर्ति-  
स्त्वतां गणी ॥२७ उदात्तं स्म लसज्ज्योति
- १५ लेपि वामिते हेमसूरिणा । वक्ष्येऽप्रावरणाय-
- १६ कीर्तिर्यत्कीर्तिर्नतकीव नरिनति । त्रिभुवनरगे वामुक्त्विपुरशशि-  
निलकनेपथ्या ॥३१ तं
- १७ नि ॥ ३२ समुद्रतममुच्छलशीर्णजोर्णजिनालयः । य  
कृतारमनिर्वाहसमुत्साहशिरांभ ( नि ॥३३ )

- १८ ....च यैस्वगण्यते ॥३५ वादिना यत्पदद्वंद्वनखचंद्रेषु विविताः ।  
कुर्वते विगतश्रीकाः कलंक-
- १९ ....दं तीर्थभूतमनादिकं ॥३६ सीतायाः स्थापना यत्र सोमेशः  
पक्षपातकृत् । ग्रामत्रैलोक्य-
- २० तदुद्भूतं तेन जातांद्वारमनेकशः ॥३८ चैत्यमिदं ध्वजमिपतो  
निजभुजमुद्भूत्य सक--
- २१ ....पतो मंडलगणिललितकीर्तिसत्कीर्तिः । चतुरधिकविंशतिलस-  
द्ध्वजपटपटुहस्तकं-
- २२ ....मेतदीयमद्गोष्टिकानामपि गल्लुकानां ॥४१ यस्य स्नानपयो-  
नुलिप्तमग्निलं कुष्टं दर्ना-
- २३ चंद्रप्रभः स प्रभुस्तीरं पश्चिमसागरस्य जयताद् दिग्वाससां शासनं  
॥४२ जिनपतिगृह-
- १४ चार्यवर्यां व्रतविनयसमेतैः शिष्यवर्गैश्च सार्द्धं ॥४३ श्रीमद्विक्रम-  
भूपस्य वर्षाणां द्वाद (श)-
- २५ कर्कातिलबुवंधुः । चक्रे प्रशस्ति मनवा (मतिदिव्यां) प्रवरकीर्ति-  
रिमां ॥४५ सं १२....

[ यह लेख टूटा है तथा उसका आधा भाग मिल नहीं सका है । गुजरातके चालुक्य राजा भीमदेव ( द्वितीय ) के समय वारहवीं सदीके अन्तिम चरणमें यह उत्कीर्ण किया गया है । पश्चिम समुद्रके तीरपर चन्द्रप्रभ तीर्थकरका पुरातन मन्दिर था । यहाँकी मूर्तिके गन्धोदकसे कुष्ठरोग दूर होता था । इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका इस लेखमें वर्णन है । आचार्य कुन्दकुन्दकी परम्परामें नन्दिनंथमें श्रीकीर्ति मुनि हुए । ये चित्रकूटसे नेमि-तीर्थकरके तीर्थ ( गिरनार ) की यात्राके लिए जाते हुए गुजरातकी राजधानी अणहिल्लपुरमें आये । वहाँ राजाने उनका सत्कार कर उन्हें

मण्डलाचार्य यह विरुद्ध दिया । इस नगरके मूलव्यवस्था नामक जिन-मन्दिरका भी यहा उल्लेख है । अनन्तर क्रमशः अजितचन्द्र, चारुकीर्ति यश कीर्ति, तथा धर्मकीर्ति इन मुनियोंका नामोल्लेख है । किन्तु इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है । इसी तरह आगे मण्डलगणि उल्लिखितकीर्तिका उल्लेख है जिनने सम्भवतः यह जीर्णोद्धार कार्य कराया था । इस लेख की रचना प्रवरकीर्तिने की थी । इसका ४२वाँ पद्य मदनकीर्तिकृत शामन-चतुस्त्रिंशिकामे लिया गया है । ]

[ ए० ६० ३३ पृ० ११७ ]

२८८

## कुमारवीडु ( मैमूर )

कन्नड, १२वीं सदी

- १ श्रीमत्परमशमीरम्याद्वादादामोपलाठन जीयार् त्रैलोक्यनाथस्य शामन जिनशामन (॥) जयान म-
- २ कलविद्या ( दन्तार नपाठ हृदयमनुपलेप यस्य दीर्घं स देव ) जयति तदनु शास्त्र तस्य यस्म ( वमिथ्या )
- ३ समय ( निमिरहारि ज्योतिरक नराणा ) स्वस्ति समधिगतपच- महाशब्द महामहेश्वर द्वारायनायु-
- ४ राराधीश्वर यादवकुलारद्युमणि सम्यक्चूडामणि मल्लेयानराज मलपरोलुगडाद्यक-
- ५ नामावलीसमलकृतरण श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल तत्तेकाडु कौडुनग- लेगग्राडिनोल्बराडिवनवामि ( मुठे वरवणगोयिल्ल )

[ यह लेख किमी जैन सैनिककी मृत्युका स्मारक है । होयसल वंशके किमी राजाके विरुद्ध प्रारम्भमें लिये हैं । किन्तु राजाका नाम तथा सैनिकके नामादिका विवरण नहीं मिलता क्योंकि लेख अधूरा है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६८ ]



२८६

ग्राम ( हासन, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखमें किसी होयसल राजाके सेवक पेगडे वासुदेवके पुत्र जिनभवत उदयादित्यका वर्णन है । इसने सूरस्थगणके चन्द्रनन्दि गुरुके उपदेशसे वामुदेवजिनवसतिका निर्माण किया था । यह लेख इस समय केशवमन्दिरमें लगा है । ]

[ ए० रि० मै० १९१७ पृ० ४४ ]

२६०

ग्राम ( हासन, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखमें शान्तिग्रामके होन्निसेट्टि तथा अन्य भव्यो-द्वारा देसियगण-इंगलेश्वर शाखाके हरि-आचार्यके उपदेशसे सुमतिभट्टारककी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१७ पृ० ६० ]

२६१

कुप्पटूर ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है । मूलसंघकाणूरगण-तित्रिणीक गच्छके पर्वतमुनिका इसमें उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४० ]



२६५

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख रसासिद्धलगुट्ट नामक पहाड़ीपर एक पाषाणपर खुदा है । इसमें गुम्मिसेटिके पुत्र ब्रमदेवका उल्लेख किया है । लिपि १२वीं सदी-की है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५७ पृ० १२६ ]

२६६

हृत्ति ( जि० बेलगाँव, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती-के शिष्य नविलूरुके गोवरिय कलिगावुण्ड, तावरे महादेविशट्टि आदिके द्वारा इस दरवाजेके बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई क्र० २४ पृ० २४२ ]

२६७

गोरूर ( हासन, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखमें मलवसेट्टि, कटकद वम्मिसेट्टि तथा केसिसेट्टि इन तीन व्यक्तियों-द्वारा गोरूर ग्रामकी वसदिके लिए पाँच खंडुग भूमि दान दिये जानेका वर्णन है । मल्लियवका नामक स्त्रीकी भी प्रशंसा की है । लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । इसका बहुत-सा भाग घिसनेसे नष्ट हो गया है । ]

( मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित )

[ ए० रि० मै० १९४३ पृ० ७४ ]

२६८-३००

मनोली ( जि० वेलगांव, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । यापनीय मघके आचार्य मुनिवल्लिके मुनिचन्द्रदेवको समाधि कुल्लेच्छके तगावुडकी पुत्री गगेवे-द्वारा स्थापित की गयी थी । ये मुनिचन्द्र मिरियादेवी-द्वारा स्थापित बमदिके आचार्य थे ।

इसी समयके दूसरे लेखमें मुनिचन्द्रके शिष्य पान्यकी(ति) देवके समाधिमरणका उल्लेख है । तिथि आश्विन कृ० ५, शुक्रवार, साप्ता(रण) सवत्सर, ऐसी है ।

यहाके तीसरे लेखमें इसी परम्पराके एक और आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १६४०-४१ ई० क्र० ६३-६५ पृ० २४५ ]

३०१

कीलङ्कुडि ( जि० मदुरा, मद्रास )

कन्नड, १२वीं सदी

ममणरमलै पट्टाडीपर पापाणके दीपस्तम्भके समीप

[ इस लेखमें आरियदेव, वेलगुलके मूलसधके बालचन्द्र देव, नेमिदेव, अजितमेनदेव तथा गोवर्धनदेवका निर्देश है । लिपिके अनुसार यह १२वीं सदीका लेख होगा । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० २६४ ]

३०२

वेहार ( नरसिंहगढ़, मध्यप्रदेश )

प्राकृत-नागरी, १२वीं सदी

- १ ....अं घणोममं सुंदरं
- २ सि.....
- ३ । तिहुअणतिलअं सी-
- ४ री- शावडस्स अमराल-
- ५ अं रम्मं ॥ श्रीआण-
- ६ देवेन गाथा वि-
- ७ रचिता

[ यह लेख सोलखंभ नामक उध्वस्त जैन मन्दिरमें एक स्तम्भपर है । इसमें श्री आणदेव-द्वारा लिखित एक गाथा है जो किसी तिहुअणतिलअ ( त्रिभुवनतिलक ) मन्दिर तथा उसके स्थापक शावडके बारेमें है । इसी स्तम्भपर कुछ अन्य व्यक्तियोंके नाम भी खुदे हैं । गाथाकी लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १७४ ]

३०३

सवणूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह निसिधि लेख मलवारि आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है । तिथि शुचि व० ८, सोमवार, विश्वावसु संवत्सर ऐसी दी है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५९ पृ० ३३ ]

३०४

अग्निनभाषि ( धारवाड, मैसूर )

[ यह लेख वर्तमानमूर्तिके पादपीठपर है । बहुत अस्पष्ट हुआ है ।  
लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ७० पृ० ३४ ]

३०५-६

मण्डूर ( धारवाड, मैसूर )

[ यहाँ १२वीं सदीकी लिपिमें दो लेख हैं जो जैनासे सम्बन्धित  
प्रतीत होते हैं । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ९४ ९५ पृ० ३६ ]

३०७

सालिग्राम ( मैसूर )

कन्नड १२वीं सदी

[ यह लेख अनन्तनाथकी मूर्तिके पीठपर है । मूलमन्त्र-वलात्कारणके  
माघनदि सिद्धातचक्रवर्तिके शिष्य शम्भुदेवकी पत्नी बोम्मव्वे-द्वारा अनन्त  
व्रतकी समाप्तिपर यह मूर्ति स्थापित की गयी थी । लिपि १२वीं सदी  
की है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३६ ]

३०८

गोरूर ( हासन, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

१ ओं श्रीमनु परमगमीरस्याद्वादागोवलाञ्छन(१)नीयान् त्रैलोक्य-  
नाथस्य शासनं जिनशासन(॥)

- २ ओं मेलेनिसिपुंदी मलेगे धात्रियोलं किसुवल्लियन्तद पालिसि  
संततं सुखदिन् इर्पिनेगं सिरि  
३ पुट्टे पुट्टिदं हेरियवासेवेगडेगवातन वलभे निजिकव्वेगं लोलयाल्  
पुंदे वणिणपुट्टु पे-  
४ गंडे सत्यमनं जगजनं ॥ स्थिरने वाप्पमराद्रियिंदधिकगंभीरने  
वाप्पु सागरदिंदगलद-  
५ न्तु दानिये सुरोर्वीजके मारण्डलं सुरराजंगेणेयेण्डे कीर्तिपुट्टु  
कैकोण्डक्करिं संततं  
६ धरेयेल्लं सले सत्यवेगंडेयाल् आदायमं सौर्यमं ॥ कोट्टपेनेंदोड्  
ईश्वरन कोट्ट वर

दूसरा

- ७ सरणेंदु वंदरं नेट्टने.....डे वज्जि.....पूण्डु कोडिट्ट विरो.....  
८ तरिवन् एन्दोडे ताने कृतान्त.....यि.....पेगंडे....  
९ आतन मावं सकल मही.....जवळिल.....वेनिसि नेगलवं भूतल  
१० दोलगेसेये कच्छवेगंडेय.....ण्णु.....य विण्णु  
११ नाडे केसरिय पोडपु.....मनो.....यनि  
१२ सिर्द वीरनोल् अदेंदु करं नलि.....तरिपुट्टु क.....ले पलरं निरन्तरं  
तीसरा भाग  
१३ एने नेगलद कच्छवेगंडेगनुपम कुल.....गे धोरं  
१४ यलु विनुत.....तं वगे  
१५ रेनिप्परु.....मणिय-  
१६ न्तवरीवरीतन यं.....सन्तत जस.....  
१७ यल् अखिल भूमण्डलदे.....ख्यातंगे सले नेगलद गंगेगं गौरिगं वेम्म  
१८ .....नो दोरंयेनिप्परु भूतलदोलु.....यं ॥ .....गम्यंतंवरि-  
१९ य समर समयदोल.....वस.....मन पोललितर.....आ विमुचिन

- २० कुलवधु ता भूविनुत श्रीगे नेलेयेनिप्य गनेयर् पलर  
पेण्डितिंगेनेगे वपर
- २१ योलु ॥ आतन किरिय पेण्डति रनिय पोखलु लूपिगति-  
चरियोल् अतियन्वे
- २२ प्रोखलनिधि तत यशोवत्तरिय मतिहोनर् अदेनु वणिणपर  
वाचवेय ॥ भवरीवर गु-
- २३ (\*) गल् भवर् भुवनजनाराध्यरखिलगुणगणनिलयर् कडि वर  
नयकीर्ति-
- २४ देवसिद्धान्तेशर ॥ आ महानुभावनधांगियरवसान कालदोलु ॥  
बोधिमुत जिनपदम वा-
- २५ व सिद्धपद्मनू अक्षय पदम विनुत मुनिपदम वाचवे वेगाटि-  
तियर् सुरगतिय
- २६ परम जिनेश्वर पदपकहमनानंददि नेनेयुतागलु पिरिदोंदु  
भनियि
- २७ त्रिय वाचियहन् एयूदिदल् भागलु ॥ भवर परोक्षदोल् भाद  
सविनयदि केल्
- २८ यिन्ति कल्ल भुवनजन्वरिये निरिमिदल् अविचलमण्यन्तु  
चंद्रतारवरं ॥

[ इन लेखमें किसुवल्लि ग्रामके शासक सत्यवेगडेका उल्लेख है। यह हेरियगामेवेगडे तथा उनकी पत्नी निजिकब्बेका पुत्र था। इस सत्यवेगडेकी पत्नी वाचवे थी। वह कच्छवेगडेकी पुत्री थी। इसके गुरु नयकीर्ति मिद्धान्तदेव थे। लेखमें वाचवेके देहत्यागका उल्लेख है जो सम्भवतः सत्यवेगडेकी मृत्युके कारण किया गया था। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी प्रतीत होती है। ]



३०६

हलेवोड ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

- १ स्वस्ति श्रीमन्नयकोतिसिद्धांतचंद्रयतिदेवगं कवडेयर जकव्वेयर  
माडिसि कोट्ट पट्टशालेय शान्तिनाथदेवर अष्टविधाचं(ने)गं  
खंडस्फुटितजीर्णोद्धारकं....
- २ शिष्यरु सुरभिकुमुदचंद्रापरनामधेयरप्प नेमिचंद्रपण्डितदेवर  
जीवंगल् हिरियकेरेय बोलवगट्ट दोलगरेय हुणसेय....
- ३ ल्लगे मूरु गंगवुरद उत्तमवागि ? मूनूरु वेद्लेयं सर्वबाध-  
परिहारवागि चंद्रार्कतारंवरं सल्वंतागि कोट्टरु ई धर्मवं अवर  
शिष्यसंतानगलु नडेसुवर

[ यह लेख १२वीं सदीकी लिपिमें है । कवडेयर जकव्वे-द्वारा  
निर्मित पट्टशालाके शान्तिनाथदेवकी पूजा आदिके लिए कुछ भूमि बोलवगट्ट  
तालाबके समीप और गंगवुर ग्रामके समीप दान दी गयी ऐसा इसमें  
निर्देश है । यह दान मुरभिकुमुदचन्द्र अपरनाम नेमिचन्द्र पण्डितदेवने  
दिया था । जकव्वेके गुरु नयकोति सिद्धान्तचन्द्र थे । ]

[ ए० रि० मै० १९३७ पृ० १८५ ]

३१०

अथनी ( बेलगांव, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखमें चम्पण-द्वारा देसिगण-इंगलेश्वरवलिके सामन्तण वसदिसे  
मम्बद रत्नत्रयमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लिपि १२वीं  
सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७३ पृ० ३४ ]

३११

मरसे ( मैमूर )

मस्कृत-कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमद्भद्रविलसघेस्मिन् नन्दिसघेस्त्यग्गल अ-

२ न्वयो भाति योशेषशास्त्रवा-

३ राशिपारगं

[ यह लेख एक खेतमें मिली पार्श्वनाथमूर्तिके पादपोठपर है । इसमें भद्रविलसघ-नन्दिसघके अन्तर्गत अग्गल अवलकी प्रशमा है । यह श्लोक अन्य कई लेखोंमें पाया जाना है । लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । मूर्तिके चारों ओर अन्य कुछ विवरण नहीं दिया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०६ ]

३१२

मावलि ( मैमूर )

कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमत्परमगमीरस्याद्वा(दा)-

२ मोघलाउन जीयात् त्रैलोक्य-

३ नाथस्य शासन जिनशासन ॥ श्री ( मृ )-

४ लसग कुण्डकुट्टान्वयद

५ काणूरुगण माधवचन्द्रदेव(र गु)-

६ द्वि नागव्ये गोम्बेय मगलु म(मा)-

७ धिपिधिपिदि मुडिपि स्वर्ग-

८ स्तेयादलु मगल नहा

९ श्री श्री

[ इस निसिधिलेखमे मूलसंघ-कुण्डकुन्दान्वय-काणूर गणके माधवचन्द्र-देवकी शिष्या तथा गोकवेकी कन्या नागव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। ]

[ ए० रि० मै० १९४१ पृ० १९२ ]

३१३

हम्पी ( वेल्लारी, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख एक भग्न स्तम्भपर १२वी सदीकी लिपिमें है। इसमें गोएलाचार्य, उनके शिष्य गुणचन्द्र तथा उनके शिष्य इन्द्रनन्दि, नन्दिमुनि तथा कन्तिका उल्लेख है। ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० ३३५ पृ० ५० ]

३१४

कलकत्ता ( नाहर म्यूजियम )

कन्नड, १२वीं सदी

१ देमायपगलाणन्तियनोंपि निमित्त-

२ वागि माडिसिद प्रतिष्ठे

[ यह लेख पीतलकी चौबीस तीर्थंकरमूर्तिके पिछले भागपर खुदा है। यह मूर्ति देमायप्प नामक व्यक्तिके अनन्तव्रतकी समाप्तिके समय स्थापित की थी। लिपि १२वीं सदीकी है। लिपिसे पता चलता है कि इसका निर्माण कर्नाटकमें हुआ था। ]

[ ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५० ]

३१५

रुगि ( बिजापूर, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख किसी जैन आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ७९ पृ० १८८ ]

३१६

शेरगढ ( कोटा, राजस्थान )

संस्कृत-नागरी, १०वीं सदी

[ इस लेखमें आचार्य वीरसेन तथा सागरसेन पण्डितका उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४३१ पृ० ७० ]

३१७

रायवाग ( बेलगाव, मैसूर )

कन्नड, शक ११२४ = सन् १२०१

[ यह लेख रट्ट वंशके कर्तवीर्य ४ के समयका है । इस राजाने वैशाख पूर्णिमा, शक ११२४, शुक्रवारको एक जिनमन्दिरके लिए कूण्ड ३००० प्रदेशका चिचलि ग्राम दान दिया था । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५१ पृ० ३३ ]

३१८

चेतगाँव ( क्रमांक १ ब्रिटिश म्यूजियम )

कच्छड, शक ११२७ = मन् १२०४

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनम् । ज्ञोयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जिनशासनम् ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥
- २ श्रीजिनसमचनचां बुधि राजिसुत्तिकर्मथनोर्जितामृतरत्न-श्रीजननगृहं  
सत्त्वदयाजीवनमपरिणितगभीरमपारं ॥ नवमौक्तिकहारं
- ३ श्रीयुवतिगिदेनिमिर्द कृष्णनृपयंशजपार्थिवचयदोल् सेतरसं  
भुवननुतं मिसुपनेसेव नायकमणिवोल् ॥ वरकू-
- ४ डिमडलार्धीश्वरनेनिपा सेनविभुगे सुतनादं दुर्धरवैरिभूप-  
भीकरपराक्रमं कार्तवीर्यननुपमशौर्यं ॥ आ विभुगादल् सति पद्मा-
- ५ वति जिनसमयवृन्दकरणापरपद्मावति बुधामिमतपद्मावति यज्जा-  
युधगे पालोमिय वोल् ॥ अवरिवैरगं पुट्टिदनवनीश्वरमां-
- ६ लिमंडनं लक्ष्मनृपं परिमलमुक्ताफलमोसेव वाधिगं ताम्रपर्णगं  
पुट्टववोल् ॥ एतेवं लक्ष्मदेवक्षितिभुजन भुजाटोपमं विद्विपद्मा-  
त्रीनाथर् संजे-
- ७ गेपं भटपदहतिचिंदाद केंद्रूलियेंदालीनाभ्रध्वानमं तांनयनुरग-  
गुरोद्घोषमंदंजि नानास्थानस्थागित्वमं केलपडेयदे विट्टो-
- ८ दुत्तमिर्दपरिन्नुं ॥ अपराधिनलने नोल्पुट्ट नृपालकरदंडनीति  
वाप्पु यनाज्ञाधिपनागे लक्ष्मभूविभुवपराधं दंडसेवि-  
विल्ले कृतियो ॥
- ९ अमृतांभोराशियोल् पुट्टिद मिर्चियनणं वय्तु धात्रं स्वमायाक्रमदिं  
देरोर्वलं निर्मिसि चपलेयना कृष्णनोल् कूडि मत्ता चिम-

- १० लोद्यद्भाग्येय सुस्थिरं यनोसेदु कोट्य महांभृच्चिकायोत्तमनप्यो  
लक्ष्मिदेवगेने मिगे तलेदल् चट्टिकादेवि चेल्व ॥ प्रणुतश्रीनिधि  
चट्टिका-
- ११ सतिय शीलप्रातम कूडे धारिणियोल् वणिमलारुमानपर  
लक्ष्मीर्वाशन क्षत्रियाप्रणिय शालद मच्चिमल् फणिपन पूण्डे-
- १२ ते ता तन्न कय्गुणम वट्टुदरिदिव पोगल्लार्प विश्वजिह्वालियि ॥  
नरपतिलक्ष्मिदवमति चल्दवि निजोद्वहस्तदि धग्गमयल्के
- १३ सक्कमण्दोल् कुडे काचनम बेरल्गलोल् बेरसेद ह्मकालिकेय कर्पे-  
सेदिपुंढु वाहुक्कल्पवत्तरिय तलप्रवालद नत्तप्र-
- १४ सवक्कल्लसिदं तुविबोल् ॥ श्रीवसुदेवनतेस्व लक्ष्मन्पुगवनिध-  
देवकीदेविवालोपुधा विनुतचदल् श्रविगमादरात्मनर् भूक्कल्य-
- १५ प्रदद्वक्कल्लेशवरंदने कान्तीयधार्त्रावरमल्लि कार्त्तुनकुमारकर्लनित-  
शायंशालिगन् ॥ इदशायं कार्त्तवीर्यं तल-
- १६ रे वल्लयुत दिग्जयत्कन्यधात्रीपतिगल् बेत्तितु नीर पुगल्लवर शरो-  
रोष्णादि वत्ति वित्तोद्गतमीत्युत्कर्षं वृत्तिप्रसरणविमरद्व-
- १७ मंतोयोर्मियि विस्तृतमागल् हानियु वृद्धियुमदु निजममाधिगेंद-  
विमूढर् ॥ ई कमन यवानिचयमी क-
- १८ रिमकुलमी विलामिनीलोकमिवेम्मया कत्रिय कालेगदोल् वयला-  
जियोल् पुराणीक्क युद्धदोल् पिडिदनिंतिवनी कलिकार्त्तवीर्यनेदा-
- १९ कुलमागि नाहुपुदु वन्धनशालेयोल् इदंरिक्कजम् ॥ श्रीरट्टवशमेव  
सुमेरवनाश्रयिमि क्कप्पकुजलनमेनल्लं राराजि-
- २० शुदुदो विनुधाधार श्रीमत्कुल प्रमोदनिवास ॥ आ महनीय  
कुलक्कं शिरोमणि भव्यावुजक्कं तेजोमणि रक्षामणि बुधविततिगे

- २१ चिंतामणि वेल्पगेनल्ले रंजिपनुदयं ॥ ललितगुणौवं लक्ष्मीनिलयं  
संश्रितमधुव्रतं तलेदं निर्मलमप्पुदयसरोवरदोल् उदयमं पुरुष-  
पुंडरीकं वी-
- २२ चं ॥ प्रकटश्रानिधि वीचणं कुलगृहं शीलवके लीलाश्रयं सुकृत-  
क्कुदम्वमंदिरं सिरिगे सेवास्थानकं सद्गुणवके कलाभ्यासपदं  
सरस्वतिगे संचारालयं
- २३ धर्मकार्यकलापक्कमिद्विगेहममलाचारवकेनल् रंजिपं ॥ वीचंगे  
सुकवि संस्तुतवाचंगादर् सुतर् जिनेंद्रमतश्रीलोचनसंनिभरात्महिता-
- २४ चारपर् नेगल्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ पापापहारिजिनपश्रीपदभक्तं  
सुपात्रसंकुलदानव्यापारगमितदिननेनिपी पेर्मंगे पेर्मणं  
तवर्मनेयादं ॥
- २५ स्थिरपद्मोदयमंभुजवके कमलं पद्माकरवक्कुजाकरमुद्यानवनवके पूर्ण-  
फलितारामं पुरवक्कोप्पुवंतिरं लोकोत्तमकार्तवीर्यनृपराज्यं-
- २६ गोप्पुवं सद्गुणाभरणं श्रीकरणाग्रगण्यवेनिसिर्दप्पं जगं वाप्पेनल् ॥  
अनवद्योक्ति विनूतवाणिगुपदंशं चागमस्वप्नभूजनिकायकृतिविस्म-
- २७ यस्थितिकरं जैनक्रमांमोजपूजनमैंद्रध्वजविभ्रमश्रुतिलसतसंवादियं-  
दंदनिघनयश्राकरणाप्पणंगं दारेयारी धात्रियो-
- २८ क् धार्मिकर् ॥ अचलितगुणनिलयं चतुरचतुर्मुखनेनिसुवप्पण  
वल्लभे सुप्रचुरविवेकास्पदचारुचरिते वाग्देवियेव पेसरिंदेसेवल् ॥  
वरवा-
- २९ ग्दंविगमप्पणप्रभुगमादर् नंदनर् श्रीजिनेश्वरमार्गप्रतिमासक-  
प्रविलसद्गन्तत्रयंगल् विनेयर पूर्वार्जितपुण्यदिंदे निरुतं मेयवेत्त-  
वेयंते-

- ३० सुस्थिरलक्ष्मीपति बीचबैजवलदेवर् सज्जनानन्दकर् ॥ प्रणुतोद्यन्-  
पात्रदान घतगुणचरित सज्जिनावासनिर्माणवा-मोर्वी-
- ३१ शराज्याभ्युदयनयचय तम्मोलोपुत्तिरल् धारिणियोल् विग्याति-  
वेत्तिवरे मोगयिपरा मडरादित्यसेनाप्रणा नित्र कातवीयक्षि-
- ३२ तिपतिसचिवोत्तसनी बीचिराज ॥ मुजनाकर्षणमात्मवल्लभ-  
वशीकार सुहन्मोहन कुजनोच्चाटनमन्यमत्रिचयमानस्तमन  
दुर्णयव-
- ३३ जविद्वेषणमैविवागे निजमन्नागगलि रजिप विजयश्रीनिधि-  
कार्तवीर्यसचिव लक्ष्मीचण बीचण ॥ परवधुगनुमतिय जैनरीय-  
लागदु परप्र-
- ३४ वर्तनेयोल् जैनरोलधिक बीच तदरिनुपमुजविजयलक्ष्मिय  
पतिगीत्र ॥ हृदयाह्लादकनादनुविगिवनोर्व सर्वमपद्गुणास्पद-  
बीचानुजबैजण वि-
- ३५ भूतयोल् धर्मात्मन मूर्तियोल् मदन चागदोल् बाधवननूज  
जैनपूजामिपेकदोलिद्र नयदाल् उहसति रणोद्यन्कीडेयोल्  
रात्रय ॥ विद्रि-
- ३६ नजिनागमावुनिधिवर्धनदोल् निजवशवारिजाभ्युदयविधानदोल्  
बुधमनोमिमतापणदोल् कलकमिलद हिमरोचि तापट्टितियिहद  
मानुत्रिमू-
- ३७ ढट्टितियिहद सुरभूरुह धरेयोल्परसुत वलदेवनोपुव ॥ स्वस्ति  
भमधिगतपचमहाशब्दमहामण्डलेश्वर कार्तवीर्यदेव निजानु
- ३८ जयुवराजकुमारवीरमल्लिकानुनदेव बेरसु वेणुप्रासस्वन्वावारदोल्  
साम्राज्यपुखमनुमत्रिसुत्तमात्मीयश्रीकरणाप्र-
- ३९ गण्यनुमखिलमत्रिजनवरेण्यनुमण्य बीचिराज माडिसिद



रहजिनालयद श्रीशान्तिनाथदेवर नित्यपूजामिपेकं मोदलाद  
धर्मकार्यनिमित्त-

- ४० मागि तज्जिनालयाचार्यश्रीशुभचंद्रभट्टारकदेवर्गे शकवर्षद ११२७  
नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद पुण्यसुद्धविदिगे बहुवारदोल् आद  
संक्रमण-
- ४१ समयदोल् नाल्छासिचं महाजनंगल् सहितमागि धारापूर्वकं  
माडि वेणुग्रामेयोल् कोट स्थलवृत्ति अदर तेंक देसेय वजेय  
खारिगेयि प-
- ४२ हुवल् कोडगेय्य इप्पत्तनाल्कनेय हत्तियल्लि इरिसिल्लुगट्टे सहितं  
मत्तरय्हु ॥ आ वेणुग्रामेयल्लि हिरिय मूडंगेरिय पडुवण  
वरियो-
- ४३ ल् हुगियर तीकणन मनेयि वडगल् मनेयोहु । पडुवगेरिय  
पडुवण हरियोल् मनेयोहु । पडुवण गवनियल्लि मनेयोहु ।  
नाल वसदियि मूडण-
- ४४ कपिलेश्वरदेवर धवलारद कट्टिदिरोल्मने मूरु । आनेयकेरंग  
होद वट्टेयि वडगल् हूदोंटं आ वेणुग्रामद कोलिं मत्तरंरहु  
कम्मविन्नूरेल्पत्तार । कणंवुरिगे-
- ४५ याल्लरिं पडुवण हंगेरियि पडुवल् केय्मत्तर् हंनेरहु । पडुवण  
हट्टियल्लि तेंकंगरियोल् अय्गय्यगलदिप्पत्तोहु कय्नीलद  
मनेयोहु ॥ मत्तं स्वस्त्य-
- ४६ नेकगुणगणालंकृतसत्यशौचाचारनयविनयमंपन्नरुमाश्रितजन-  
प्रसन्नरं मधपट्टिपुरप्रतिष्ठितजिनमुनिजनोपदिष्टगुडुशास्त्र क्रमप-
- ४७ रिपालितवीरवणंजुधर्मरं समाचरितपुण्यकर्मरं । पद्मावतीदेवी-  
लब्धवरप्रसादरं विहितसकलजनाह्लादरं । न्यायोपाजनव्यवहार-  
प्रशस्तरं

- ४८ मत्तुकिदडहस्तरमण समयचक्रवर्ति जयपति सेट्टि मुख्यमाणि वेणुग्रामद स्थलद ममस्तमुम्पुरिदडगलु कूडिमूसासिरद पट्टणिग मादलादु-
- ४९ मयनानादेशिमुम्पुरिदडगलु परशुराम नायक पोंम्मण नायक अम्मुणि नायक प्रमुखरण समस्तलालव्यवहारिगलु पडप नायक कों-
- ५० ड नबि सेट्टि पोरयच सेट्टि मोदलादेल्ला मलेयालव्यवहारिगलु मत्तमा वेणुग्रामद स्थलद चिन्नगेयिकदवरु दूसिगर मुख्यमागुलिद परदर । तेलिगर । टिक-
- ५१ सालिगरमितिवरुल्ल नेरेदा शान्तितायदेयर वसद्विगे विट्टायवेंतें- दोडे वडगणि वद कुदुरेंगे नेलमेट्टु हागवोदु । तैम्ल् नडेववकें सुक हागवोदु । मलेयालर
- ५२ कुदुरेंगे हागवोदु । अरवत्तय्देत्तु कौतगलोलेन पेरिन्नेड सर्वायाध- परिहार । चिन्नगेयिकद चीरक्के दूसिगवसरक्के । हत्तिवसरक्के । मणिगारवसरक्के । गधवण-
- ५३ वसरक्के गधवणिगरगडिगे । अक्कसालेगमट्ठक्के येरवेरे वरिसदेर वरिसदेरे हिरिय हागवोदु । होरगणि वद सीरेय कडगेगे वीमवोदु । होरगणि वद गधवणक्के । कक्षमडक्के । आ म-
- ५४ ड गद्याण तूकवरुदु । हत्तिय मडिगे तार मूळ आ पेरिंगे काणियोदु । मत्तद मडिगे मत्तवोर्वल्ल आ पेरिंगे मत्तवोर्मान । अकणथ मत्त मारिदडा मत्तमोर्वल्ल । मत्त-
- ५५ वसरदगडिगे मत्त निच्चमोल्लगे । अक्कियसरक्के अक्कियद । मेलसिण हरिंगे मेलसोर्मान आ जवक्के अरेयान । इगिन पेट्टिगेगे इगु गद्याण तूकवार अल्लअरिसिनद जवळक्के आ म-

- ५६ ण्डं पलवय्दु आ हेरिंगे अल्लधरिसिनं पलं हत्तु । गाणक्के निच्चत्वेण्णयद् । अडकेय हेरिंगे अडकेयिप्पत्तय्दु आ जवलक्के अडके हंनेरदु । एलेय हेरिंगेले नूरु हो
- ५७ रंगेलेयय्वत्तु । तंगिन काय हेरिंगा कायौदु । ओलेय हेरिंगे ओलेय सूडेरदु आ होरंगे सूडौदु । होरगणि वन्द वेल्लद मंडिगे वेल्लदच्चु हदिनय्दु आ
- ५८ होरंगे अच्चौदु । बालेय हेरिंगा कायारु आ होरंगे कायमूरु । नेल्लिय काय हेरिंगा कायवल्लवौदु । कविन हगरक्के औदु कर्बु, बलहद हेरि-
- ५९ गे बलहवोर्पलं मत्तमा शान्तिनाथदेवर वसदिगे श्रीकार्तवीर्य- देवं कोट्ट अंगडि बडगगेरिय बडगण हरिय पट्टवण कडंयोल् राजवीथियि मूडल् नाल्लु ॥
- ६० बहुमिवसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः, यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ अपि गंगादितीर्थेषु हन्तुर्गामथवा द्विजं निष्कृतिः स्यान्न देवस्व-
- ६१ ब्रह्मस्वहरणे नृणां ॥ ओदविंदी धात्रियेल्लं मिगे पोगले चिरं वर्तिसुत्तिके निश्याभ्युदयश्रीकार्तवीर्यक्षितिपविपुलसाम्राज्य- सन्तानमुर्वाविदि-
- ६२ तश्रीवीचिराजप्रथितविमलशान्तीशरावासधमं सदलंकारस्फुटार्थ- न्वितपदकविकन्दर्पसुव्यक्तसूक्तं ॥ दोषव्यतीतमर्थविशेषमिदंने पेल्दुनोल्दु शासनमं पीयू-
- ६३ पसमसूक्ति चातुर्मापाकविचक्रवर्ति कविकन्दर्प ॥ श्रीमन्माधवचंद्र- त्रैविद्यचक्रवर्तिवाक्सुधारसनाभ्युदितनित्यसाहित्यकमलवनमरालं बालचंद्रदेवं पेरव शासनं

[ इस लेखका सारांश अं० शि० म० भा० ३ में क्रमांक ४५३ में आ गया है । किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हुआ था । पाठकाकी सुविधाके लिए सारांशकी मुख्य बातें यहाँ दोहरायी जाती हैं । इस लेखमें रट्ट वंशके राजा कान्दवीर्य ( चतुर्थ ) तथा उनके बन्धु मल्लिकार्जुनका एवं उनके मन्त्री बीचणका उनके पूर्वजामहत्ति परिचय दिया है । बीचणने बेलगांवमें रट्टजिनालय स्थापित किया था । इस मन्दिरके प्रधान भट्टारक शुभचन्द्रको शक ११२७, रवनाक्षी सवत्सरमें द्वितीय पीप शुक्ल २ को बेलगांवकी कुछ जमीन तथा कुछ करोका उत्पन्न दान दिया गया था । इस शिलालेखके पाठकी रचना माधवचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य बालचन्द्र कविक दर्प-ने की थी । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १५ ]

३१६

बेलगांव ( क्रमांक २ ) ( ब्रिटिश म्यूजियम )

शक ११२७ = सन् १२०४, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंगीरस्यादादामोवलाछन । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जिनशासन ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥
- २ श्रीजिनसमयनवावुधि राजिसुतिर्कमथनूर्जितामृततरुनश्रीजननगृह  
सत्त्वदयाजीवनमपरिमितगंगीरम-
- ३ पाद ॥ जगद्दीपद भरतदोलबुजमवसारसृष्टि कृडिमहीचक्र बगे-  
गोलिपुद्गु सकलजनावक्थनसुकु-
- ४ तफलविलासनिवास ॥ श्रीराष्ट्रकूटवशमरोरुवनराजहसनाद-  
नात्तु विस्त्रारियशोनिधि सेनमहीरमण
- ५ समृतामलोमयपक्ष ॥ सिरिय निजानुजेयनादरदि शशियित्तु  
राजनाद नण्प धरियिसि मिक्कता सेनराजनो-

- ६ ल् सेणसि राजनेनिपवनावं ॥ स्थिरतेयनुत्तंगतेयं धरियिसिदा  
सेननृपवरोदयदोल् भासुरतेजोनिधि पद्माभिराम-
- ७ नेने कार्तवीर्यरविशुदयिसिदं ॥ विनतारिपुप्रतिविंवालि नितान्तं  
कार्तवीर्यपदनखदोल् चेल्वेनिहुं पूर्वपदाश्रि-
- ८ तरनलिद्रु तन्मंत्रकृतिगे पदेदप्पुववोल् ॥ स्थितिकारिणि विमल-  
गुणान्विते पद्मलदेवि कार्तवीर्यधरित्रोपतिदयिते तां त्रिव-
- ९ गोजितिसाधिकेयपरनीतिविद्येवोलेसेवल् ॥ जनिथिसिदं समस्त-  
गुणसंकुलसंस्तुतलक्ष्मभूमिपं जननुतकार्तवीर्य-
- १० विभुगं सतिपद्मलदेविगं सुतं जनिथिपवोल् जयन्तनमरप्रभुगं  
शचिगं मयूरवाहनभवंगवद्विजंगमंगमव हरिगं
- ११ रमाख्येग ॥ वनितेयरं मरुल्लुचुव समाकृतियि सुमनोमिवृद्धियं  
जनिथिप शीलदिं कुवलयक्के विकासमनीव मय्मेयिं जन-
- १२ नयनक्के कामनो वसन्तनो चंद्रमनो दिट्ठके पेल्लेने विभु लक्ष्मी-  
देवनेमेवं कविसंकुलकल्पभूरुहं ॥ विजितरिपुराजराजात्म-
- १३ जे चंद्रलदेवि लक्ष्मनृपसतियंसेवल् विजितवटसर्पमदे दिश्वजन-  
स्तुतचारुचरितेयेने धारिणियोल् ॥ अवरिधंगं कलिकार्तवी-
- १४ यंतुं मल्लिकार्जुननुमादर् प्रादम्बसाम्राज्यरामाधिपयुवराज-  
कुमाररात्मजर् वनतेजर् ॥ जनमेल्लं पेच्चे चल्लं
- १५ पेगेवहरद सेल्लं जयश्रोणे नल्लं मनुमार्गं सन्निवर्गं तनगंसेयं  
निसर्गं गृहीतारिद्रुगं सनचालापं
- १६ सुहृपं नेगल्दनतिदिलीपं जितारातिभूषं वनशौर्यं क्षत्रवर्यं  
सुरकुजसदृशौदार्यनां कार्तवीर्यं ॥
- १७ श्रामत्कुलाधिधवर्धनसोमनेनिष्पुदयविभुविनात्मजनयुद्धामयशो-  
निधि वीचं भूमहितं सौम्यवृत्तियं तलेदेसेवं ॥ वीचं-
- १८ गे सुकविमंस्तुतवाचंगादर् सुतर् जिनेंद्रमतश्रीलोचनसंनिभरात्म-  
हिताचरणर् नेगल्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ तनगं

- १९ ब्रह्मगमुद्यच्चनुरते तनग वार्धिग गुण्णु चाग तनग कर्णगमत्युद्यति  
सरि तनग भेरुग भूप्रियत्व तनग चद्रगमहन्मतर्-
- २० चि तनग चारिपेणगमैतनिश मव्यालि वणिगप्पुदु गुणिधेनि-  
मिदंप्पण प्रीतिर्यिद ॥ श्रीकरणाप्रणिगप्पगाकलितल्स-
- २१ चरित्रे दयितेयलकाराकोणं विनुते वरवणाकृति वाग्देवियुचित-  
नामदिनेसेवल् ॥ घनलदमीपतिपाहुग नेगल्द कु-
- २२ ग्नीदेविग धर्मनदनमोमाजुनरादवोल् तनुजरादर् विश्रुतर्  
कातंवीर्यनृपधीकरणाप्पणगमंसेवो वाग्दविग मारशौ-
- २३ यंनिधानर् विमुगीचवैजवलदेवर् निनितारातिगल् ॥ अनुपम-  
त्रिद्योगुद्धविनय मिरिगोप्पुव चागदेल्गे जौवनके विनिमैला-
- २४ चरणमायुगे विस्मृतकीर्ति वाग्प्रवतंनगे क्तोक्ति तनेसकदि  
सले मडनमागे वरिप जनपतिकार्तवीर्यसचिवैरुशिरो-
- २५ मणि वीचनुर्वियोल् ॥ इदु ता श्रीकरणप्पणाप्रसुतसत्पुण्यप्रमा-  
जालमिन्तिदु रट्टभित्तिपालमत्रिय रमाभंरावलोकाशु-
- २६ मत्तिदु दल् धामिकचक्रवर्तिय दयादुग्धाब्धिर्वाचिसमभ्युदय  
तानेने वीचिराचन यश पर्वितु भूलोकम ॥ विनुतनिज-
- २७ प्रमुगालोचनदोल् नयशास्त्रदष्टि दुर्धरममावनिरोल् निशित-  
जयास्त्र विनोददोल् नर्मसचिवनेनिप वैप ॥ मरदि तन नो-
- २८ डिद तर्णीजनवेरेद वदिवृद मत्तेवरनीभिमदेरेयदेनल् सुरूपन-  
नत्तिशयवितरण बरदेव ॥ श्रीकार्तवीर्यनृपति-
- २९ श्रीकरणाधिपन वीचणन गुस्कुलदोल् लोकोत्तरमुचिप्रविवेकर्  
मलधारिदेवमुनिपर् नेगल्द ॥ आ मुनिमुयर् शिष्यर्  
भूमीश्वर-
- ३० वद्यरमलतरमिद्धातश्रीमुखतिलकर् प्रथितोद्दामगुणर् नेगल्द  
नेमिचद्रमुनीद्रर् ॥ निरुपमतपोनिधानर् धरणीश्वरजालमी-

- ३१ लिलालितपदरेंदुरुमुदडिं कीर्तिपुदुवरें विभुशुभचंद्रदेवभट्टारकरं ॥  
स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहामंड-
- ३२ लेश्वरं कार्तवीर्यदेवं निजानुजयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदेवं  
वेरसु वेणुग्रामस्कंधावारदोल् साम्राज्यसुखमनु-
- ३३ भविसुत्तमात्मीयश्रोकरणाप्रगण्यनुमगण्यपुण्यनुमण्य वीचिराजं  
माडिसिद्धरट्टजिनालयद् श्रीशान्तिनाथदेवर अंगभोग-
- ३४ रंगभोगनित्याभिपेकार्चनतदावासखंडस्फुटितजीर्णोद्भरणाहारादि-  
दाननिमित्तं श्रीमूलसंघकौंडकुंदान्वयदेशीयगणपु-
- ३५ स्तकगच्छहनसोगप्रतिबद्धतज्जिनालयाचार्यश्रीशुभचंद्रभट्टारकदेवगं  
शकवर्षद ११२७ नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद् पु-
- ३६ प्यशुद्धविदिगे वड्डुवारदोलाद् संक्रमणसमयदोल् कूंडिमूमासिर-  
दोलगण कोरवल्लिगंपदण उंवरवाणियेंव ग्रा-
- ३७ ममं सर्वावाधपरिहारमष्टभोगतेजस्वाभ्यसहितं निधिनिक्षेप-  
जलपापाणरामादिसमन्वितं सर्वनमस्यं माडि स्वकीयसा-
- ३८ आज्यसंतानयशोमिवृद्धयर्थमागि धारापूर्वकमतिप्रीतियं कोट्टनदकें  
सोमं पेशानियकोणोल् नरवल मोनेय-
- ३९ लिल नट्ट कल्लल्लि तेंक भोगदे मूढण दिक्किनोल् नट्ट कल्लल्लि मुंते  
नट्ट कल्लल्लि मुंटे नगरकेरयाल्लि मुंटे आग्नेयियकोणोल् मू-
- ४० लवल्लिवेलगोड मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लल्लि पडुव भोगदे तेंकण  
दिक्किनोल् यम्मणवाडकटुकवाडद् मुग्गुड्डेय इंगुणिगेरे-
- ४१ य केलगे नट्ट कल्लल्लि मुंटे कुनिकिल्लगल्लि नट्ट कल्लल्लि मुंटे  
निरुतियकोणोल् कटुकवाडकरवसेय मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लल्लि  
यडग मो-
- ४२ गदे पडुवण दिक्किनोल् मेलुगुंडिय करवसेय मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट  
कल्लल्लि मुंटे केंदरिय मोंकिनोल् नट्ट कल्लल्लि मुंते वायुविन-

- ४३ कोणोल् मेल्गुडिय नाविदिगेय मुग्गुडुय गौय्टे गट्टिनलि नट्ट  
कल्लिह्लि मूड भोगदे बडगण दिक्किनोल् सुण्णद कोडिय भंगणा-  
ट्टुगल्ल
- ४४ लि मुडे सिदिकेवेट्टद पडुवण मोनेयलि नट्ट कल्लिह्लि मुते  
हेरहिनकोडिय कल्लहुजिकेय मेल् नट्ट कल्लिह्लि मुदे माल्लद मेल्  
नट्ट कल् ॥
- ४५ मत्त नाडोल् कोट्ट स्यलवृत्ति कवूर कारवलि मूळवल्लियोत्तरि  
मूडल् वेल्कय्येय केय्यि तैकल् कय्क्कम्मवेडु नू आकवूरों-
- ४६ ल् महि गावुडन मनेयि पडुवल्लस्यगलदिप्पत्तौदु कय्नीलद  
मनेयौदु ॥ कुलियवाल्लिगयोत्तरिगोशान्य-
- ४७ दलि केनेधरदेवर केय्यि मूडल् कूडिय कोल मत्तौदु वेसदियि  
तैकल् हन्निकय्यगलदिप्पत्तौदु कय्नीलद मनेयौदु ॥
- ४८ हरिगन्वेयाल्लोत्तरि पडुवल् हिगळजेय बट्टेयि बडगल कोल  
मत्तौदु बडगण केरियलि हन्निकय्यगलदिप्पत्तु
- ४९ कय्नीलद मनेयौदु ॥ चच्छक्कियलि मूडण प्रमुमान्यदोलगे  
वोच्चुळनेरियि मूडल् मुदुगोडेय बट्टेयि तैकल् हारव-
- ५० गोल मत्तर् मूवत्तु मेट्टिगुत्त नागगन मनेयि बडगल् हन्निक-  
य्यगलदिप्पत्तु कय्नीलद मनेयौदु ॥ वेल्गलेय हलि हद्रिगु-
- ५१ तियोत्तरि मूडणोत्तिपडुवल् कम्म नाल्नूरवत्तु ॥ उच्चुगावेय  
हलि निट्टूरोत्तरि नैक्कय्यदोल् महाजनगल् कोट्ट-
- ५२ गोडगेय अप्पेय मावन्तनुवल्लियलि कोट्ट केय सीमे कडेय केरियि  
बडगल् डुलगन गुत्तियि मूडल् सावन्जन कोडगे-
- ५३ रियि तैकल् सेल्लमराल्लि पडुवल् नट्ट कल् मूडगेरियलि दनगर  
मनेय स्यलदोल् हदिना (ल्लु) गय्यडुवने मुतेरडु गोडिगे ॥  
कण्णगावेया-



- ५४ त्तरि नैर्ऋत्यदह्लि एलेदोंटं हाखगोल मत्तरोंदु कम्मवेल्नूरखत्तेंदु  
तेंकणि वंद मुगुलिय हल्लवदके तेंकण हेंले प-
- ५५ हुवला हलं वडगरुखंवाविय तोंटं । मूडल् मूलस्थानदेवर तोंटं ।  
आग्नेयकोणोरुल नडुवण देवालयद तोंटं । आ ए-
- ५६ लेय तोटदि तेंकला हल्लदि मूडल् हूदोंटं कम्मं नाल्नूर ॥ ई  
सामेगलोलेल्ल नट्ट कल्लगल् ॥ ओसेदां शासनमार्गदि नृपरदार्  
पालिप्परी
- ५७ धर्ममं निसदं तत्सुकृतात्मरात्मवलमित्रप्रेयसीगोत्रपुत्रसमृद्ध-  
त्वदोलोंदि विश्वधरं निष्कंटकं माडि संतोसदि राज्यमनप्पु-  
क्केदु पडेव-
- ५८ दीर्वायुमं श्रीयुमं ॥ एनिसुं लोमदे शासनक्रममनावों मीरिदं  
तद्दुरात्मनसेव्याचरणान्वितं पलिने पैशून्यक्के पापक्के भाजन-  
नल्पा-
- ५९ यु रुजाविलं रिपुहतात्मोर्वातलं दुर्व्वलं घनदुःसास्पदनागलं  
नरकदोलोल् काडुगुं मूडुगुं ॥ सामान्योयं धर्मसे-
- ६० तुर्तुपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः । सर्वानेतान् भाविनः  
पार्थिवेद्रान् भूयो भूयो याचते रामनद्रः ॥ स्वदत्तां परदत्तां
- ६१ वा यो हरेत वसुन्धरां पण्डि वपसहस्राणि विष्ठायां जायते  
कुमिः ॥ प्रहृत्तारिव्रजकातवीर्यसच्चिवं श्रीवीचिराजं यशोमहि-
- ६२ तं पेलिमेनल्के शासनमनोल्पिं बालचंद्रं गुणाग्रहि विद्वज्जन-  
संमतस्फुटपदार्थालंक्रियासंकुलावहमप्पन्तिरे पेल्दनिन्तु कवि-  
कन्दर्प दुवाधोश्वरं ॥

[ इन लेखका मारांग जै० जि० सं० भाग ३ में क्रमांक ४५४ में दिया है । किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हो सका था । यह लेख भी पहले लेखके ही दिन अर्थात् पौष शुक्ल २ शक ११२७ को लिखा गया

था । इसमें भी रट्ट वंशके राजा कर्तवीर्य ( चतुर्थ ) तथा उनके मन्त्री वीचणका उनके पूर्वजोंके साथ परिचय दिया है । बेलगाँवमें वीचणके द्वारा स्थापित रट्टजिनालयके अधिष्ठाता शुभचद्र भट्टारक थे । ये मूलमघ — कोण्डकु दाचय देसीयगण पुस्तकगच्छके मल्धारिदेवके शिष्य नेमिचद्रके शिष्य थे । इन्हें कूण्ड प्रदेशके कोरवल्लि विभागका उम्बरवाणि ग्राम दान दिया गया था । ]

[ ए० इ० १३ पृ० २७ ]

३२०

घालूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड, राज्यवर्ष १६ = सन् १२०५

[ इस लेखमें होयसल राजा वीरवल्लाल २ के समय राज्यवर्ष १६, क्रोधन सवत्सरमें आपाठ व० ३ बुधवारके दिन मेषचद्रभट्टारकके शिष्य कसप गावुण्डी इस निमिधिको स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१९ ]

३२१

घालूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड, १३वीं सदी

[ यह निमिधिलेख बहुत घिस गया है । 'श्रीवीतराग' इतने अक्षर पढ़े जा सकते हैं । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१४ ]

३२२

चेत्तगामे ( मैसूर )

कन्नड, सन् १२०६

१ स्वस्ति श्रीमत् वीरवल्लालदेववर्षदं १६ नेय क्षयसंव-

२ त्सरद माद्रपद व ११ वृहस्पतिवारदन्दु कमलसेन-

३ देवर गुड्डि जकौव्वे समाधिनिधियिं मुडिपि सुगति-

४ य प्राप्तेयादलु ॥ श्रीवातरागाय नमो

[ इस लेखमें होयसल राजा वीरवल्लालके १६वें वर्ष क्षयसंवत्सरके भाद्रपद कृष्णपक्षमें ११ को कमलसेनकी शिष्या जकौव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

३२३

हंचि ( मैसूर )

सन् १२०७, कन्नड

[ यह लेख सन् १२०७ का है । होयसल राजा वीरवल्लालके राज्यमें नागरखण्ड प्रदेशके वान्चवनगरमें कदम्बवंशीय सामन्त वोप्पके पुत्र ब्रह्मका शासन चल रहा था । उस समय सावन्त मुद्दने मागुण्डिमें एक वसदि वनवायी तथा उसे कुछ भूमि दान दी । यह दान मूलसंघ-काणूर गण-तित्रि-णोक गच्छके अनन्तकीर्ति भट्टारकको दिया गया था । उनको गुरुपरम्परा इस प्रकार है — गोवर्धन सैद्धान्ति-मेघनन्दि सैद्धान्ति-दिवाकर सिद्धान्तदेव-पद्मनन्दि सैद्धान्त — मुनिचन्द्र सैद्धान्त — भानुकीर्ति सैद्धान्त — अनन्तकीर्ति भट्टारक । मुद्दकी प्रशंसा विस्तारसे की है तथा उसे रेचचमूपतिके समान कोप्पण तीर्थका रक्षक कहा है । ]

[ ए. रि. मै. १९११ पृ० ४६ ]

३२४

आनन्दमगलम् ( चिगलपेट, मद्रास )

राज्यवर्ष ३८ = सन् १२१६, तमिल

[ इस लेखमें विणैयाभसूर कुरवडिगलके शिष्य वर्धमानपेरियडिगल्-द्वारा जिनगिरिपल्लिम एक श्रावकको आहारदान देनेके लिए ५ कलजु ( सुवर्णमुद्रा ) अर्पण करनेका उल्लेख है । यह लेख चोल राजा ( कुलोत्तु-ग३ ) मदिरैकोण्ड परवैसरिवमन्के ३८वें वर्षका है । ]

[ रि सा ए १९२२-२३ क्र ४३० पृ २५ ]

३२५

मनगुन्दि ( धारवाड-मंसूर )

शक ११३८ ४० = सन् १२१६-१८, कन्नड

[ यह लेख कदम्ब राजा जयवेशि तथा वज्रदेवके समय जैन व ७, शक ११३८ तथा कार्तिक शु ८, शक ११४० इन तिथियोंका है । इसमें मणिगुन्दिके जिनालयके जीर्णोद्धारके लिए कई भव्य पुरुषो-श्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है तथा वहाँके जैन आचार्योंकी नामावली दी है । ]

[ रि सा ए १९२५-२६ क्र ४३९ पृ ७५ ]

३२६

कंदमल ( बिजापूर, मैसूर )

राज्यवर्ष (२) १ = सन् १२३०, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा सिंहदेवके राज्यवर्ष (२) १, विक्रम सवत्सर ज्येष्ठ अमावास्याका है । इसमें मूलसध-काणूरगणके सकलसद्व भट्टारककी शिष्या नागभिरियब्बे-द्वारा निर्मित पार्श्वनाथ वसतिके लिए भूमि आदिके दानका उल्लेख है । ]

[ रि सा ए. १९२८-२९ क्र ई ५० पृ ४५ ]

३२७

## हलेवीड ( मैसूर )

शक ११५७ = सन् १२३६, संस्कृत-कल्लड

- १ श्रीमद्देवासुरार्हान्द्रपूजितश्रांगजन्मजिद् देवः श्री-
- २ वीरतीर्थेशः पायाद् मव्यजनव्रजान् ॥ (१) श्रीमल्लोकैकविख्या-
- ३ तमूलसंघो विराजते कोण्डकुन्दान्वयस्तत्र देशीयाख्यगणा-
- ४ ग्रणाः ॥ (२) श्रावार्नन्दिस्तिद्वान्तचक्रवर्त्यनुजो महान्  
श्रीमद्वा-
- ५ हुबर्ली नाम मुनिः सिद्धान्तपारगः ॥ (३) सकलज्ञ-  
प्रतिपादितोमयनया-
- ६ भिज्जानसंपन्नको नदनोद्यद्दवदावतोयदविभुः सद्धर्मरक्षामणिः  
दलिता-
- ७ षादशसत्पदार्थनिपुणः षड्द्रव्यवेदो जयत्यखिलोर्वानुतचारु  
बाहुबलिसिद्धान्तीश्वरः-
- ८ सन्मुनिः ॥ (४) तस्याग्रशिष्योखिलशब्दशास्त्रपारंगमः स्वात्म-  
सुखानुवर्ती । स्याद्वादविद्याकुश-
- ९ लो विमाति कामाम्बुजेन्दुः सकलेन्दुयोगी ॥ (५) अर्हणंदिमुनी-  
न्द्राणां चारित्रं विस्मयावहं ।
- १० तेषां प्रणयिनी वाणी तस्यास्तन्मुनयः प्रियाः ॥ (६) जल्प-  
वितण्डकथासु च शब्दाग-
- ११ मजिनमुन्योत्थपरमागमयोरुन्निद्रं यच्चित्तं स त्रैविचारोर्हणन्दि-
- १२ मुनिः ॥ (७) एष ध्रुतगुरुर्यस्य सकलेन्दुमहाव्रतः । तस्य  
विद्यामहाप्रादिर्मा-
- १३ दशैर्वर्ण्यते कथं ॥ (८) इत्थंभूतो यमीशो वरजिनमुनिसद्गुन्द-  
मध्ये विराजत् षड्विंशत्यधि-

- १४ तोरुर्जितचरितपर सप्ततत्त्वप्रवेक्षी । प्रायश्चित्तादिषट्कद्विगुणित-  
सुतपाश्र्वय-
- १५ वर्यप्रसिद्धो द्वात्रिंशदमागसद्भावयुतसकलेन्द्रवर्तीन्द्रो विमाति ॥  
(९) एव कतिपय-
- १६ काले प्रवर्तिते ग्रामनगरखेडेपु तत्रत्यामन्योत्पलविकाशयन्  
सकलचन्द्रमु-
- १७ निरायाति (॥ १०) सत्पाण्ड्यदेशमध्यस्थितविलिचाग्रामचैत्य-  
गृहमासाद्य ज्ञात्वा स्वान्त्य
- १८ त्रिदिनादनशनविधिना त्रिविष्टप संप्राप्त ॥ (११) मप्ताप्रवाणे-  
न्दुशशिप्रमाब्दशकाचये म-
- १९ न्मथदत्तरे च सत्पाण्ड्ये शुद्धतृतीयकेन्दुवारंगमत् श्रीमकलेन्दु-  
देव ॥ (१२) अरह नम
- २० श्रीमत्पूर्वार्णन्दिमिद्धान्तचक्रवर्तिगल मधमरण बाहुबलिसिद्धान्ति-  
देवर दीक्षा-
- २१ गुरुगल् श्रीमदहणन्दित्रैविद्यदेवर् श्रुतगुरुगलुमप्य श्रीम-
- २२ कलचन्द्रमहार्कदेवर् श्रीमद्राक्षधानि दोरममुदद समस्तमन्य-
- २३ नगरगल् परोक्षवितयाधवागि माडिसिद्द मगलमहाश्रीश्री

[ यह निसिधिलेख राजधानी दोरसमुद्रके नागरिकोंने सकलचन्द्र भट्टा-  
रके समाधिमरणकी स्मृतिमें स्थापित किया था । दोरनन्दि सिद्धान्तचक्र-  
वर्तीके गुरुबन्धु बाहुबलि मिद्धान्तीसे दीक्षा लेकर अर्हणदि मुनीन्द्रके पास  
सकलचन्द्रने शास्त्राध्ययन किया था । उनकी मृत्यु पाण्ड्य देशके विलिचा  
ग्राममें फाल्गुन शु० ३, सोमवार शक ११५७ ममथ मधत्तरके दिन हुई  
थी । वे भूलसध-क्रीण्डकु-दान्त्यदेशीयगणके आचार्य थे । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७४ ]

३२८

हूचिनसिगलि ( धारवाड, मैसूर )

शक ११ (६) ७ = सन् १२४५, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा सिघणदेवके समय चैत्र शु० ५ रविवार, विरोधकृत् संवत्सर, शक ११(६)७ के दिन लिखा गया है। इसमें एक श्राविका-द्वारा सिगलि ग्राममें चैत्यालय बनवानेका उल्लेख है। इस व्रसदिके शान्तिनाथदेवके लिए महाप्रधान सर्वाधिकारि प्रभाकरदेवने तथा पुलिगेरेके मन्नेय एवं आठ हिट्टुओंने कुछ भूमि दान दी थी। ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २९६ ]

३२९

कलकेरि ( विजापुर, मैसूर )

शक ११६७ = सन् १२४५, कन्नड

[ इस लेखमें यादव राजा सिघणदेवके समय भाद्रपद शु० ४ रविवार शक ११६७ क्रोधि संवत्सरके दिन महाप्रधान मल्ल, वाच तथा पायिसेट्टि-द्वारा निर्मित अनन्ततीर्थकरमन्दिरके लिए कलुकेरेके महाजनों-द्वारा भूमि आदि दान देनेका उल्लेख है। यह मन्दिर कमलसेन मुनिके उपदेशसे बनवाया गया था। ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई ५३ पृ० १८६ ]

३३०

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक ११६६ = सन् १२४७, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा सिंहणके समय ज्येष्ठ अमावास्या, शक ११६९, प्लवंग संवत्सरके दिन लिखा गया है। इसमें महाप्रधान वीचिराजकी कन्या राजलदेवी-द्वारा पुरिकरनगरके श्रीविजयजिनालयके लिए कुछ भूमि तथा द्रव्य दान दिये जानेका उल्लेख है। इनके गुरु पद्मसेन मुनि थे। ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ९ पृ० १६१ ]

३३१-३३२

शिगिकुलम् ( तिनेवेली मद्रास )

सन् १२५३, तमिल

[ ये दो लेख भगवती मन्दिरके दीवारोपर खुदे हैं । पहलेकी तिथि मारवमन् सुन्दर पाण्ड्यदेव ( द्वितीय ) के राज्यवर्ष १५ का ३६०वा दिन यह दो है तथा दूसरेकी तिथि कोणेरिणमैकोण्डानके राज्यवर्ष १५ का ३८८वां दिन यह दो है । पहलेमें जो राजाज्ञा है उसीका पालन होनेका वर्णन दूसरे लेखमें है । इस आज्ञाके अनुसार राजमन्त्री अण्णन् तमिलप्पलवरैयाकी प्रार्थनापर राजा द्वारा स्थानीय जिनमन्दिरकी भूमिको करमुक्त किया गया था । यह भूमि पुगलोकटनायनरलूरनिवासी मदि सागरन् आदिमट्टारकन्-द्वारा मन्दिरको अर्पित की गयी थी । मन्दिरका नाम 'यायपरिपालपेम्बल्लि तथा उमम स्थित जिनमूर्तिका नाम एणक्कु-नरलनायकर् था । मन्दिर जिथ पहाड़ीपर था उसको जिनगिरिमल्लै यह नाम दिया गया था । वर्तमान समयमें इस मन्दिरकी जिनमूर्ति गौतम ऋषिके नामसे पूजी जाती है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० २६९-७० पृ० १०५ ]

३३३

सहेट महेट ( उतरप्रदेश )

सवत् ११७७ = सन् १२५५, ससृत्त-नागरी

[ तीन चरणपादुकाओके एक पट्टपर यह लेख है । इसके मध्यमें स्वत् ११७७ ऐसा निर्माणकालका उल्लेख है । लेखका अन्त 'प्रणमति नित्य' इन अक्षरोंमें हुआ है । अतः यह जैन लेख प्रतीत होता है । ]

[ रि० आ० स० १९१०-११ पृ० १८ ]



३३४

विजापूर ( मैसूर )

शक ११७९ = सन् १२५७, कन्नड

[ यह लेख करीमुद्दीनकी मसजिदमें पाया गया । यह मसजिद एक जैन मन्दिरके स्थानपर बनवायी गयी थी । इस मन्दिरके आचार्य करसिदेवके लिए यादव राजा कन्हरदेवके समय शक ११७९ में कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है । ]

[ रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२४ ]

३३५

वस्तिहल्लि ( मैसूर )

सन् १२५७, कन्नड

[ यह मूर्तिलेख होयसल राजा नरसिंहके समय सन् १२५७ का है । इस समय श्रीकरणद मधुकण्णके पुत्र विजयण्ण तथा दोरसमुद्रके अन्य जैनोने मूलमंघ-देसिगण हनसोगे शास्त्राके शान्तिनाथ मन्दिरका निर्माण किया था । इस मन्दिरके लिए हीरगुप्ते नामक ग्राम नयकीर्ति सिद्धान्तचक्रवर्तिको अर्पित किया गया था । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४९ ]

३३६

कलकेरि ( विजापूर, मैसूर )

राज्यवर्ष ४ = सन् १२६०, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा कन्नरदेवके राज्यवर्ष ४ साधारण संवत्सरमें लिखा गया था । इसमें अनन्ततीर्थकरमन्दिरके लिए रंगरस-द्वारा-पुत्र प्राप्तिके उपलक्ष्यमें कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । करसंग्राहक सर्व-देव नायक-द्वारा भी इस समय कुछ दान दिया गया था । ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ५४ पृ० १८६ ]

३३७

नेगलूर ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष (६) = सन् १२६२, कछड

[ यह लेख यादव राजा कथरदेवके राज्यवर्ष (६) विरोधी सवत्सरमें भाद्रपद शु० १४, गुरुवारको लिखा गया था । इसमें कुलचन्द्रभट्टारकके शिष्य सकलचन्द्र भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० १६२ पृ० १०७ ]

३३८

वालूर ( धारवाड, मैसूर )

शक ११८४ = सन् १२६२, कछड

[ इस निसिधि लेखमें कहा गया है कि सेंवूरके नावय्यकी माता चेकवाने यह निसिधि स्थापित की । लेखको तिथि पौष शु० ११, सोमवार, शक ११८४, दुमति सवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१८ ]

३३९

वालूर ( धारवाड, मैसूर )

१३वीं सदी, कछड

[ इस लेखमें यादव राजा कथरदेवके राज्यकालमें नल सवत्सरके पौष मासमें गुरुवारके दिन इस निसिधिसे स्थापित किये जानेका उल्लेख है । लेख बहुत घिस गया है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१७ ]

३४०-३४१

## हत्तिमत्तूर ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ५ तथा ९ = सन् १२६५ तथा १२६९, कन्नड

[ ये दो लेख हैं । पहला लेख यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ५ में कार्तिक व० १३, बुधवार, क्रोधन संवत्सरके दिन सेवयर जवकयकी पत्नी मादवेके समाधिमरणका स्मारक है । दूसरेमें महादेवके राज्यवर्ष ९ में हत्तिमत्तूरकी वसदिके आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है । (न) न्दिभट्टारकदेवका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ६८-६९ पृ० ९८ ]

३४२

## हलेवीड ( मैसूर )

सन् १२६५, कन्नड

[ यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय सन् १२६५ का है । इस वर्षमें राजा-द्वारा त्रिकूट रत्नत्रय शान्तिनाथ जिनालयके लिए माघ-नन्दि सैद्धान्तिको कल्लनगेरे ग्राम दान दिया गया था । माघनन्दिकी गुरु-परम्परा इस प्रकार है — मूलसंघ — नन्दिसंघ-बलात्कारगणके वर्धमानमुनि-जो होयसल राजाओंके गुरु थे, श्रीधर त्रैविद्य-पद्मनन्दि त्रैविद्य-वासुपूज्यसैद्धान्ति-शुभचन्द्र-भट्टारक-अभयनन्दिभट्टारक — अरुहण्दि सिद्धान्ति, देवचन्द्र, अष्टो-पवासि कनकचन्द्र, नयकीर्ति, मासोपवासि रविचन्द्र, हरियनन्दि, श्रुतकीर्ति त्रैविद्य, वीरनन्दिसिद्धान्ति, गण्डविमुक्त, नेमिचन्द्रभट्टारक, गुणचन्द्र, जिनचन्द्र, वर्धमान, श्रीधर, वासुपूज्य, विद्यानन्द स्वामि, कटकोपाध्याय श्रुतकीर्ति, वादिविश्वासघातक मलेयालपाण्ड्यदेव, नेमिचन्द्र, मध्याह्नकल्पवृक्ष वासुपूज्य । श्रीधरदेव-वासुपूज्य — उदयेन्दु — कुमुदेन्दु — माघनन्दि । माघनन्दिके चार

ग्रंथोका उल्लेख किया है - सिद्धान्तमार, आवकाचारसार, पदार्थसार तथा शास्त्रमार समुच्चय । इनके शिष्य कुमुदचन्द्र पण्डित थे । अन्तमें इस दानके सहायकके रूपमें महाप्रधान सोमेश दण्डनायकका उल्लेख किया है । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४८ ]

३४३

अणिगोरि ( धारवाड, मैसूर )

शक ११८९ = सन् १२६७, कन्नड

[ इस लेखमें चैत्र व० ४, मंगलवार, शक ११८९, प्रभव संवत्सरके दिन मूलसद्य-कोण्डकुन्दान्वयके सोमदेवाचार्यकी शिष्या आकलपे अम्बेके समाधिस्मरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २०४ पृ० ५३ ]

३४४

सगूर ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १ = सन् १२६९, कन्नड

[ इस लेखमें यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ९, विभव संवत्सरमें नदिभट्टारकके शिष्य नयकीर्ति भट्टारकके शिष्य नालप्रभु गगर सावन्त सोवके समाधिस्मरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई १६८ पृ० १०७ ]

३४५

हुलिमेरे ( मैसूर )

सन् १२७१, कन्नड

१ स्वस्ति प्रजोत्पत्तिसंवत्सर चैत्र सु १ वि ददु धोमत् प्रतापवीर  
होयसल श्रीवीरनारसि

२ वाटुनं सोमेयदण्णायकरु मेय्दुन वाचेयदण्णायकरु होंकुंदद वसदि जीर्णवा.....

३ दण्णायकरं जीर्णोद्धारवं माडिसिके - य निडिसिदरु

[ इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके शासनकालमें चैत्र शु. १, गुरुवार, प्रजोत्पत्ति संवत्सर, के दिन होंकुंदकी वसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। यह कार्य सोमेय दण्डनायकके बहनोई वाचेय दण्डनायक-द्वारा किया गया था। लिपि १३वीं सदोकी है। संवत्सर नामानुसार यह वर्ष सन् १२७१ होगा जब नरसिंह तृतीयका राज्य चल रहा था। ]

[ ए० रि० मै १९३७. पृ० १८७ ]

३४६

मुलगुन्द ( धारवाड, मैसूर )

शक ११९७ = सन् ११७५, कन्नड

[ यह लेख वैशाख व. १ (३), गुरुवार, शक ११९७ युव संवत्सरका है तथा पार्श्वनाथवसदिके भीतरी दीवालमें लगा है। इसमें सरदूरके तिलकरसके मन्त्री देवण्णके पुत्र अमृतैयके समाधिमरणका उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९१ पृ० ८ ]

३४७

अमरापुरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

शक १२०० = सन् १२७८, कन्नड

[ यह लेख निडुगल्लुके महामण्डलेश्वर इरुगोण चोल महाराजके समय आपाठ शु० ५ सोमवार शक १२००, ईश्वर संवत्सरका है। इसमें मूलसंघ-देशियगणके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य वालेन्दु मलघा-रिदेवके उपदेशसे संगयन वोम्मिसेट्टि तथा मेलव्वेके पुत्र मल्लिसेट्टि-द्वारा

तैलगेरेके प्रसन्नपाश्वदेवके लिए २००० वृक्षाके सदानके दानका वर्णन है ।  
इम मन्दिरका उपाध्याय जैन ब्राह्मण चलिपिल्ले था जो पाण्ड्यप्रदेशके  
मुवलाक्कायनल्लूरका निवासी था । ]

[ रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४० पृ० ७४ ]

३४८

### इन्दौर म्युजियम ( मध्यप्रदेश )

संस्कृत-नागरी, स० १३३४ = सन् १२७८

[ इस लेखमें पण्डिताचार्य रत्नकीर्ति-द्वारा एक मूर्ति स० १३३४ में  
स्थापित किये जानेका उल्लेख है ।

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १२३ ]

३४९

### पटा ( उत्तरप्रदेश )

संवत् १३३५ = सन् १२७८, संस्कृत-नागरी

[ मूलसघके गोलस्तक कुलके कुछ साधुओं-द्वारा संवत् १३३५ में  
तीन मूर्तियाँ स्थापित की गयी थीं ऐसा इस लेखमें वर्णन है । ]

[ रि० आ० स० १९२३-२४ पृ० ९२ ]

३५०

### कडकोल ( धारवाड, मैसूर )

शक १२०१ = सन् १२८०, कन्नड

[ इस लेखमें मूलसघके पद्ममेन भट्टारकके शिष्य सावन्त मिरियम  
गौडकी पत्नी चण्डिगौडिके समाधिमरणका तथा कई गौडों-द्वारा एक  
बसदिको दान दिये जानेका उल्लेख है । तिथि भाद्रपद शु० ६, सोमवार,  
शक १२०१, प्रमायि सवत्सर ऐसी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई ५१ पृ० १२३ ]

३५१

## सण्णमल्लीपुर ( मैसूर )

शक १२०७ = सन् १२८५, कच्छद

- |                               |                            |
|-------------------------------|----------------------------|
| १ स्वस्ति श्रीप्रतापचक्रवर्ति | २ होइसल वीर नरसिं-         |
| ३ हदेवरसरु पृथिवि-            | ४ राज्यं गेयुतिरलु         |
| ५ शक वरिष १२०७ नेय            | ६ सुमक्रितुसंवत्सरद पावु-  |
| ७ ण....हे-                    | ८ गगडे....                 |
| ९ ...गरवेइलु                  | १० ....लवुं                |
| ११ ...मतरु....                | १२ ....हि आतन तम्म....भाल- |
| १३ ....कोडगे....भाल           | १४ ....लुदु होलवेरहु भन्तु |
| १५ ....तिदने....सा-           | १६ यिर मत्तरु....विट्ट     |
| १७ ....सिद सासन ॥             | १८ ....दक्षिण तगहूरलि      |
| १९ .....                      | २० (ता) यूर गुलियपुर       |
| २१ ...यण्ण भल                 | २२ ....नागगावुड ॥ वीतराग   |

[ यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय शक १२०७ के फाल्गुनमें लिखा गया था । किसी हेगडे-द्वारा नागगावुडको तगहूर, तायूर तथा गुलियपुर ग्रामकी कुछ भूमि करमुक्त दी जानेका इसमें वर्णन है । अन्तमें वीतराग यह मुद्रा है इससे दानदाता जैन प्रतीत होते हैं । ]

३५२-३५३

ताडकोड ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १४ = सन् १२८५, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा रामचन्द्रके राज्यवर्ष १४, चित्रमानु सवत्सरका है । इस समय कन्नरदेवकी रानीकी आज्ञासे सर्वाधिकारी मायदेवने एक जिनमन्दिर बनवाया था । यहीके अग्य लेखमें चन्द्रनाथको नमस्कार कर बालचन्द्रके शिष्य श्रीवासुपूज्यका उल्लेख किया है । ]

[ रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४४-४४५ पृ० ७६ ]

३५४

कलकेरी ( मैसूर )

राज्यवर्ष १८ = सन् १२८९, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा रामदेवके राज्यवर्ष १८ में पौष शु० ८, वहुवार, (सर्व)धारि सवत्सरके दिन लिखा गया था । इसमें नागेयिसेट्टि और मादम्बके पुत्र मादय्यके समाधिमरणका उल्लेख है । इनके गुरु समन्त-भद्रदेव थे । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ७२ पृ० १६७ ]

३५५

हम्मल ( त्रि० धारवाड, मैसूर )

शक १२११ = सन् १२९०, कन्नड

[ यह लेख रामदेव ( यादव ) के समयका है । धर्मधोललके महानाडुके १६ प्रतिनिधि तथा नाडुके ८ प्रतिनिधि एक साल्ववीर चवुण्डके छोटे बंधु सप्तरस द्वारा नगर जिनालयके लिए कुछ करोका उत्पन्न दान देनेका इममें उल्लेख है । इसी मन्दिरको अम्बत्तोक्कलु तथा उगुरु ३००-द्वारा कुछ तेल वगैरहका दान भी दिया गया था । तिथि पौष शु० २, रविवार, शक १२११, सवधारी सवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४४-४५ क्र० एफ् ६३ ]



३५६

पोन्नूर ( उ० अर्काट, मद्रास )

राज्यवर्ष ७ = सन् १२९०, तमिल

[ यह लेख स्थानीय जैन मन्दिरमें है । मारवर्मन् विक्रमपाण्डयके राज्यवर्ष ७ में बिडालपर्खे नाट्टवर् ( ग्रामप्रमुखों )-द्वारा आदिनाथके पल्लिविलागम्में रहनेवाले लोगोसे प्राप्त करोंका उत्पन्न इस जिनमन्दिरमें पूजा आदिके लिए अर्पण किए जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१५ पृ० ४० ]

३५७

हुमच ( मैसूर )

शक १२१७ = सन् १२९५, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोवलांछ-
- २ नं जोयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशास-
- ३ नं स्वस्ति श्रीमतु सकवर्ष १२१७ नेय मनु-
- ४ मथसंवत्सरद् चैत्र सु पाडिव वृहस्प-
- ५ तिवारदंढु श्रीमत्सिद्धान्तयोगी-
- ६ द्रपादपंकजभ्रमर वम्मगवुड म-
- ७ हापुरूपो...गतो सिद्धि समाधिना ।
- ८ नमनार्ण...गुणसेनमुनिश्वरं
- ९ ...द्राविडान्वय
- १० मौलिना

[ इस निसिधिलेखमें श्रीमत् सिद्धान्त योगीन्द्रके शिष्य वम्मगवुडके समाधिमरणका उल्लेख है जो चैत्र शु० १, वृहस्पतिवार, शक १२१७ मन्मथसंवत्सरके दिन हुआ था । लेखके अन्तमें द्राविड अन्वयके गुणसेन मुनीश्वरका नाम भी आता है । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७ ]

३५८

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक १२१७ = सन् १२६५, संस्कृत-कलङ

[ इस लेखमें पुरिकरके शातिनाथ मन्दिरके लिए सोमय-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । तिथि भाद्रपद शु० ५, सोमवार, शक १२१७ ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई २८ पृ० १६३ ]

३५९

मन्नेर मसलघाड ( बेल्लारी, मैसूर )

शक १२१९ = सन् १२९७, कलङ

[ यह लेख यादव राजा रामचन्द्रदेवके समय मार्गशिर शु० ५ गुरुवार शक १२१९ हेमलम्बि सवत्सरका है । इसमें महामण्डलेश्वर भैरवदेवरस-द्वारा मूलसद्य देसिगणके नेमिचन्द्रराउलके शिष्य विनयचन्द्रदेवको भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान मोसलेवाडके जिनमन्दिरके लिए था जिसका जीर्णोद्धार महामण्डलेश्वर सालेवेय तिकमदेव राणेयके मन्त्री सावत पण्डितके पुत्र केशव पण्डित द्वारा किया गया था । ]

[ रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २५६ पृ० २२ ]

३६०

कोगलि ( बेल्लारी, मैसूर )

१३वीं सदी, कलङ

[ इस लेखमें होयसल राजा प्रतापचक्रवर्ति रामनाथदेव-द्वारा सुव सवत्सरमें कोगलिके चैन्नपाश्वजिनमन्दिरके लिए सुवणदान देनका उल्लेख है । ]

[ इ० म० बेल्लारी १९२ ]

३६१-३६७

चिप्पगिरि ( जि० वेल्लारी, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ ये छह लेख हैं । मूलसंघ-देशीयगण-कोण्डकुन्दान्वय-पोस्तकगच्छके केशणंदि भट्टारके शिष्योंके समाधिमरणका इनमें उल्लेख है । इन शिष्योंके नाम हैं—गोपरस, तथा उसकी पत्नी हालौवे, मादलदेवी, तिप्पयकी पत्नी जाकवे, नागलदेवी, मूलिग तिप्पय, वैतलेय वोम्मिसेट्टि तथा उसकी पत्नी वीमवे । लिपिके अनुसार ये लेख १३वीं सदीके प्रतीत होते हैं । इसी समयके एक और लेखमें माधवचंद्र भट्टारकदेवके शिष्य परिसयके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

( रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ६३-७२ )

३६८

अदरगुं चि ( जि० धारवाड, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख लिपिपर-से १३वीं सदीका प्रतीत होता है । यापनीय संघ-काडूरगणकी एक वसदिके लिए दी हुई जमीनकी सीमा बतलानेवाला यह पत्थर है । यह वसदि उच्छंगि नगरमें थी । यह दान अदिर्गुण्टेके गोण्ड और स्यानिकों-द्वारा दिया गया था । ]

( रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० ३ पृ० २५५ )

३६९

वसवपट्टण ( हासन, मैसूर )

१३वीं सदी कन्नड

१ श्रीमूलसंघ देशियगण पोस्तकगच्छ

२ कौंडकुंदान्वयद इंगलेस्वरद व-

- ३ लिय श्रीश्रुतकीर्तिदेवर गुड्डुगलु
- ४ कोंग नाड श्रीकरणद कावण्णगल मक्क-
- ५ लु नाकण्ण होनण्णगलु माडिमिद श्री-
- ६ नेमिनाथस्वामिगल प्रतिमे मग-
- ७ ल महा श्री श्री श्री

[ इस लेखमें श्रीकरणद कावण्णके पुत्र नाकण्ण तथा होनण्ण-द्वारा, जो कोंगु प्रदेशके निवासी थे, नेमिनाथकी इस मूर्तिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। ये दोनों मूलमघ-देसियगण-मुस्तकगच्छकी इगलेश्वरवलिक आचार्य श्रुतकीर्तिके शिष्य थे। लेखकी लिपि १२वीं या १३वीं सदीकी प्रतीत होती है। ]

( ए० रि० मै० १९४४ पृ० ४२ )

३७०

रत्नापुरि ( मैसूर )

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[ यह दो पक्तियोंका लेख एक मूर्तिके पाद-पीठपर है जिसमें किसी-भट्टारकदेव-द्वारा इस मूर्तिको स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वीं या १३-वीं सदीकी प्रतीत होती है। ]

[ मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित ] [ ए० रि० मै० १९४४ पृ० ७० ]

३७१

बेलगोल ( माड्या, मैसूर )

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[ इस छोटे-से मूर्ति-लेखमें ब्रह्मिल सध-नन्दिसध-अरुगल अवयवके कुछ व्यक्तियों-द्वारा इस पार्श्वनाथ मूर्तिको स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वीं या १३वीं सदीकी प्रतीत होती है। ]

[ मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित ] [ ए० रि० मै० १९४४ पृ० ५७ ]

३७२

विदिरूर ( शिमोगा, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

- १ श्री मैणदान्वयद देसियगणद नागर एक्कगू डिय सु-
- २ मचंद्र देवरु माडिसिद वसदिगे ॥ श्रीजिनपद-
- ३ पंकजविराजितमधुकरन् एनिष्प मल्लि कोटं
- ४ पूजितवेने तीर्थकरव्राजित प्रतिकृतिय-
- ५ नुचिन कडितले गोत्रं ॥

[ इस लेखमें विदिरूर ग्रामके वसदिमे मल्लि नामक व्यक्ति-द्वारा इस चौवीसी मूर्तिके अर्पण किये जानेका वर्णन है । यह वसदि देसियगण-मैण-दान्वय-कडितले गोत्रके सुभचन्द्रदेव-द्वारा बनवायी गयी थी । लेखकी लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११४ ]

३७३

होंगनूर ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमूलसंघ श्रीक्राण्वद श्रीसकलचंद्रमहा-
- २ रकदेव सिप्यरु माधवचंद्रदेवर गुड्डुगलु
- ३ उमयनानादेसिगलु माडिसिद होंगनूर शा-
- ४ न्तिनाथदेवर जोगवड्डिगेय वसदि मंगल महा

[ यह लेख एक शान्तिनाथ मूर्तिके पादपीठपर है जो वर्तमानमें लक्ष्मी-देवी मन्दिरके एक चबूतरमें लगी है । इसमें होंगनूरकी वसदिका निर्माण सकलचन्द्रके शिष्य माधवचन्द्रके शिष्यों-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । ये मूलसंघ-क्राण्व (क्राणूर गण) के अन्तर्गत थे । लिपि १३वीं सदी-की है । ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० १२६ ]

३७४

तचनन्दी ( मंसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमूलसव सूर-      २ स्तगण चित्रकूटान्वयद  
३ प्रतिबद्ध

[ यह छोटा-सा लेख एक खण्डित जिनमूर्तिके पादपीठपर है । मूल मघ-मूरस्तगण चित्रकूटावयके किमी गम्भीर द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी । लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५ ]

३७५

चरुण ( मंसूर )

१३वीं सदी, सहकुन-कन्नड

- |                          |                          |
|--------------------------|--------------------------|
| १ श्रीमद् द्रविल-        | २ सगस्थ नन्दिस           |
| ३ घे ह्यरगले अ-          | ४ नयेश्वरशास्त्र-        |
| ५ श आपाल                 | ६ मुनिरात्रिय            |
| ७ तच्छिष्यो विदुषा       | ८ श्रष्ट पद्मभक्त-       |
| ९ मुनीश्वर तस्य          | १० पुत्र तपोती-          |
| ११ धर्ममेतमहा            | १२ मुनि ॥ साय            |
| १३ शुद्ध ( ) स्वभावस्तो- | १४ शास्त्रा (न)परिग्रहा- |
| १५ त्वयक्तो जिनपदाग्रे   | १६ त्रिदिव गन्वान् बुध-  |

१७

[ इस लेखमें द्रविलमत्र-नदिमघ-अरुंगल अन्वयके आचार्य श्रीपालके प्रशिष्य तथा पद्मभक्तके शिष्य धर्ममेतके समाधिभरणका उल्लेख है । लेखकी लिपि १३वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १७२ ]

३७६

केलगेरे ( मांड्या, मैसूर )

१३वीं सदी-उत्तरार्ध, कन्नड

पश्चिमकी ओर

- १ श्रीमत्परमगंमोरस्थाद्वादा-
  - २ मोवलांछनं (१) जांचात् त्रैलोक्य-
  - ३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ।
  - ४ मद्रं मूयाज्जिनेन्द्राणां
  - ५ शासनायाघनाशिने । कुरीयं-
  - ६ ध्वान्तसंवातप्रमिन्नवनमान-
  - ७ वे । स्वस्ति समधिगतपंचमहाश-
  - ८ व्द महामंडलेश्वरं द्वारावतीपु-
  - ९ रदरार्धाश्वरं चादवकुलांवर-
  - १० छुमणि सम्यक्वचूढामणि मलपरो-
  - ११ लुगण्ड नामादिसमालंकृतरप्प
  - १२ श्रीविनयादित्यपोऽमलन् प्रेर्यं-
  - १३ ग विट्टिदेव नारसिंह बल्लाल नारसिं-
- दक्षिणकी ओर

- १४ वः द्य तस्य पुत्रं नारसिं-
- १५ हरमरु दोरसमुद्रदोलु पृथ्वीराज्यं नेयु-
- १६ त्तमिरलु स्वस्ति श्रीमूलसंव यलात्कारं
- १७ ...चदोलु अनेकाच र्यं न-
- १८ ....प्रवतिसल् अचरोलु वर्धमानमटा-
- १९ रकर श्रीधराचार्यं देवनन्दित्रैवि-

२० घर वासुपूज्यमिद्धान्तदेवरु शुभचन्द्र-

२१ महारक अमयनन्दिमहारक अर्धन-

२२ त्रिसिद्धान्तिगलु देवच(द्र) मिद्धान्तिगलु अष्टोप-

२३ वासि कनकचन्द्रदेवरु नयकार्नि चान्द्रा-

२४ यणदेवरु मामोपवाम रविचन्द्रसिद्धा-

२५ न्तिगलु हरियनन्दिसिद्धान्तिगलु शुभ-

२६ कीर्तित्रैविद्यदेवरु वीरणदिमिद्धान्तदे-

२७ वरु गण्डविमुक्त नेमिचन्द्रमहारकदेव

पूर्वकी आर

२८ ( वर्ध ) मानमुनीन्द्ररु श्रीधराचार्यर वा-

२९ सुपूज्यत्रैविद्यदेवरु उदयचन्द्रमिद्धा-

३० तदेवरु कुमुदचन्द्रमहारकदेवर मा

३१ माघनन्दिमिद्धान्तचक्रवर्तिगलु श्रीपादप-

३२ अगल्लिगे होटसलभुजवल श्रीवीरनारसिंहदेवरस-

३३ रु दोरमसुद्धद त्रिकूटरसनत्रयद श्रीशातिनाथ

३४ देवर अ(ग)भोग रगभोग आहारदान मुन्ताद

३५ समस्तधर्मकार्यवका

३६ चिककनेयनहलि

३७ ब येनुल्लया अष्टमो-

३८ ग तेजस्वाम्यसहितवागि माघन-

३९ दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगलु श्रीपाद-

४० पद्मगल्लिगे धारापूर्वक माहि

४१ कोट्टरु स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत

४२ बसुधरा



[ इस लेखके प्रारम्भमें होयसल वंशके राजाओंकी परम्परा नरसिंह ( तृतीय ) तक दी है । नरसिंहने राजधानी स्थित शान्तिनाथ जिनालयके लिए चिककत्रेयनल्लि ग्राम दान दिया । यह दान मूलसंघ-बलात्कारगणके कुमुदचन्द्र भट्टारकके शिष्य माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तीको दिया गया था । लेखमें कुमुदचन्द्रके पूर्ववर्ती १९ आचार्योंके नाम भी उल्लिखित हैं । ]

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १६४ ]

३७७-३७८

मूगूर ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

(अ) १ श्रंमूलसंघ देसियगण पुस्त २ कगच्छ कौडकुंदान्वयक

....हगेरे-

३ यताथंद प्रतिबद्ध भरतपण्डितरिगे ४ जविकयव्वेय मगलु....

(ब) १ मूलसंघ देसियगण पुस्तकगच्छ कौडकुंदान्वय इंगणेश्वर सं(ब)द  
श्रीभानुकीर्तिपं-

२ इतिदेवर शिष्यगण कान....नंदिदेवर गुडुगलप्प मूगूर समस्त

३ गावुण्डुगलु....कोडेयर वमदिय जीर्णोद्धारणवमा

४ डि....मिदरु मंगलमहाश्री

[ ये दो लेख मूगूरकी आदिनाथवसदि तथा पार्श्वनाथवसदिके मूर्तियोंके पादपीठोंपर हैं । पहलेमें मूलसंघ-देसियगणके क-हगेरे तीर्थसे सम्बद्ध भरत पण्डितके लिए जविकयव्वेकी कन्या ( नाम लुप्त )-द्वारा कुछ दान दिए जानेका उल्लेख है ! लेख अवूरा होनेसे विवरण स्पष्ट नहीं हो सकता । दूसरेमें मूल संघ-देसियगण-इंगणेश्वर संघके भानुकीर्ति पण्डितके शिष्य - नन्दिके शिष्य गावुण्डों द्वारा मूगूरको कोडेयरवसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लेखोंकी लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १८२-८३ ]

३७६

## हलेबीड ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

- १ जिननात्मीयेष्टद्वय निजगुर नयकीर्तिवतीश कसद्भूवि-
- २ नुत तानुक्किसेट्टिप्रभु पितृ तनगेकन्वे तायेंदोडिन्तीवन-
- ३ धिन्यातृतधात्रीतरुदोल् अर्दे पुण्योद्भवनातदोल् कूडि नितान्-
- ४ त नामिसेट्टि स्फुटविशदयशोलस्मिय ताने पेत्त ॥
- ५ श्रन्तात व्यवहारदि मत्र चित्रमात्रात
- ६ लदेव मान्वात दो
- ७ कोण्डु स्वान्त विश्रुत ना
- ८ मिसेट्टि दिवदोल् कैवत्यम ताल्दिद

[ इस लेखमें उक्किसेट्टि और एकब्बेके पुन नामिसेट्टिके समाधिमरण-का उल्लेख है । नामिसेट्टिके गुरु नयकीर्ति व्रतीश थे । लेखकी लिपि १३वीं सदीकी प्रतीत होती है । पंक्ति ५ के अस्पष्ट भागमें सम्भवत बीरबल्लाल ( द्वितीय ) के राज्यका और तिथिका उल्लेख था । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७८ ]

३८०

## तिरुनिडकोण्डै ( मद्रास )

१३वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें कहा गया है कि कुलोत्तु ग चोल राजा-द्वारा कनकच्चि-न्नगिरि अप्पर देवको अर्पित नल्लूर यह एक धार्मिक स्थान है । यह लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके वराण्टेमें लगा है तथा १३वीं सदीकी लिपिमें है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० २९९ पृ० ६५ ]

३८१

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

१३वीं सदी, तमिल

[ यह लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर जुदा है । इस मूर्तिकी-जिसे कच्चिनायककर कहा है - स्थापना आलप्पिरन्दान् मोगन् कच्चियरायर-द्वारा की गयी ऐसा लेखमें कहा है । लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१९ पृ० ६७ ]

३८२

कोट्टगोरे ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें देसियगण-इंगलेश्वर बलिके हेरगु निवासी आचार्य हरिचन्द्रके शिष्य माघनन्दि-द्वारा एक यान्तिनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१९ पृ० ३३ ]

३८३

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

१३वीं सदी, तमिल

[ यह लेख यहाँकी पहाड़ीपर चट्टनेके लिए बनी सीढ़ियोंके पास है । इन सीढ़ियोंका निर्माण गुणवीरदेवन् पण्डितदेवन्ने किया ऐसा लेखमें कहा है । लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१६ पृ० ६७ ]

३८४

हुकरी ( जि० बेलगांव, भैमूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख टूटा है । यापनीय सधके किसी गणके त्रिकीर्ति आचार्यका इसमें उल्लेख है । लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ रि० मा० ए० १९४२-४३ ई ६ पृ० २६१ ]

३८५-३८६

हले हुम्वलि ( जि० धारवाड, भैमूर )

१२वीं १३वीं सदी, कन्नड

[ यहाँके अनन्तनाथ बसदिमें दो लेख हैं । एक ब्रह्मदेवकी मूर्तिपर है । इसकी लिपि १२वीं सदीकी है । सेटि महादेवी-द्वारा इस मूर्तिको स्थापना-का इसमें निर्देश है । दूसरा एक जिनमूर्तिपर है । इसकी लिपि १३वीं सदीकी है । इसमें यापनीय सधके (क)दूर गणका उल्लेख है ।

[ रि० सा० ए० १९८१-४२ ई० ३३-३४ ]

३८७

मोट्टे चेन्नूर ( धारवाड, भैमूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १३वीं सदीकी लिपिमें है । तिथि चैत्र शु० १०, गुस्वार, सोम्य सवत्सर ऐसी दी है । इसमें जिनचन्द्रदेवके शिष्य वोम्मिसेट्टिके पुत्र बाचिसेट्टिके समाधिपरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १०८ पृ० १२९ ]

३८८-३८९

वनवासि ( उत्तर कनडा, मैसूर )

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[ यहां दो मूर्तिलेख हैं जो १२वीं-१३वीं सदीकी लिपिमें हैं किन्तु अस्पष्ट हैं । एकमें मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४३-४४ पृ० २८ ]

३९०

चिजापुर ( मैसूर )

शक १२३२ = सन् १३१०, कन्नड

[ इस मूर्तिलेखमें मूलसंघ-निगमान्वयके कृष्णदेव-द्वारा शक १२३२, साधारण संवत्सरमें इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० १६४ पृ० १३४ ]

३९१

वेल्लुगामे ( मैसूर )

सन् १३१९, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमतु यादवचक्रवर्ति भुजबलवी““वल्लाल““
- २ पदं ९ नेय सिद्धार्थिसंवत्सरद आपाद शु““
- ३ वार व्यतीपात संक्रान्ति शुभदिनद““
- ४ (श्री)मद् राजधानिपट्टणं वल्लिग्रामेय हिरियव-
- ५ सदिय मल्लिकामोदशान्तिनाथदेवर अष्ट-
- ६ विधार्च(न)गे श्रीमनु महाप्रधानं सेनाधिपति मल्लि-

- ७ यणदण्डनायकर नागरखण्ड जिह्दुल्लिगेयन्तेर-
- ८ डेप्पत्तुम दुष्टनिग्र(ह) शिष्टप्रतिपालन माहुत्त
- ९ सु(खस)क्याबिनोददि राज्य गेय्युत्तमिरे पट्टणद अधि-
- १० कारि हेगगडे मिरियण्ण तन्नतरालिकेय मूलेवर्तमु-
- ११ ख्यवागि हैजुकडधिकारि चावुण्डरायनु सोमय्य-
- १२ जु मन्नेयदे कोप(१)विसदधिकारि मालवेगगडे इन्तिजि-
- १३ वर ततम्म सुकम येत्तिणत्तक्क सर्ववाधा-
- १४ परिहारवागि मिरियण्ण आचार्य
- १५ पन्ननन्दिदेवर काल कचि धारापूर्वक माडि कोट्टर ई धर्म-
- १६ म प्रतिपालिसिदगे वारणासिक्कुन्नेन्नदलि साधिर
- १७ कविलेयि वेदपालरण ब्राह्मणों कोट्ट फल-
- १८ मक्कु

[ यह लेख होयसल राजा वीरबल्लालके राज्यवर्ष ९ सिद्धार्थिसवत्सर-  
में आपाढ शुक्लपक्षमें सक्रांतिके दिन लिखा गया था । राजधानि बल्लि-  
ग्रामेके मल्लिकार्जुनोदशान्तिनाथदेवकी पूजाके लिए पन्ननदि आचार्यको  
बुछ करोंका उत्पन्न दान दिये जानेका इसमें निर्देश है । यह दान हेगगडे  
मिरियण्ण, चावुण्डराय, सोमय्य और मालवेगगडे इन चार अधिकारियोंने  
दिया था । इस समय नागरखण्ड और जिह्दुल्लिगे प्रदेशपर महाप्रधान  
मेनापति मल्लियण्णका शासन चल रहा था । बल्लाल द्वितीय अथवा  
बल्लाल तृतीय इन दोनोंके ९वें वर्षमें सिद्धार्थि सवत्सर नहीं था । अतः  
अनुमान किया गया है कि यह बल्लाल ( तृतीय ) के २९वें वर्षके सिद्धार्थि  
सवत्सरका उल्लेख होगा । तदनुसार मन् १३१९ यह इस लेखका वर्ष  
होगा । ]

३६२

कुमठ ( उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १२६६ = सन् १३४४, कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघ, देसियगणके विशालकीर्ति राउलके अग्रशिष्य नागचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है । तिथि श्रावण व० ११, रविवार, शक १२६६, सुभानु मंत्रसर ऐसी दी है । ]

[ रि० ३० ए० १९४७-४८ क्र० २३९ पृ० २७ ]

३६३

रायद्रुग ( बेल्लारी, मैसूर )

शक १२७७ = सन् १३५५, कन्नड-संस्कृत

तालुक ऑफिसमें रखी हुई मूर्तिके पादपीठ पर

[ विजयनगरके राजा हरिहरके समय शक १२७७, मन्मथ संवत्सरमें यह लेख लिखा गया । कुन्दकुन्दान्वय, सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगण, मूलसंघके अमरकीर्ति आचार्यके शिष्य माधनन्दि व्रतोंके शिष्य भोगराज-द्वारा शान्तिनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका इसमें निर्देश है । ]

[ इ० म० बेल्लारी ४५८ ]

[ रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १११ पृ० १२ ]

३६४

होसाल ( द० कनडा, मैसूर )

शक १२७६ = सन् १३५७, कन्नड

[ यह लेख स्थानीय भग्न जिनमन्दिरमें है । इसमें विजयनगरके राजा वृक्कण महारायके जैन सेनापति वैचय दण्डनायकका उल्लेख है । तिथि शक १२७९ विलम्बि मंत्रसर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० २८४ पृ० ३१ ]

३९५

## तिरुनिडकोण्डै ( मद्रास )

शक १२८३ = सन् १२६१, तमिल

[ इस लेखकी तिथि धनु शुक्ल १३ बुधवार, शक १२८३ शुभकृत सवत्सर ऐमी दी है । इसमें शेम्बादि विल्वडरैयन्के पुत्र ( नाम टुप्प )-द्वारा अप्पाण्डार् मंदिरमें दीपके लिए भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । यह दान गोप्पण्ण उटैयार्की प्रेरणासे दिया गया था । लेख अप्पाण्डार् चन्द्रनाथमंदिरके मण्डपकी दीवालमें लगा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०३ पृ० ६५ ]

३६६

## साविकेरि ( धारवाड, मैसूर )

शक १(२)६८ = सन् १३०६, कन्नड

[ इस लेखमें मार्गशिरव० १(३), बुधवार, शक १(२)९८ नल सवत्सरके दिन बालेयहल्लिके बेल्प्पके समाधिभरणका उल्लेख है । उस समय विजयनगरके वीरबुक्करायका शासन चल रहा था । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३३ पृ० २७ ]

३६७

## गेरसोप्पे ( मैसूर )

शक १३०० = सन् १३७८, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगमीरस्याद्वादाभोधलाठन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन (१) श्रीमद्देव-
- २ जिनेन्द्राय तस्मानतमहारमने सर्वबोधविशिष्टाय मन्त्रान्ति-  
कुमुदेन्द्रवे (२) त वदे देवदेव सुरचि-



- ३ रमनघं चारुकैवल्यनेत्रं नित्यं निर्वाणरामाकुचविलिखितकाश्मोर-  
रागं वरांगं तुंगं देवेन्द्रानम्रपा-
- ४ दं गुणविलसदनन्तं स्ववोधात्मतत्त्वं मांगल्यं मन्यसार्थं निहत-  
मनसिजं नन्यधर्मस्वरूपं । (३) इदु
- ५ जम्बूद्वीपमंता भरतविषयदोल् पडुव मेरुसिद्धं...पदपिन्दा मेरुविं  
दक्षिणदे तुलु कौंगिन्दवी शुद्ध-
- ६ दीपं मुददिं...तेंगु...वलि पनसं नदीतीरदोल् कौंगु जम्बूसदनं  
चेल्वागि तोकुं
- ७...विदार हस्तिममूहं । (४) आ तुलुवाधीशरमणि...वदनमागि  
तोपुंदु नयदिं नीतियुत गेरसोप्पे सोलि-
- ८ सुतिपुंदु विमवदिंदायमरावतियं । (५) अन्ता नगिरिय राज्य-  
कधीश्वरनेनिसिद्ध मरुलयरसरन्वयसंप्रदायदा-
- ९ यदि चन्द कीर्तिगे जयस्तंमनेनिसिद्ध हेंवेभूपालन प्रतापवेन्तेन  
सान्द्र...देमकुन्दोद्गमकुमुदन-
- १० मलमल्लिकाफुल्लमुख्यवृन्दं गंगातरंगतरलहरहासं तारनीहारहारं  
मन्दिर्दो चारुकीर्ति...
- ११ प्रमवदनुनयवैविन...माल्पुदु श्रीहेंवेभूपालन निजयशमं  
वणिमल्ल वल्लना-
- १२ वं दक्षिणमण्डलिक...निजनिवास...सल्लक्षण राजराजकटकंगल  
मूरयन।-
- १३ यदे ताण्डमण्डलभूपर मन्दि रक्षिसु हेंवेराज वेनुतिपुंदु-
- १४ नलियदे नोल्पडं मावनियंककाररतिचक्रद हस्तपराक्रमांकनी  
हेंवनृपाल चित्रय-
- १५ शो...निन्नय दुन्दुमितादनंगलि जावलिशब्ददिं परिदु दूरदि  
संचरिसुत्तमिपुंदा...

- १६ येसेव राजहृदयगलु मिन्नगलाद वद्भुत । श्रीमद्देव  
गुरुगुणाद्भुतमहानागेन्द्रपचा-
- १७ स्य सन्दिदं हासद बैहालि महाहाकिनीनामोपद्रव पल्लव  
श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरा-
- १८ वासम श्रीमदनन्तपालगीगे नित्य दीर्घायुम श्रीयुम अन्ता  
नगिरियपुरवराधीश्वर मामा
- १९ वनियककार मावगेमलेव रायरगण्ड शिवसिंहामनचक्रवर्ति  
परसालुवदडुविमाड कलिगल मुराद
- २० सम्यक्तचूडामणि वसन्तराज्यचातुर्वर्ण्यकके डल्लुव रायरगण्ड  
हैवेभूपाल सुखमकथाविनो-
- २१ दर्दि राज्य गेय्युत्तिरलु आ गेरसोप्येय महाजनगल गुण-  
गलेन्तेन्द्रोडे ॥ वृ ॥ भद्ररोल् नानाजा-
- २२ तिपरदरप्रणी सम्यक्तरादो नैतर् पडेवर् जैनमार्गाश्रयजलनिधि-  
सवर्धितपूर्णचन्द्रर् मुदम क्रोधादि-
- २३ मू माहुद्वपेकुलनिवर् विट्ठु रादर् मुख्यमादधिपनखिल  
कलावल्लभर् कोतिवेत्तरताता-
- २४ मादण्डाधिपगलु सहजात कुलक्षत्रियरादरसुगलन्वयमेन्तेन्द्रोडे  
स्वस्ति समधिगतपञ्चमहा-
- २५ महिमप्रसिद्धमाद वनवासिपुरवराधीश्वरर् बैजयन्ती मधुकेश्वर-  
लब्धवरप्रसाद मृगमदामोद शोकण
- २६ महाबलेश्वरदिन्यश्रीपादपञ्चाराधकर परवलसाधकर हरमिवरवर-  
शूल निगलकमल्ल चल्लदकराम राय-
- २७ रगण्ड साहसमल्ल गण्डरडावणि सत्यराधेय साहसोत्तुग  
शरणागतउत्तपजर पश्चिमसमुद्राधिपतियप्प हैवे-
- २८ क्षत्रियकुलकमलवनमार्तण्ड परनृपतामरस पूर्णचन्द्रनेनिमिद  
वभवदेवरसर देवरसर-

- २९ राज्यलक्ष्मियेनिसिद्ध चन्द्रपुरवेण्व पट्टगदोलु राज्यं गेय्युव  
कालदोलु आ अरमुगलिगे पट्टवर्धनवाहत्तरनियो-
- ३० गिगल् जिदसेय्यनुं शिमकिवल्लयुतनुं षड्गुणसमर्थनुं राजक्षत्रिय-  
चतुर्दन्ता मोमेश्वरदण्डनायक-
- ३१ न अन्वयद् कान्तियेन्तेन्द्राडे श्रीसोमदण्डपुत्रनु मासुर कामण्ण-  
दण्डनायकनेतिपं मासनचक्र-
- ३२ वर्ति धर्मधारक मामन्त कान्तियेत्तनमलचरिणं श्रीमत्सोमदण्ड-  
नायकगे कामार्थं....तावु पुट्टिद् श्रीमद्रामणनेण्व हेग्गडेय-
- ३३ सुवेण्णपुत्रसंसेय्यकं रामं पुट्टिद्....दमरथसामर्थ्यदि....यनराजिता-  
रमणिगं साहित्यरत्नाकरमन्ता-
- ३४ रामणनेण्व हेग्गडे रामकगे तां पुट्टिद् शान्तं योजननम्बिपुत्र-  
नेतिमल् कुन्तीदेवि ममन्तु
- ३५ आपाग्दुराजगे तां शान्तं धर्मजनेन्तु पुट्टिद् वेला सम्यक्स्व-  
रत्नाकरमन्ता योजनमेट्टिय जननि रामकनम्बयमेन्तेन्द्राडे-
- ३६ वसुधेयोलु नेगल्ते....असमैय्यसम्पन्नहं दानगुणसम्पन्नस्मण  
नम्बिसेट्टियर तम्मसेट्टिमहोदरगेनिसिद्ध म-
- ३७ छिमेट्टि होशपमेट्टि....गुगाञ्जहं जैनजनवान्धवहं आ मेट्टरोलगे  
महावतनेनिसिद्ध आ होशपमेट्टि-
- ३८ .....
- ३९ ....शककाल....माविरद् सुत्तूर....

( अविष्ट ६ पंक्तियाँ पढ़ी नहीं जा सकतीं । )

[ यह लेख म. १३०० में लिखा गया था । गेरसोपेके राजा ह्वेय  
मुपालके शासनकालमें चन्द्रपुरमें समवेदेवरम शान्त कर रहे थे । उनके  
दो मन्त्री सोमण्ण दण्डनायक और कामण्ण दण्डनायक थे । सोमण्णकी पुत्र  
रामण्ण था जिसकी पत्नी रामक थी । उनके पुत्रका नाम योजनमेट्टि

था । इनके कुल्के हो-पनेट्टि तथा नम्बिसेट्टि इन व-पुओने दिये हुए दानका विवरण इस लेखमें दिया था । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५ ]

३६८

### हडजन ( मंमूर )

शक १३०(६) = सन् , १३८४, कच्छ

- १ स्वस्ति श्रीमनु शकवरिप १३० मवत्तरद
- २ ज्येष्ठ व १ आ । श्रीमनु मैसुनाद ह-
- ३ हडनद तडेर कुण्ड वम्मयनवर सुपुत्र हिरि-
- ४ य मादण्णनवर देवरिगे । श्रीमद् रायराजगुरु मडलाचार्य
- ५ सककविद्वज्जनचक्रवर्तिगलुमप्प सैद्धातिदेवर प्रियगुड्डि केशवदे-
- ६ ( वि )यर आ केशवदेवियर भक्त मारदेवियर स्वर्ग-
- ७ तरादर । अवर निसिदिय मात्तिमि आ तिमिदिय अर्चनेगे वि-
- ८ द तह क्षेत्र बसदिगे पूर्वदलुहगदेयि तैक्क व
- ९ तिन अम्मरिसदलु हत्तु खडुग गदेयनु धाराद-
- १० वंक्कागि नडव हागे आ हिरिय मादण्णनवर विट्ठलति-

[ यह लेख मण्डलाचार्य सैद्धांतिकदेवकी शिष्या केशवदेवकी वडा बहन मारदेवकी समानिगरणका स्मारक है । इस निसिदिकी पूजाके लिए हिरिय मादण्णने स्थानीय बसदिकी कुछ भूमि दान दी थी । लेखकी तिथि ज्येष्ठ व० १, रविवार शक १३० ( चौथा जक लुप्त है ) की है । तिथि और वारके योगसे यह शकवर्ष १३०६ निश्चित होता है । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० १६४ ]

३६६

## इन्दौर म्युजियम ( मध्यप्रदेश )

संवत् १४४२ = सन् १३८६, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख शान्तिनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इसमें संवत् १४४२ में प्रौढाचार्य श्री महाकोटिका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५९ ]

४००

## गेरसोप्पे ( मैसूर )

शक १३१४ = सन् १३९२, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादाभोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं । जिनगिरियदेशवेम्ब ललनामु-
- २ खक्के वेसेदिर्पां गेरसोप्पेगं वर सेज्जेकार सले दण्डिगंग्य छत्रसुचामरालियि वगेवुगे तोर्प हवेनृप रामकं....दम्मपु-
- ३ त्रनोद्वर्णं नेगले सन्नुतनाद जिनचैत्यजिनालय-मन्दिरंवरं कलियुगदोल् महापुरुष योजण तन्न मंगल....
- ४ मण समवेन्दु माविसि नितान्त....स्थानमं जिनालयंगलं सले माडि गोपुरसुमनोहर....विचित्र....वलर्यं अनन्तनाथन पति-
- ५ य....द्वे कृतार्थनो । अन्ता योजणसेट्टिय प्राणवल्लभेयाद् रामकन गुणंगलेन्तेन्दोडे श्रीमतु सन्....
- ६ तनाथन पदाम्बुमृगनु यो-
- ७ जणसेट्टि प्र....निनिचरु
- ८ लांग....रम्य....गोत्रचि-
- ९ तामणि पार्थिव....त्तपमने

- १० दोल् सत्प्रधोरोदात्त
- ११ सेव रामकनोष्पिदलो धरित्रियोलु
- १२ पतिमत्ते शीलवति भूनुतचारुचरि-
- १३ त्रै सकलजावदयापर मन्ततचतुर्वि-
- १४ धदानदोल् अतिनिपुणतेयिन्देसदलो
- १५ रामकक । निनमतवाक्यदोलु
- १६ ' सल जिनराजपदाब्जमृगे ता जननुत चारु-
- १७ सोले गुण सुव्रत दान पूजेयि
- १८ मुखि कामिनोजनशिरोमणि थो-
- १९ याम निजनामदि निजकुलोन्नति रामकनाप्पुतिदलु ।  
श्रीजिनराजपूजेयोलु श्रीमुनिराजपदान्नसवे-
- २० योलु नैजगुणगलि विनयदि मयादि निजभावनुष्टिपि पूजिमि  
मत्तियिदेरगि ता स्तुतिमाडियु कौर्ति-
- २१ योलिन्नु वणिण कोण्डी निजनामदि रामकनो धरित्रियोलु  
कमलदलायताक्षि कमलानने कमलमुगन्धि कामल
- २२ विमलहतागि रसयुतरी जिनराजपूजेयोलु समरमभावदोलु  
सले माणिक्येष्टिपुत्रि राम-
- २३ क क्रमगुणहस्तिक्खलतेय नेरे योप्पुवलो धरित्रियोलु कमला-  
करदोलु कमलिनि कमलदोलु
- २४ कमले पुट्टवन्तिर नागमनमलान्वयदोलु रामक विमलगुणामरणे  
पुट्टिदल् कलियुगदोलु
- २५ रामककन अन्वयमन्तेन्दोडे । हुलिगेरय पचवदित्तय मुन्दग  
हिरिय अगद्धिगे मुत्तय-
- २६ वाट किरिय रामसेट्टि आ मडुवल्लिगे गगायि अवर मळलु  
बैचेमेट्टियह आतन तगि सोमन्वे

- २७ आ सोमन्वेयनु आ हुलिंगरेय माणिकसेट्टिगे विवाहमादी....  
 अवर मगलु नागव्वे
- २८ आकेय तन्दे माणिकसेट्टि समस्तरु आ वैचिसेट्टि हुलिंगरंगंदि  
 हन्दिगुलदलि प्र-
- २९ ....आ नागव्वेयनु सलहि हिरिय हन्दिगुलद चन्द्रनाथ-  
 स्वामिगल चैत्यालयदोलु पूजं
- ३० आदिके आकार्य नडेवन्तागि वृत्तियनु बिट्टु शासनव हाकिसिदरु  
 आ वैचरसियु तम्-
- ३१ म सांसे नागवेयनु गेरसांप्पेय सेट्टि गुत्तवायि ओजंय मग  
 माणिकसेट्टियनु तानु विवा-
- ३२ हव माडि आ माणिकसेट्टियनन्वयमेन्तेन्दोडे गुच्छक्किय  
 नागिसेट्टिय मगलु रामव्वे आकेय पु-
- ३३ त्र माणिकसेट्टि माणिकसेट्टिगू नागवेयवरिगू जनिंसिद मक्कलु  
 हरिसेट्टि कामण-
- ३४ नेमण्णसेट्टि सरणसेट्टि संगप यिन्तैवरोलंगं रामक्कननु गेरसांप्पेय  
 रामण हेग्गडेय मंगराज-
- ३५ णन ओजणंगे विवाहव माडि आ वोजण्णसेट्टियू रामक्कनू  
 सुखसंकथाविनोददिं-
- ३६ दिहलिंगं गेरसांप्पेय अनन्ततीर्थकरचैत्यालवनारब्धिसि महा-  
 प्रतिष्ठेयनु माडिमि
- ३७ दिरुत्तं यिरलु सक वरुस सासिरद मूनूर इदिनालकनेय  
 प्रजापतिसंवत्सर-
- ३८ द कार्तिक शुद्ध पंचमि आदित्यवार सन्यसनसमन्वितवागि  
 स्वर्गस्तरादरु....मदवलिंगे
- ३९ रामक्कनवर तन्दे मोदलुगोण्डु चरित्रदिं नेगले विक्रमसंवत्सरद  
 आपाह-

४० सुध पचमि सुक्रवार रोहिणीनक्षत्रदल तुगममाधि

४१ आचन्द्रार्कमागि

४२ मूडे मत्तवन धोजण-

४३ सेट्टि रामक

४४ निपधिय कहिगे भगल महा आ

[ इस निपिधिलेखमें कार्तिक शु० ५, रविवार, शक १३१८, प्रजापति सवत्सरके दिन योजणसेट्टिकी पत्नी रामकके समाधिमरणका उल्लेख किया है। रामकने गेरसोपेमें अनन्तनीयकरका मंदिर बनवाया था। उसका बशवर्णन भी लेखमें दिया है। रामकके पिता माणिकसेट्टिकी मृत्यु आपाड शु० ५, शुक्रवार, विक्रमसवत्सरके दिन हुई थी। ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९७ ]

४०१

लक्ष्मणचरपुकोट ( विजगापटम्, आत्र )

सवत् १४४८ = सन् १३९२, सस्कृत-नागरी

[ इस मूर्तिलेखमें सवत् १४४८ में जिनचन्द्र भट्टारक-द्वारा इस मूर्ति-की स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह मूर्ति बीरभद्र मंदिरमें है। ]

[ रि० सा० ए० १९११-१२ क्र० ४७ पृ० ५० ]

४०२

संगूर ( धारवाड, मैसूर )

शक १३१७ = सन् १३६५, वज्रड

[ इस लेखमें जैन मल्लिकार्जुनके पीत्र तथा भगमदेवके पुत्र नेमण्ण-द्वारा संगूरके पार्श्वनाथ मंदिरको भूमि दान देनेका उल्लेख है। विजयनगरके सम्राट् हरिहरके समय गोवाके शासक माधवका यह सेनापति था। नेमण्ण-



के पिताका समाधिमरण पुष्य शु० ११, गुरुवार, युव संवत्सर, शक १३१७ मे तथा पितामहका समाधिमरण फाल्गुन व० १४, सोमवार, नल संवत्सर-मे हुआ था । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई १६७ पृ० १०७ ]

### ४०३

गूटो ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

१४वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

[ इस लेखमें विजयनगरके राजा हरिहरके समय इरुग दण्डनायक-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है । कोण्डकुन्दान्वयकी परम्परामें वक्रग्रीव, एलाचार्य, अमरकीर्ति, सिंहनन्दि तथा ववंमानदेशिकका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२०-२१ क्र० ३२६ पृ० १८ ]

### ४०४

हम्पी ( वेल्लारी, मैसूर )

शक १३१७ = सन् १३९५, संस्कृत-तेलुगु

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके खण्डित पादपीठपर है । तिथि फाल्गुन व० १, सोमवार, भावमंवत्सर ऐसी दी है । शक वर्षके अंक लुप्त हुए हैं । मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके धर्मभूषण भट्टारकके उपदेशसे इम्म-डिब्रुक मन्त्रीश्वर-द्वारा कुन्दनबोलु नगरमें कुन्थुतीर्थकरका चैत्यालय बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है । यह मन्त्री वचय दण्डनायके पुत्र थे । संवत्सरनामानुसार यह शक १३१७ का लेख प्रतीत होता है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ३३६ पृ० ४१ ]

४०५

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

१४वीं सदी, तमिळ

[ यह लेख विजयगण्डगोपालदेवके २०वें वषमें लिखा गया था ।  
पोन्नूरके निवासी अरुवन्दै आण्डाल् तिरुच्छोरुत्तुरै उडैयार्-द्वारा इस जिन-  
मन्दिरमें सन्ध्यासमय छह दीप प्रज्वलित रखनेके लिए तीन पल्लवतमाई  
तथा कुछ चावलके दानका इममें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३८ ]

४०६

द्विरेचौटि ( मंमूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- १ नमो वीतरागाय । श्रीमत्परमगमोरस्याद्वादामोघल-
- २ छन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन । सागरवारि-  
वेष्टितसमस्त-
- ३ धरारमणीघनस्तनामोगविदेग्विन विदितविस्तृतसारतराग्रहारदि
- ४ नागरखण्डपत्रपरिवंष्टनदि जननेत्रपुत्रिकारागमनित्तु माण्डुदे  
मनस्तु-
- ५ खद बनवासिमण्डल । नागरखण्ड बनवासंगागिकुं भूषण-बोलु
- ६ गिरंवागि मंरेगु नागलतापूगवनदिनेसेव तवे सौ
- ७ नागरखण्ड सागरमाणे तोपु
- ८ सुखकिम्बागि गे मरेपुदी ननुजना सेणिमेष्टि
- ९ बसद्विय माडिसिदर इन्तण्णतम्मदिरिव्वरु शान्तिजिनेश्वर-
- १० वसद्विय माडिसि सन्तोपदि सन्तमदि पडेदुर्द धराचन्द्र
- ११ गुणवार्धिय पडेदु बालुत्तिरे पलकाल पुरपनिधि नाग-

- १२ सेट्टि तन्नय पेंप्पि देसेवल्लरसियक्कनुमत मतं  
 १३ पडेदु सुखदिं वाल्वुदु स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर अरिराय-  
 १४ विमाद अगलिं भापेगे तप्पुवरायरगण्ड चतुस्समु-  
 १५ द्राधिपति श्रीवीरवुक्करायमहारायर राज्यं गेय्युत्तुमिं वि-  
 १६ रोधिसंवत्सर कार्तिकशुद्धतदिगे वर देवर नि-  
 १७ चन्द्रगुड्डिगलुमप्प सान्तिना-  
 १८ नाथदेवर अमृतपडि नन्दादीप  
 १९ केरेय केलगे गदे ख ४  
 २० या धर्मं प्रतिपालिसु  
 २१ वारणासि कुरुक्षेत्र  
 २२ कविलेय-  
 २३ पातकनक्कु श्रीशान्तिनाथ,

[ यह लेख कार्तिक शु० ३, विरोधिसंवत्सरके दिन वीरवुक्करायके राज्यकालमें लिखा गया था । वनवासि प्रदेशके नागसेट्टि तथा सेणिसेट्टि-द्वारा शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका तथा उसमें दीपादि पूजाके लिए ४ खण्डुग भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ८३ ]

४०७

हले सोरव ( मैमूर )

१४वीं सदी उत्तरार्ध, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रे-  
 २ लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं । अमरावतियलकावति स-  
 ३ मनेनिसुव सोरव तवनिधियुम्वेरेरडं समनागि वि-  
 ४ पालिसिदं सुमनसतरु सट्टंस तवनिधिय ब्रह्माख्यं ॥

५ तिगलवेन्तिर्दंडे नाक

६ युविल

७ बाधि

[ यह निसिधिलेख बहुत सज्जित है। सारख और तवनिधिके शासक ब्रह्मके समय किसी व्यक्तिके समाधिमरणका यह स्मारक है। मृत व्यक्ति कोई महिला थी क्योंकि लेखके पापाणपर एक स्त्रीमूर्ति उत्कीर्ण है। ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० १७९ ]

४०८

तवनन्दी ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

१ जिनर जिनमुनिगलु मत्तनु-

२ पम प्राणांश हरियन-

३ दन नेनदु वनजाक्षि महा

४ लक्ष्म्यु घनतर शौर्य-

५ दोलुमग्निथोल् म-

६ ले पायिदल्

७ महालक्ष्मिय सद्गुण-

८ समुद्रोपमान ॥ म-

९ गलमहा श्री श्री

[ इस लेखमें महालक्ष्मी नामक किसी महिलाके अग्निप्रवेश-द्वारा मरणका उल्लेख है। जिन, मुनि और अपने पति हरियनदनका स्मरण करते हुए उसने धैर्यपूर्वक प्राणत्याग किया था। लिपि १४वीं सदीकी है। ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५ ]

४०९

तलकाड ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख ब्रह्मिल सध-नन्दिगणके कमलदेवके शिष्य लोकाचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। लिपि १४वीं सदीकी है। यह लेख वैकुण्ठ-नारायणमन्दिरकी दीवालमें लगा है। ]

[ ए० रि० मै० १९१२ पृ० ६३ ]

४१०

मत्तावार ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- १ मरुलजिन जकवेहट्टि चटवे-
- २ गन्ति मत्तवूर वसदि तपसु
- ३ माडि सिद्धि आदलु अवेय मा-
- ४ चरन मग मार कलु निलिसि-
- ५ द

[ यह निपिधिलेख मरुलजिन-जकवेहट्टि नामक ग्रामकी निवासी चटवेगन्तिके समाधिमरणका स्मारक है । उसका मृत्यु मत्तवूरकी वसदिमें हुआ था । अवेय माचरके पुत्र मारने यह स्मारक स्थापित किया था । लेखकी लिपि १४वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० ९९३२ पृ० १७१ ]

४११

हुलेकल ( उत्तर कनडा, मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १४वी सदीकी लिपिमें है और बहुत घिसा है । इसके प्रारम्भमें जिनजासनकी प्रशंसा है तथा बादमें किसी मठमें आहारदान आदिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० २१ पृ० २२९ ]

४१२-४१३

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आघ्र )

१४वीं सदी, कन्नड

[ ये दो लेख १४वीं सदीकी लिपिमें रसासिद्धुल्लुट्ट नामक पहाड़ीपर पापाणोपर खुदे हैं । इनमें विष्णुगिरिके श्रोविद्यान-दस्वामी तथा बोलय नागका उल्लेख हुआ है । अक्षर कुछ अस्पष्ट हुए हैं । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५२-५३ ]

४१४

उद्दरि ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमन्परमगमीरस्याद्वादा-

२ भोयलाछन । जोयात् त्रैलोक्यना-

३ यस्य शामन निनशासन ॥ स्वस्ति श्रीमतु

४ विजयकीर्तिमटार

[ यह लेख खण्डित है इसलिए विजयकीर्तिमटार इस नामके अतिरिक्त अन्य विवरण इससे प्राप्त नहीं होता । लिपि १४वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १४२ ]

४१५

सन्नकरेपट्टण ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, १४वीं सदी

१

२ तस्मिन् सेनगणान्तरिक्षतरणि श्रीवीरसेनो भुवि मसाराखु-  
धितारणैकतरणि श्रेयोवनीसारणो । तच्छिष्य प्रचुर-

- ३ प्रबन्धरचनाचातुर्यपद्मासनः पायाद् वो जिनसेन इत्यभिधया  
ख्यातो मुनिग्रामणीः । (१) श्रीमत्पुस्तक-
- ४ गच्छसूरसदृशो विश्वप्रकाशात्मकस्त्रैविद्यो गुणमद्रदेवयतिपः  
श्रीसूरसेनस्ततः (१) शिष्यः श्रीकमलादिभद्रगणभृद् दे-
- ५ वेन्द्रसेनस्ततः । तेनाकारि कुमारसेनमुनिपो वादीन्द्र-चूडामणिः  
(२) तच्छिष्याः हरिसेनदेवादयः । मा-
- ६ धुर्य वाचि कारुण्यं हृदि तीव्रं तपस्ततः । श्रीप्रभाकरसेनाख्य-  
गुरुश्रेयो विराजते । (१३) तत्पद्मादय-
- ७ शैलतिग्मकिरणस्त्रैविद्यपारंगतो भूपालार्चितपादपंकजयुगः  
श्रीलक्ष्मिसेनो मुनिः (१) लोके सत्त-
- ८ पसां निधानमनघं कारुण्यवारांनिधिः दाने कल्पकुजोपमो  
विजयते कामेभकण्ठीरवः । (४)
- ९ श्रीमदनसेपमुनिपो सज्जानामृतपयोधिपूर्णन्दुः (१) सुदृढतपोगुण-  
युक्तो भाति श्रीमत्प्रभा-
- १० करार्यसुतः । (५) द्वीपितटाकनामनगरीपति शंखजिनेन्द्रचन्द्र-  
मश्रीपादपंकजालिरमलाम-
- ११ रकीर्तिमुनीन्द्रपादसेवापरिपक्वबुद्धि बलगारसमाह्वयवंशपद्म-  
तारापति रंजिपं स्वजनकं-
- १२ जनमोमणि वैश्य मायणं । (६) गुणतुंगं हौलराजं पितृ गुणवति  
देवमाभ्येतन्नम्येयु-
- १३ द्यद्गुणरत्नं नागराजं परिकिपोडे पितृव्यं गुणैकाग्र्यं माकण्डू  
आत्मीयानुजं तानेनिपगणित-
- १४ सौभाग्यदिं भाग्यदिं धारिणियोल् विख्यातिवेत्तं जिनसमय-  
सरस्सारमं मायणाय । (७) मत्तं लोकै-
- १५ कमित्रं प्रचुरतरकलावल्लभं वन्दिवृन्दोत्करपुण्यत्-कल्पभूजं  
बुधनुतचरितं वावपरं

१६ काव्यगोष्ठि सरस विद्विष्टशैलाशनि सुरपुरमोदलान्तगल मीन-  
केतूद्धर रूप मद्गुणोदग्र-

१७ हमयन् एतल् आश्चयमे मायणार्थः । (८) इन्तु होयसल-  
भूविभुलक्ष्मीलपनमु

१८ श्रीवीरबुकराजसाम्राज्यरमारमणीयविलासदर्पणोपम एनिमि  
सोगयिसुव होसपट्टणदोलु प्रसिद्धिवडेड बै-

१९ इय मायण माकप्पगलु न दरागि माडिड श्रीलक्ष्मीसेन-  
मटारकर निपधिय प्रतिष्ठे शासन मगल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[ यह निपिधिलेख सेनगणके लक्ष्मीसेनभट्टारककी मृत्युका स्मारक है ।  
इतकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी - वीरसेन - जिनमेन - गुणभद्र त्रैविद्य-  
देव - मूरसेन - कमलभद्र - देवेन्द्रसेन - कुमारसेन - हरिसेन - प्रभा-  
करसेन - लक्ष्मीसेन । लक्ष्मीसेनके गुरुबन्तु मदनसेन थे । यह निपिधि  
बलगार वशके मायण तथा माकण नामक दो वैश्यो-द्वारा स्थापित की  
गयी थी । ये होसपट्टणके निवासी थे । यह नगर होयसल प्रदेशमें था  
तथा वीरबुकराजके राज्यके अन्तर्गत था । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६१ ]

४१६

तेरकणाबि ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसध देशियगण पुस्तक-

२ गच्छ कौडकुदान्वय हनसोगेय वलि-

३ य राजगुर ( मड ) लाचार्यम्मप्प ( सम )-

४ यामरण ललितकीर्तिमटारकर माडिमिड

५ ( प्रतिमे ) मगल महा श्री श्री श्री



[ यह लेख पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इस मूर्तिकी स्थापना मूलसंघ-हनसोगे बलिके ललितकीर्ति भट्टारकने की थी । लिपि १४वीं सदी की है । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० १६९ ]

४१७

तगडूर ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- |                       |                        |
|-----------------------|------------------------|
| १ ( कौं ) डकुन्दान्वय | २ ( मू ) लसंघ नागनन्दि |
| ३ (अन)न्तमट्टारकशिष्य | ४ नन्दिमट्टारकरशि-     |
| ५ ....यन्तगडू         | ६ ....यिल्लेकन्तिय(र्) |
| ७ (स)न्यसनंगेदु सुर-  | ८ (लोकवके) सन्दर्      |

[ इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयके नागनन्दि भट्टारकके शिष्य नन्दिभट्टारककी शिष्या ....यिल्लेकन्तिके समाधिमरणका उल्लेख है । पापाण टूटा होनेसे कुछ अक्षर नष्ट हुए हैं । लिपि १४वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १७३ ]

४१८

चामराजनगर ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- |                       |                  |
|-----------------------|------------------|
| १ श्रीमूलद्र संगद का- | २ णूर्गणद अन-    |
| ३ न्तकीर्तिदेवर गुडु  | ४ वोप्पय सन्ध-   |
| ५ सनविधियि            | ६ ....(स्व)गंस्त |

[ इस लेखमें मूलसंघ-काणूर गणके अनन्तकीर्तिदेवके शिष्य वोप्पयके समाधिमरणका उल्लेख है । लिपि १४वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११२ ]

४१६

माचिनकरे ( कटूर, मंसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमत्तु मन्मथसवत्सर प्रथम श्रावण शु । गुरुवार पुष्य-  
नक्षत्रदलू श्रीचक्षुनाथन चैयाळयदलू
- २ तौलहरवल्लिय अनतकमेट्टितिय भग चान्तिसेट्टिय धरगिसिद  
चतुर्विंशतितीर्थकरप्रतुमेयनु यिरिसि कु-
- ३ तार्थ नादेनु भद्र शुभ भगल भूयान् पुनदर्शन शुभ भगल महा  
श्री श्री श्री

[ इस लेखमें चतुर्विंशति तीर्थकर मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है ।  
अनतकमेट्टितिके पुत्र आदिसेट्टिने यह मूर्ति स्थापित की थी । तिथि प्रथम  
श्रावण शु० (?) मन्मथ सवत्सर ऐसी दी है । लिपि १४वीं सदीकी है । ]  
[ ए० रि० मै० १९४६ पृ० ३७ ]

४२०

नेरस्तोप्पे ( मंसूर )

शक १३२३ = सन् १४०१, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादामोघलाछन जा-
- २ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशामन
- ३ नगिरिय कुलचक्रवर्ति राजनिर्जित
- ४ ला सामन्तर बल्लिय यिन्ता होन्नभूपनलिय आ साम-
- ५ न्तन पुत्रनर्थिकाम कोमल मरस भरिन्तृपालनातन
- ६ दे धर चारकीर्तिपण्डित सद्गुरुस्त्रमु आ कामन्तृपालन मान
- ७ योजि राज्यमे नगिरियुमनितु तनगागे बैचणभूपति म
- ८ नेगल्द रिपुमैन्य नवर न पदमरसि जिनमुनिपादावुनात  
नृपाल



४२१

सककरेपट्टण ( मैसूर )

शक १३२८ = सन् १४०५, कन्नड

- १ श्रीमत् परमगर्भारस्याद्वादामोघलाउन (१) जीयान् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशामन (॥)
- २ श्रीमद् रायराजगुरु मण्डलाचार्य पुरविजमादित्य मध्याह्न-
- ३ करपवृक्ष सेनगणाग्रगण्यरमण्य श्रीमच्छर्मासेनमट्टारकावर श्रीमत् श्रीमानमेनदेवर निपिधि शकव-
- ४ प १३२८ नेय पार्थिव सवत्सर १० लु
- ५ श्रीमुत्तद होसऊर बैचमट्टिय मक्कलु मायसेट्टि वोम्मिसेट्टि नागणमेट्टि अवर मोम्मक्कलु बैच-
- ६ शेट्टिय तम्ममेट्टि कोवरिमट्टि चिक्कैचमाट्टि मादिसेट्टियर मक्कलु कोवरिसट्टियर

[ यह लेख सेनगणके भट्टारक लक्ष्मीसेनके शिष्य मानमेनदेवकी समाधिका स्मारक है। यह निपिधि मुत्तदहोसऊरके बैचसेट्टिके पुत्र मायसेट्टि, वोम्मिसेट्टि आदिने शक १३२७ में स्थापित की थी। ]

[ ए० रि० मी० १९२७ पृ० ६२ ]

४२२

कोरग ( द० कन्नडा, मैसूर )

शक १३३१ = सन् १४१०, कन्नड

[ यह लेख केरवसेके राजा सात्तर वंशीय वीरभैरवके पुत्र पाण्ड्य-भूपालके समय पुण्य शु० १०, गुरुवार, शक १३३१, सर्वघारि सवत्सरका है। इसमें बल्लात्वारगणके वसतकीतिराउल्की प्रार्थनापर वारकूत्की वमदिके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५३० पृ० ४९ ]

४२३-४२४

भटकल ( उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १३३२ = सन् १४१०, कन्नड

[ ये दो लेख हैं । कार्तिक शु० १०, सोमवार, शक १३३२ सर्वधारी संवत्सर, यह इनकी तिथि है । एकमें संगिराव ओडेय-द्वारा उनके किसी सम्बन्धित मल्लिराय नामक व्यक्तिके समाधिमरणपर निसिधिकी स्थापना-का उल्लेख है । दूसरेमें किसी राजकन्याके समाधिमरणपर निसिधिस्थापना-का उल्लेख है । इसमें हैवभूप, भैरादेवी तथा संगिरायका भी नामोल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३३९-४० ]

४२५

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक १३३४ = सन् १४१२, कन्नड

[ यह लेख विजयनगरके देवराय महारायके समय मार्गशिर शु० २, रविवार, नन्दन संवत्सर, शक १३३४ को लिखा गया था । शंखवसतिके आचार्य हेमदेव तथा सीम्यदेव ( शिवमन्दिर ) के शिवरामय्य-द्वारा दोनों मन्दिरोंकी भूमिकी सीमाके बारेमें कुछ विवादका समझौता किये जानेका इसमें उल्लेख है । यह कार्य नागण्ण दण्डनायक-द्वारा सम्पन्न हुआ था । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३३ पृ० १६३ ]

४२६-४३०

टोंक ( राजस्थान )

संवत् १४७० = सन् १४१३, संस्कृत-नागरी

[ ये ५ मूर्तिलेख हैं । मूलसंघके आचार्य प्रभाचन्द्रके शिष्य पद्मनन्दिके उपदेशसे खण्डिल्लवाल कुलके कुछ व्यक्तियों-द्वारा ज्येष्ठ शु० ११, गुल्वार, संवत् १४७० को ये मूर्तियां स्थापित की गयी थीं । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४६६-७० पृ० ६९ ]

४३१

मुल्लगुन्द ( धारवाड, मैसूर )

शक १३४२ = सन् १४२०, कन्नड

[ यह लेख वैशाख शु० १४, रविवार, शक १३४२, शार्वरी सवत्सर-  
का है । इस समय रायराजगुरु हेमसनके शिष्य वुलिसेट्टिका सभाधिमरण  
हवा था । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९५ पृ० ८ ]

४३२

मुल्लगुन्द ( धारवाड, मैसूर )

शक १३४३ = सन् १४२१, सस्कृत-कन्नड

[ यह लेख चन्द्रनाथवसदिमें है । इसकी तिथि भाद्रपद शु० ९,  
शुक्रवार शक १३४३ प्लव सवत्सर है । इस समय स्वरटोरके तिलकरसके  
मन्त्री हेगडे मधुवरसके पुत्र नागरसकी मृत्यु हुई थी । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९४ पृ० ८ ]

४३३

गेरसोण्णे ( मैसूर )

शक ११४३ = सन् १४२१, सस्कृत-कन्नड

- १ श्रीमन्परमगभीरस्याद्वाडामोघकाठन । जीयान् त्रैलोक्य-  
नाथस्य शासनं जिनशामन ॥ श्रीजम्बूद्वा-
- २ पमध्यस्थितजनसर रमणरवाभ्यकृतधायर् तद्वर जिनपद-  
पद्मभृग स्तभित जायात पत्तन त्यक्तपक

- ३ ....त्रैविद्यवल्ली....सुक सुलभरारम्य....स्थितजिनेन्द्रपादयुगपन्न-  
भृंगा मंसा-
- ४ २....माच्छि....तेनेद....दुदुभूयरे-
- ५ द्रः तदीयवशोद्भवमंगभूपो माहित्यलक्ष्मी....भामाति लक्ष्मी  
जिनमंदिरंषु कामं कामितदायकं कन-
- ६ रुद्र कन्दर्पमर्चप्रियः कल्याणकलनानन्त....श्रीमंगभूपत्य जिनेन्द्र-  
पादद्वयपद्मगन्धमिलद्भृंगोभवत् सन्ततं
- ७ तदीयवंशसंभूतः केशवाख्यः क्षितीश्वरः वशीकरोति सहसा  
वन्दिगोहेषु सम्पदं....सुपासितुं भवतु ते गात्रं हि-
- ८ माद्रीकृतं । श्रीमत्केशवभूमिपालचरितं श्रुत्वा स्तुवन् किन्नरैः  
तोपाकम्पितशंभुमालिविलसद्गंगातरंगास्पदं आश्रयाशो दह-  
त्याशु स्वाश्रयं स्वतनाथ सा ( ? स्वीयतेजसा )
- ९ केशवेन्द्रप्रतापाग्निः नाश्रयं तापयत्यहो । केशवेन्द्रगुणान् वक्तुं  
को वा शक्नोति पण्डितः आकाशस्थितनक्षत्रगणना केन सुच्यते ॥  
वर्धमानान्वयोद्भवे निर्धूताश्रित-
- १० द्रिद्रे निजपतिनियमांतर्धियुते ह्योन्नवरमि विशुद्धात्मिकं आने-  
वलिंगं तिलकमनिक्कुं १ आ ह्योन्नवरमियरसं श्रीहैवनृपं  
जिनक्रमांबुजभृंगं बाहुवलनिर्जितरि-
- ११ पुभूपं साहससमुद्रनमिनवकामं । तयोरभून्नमलजङ्घवरसा  
नुता सुशीला जिनभक्तियुक्ता तं चोपयेमे वरमंगभूपो जामातृवर्यो  
भुवि है-
- १२ वराजः अनिन्द्रादपि निर्गन्तुं भोरवः खलु योषितः मंगभूपाल-  
कीर्तिस्तु कामिनीवातिलंघिनी तयोरभूतां जिननाथनम्रौ मात्रा  
पुनीताखिलजैनल....

- १३ धात्रीव हैवणश्री मावलरमी समूर्जिताह्वानयुता सुशीला  
श्रीमन्नप्रनिलिम्ब - मौलिविस्तन्माणिक्य स्मर्पतुतिपादपद्म -  
नखर श्रीपाद्वना-
- १४ येन तु काम मगरसागमजो गुह्यगुणश्रीहैवणाग्योमवत्  
जैनयोगिनिकर साहित्यरत्नाकर श्रीमद्धानुनिनश्चमीव  
नितरा नृपालकृता भू-
- १५ मा भूरिगुणोजभास्करसत्प्रत्यग्रभाषान्विता काम मगनृपा  
गुह्यया देवी श्रीमावलावा सुभासूतिद्युति प्रत्यह १ क ।
- १६ आ मावलरमियारम भूमीशविनम्रपाद केशवमूप कामारिमसित-  
मस्तकसोमद्युतिकीर्ति को सुरलोकद सुरतरविन गुरफ-
- १७ लम मेदुदु नृप्तिविल्लदे सुर धरेयोल् मूसुरादर वरकेशवभूप-  
कल्पभूजस्तुहोय भाति कीर्त्या श्रीकेशवदभापतिरप-
- १८ रावुभितीरगा जिनपतिधोपादपद्मानवा भूमी भाविजिनेन्द्रचन्द्र-  
विल्लमन्धारित्रनु रागोदया मसारमारोदया ।
- १९ ज्यज्यग्न्यैकममन्विते शकृते आशात्रोवमरे माधे मानित-  
पचमीतिथियुते श्रीसौम्यवारे निते पक्षे आदिराजवनिता  
धर्माभिधाने पुरे काम कारयति स्म
- २० जक्यवरमी पाद्वंप्रतिष्ठा मुदा । अनन्तर । नगिरद राज  
होन्नरसनन्वयवार्धिगे चन्द्र सले ता मोगयिप हैमभूपनलिय  
कलिकालद
- २१ कर्णनेम्बरी जगदलु मगभूवरन वान्बवे तगलेदेविनन्दन  
नगेमोगदा कल्पभूज केशवरायनु कीर्तिवल्लम । क । अन्ता  
नगिरद राज-
- २२ र सन्तानाब्धिपोलु लक्ष्मीमाणिक्यदेवीकान्तनू पुनिपवोरायगे  
कन्तुविनन्तुदयिमिर्द सगनृपाल सगत्रिदर क्षेमपुरतार्थजनेन्द्र  
पाद-



- २३ पद्मकं श्रंगणजीयनालजनु अम्बमहीशन पुत्र संगमं...तन्न  
मनमोल्वन्तीधर्मवं माडि पूर्वदोल् पिगिद धर्मवेल्ल-
- २४ वनु पालिसिदं रविचन्द्ररुल्लिनं । अन्ताधर्मप्रतिपालकनेनिप  
श्रीसंगभूपालं सुखादिं राज्यं गेयुत्तिरल्ल यिलेयोल् कुन्तलनाडु  
करं रंजि-
- २५ से पश्चिमनाडु देशदोल् कलवे वापी कूप नदी मामरनिं  
पनसीले वालेयि वालेयि चलसिकोण्डु कोकमिश्रुनमोदलागिर-  
लल्लियारवेगल नडवोप्पु
- २६ वी पुरवनालुवन् अज्जनृपालनेम्बवं । यिरुन्दूरधिपति तां  
करमोप्पुव अडियरवल्लियिं करमेसेवनु तम्मरस...यलियं कीर्ति-
- २७ वेत्तना तम्मरसं । आ तम्मरसनग्रजेय तनूजं धरेयोल् इहंदूर  
भूसुरनुत कल्लरसननुजे तंगदेविगे वरनेनिप हेंवेयरसन वरपुत्रं प-
- २८ अणरस जैनपदमक्तं । आ पद्मणरसनू आतनग्रजे जक्कल-  
देविअ...तन्दे हेंवणरसरु पार्श्वतीर्थेश्वर...माडिद नित्यपूजे-
- २९ आहारदानमोदलाद (वु) मेल्लवं पुरो...दिगे सलिसि मुन्निन  
धर्मवेल्लवं नरेमाडि बलिकः तन्नोल् सन्नुतबुद्धि पुटे जिनेन्द्र-  
नमिणेकनु नित्यपू-
- ३० जनं मुन्नेसेवन्नदानमोद्लादवनुं पिरिदागि माडि...तृप्तियिन्दो-  
लिदु पद्मरसं मिगे कोट्ट वृत्तियं । श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरद श्रीकार्य-
- ३१ वकेयू अंगमोगचैत्यालयद जीर्णोद्धारक्के धारापूर्वकवागि कोहन्ता  
वृत्तिय विवर हेंवणरसरु तावु मूलवागि आकुतिदं कोणुवणिय-
- ३२ लि कंगन कुलिय हन्नेरहु मूढे सुनिगे सीमे मूडलु अभिन-  
सेट्टितं हित्तल गदे तेंकलु हरिदु कोडि गाडि पडुवलु तम्मरसर  
होसगहेयलु यिक्किद कल्लुगडि
- ३३ चडगलु हीलेयभागे गडियिन्ती चतुस्सीमेयिदोलगुल्ल कलवेय  
समस्तवृत्ति पद्मरसरु तावु मूलवागि आलुत्तैद हान्नमन केरेय

३४ मेले येत्ति होन्नाबरद नाल्कुवरे होन्ननू तम्म अम्म तगल-  
देवियरिगे पुण्यार्थ परिहारमागे विट्टुदु हैवण्णरसर त-

३५ म्म मन पूर्वकवागि कोट्टु सर्वमान्यवागि मूलस्थलवागि तावु  
आलुत्त यिट्टु यडेय मज्जन वृत्तिगे गडि मूडलु होले तंकलु  
होले गडि पडुवलु

३६

३७ समस्तवृत्तियनू आहारदानक्कवागि याचन्द्रार्कवागि

३८ धारापूर्वक माटि कोट्टु मत्तु आहारदानक्के या चिथ्याळयद  
गृह

[ इस लेखमें पद्मण्णरस-द्वारा पार्श्वतीर्थकरमन्दिरके लिए ४ होनु  
क्रीमतकी भूमि दान दिये जानेका निर्देश है। पद्मण्णरसकी माता तगलदेवी  
तथा पिता हैवण्णरस थे। उसकी बड़ी बहिन जक्कलदेवी थी। तगलदेवी-  
का बच्चा कल्लरस था जो इस्वन्दूरके शासक तम्मरसका भानजा था।  
यह कुन्तलनाडुके राजा अज्जका जामाता था। अज्जका समकालीन राजा  
सग था जो अम्बराजाका पुत्र था। अम्बका पिता सग था जो अम्बीराय  
और माणिकदेवीका पुत्र था तथा राजा केशवका वंशज था। केशवकी  
पत्नी मावलरसि मग राजाकी कन्या थी। मगकी पत्नी जक्कव्वरसि  
हैवण और होन्नवरसिकी कन्या थी। इस दानकी तिथि माघ शु० ५  
बुधवार, शक १३४३, शार्वरी सवत्सर ऐसी दी है। ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९३ ]

४३४

उडिपि ( द० कनडा, मैसूर )

शक १३४६ = सन् १४२४, संस्कृत कन्नड

[ यह लेख ( ताम्रपत्र ) विजयनगरके देवरायमहाराजके राज्यकालमें  
पुष्य शु० ६, बुधवार, शक १३४६ क्रोधि सवत्सरके दिनका है। इसमें

मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके वर्धमान भट्टारककी प्रार्थनापर राजा-द्वाग वरांग नामक ग्राम नेमिनाथमन्दिरको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ए १२ पृ० ५ ]

[ इस ताम्रपत्रकी प्रतिलिपि वरांग ग्रामस्थित नेमिनाथवसदिमे एक पापाणपर उत्कीर्ण है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२५ पृ० ४९ ]

### ४३५

माण्डू ( धार, मध्यप्रदेश )

( संवत् ) १४८३ = सन् १४२६, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें सम्भवनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । तिथि ( संवत् ) १४८३, वैशाख ( चैत्र ) शु० ५, गुरुवार ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १८२ पृ० ४४ ]

### ४३६

विसरूर ( दक्षिण कनडा, मैसूर )

शक १३५३ = सन् १४३१

[ यह लेख देवराय २ के राज्यमें शक १३५३ में लिखा गया था । इसमें जैन मन्दिरके लिए विसरूरके चेट्टियों-द्वारा वहाँके बाजारमें आनेवाली चावलकी हर गाड़ीपर एक 'कोलग' दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ इ० म० दक्षिण कनडा २७ ]

४३७

कुण्णत्तूर ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

शक १३६३ = सन् १४४१, तमिल

[ यह लेख ऋषभनाथबसदिके पूर्वी दीवारपर खुदा है । कुर्ण ( कुण्णत्तूर ) के अर्हत् मन्दिरका निर्माण शक १३६३ में होनेका इसमें वर्णन है । ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १०३ पृ० १४० ]

४३८

चदनोर ( भीलवाडा, राजस्थान )

संवत् १(४)६७ = सन् १४४२, सस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें संवत् १(४)९७ में शान्तिनाथका उल्लेख किया गया है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४५० पृ० ६७ ]

४३९

कुण्डघाट ( जि० मोषीर, बिहार )

संवत् १५०५ = सन् १४४६, सस्कृत-नागरी

मगन मन्दिरमें एक महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[ इस लेखमें संवत् १५०५ फाल्गुन शु० ९ को महावीरमूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है । ]

[ रि० इ० ए० क्र० ८ (१९५०-५१) ]

४४०-४४१

चैन्दुरु ( द० कनडा, मैसूर )

शक १३(७)१ = सन् १४५०, कन्नड

[ यह लेख विजयनगरके मल्लिकार्जुन महारायके समय चैत्र शु० १०, गुरुवार, शक १३(७)१ शुक्ल संवत्सरका है। इस समय चैदूरके पार्श्वनाथ वसदिके लिए कुछ लोगों-द्वारा दिये हुए दानोंका विवरण इसमें दिया है। देवप्प दण्डनायकका भी उल्लेख है। इसी समयका दूसरा लेख यहीं है। इसमें हाडुवलिय राज्यके शासक संगिराय ओडेयके पुत्र इंगरस ओडेयके समय पार्श्वनाथवसदिको प्राप्त दानोंका विवरण है। ]

[ रि० सा० ए० १६२९-३० क्र० ५३६-३७ पृ० ५३ ]

४४२

चित्तलद्रग ( मैसूर )

शक १३८५ = सन् १४६३, कन्नड

- १ सखवरस १३८५ सोमकृति सं-
- २ वल्लरद कतिकसुध १५ आकिय मं-
- ३ गिसेट्टिय मग गुम्मिसेट्टियर नि-
- ४ स्तिगे श्रीवीतराग

[ यह एक निसिधिलेख है। आकिय मंगिसेट्टिके पुत्र गुम्मिसेट्टिके समाधिमरणका यह स्मारक है। तिथि कार्तिक शु० १५, शक १३८५, शोभकृत संवत्सर इस प्रकार दी है।

[ ए० रि० म० १९३९ पृ० १०४ ]

४४३-४४४

चितलद्रुग ( मैसूर )

१५वीं सदी ( सन् १४७२ ), कन्नड

१ नदन स      २ वाचण्णगल      ३ निस्तिते

[ यह निसिधिलेख वाचण्णके समाधिमरणका स्मारक है । १५वीं सदीकी लिपिमें नन्दन सवत्सरका उल्लेख है अतः सन् १४७२ का यह लेख होगा । यहीका एक अय लेख इसी समयकी लिपिमें है जिसमें गुम्मटदेवकी निसिधिका उल्लेख है । यथा-

१ सखवरु - २ आसाडमु    ३ (गु) मटदेव

इसमें तिथिके अक लुप्त हो चुके हैं । ]

[ ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४-५ ]

४४५

गुरुवयनकेरे ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४०६ = सन् १४८४, कन्नड

[ इस लेखमें शक १४०६ में नरसिंह बग द्वारा कन्नडिवसदि नामक जिनमदिरको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८१ पृ० ४५ ]

४४६

विदिरूर ( शिमोगा, मैसूर )

शक १४१० = सन् १४८८, कन्नड

१ स्वस्ति स (क) वरिष १४१० नेय प्लवग सचरद जेष्ट सुद

पंचमि आदिचारदलु अदियर् वलिय गण्डलिकेय उटेकोंढ राम-  
नाय्कनु विदिरुलि तनगे स्वर्गापवर्गमुखक्के का-

२ (र)णवागि चैत्यालयव कट्टिसि आदीइवरन प्रतिष्ठेयन माडिसि-  
दनु श्री

[ इस लेखमे रामनायक-द्वारा विदिरु ग्राममे चैत्यालय बनवानेका  
तथा आदिनाथकी इस मूर्तिकी स्थापना करवानेका वर्णन है। यह कार्य  
ज्येष्ठ शु० ५, शक १४१० के दिन सम्पन्न हुआ था। ]

[ ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११३ ]

४४७

जवलपुर ( मध्यप्रदेश )

संवत् १५४६ = सन् १४६३, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख पार्श्वनाथकी भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। तिथि वैशाख  
शु० ३, संवत् १५४९ ऐसी दी है। ]

[ रि० ड० ए० १९५१-५२ क्र० १२३ पृ० २१ ]

४४८

शिवहृंगर ( राजस्थान )

सं० १५५६ = सन् १५००, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख मूलसंध-बलात्कारगण - सरस्वतीगच्छके आचार्य रत्न-  
कीर्तिके समय सं० १५५६ मे लिखा गया था। इनकी गुरुपरम्परा  
पद्मनन्दि-शुभचन्द्र-जिनचन्द्र-रत्नकीर्ति इस प्रकार बतलायी है। ]

[ रि० आ० सं० १९०९-१० पृ० १३२ ]

४४६

## हुमच ( मैसूर )

१५वीं सदी, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगमीस्या- २ द्वादामोवलाउन  
 ३ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा- ४ सन जिनशामन  
 ५ विरोधकृत् सवत्सरद आशी- ६ ज बहुल दममि सोमवा-  
 ७ रदलु । श्री मदरायराज- ८ गुरु मडलाचार्यह  
 ९ महावादवादीश्वर रा- १० यवादिपितामह सकल-  
 ११ विद्वज्जनचक्रवर्तिगलु श्रीम- १२ द्वादोद्वित्रिशालकीर्तिम-  
 १३ स्वरकुलकमलमार्तदर १४ श्रीमदमरकातियतीश्वरप्रि-  
 १५ याम्रशिष्यर मूलसघ व- १६ लाकारगणाग्रगण्यरमप्प  
 १७ श्रीधर्मभूषणभट्टारकदे- १८ वर प्रियगुह् श्रीमदम-  
 १९ रेंद्रवदितजिनेद्रपादार- २० विदमधुकरनु चतुर्विधदा-  
 २१ नर्चितामणियु खडस्फुटि- २२ तजीणजिनालयोद्वारकनुम  
 २३ प्प विटिसेट्टिय मग चोकिसेट्टि-२४ य निसिधि ॥

[ इस लेखमें विटिसेट्टिके पुत्र चोकिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है जो आश्विन व० १० सोमवार, विरोधकृत् सवत्सरके दिन हुआ था । चोकिसेट्टिके गुरु धर्मभूषण भट्टारक ये जो मूलसघ बलात्कारगणके अमर-कीर्ति यतीश्वरके शिष्य थे । लिपि १५वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९२४ पृ० १७५ ]



४५०-४५१

आदवनी ( वेल्लारी, मैसूर )

१५वीं सदी, तेलुगु

[ ये लेख पहाड़ीपर एक पापाणपर खुदे हुए तीर्थंकरमूर्तिके पास और चरणपादुकाओंके पास है। ये बहुत घिसे हुए हैं। मूर्तिके पास एक शकवर्षकी संख्या खुदी है तथा पादुकाओंके पास किसी आचार्यका नाम है। दोनों अच्छी तरह पढ़ना सम्भव नहीं है। लिपि १५वीं सदीकी है। ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० ७४-७५ पृ० १३७ ]

४५२-४५३

नरसिंहराजपुर ( मैसूर )

१५वीं सदी, कन्नड

[ यहाँके दो मूर्तिलेख १५वीं सदीके लिपिके हैं। इनपर देवसेट्टिके पुत्र दोडणसेट्टि तथा नेमिसेट्टिके पुत्र गुम्मणसेट्टिके नाम उत्कीर्ण हैं। ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४ ]

४५४

हनसोगे ( मैसूर )

१५वीं सदी, कन्नड

१ हनसोगेय हिरियवसदिय

२ कोण्डिय कल्ल ओरसेय वोम्मि-

३ सेट्टियरु इक्किसिदरु

[ यह लेख स्थानीय आदीश्वरवसदिके सभामण्डपके छतके पापाणपर खुदा है। यह पापाण ( कोण्डियकल्लु ) वोम्मिसेट्टि-द्वारा स्थापित किया गया था ऐसा लेखमें कहा है। लिपि १५वीं सदीकी है। ]

[ ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९४ ]

४५५

## मूडविदुरे ( मैसूर )

शक १४२६ = सन् १५०४, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि कदव कुलके शासक लक्ष्मणरस अपरनाम भैररसने जैनोंके ७२ सस्यानोंके प्रधान आचार्य चारुकीर्ति पडिताचार्यके एक शिष्यको अपने राज्यके एक हिस्सेके धार्मिक अधिकार प्रदान किये । निधि-आदिवन कृ० ५, शक १४२६, त्रयोविंशत्सत्सर । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ५ ]

४५६

## करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

शक १४३१ = सन् १५०९, तमिल

[ यह लेख मकर शु० १०, गुरुवार, शक १४३१ को लिखा गया था । विजयनगरके शासक नरसिंहरायके समय रामप्प नायकने मन्दिराकी भूमिपर जोड़ि सज्जक कर लगाया था जिससे मन्दिराकी हानि हुई थी । कृष्णदेवराय सिंहासनारुढ हुए तब उन्होंने मन्दिराकी भूमिको करमुक्त धारित किया । इस घोषणाका लाभ पड़ैवीट्टु तथा चन्द्रगिरि प्रदेशके जैन और बौद्ध मन्दिराको भी हुआ । करन्दै स्थित जिनमन्दिर भी इससे लाभान्वित हुआ ऐसा लेखमें कहा गया है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४४ ]

४५७

गुरुवयनकेरे ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४३१ = सन् १५१०, कन्नड

[ यह लेख स्थानीय शान्तोश्वरवसदिके मण्डपमें है । इसमें माघ व० १०, सोमवार शक १४३१ को वेलतंगडीके कुछ लोगों-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८० पृ० ४५ ]

४५८

चरांग ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४३७ = सन् १५१५, कन्नड

[ यह लेख विजयनगरके कृष्णदेवमहारायके समय माघ शु० ५, शुक्र-वार, शक १४३७ भावसंवत्सरका है । इसमें तुलुराज्यके शासक रत्न-प्पोडेयका उल्लेख किया है । देवेन्द्रकीर्तिकी प्रार्थनापर इस वसदिके लिए देवराय-द्वारा पहले दी हुई भूमिके पुनः खेतीयोग्य बनानेका इसमें उल्लेख है । यह कार्य अवक्रम हेगिडिति तथा उनके सहयोगियों-द्वारा सम्पन्न हुआ था ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ पृ० ४९ क्र० ५२८ ]

४५९

चामराजनगर ( मैसूर )

सन् १५१८, कन्नड

[ इस लेखमें अरिकुठारके महाप्रभु कामैय नायकके पुत्र वीरैय नायक-द्वारा विजय ( पार्श्व ) नाथ मन्दिरके लिए सन् १५१८ में कुछ दानका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५१ ]

४६०

कोह नगोरी ( जयपुर, राजस्थान )

संवत् १५७७ = सन् १५२१, सस्कृत-नागरी

[ इस लेखकी तिथि माघ शु० ५, संवत् १५७७ यह है । इसमें मूल-सघ बलात्कारणके आचार्योंकी परम्परा दी है तथा खण्डुलवाल अन्वयके राय रामचन्द्रके शासनका उल्लेख है । ]

[ रि० ६० ए० १९५२-५३ क्र० ४१६ पृ० ६९ ]

४६१

घराग ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४४४ = सन् १५२२, कन्नड

[ यह लेख पोबुच्चके राजा इम्मडि भैरवरसके समय चैत्र व० १२, सोमवार शक १४४४ चित्रभानु सवत्सरका है । इसमें राजा-द्वारा वरागके नेमिनाथ बसदिके लिए भैरवपुर नामक ग्रामके दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२९ पृ० ४९ ]

४६२

सोदे ( उ० कनडा, मैसूर )

शक १४४५ = सन् १५२२, सस्कृत-कन्नड

[ यह ताम्रपत्र आपाठ पूर्णिमा शक १४४५ चित्रभानु सवत्सरका है । तोलव प्रदेशके क्षेमपुर ( गेरमोप्पे ) नगरमें इम्मडि देवराय ओडेयरने बण्डुवाल ग्रामकी कुछ भूमि लक्ष्मणेश्वरके शस्त्राजिनबसतिके लिए दान दी थी । यह दान देशीगणके चन्द्रप्रभदेवके लिए था । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ६९ ]

४६३

सौंड ( जि० उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १४४४ = सन् १५२२, कन्नड

[ यह ताम्रपत्र यहाँके भट्टाकलंक मठमें प्राप्त हुआ । हुलिगेरेकी शंख-जिनर वसतिके लिए मल्लिसेट्टिने मासूर मोसलेयकुल्लु विभागमें इम्मडि देवराज ओडेयन्से कुछ जमीन खरीदकर दान दी । इसकी प्रेरणा देसिगणके विजयकीर्तिदेवके शिष्य चन्द्रप्रभदेवने दी थी । श्रावण शु० ५, गुरुवार, शक १४४४, विषु संवत्सर यह इसकी तिथि है । ]

( रि० सा० ए० १९३९-४० ए० क्र० १५ पृ० २२ )

४६४-४६५

श्रृंगेरी ( मैसूर )

१६वीं सदी ( सन् १५२३ ), कन्नड

[ ये दो लेख हैं । पहला अनन्तनाथमूर्तिके पादपीठपर है । चैत्र कृ० ५, रविवार, स्वभानु संवत्सरके दिन यह मूर्ति अर्पित की गयी थी । इसका स्थापक हलुमिडि निवासी देविसेट्टिका पुत्र देवणसेट्टि था । मूर्तिका वजन १८० हल कहा गया है । दूसरा लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर है । यह मूर्ति आदिसेट्टिके पुत्र वोम्परसेट्टि-द्वारा वैशाख शु० १, गुरुवार, स्वभानु संवत्सरके दिन अर्पित की गयी थी । दोनों लेखोंकी लिपि १६वीं सदीकी है अतः संवत्सरनामानुसार ये शक १४४५ अर्थात् सन् १५२३ के प्रतीत होते हैं । ]

( मूल लेख कन्नडमें मुद्रित )

[ ए० रि० मै० १९३३ पृ० १२४ ]

४६६

नेल्लिकर ( द० कनडा, मंसूर )

शक १४४७ = सन् १०२५, कन्नड

[ यह लेख स्थानीय अनन्तनाथवसदिके प्राकारमें है । देवण्णरस उपनाम कोतकी बहन शंकरदेवी-द्वारा कीयरवुरकी वसदिके लिए धनु १५, रविवार, शक १४४७, तारण सवत्सरके दिन कुछ भूमिके उत्पन्नके दानका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२२ पृ० ४९ ]

४६७

पल्लिच्छुन्दल् ( द० अर्काट, मद्रास )

शक १४५२ = सन् १४३०, तमिल

[ यह लेख एक भग्न जैनमन्दिरके स्थानपर है जिसे शैनियम्मण् कोयिल् कहा जाता है । विजयनगरके राजा अच्युतदेवमहारायने वैष्ण्व नायकके निवेदनपर शर्ण्वके नायनार् विजयनायकर् नामक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए जोड़ि और शालुवरि करोका उत्पन्न अर्पण किया था । यह राजाज्ञा बेलूर बोम्मनायकके समय उत्कीर्ण की गयी ऐसा लेखमें कहा है । तिथि मिथुन शु० १०, बुधवार, शक १४५२, नन्दन सवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ४४९ पृ० ५१ ]

४६८

पटना म्युजियम ( बिहार )

सवत् १५९३ = सन् १५३१, संस्कृत नागरी

[ यह लेख एक पीतलकी जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इसकी स्थापना मूलसध-कुन्दकुदाचार्यान्वयके मण्डलाचार्य धर्मचन्द्रके उपदेशसे खडेलवाल

अन्वयके कुछ सज्जनोंने की थी । प्रतिष्ठा तिथि ज्येष्ठ शु० ३, सोमवार, संवत् १५९३ ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १६२ पृ० ३३ ]

४६६

हनुमंतगुडि ( रामनाड, मद्रास )

शक १४५५ = सन् १५३३, तमिल

मलवनाथ जैन मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलाओंपर

[ इसमें शक १४५५ के लेखके सङ्ग है । एकमें जितेन्द्रमंगलम् अथवा कुलवडिमिदिका निर्देश है जो मुत्तोर कूरम् विभागमें था । ]

( इ० म० रामनाड २७९ )

४७०

नीलचनहस्ति ( मैसूर )

सन् १५३४, कन्नड

[ इस लेखमें सन् १५३४ में मदवणसेट्टिके पुत्र पदुमणसेट्टि-द्वारा अनन्तनायकस्थालयमें किसी व्रतके पालनका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८ ]

४७१

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक १४६१ = सन् १५३९, कन्नड

[ इस लेखमें जैन और शैवोंके एक विवादके समझौतेका उल्लेख है । यह विवाद जिनमूर्तियोंके सम्मानके सम्बन्धमें था । जैनोंकी ओरसे शंख-वसतिके शंखणाचार्य तथा हेमणाचार्यने और शैवोंकी ओरसे दक्षिणसोमेश्वर

मन्दिरके कालहस्ति और शिवरामने यह समझौता किया था । निधि ज्येष्ठ शु० १ सोमवार, शक १४६१), विल्वि सवत्सर ऐसी दो हैं । ( शकवर्षकी सख्याके अंतिम अंक लुप्त है जो सवत्सरानुसार दिये गये हैं ) । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई १८ पृ० १६२ ]

४७२

कारकल ( ८० कनडा, मैसूर )

शक १४६५ = सन् १५४३, कछड

[ ग्रह लेख ( ताम्रपत्र ) चैत्र शु० ४ शक १४६५ शोमङ्कत् सवत्सर-का है । इसमें चन्दलदेवीके पुत्र पाण्ड्यणरस तथा निम्मलरम चौट्टर इनमें अनाक्रमण संधिका उल्लेख किया है । इसके साक्षीके रूपमें जैन आचार्य ललितकीर्ति भट्टारका उल्लेख हुआ है । ]

[ रि० सा० ए० १९२१-२२ पृ० ९ क्र० ए ५ ]

४७३

कुरुगोड्ड ( बेल्गारी, मैसूर )

शक १४६७ = सन् १५४५, कछड

एक मगन मन्दिरके दक्षिणी दीवालपर

[ त्रिजयनगरके राजा कोरप्रताप सदाशिव महारायके समय शक १४६७, विश्वावमु सवत्सरमें यह लेख लिखा गया । रामराज्य-द्वारा जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमिदान देनेका इसमें निर्देश है । ]

( ३० म० बेल्गारी ११३ )



४७४

## कारकल ( मैसूर )

शक १४६६ = सन् १५४५, कन्नड

[ यह लेख माघ शु० ३, गुरुवार, शक १४६६, क्रोधि संवत्सरका है । चन्दलदेवीके पुत्र चन्द्रवंशीय पाण्ड्यप्प वोडेयके राज्यकालमें कारिजे निवासी सिदवसयदेवरस-द्वारा कारकलके गुम्मतनाथ स्वामीको कुछ भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० ६० ए० १९५३-५४ क्र० ३३९ पृ० ५२ ]

४७५

## मूडविदुरे ( मैसूर )

शक १४६८ = सन् १५४६, संस्कृत-कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें विलिगिके शासक वीरप्पोडेयकी वंशावली छह पीढ़ियों तक दी है । विदुरे नगरकी त्रिभुवनचूडामणि वसतिके लिए इस शासकने चिक्कमालिगेनाडु विभागके कुडुगिनवयलु ग्रामकी कुछ जमीनका उत्पन्न दान दिया था । इसी मन्दिरके चन्द्रनाथदेवको नैवेद्य अर्पण करनेके लिए एक चांदीका प्याला और कुछ धन भी दान दिया था । यह दान वीरप्प-के चाचा तिम्ररसकी पत्नी वीरम्मके नामसे था । इसी तरह घण्टोडेयके पुत्र तिम्रप्पके नामसे चन्द्रनाथदेवके दुग्गामिपेकके लिए कुछ दान दिया गया था । कार्तिक शु० ७, शक १४६८, विश्वावसु संवत्सर, यह इस दानकी तिथि थी । प्रथम आषाढ़ शु० १०, पराभव संवत्सर यह दूसरी तिथि दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए २ पृ० २३ ]

४७६

काप ताम्रपत्र ( जि० दक्षिण कनडा, मैसूर )

शक १४७९ = सन् १५५६, सस्कृत-अब्जद

- १ श्री धर्मनाथ (ने) शरणु ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाडन ।  
जीया-
- २ त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ हवस्तिश्रीसकलज्ञान-  
साम्राज्यपठराजित । व-
- ३ धर्मानजिनाधीश स्याद्वादमठमासुर ॥ तिन्निर्णीगच्छवाराशे -  
मुधाजुर्जनिदी
- ४ धिति । सद्धर्मसरसीहस प्रवादिगजकसरी ॥ काणूरगण-  
नभोभागे मामाति मुनि-
- ५ कु (अ) र । अज्ञानतिमिरोद्गति श्रीमान् मानुमुनी(श्च)र ॥  
पचाचारशरध्वस्तपच-
- ६ बाणशरव्रज । अलण्डश्रीतपोलक्ष्मीनायको मानुसयमी ॥  
श्रीमद्मानुमु-
- ७ श्रीश्व(रो) विजयते स्याद्वादधर्माश्वरे श्रीमद्ज्ञानविनूत्नदीधिति  
(श)तध्वस्तान्धका-
- ८ रमज । श्रीमूलामलसधनीरजमहापण्डेध्वस्तण्डधिय स्यात् (श्व)  
न् मुनि-
- ९ क्लोकाफनिकर सौग्याणवे मग्नयन् ॥ तुलुदेशवेम्बभूपत पोलेव  
महाप
- १० दकददे येसर्ग (से) गु निष्क । धरपोलगे कापिन नगरद नेलन-  
नालव भूप महद्देगडेयेम्ब ॥
- ११ पगुलबलि अधिपतियनु पौगलसदे नेलके तानु नृपकुलतिलक ।  
सगतसभेयोलु

- १२ पो (गल्लुं) अंगजजयजिनपदावजमधुकरनेवं ॥ भूदेविय मुखकंनडि  
वाडें हेल्लव-
- १३ गे कापुवेनिसिद नगरं । आदरदिंनदरो (लगा) मेदिनिमतधम-  
नाथनेन (से) गुं जिनपं ॥ आ नगर-
- १४ क्कधिपतिरुं श्रीपति तिरु (म) रस नृप (अ)वनीतिलकं ।  
घोमनदलि आताजुं वोतुकरं मुक्तिल-
- १५ क्षिमागित्तं मनमं ॥ येनेम्मे मद्देगडे दानचतुर्विधक्के ताने  
चित्तरत्नं । सन्नुतगुणगण-
- १६ निलेयं उन्नतशीलवनु ताल्ल (नृ) परिपुसंहारं ॥ धर्मदोलं (दद)  
चित्तनु निर्मल-
- १७ गुरुमक्तियल्लि तिरुमरसनृपं । धर्मजिनजैनशासनमं वोम्मन्दिं तालु  
माडि क्रिति (य)
- १८ नित्तं ॥ स्वस्ति श्री जयाभ्युदयं शालिवाहनशकवर्ष १४७६ नेय  
संद नलसंवत्सर-
- १९ द कार्तिक शुद्ध १ आदित्यवारदलु श्रीमन्महाराजाधिराजराजपर-  
मेश्वर सत्यरत्नाकर
- २० शरणागतवज्रपंजर चतुःसमुद्रार्धाश्वर कलियुगचक्रवर्ति श्रीवीर-  
प्रताप सदाशिव-
- २१ राय राजराजेंद्र दक्षिणभागसाग्यदेवतासंनिभरुमप्प रामराजय्य-  
नवरु ये-
- २२ क (चल) त्रिदिं राज्यवनु प्रजिपालिसुतिदे कालदलु वारकूरु  
मंगल्लु सदा(शि)वनायकरु
- २३ राज्यवं गे(यि)तिदे कालदलु तुलु(व)देशकामिनीमुखकमलतिल-  
कायमानानादिसि-
- २४ दप्रसिद्धकापिसिंहासनोदयाचलालंकरणतरुणतरणीप्रकाशरं-  
अनन्यराजन्यसौ(ज)-

- २५ न्य (श्री)दायंवीर्यधैर्यं(मा)धुर्यंगामीर्यनयप्रिनयमन्यशौचाद्यन-  
तगुण-
- २६ गणनूतनरत्नाभरणगणकिरणोद्योतितमरत्तादिसकल (पु)राणपुरुष-  
रमपर
- २७ तिरमलरसराद महहेगडेर अवर नालिनवर गणरणमावतर  
कापिन राज्यव-
- २८ नु प्रतिपालिमुतिदं कालदलु ॥ स्वस्ति श्रीमद्रायरात्रगुरु महला-  
चार्य महा-
- २९ यादवादीश्वर राज्यवादिपितामह सकलविद्व(ज)नचक्रवर्तिगलु  
इत्याद्यनेकवि-
- ३० रुद्रावलीविराजमानरु काणूरुगणाग्रण्यरगलुमण्य श्रीमदभिनव-
- ३१ देवकीर्तिदेवरगलु शिष्यरु मुनिचन्द्रदेवरगलु (अ)वरगलु शिष्यरु  
दवचन्द्रदे-
- ३२ वरगलु तम्म गुरु मुनिचन्द्रदेवरगलिगे स्वर्गापवर्गकं कारणवागि  
कापिन-
- ३३ लु धर्मवनु मादवेकं चित्तिदिद तिरमलरमराद महहेगडेर  
कू (कू)-
- ३४ डेयु भवर नालिनवर गण(प)णमामतर कूडेयु कापिन हलर  
सहायदि-
- ३५ द धर्मके थोटु धेनवनु कोडवेकु येदु चित्तमलागि धरगलु धर्म-
- ३६ परिणामरूपवने वुलुवराद कारण गुरुभक्तिविद्व तम्म सीमेध-
- ३७ लुम(ह्मा)रंभ्र (वू)रीगगे पडु(व)ण दिङ्गिनलु कलतोपनिना  
वरदेयलु अगलि-
- ३८ द धोलगे वेट्टिन गहेल्लु वीच वल्लु मूपत्तर लेवळद वत्त मूडे २  
मत्तम

- ३६ गालिंदं होरगे पापिनादियेव गदेत्कं बीज वल्ल मूवत्तर लेक्कद  
बीज  
४० मूडे ४ मत्तं वागिल गदेत्कं बीज वल्ल मूवत्तर लेक्कद मूडे ४  
गदे मू-

### पिछला भाग

- ४१ रक्कं बीज मूडे १० ई भूमिगलिगे वुल्ल करं मुरे मने वावि  
हलसु मावु सुं-  
४२ वे निक्किलिक्कदं कदिरु जल पापाण सह मूलधारेयु  
एरदु को-  
४३ टु यिमिकोदं दोडुवराहग ८० अक्षरदलु येमट्ट वराह यी हों-  
४४ त्रिगे येरदु वेलेयलु सह वर्पलं वह अक्कि अंगडिय होरिगेय  
४५ वल्ल एवत्तर लेक्कद अक्कि मूडे २४ ई अक्किगे नडव धर्मद  
विवर कापिन वस्ति-  
४६ य केलगण नेलेयलु धर्मतीर्थकरसन्निधियलु मध्याह्नकालदलु  
नित्यद -  
४७ लु दिन वोंदक्के वोंदुवल्ल अक्कि नैवेद्यवकु (सु) निचंद्रदंवरगल  
हेस-  
४८ रिनलु नड(व) हालधारेगु सह अक्कि मूडे १० तिगलु तिगलु  
तप्पदं ति-  
४९ गलल्लि १७ होहाग नडव वार १ मत्तं इप्पत्तैदु २५ होहाग  
नडव  
५० वार १ अंतु तिगलल्लि येरदु वार समदाय नडवुदक्के अक्कि  
मूडेयु  
५१ १२ई वारंगलल्लि मंगलत्रयोदशी वहाग आ मंगलत्रयोदशी  
नडव-

- ५२ (देंदु) विशेषवागि थिरिसिद्ध अत्रिक मूडे १ अतु अधिक मूडे  
यिप्पत्तनाळु
- ५३ थो धर्मंद स्थलदखिल बल्लारिगे अनाय सनाय सहदु इल आ  
स्थ(ल)गदलु इद
- ५४ वोळलिंगे विट्टि विट्टार सहदु काणिके देसे अप्पणे पददलि येत्तु  
सहदु येदु
- ५५ सर्वमान्यवागि तिरमलरमरा मद्देगडैयद अवर नाळिनवर ग-
- ५६ ण्पणसामतर सह तम्म धर्मपरिणामनिमित्तवागि तम्म स्वरचि-
- ५७ यिंद गुरुभक्तियिंद वोडवट्टु वरसि कोट ताम्रशामन इत-
- ५८ प्पुदळे साक्षिगलु अधिकारि कातमेट्टि चट्ट विक्रमेट्टि सामणि  
सकर-
- ५९ सेट्टि राजमेट्टि बगो(मे)ट्टिय अलिय केसण मूळर वेळिले  
विरमाल
- ६० हुग बडारि विरमामणि यित्तिनवर पुमयान्म(त)दि म-
- ६१ गलूर सकै सेनवोन्न वरह । यित्ती धर्मशास(न)के मगल-
- ६२ महा श्री श्री श्री ॥ स्वदत्ताद् दिगुण पुण्य परदत्तानुपालन ।
- ६३ परदत्तापहारेण स्वदत्त निष्फल भवेत् ॥ दानपालनयोर्मध्य
- ६४ दानाच्छेयोनुपालन । दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युत
- ६५ पद ॥ यी धर्मशासनके आचनानोश्च जैननादव तप्पिदरे बेलगु-
- ६६ लद गुम्मटनाथ कोपणद चद्रनाथ ऊच्चतगिरिय नेमीश्वर-
- ६७ मोदलाद् जिनविबगलनोडद पापके होहर शैवनादरे प-
- ६८ वंतगोकर्णमोदलादवरलि कोटिलिगवनोडद पापक्के होहर
- ६९ वैष्णवनादरे तिरुमलेमोदलादवरलि कोटिविष्णुमूर्तियनोड-
- ७० द पापक्के होहर ॥ मद् भूषाजिनशामनस्थ ॥ श्री

[ यह ताम्रपत्र शक १४७९ में लिखा गया था । उस समय विजय-नगरसाम्राज्यके अधिपति सदाशिवराय थे तथा रामराज उनके प्रधान सेनापति थे । इस साम्राज्यके बारकूर तथा मंगलूर प्रदेशपर केलडि सदाशिव नायककी नियुक्ति की गयी थी । इस प्रदेशमें काप नगरका अधिकारी मद् हेगडे था । इसने धर्मनाथ तीर्थंकरकी पूजा आदिके लिए मल्लाह गाँवमें कुछ जमीन दान दी जिसकी आय ८० वराह थी ( वराह उस समयकी रौप्यमुद्राकी संज्ञा थी ) । यह दान अभिनव देवकीर्तिके प्रशिष्य तथा मुनिचन्द्रके शिष्य देवचन्द्रके उपदेशसे दिया गया था । इसके पहले मूलसंघ-काणूरगण-तिन्त्रिणीगच्छके भानुमुनीश्वरकी प्रशंसा की गयी है । देवचन्द्र भी काणूरगणके ही थे । अन्तमें दानकी रक्षाके लिए जो शाप दिये हैं उनमें श्रवणबेलगोलके गोम्मटेश्वर, कोपणके चन्द्रनाथ तथा गिरनारके नेमिनाथकी मूर्तियोंका उल्लेख किया है ]

[ ए० ई० २० पृ० ८९ ]

४७७

चिप्पगिरि ( जि० वेल्लारी, मैसूर )

शक १४८२ = सन् १५६०, कन्नड

[ इस लेखमें आद्वानीके विशालकीर्तिगुरु तथा चिप्पगिरिके श्रावकों-द्वारा चतुर्थमुनीश्वरकी वन्दनाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ७४ ]

४७८

मूडचिदुरे ( जि० दक्षिण कन्नडा, मैसूर )

शक १४८५ = सन् १५६३, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें विदुरे नगरकी चण्डोग्र पारिश्वतीर्थंकर वसतिके लिए शंकरसेट्टि ऊर्फ विरणन्तर-द्वारा उसकी वहन शंकरदेवीके आग्रहसे कुछ

धन दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान अभिनव चाह्वीति पण्डितके आज्ञावर्ती सेट्टिकारोको सौंपा गया था। १२५० बराह मुद्राआके एक और दानका भी इसमें उल्लेख है। तिथि भेष ( त्रयोदशी ), शुकवार, शक १४८५, रविरोद्गारी सवन्मर ऐसी दी है। ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० १ ए ]

४७६

प्रिन्स आफ चेल्स म्युजियम, बम्बई

शक १४८५ = सन् १५६३, शिलाळत क्र० BB ३०७, कन्नड

[ यह लेख चैत्र शुक्ल १२, सोमवार, शक १४८५, दुर्गुमि सवन्मर, के दिन लिखा गया था। विदुष्य नायक तथा हेम्बरसि नायिकितिके पुत्र मालुव नायक-द्वारा गरसोपेमें शातिनाथका मन्दिर बनवाये जानेका तथा इस मन्दिरको कुछ जमीन दान देनेका इसमें निर्देश है। इसमें नगिरे, हेंवे, तुलु तथा कोंकण इन पश्चिम समुद्रतटके प्रदेशापर रानी चैत्र भैरा-देवीके शासनका उल्लेख है। ]

[ रि० इ० ए० ( १९५०-५१ ) क्र० २४ ]

४८०

मूडबिदुरे ( मैसूर )

शक १४९३ = सन् १५७१, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें मीचरामाणाणे विभागके मरकत ग्रामकी कुछ जमीन बिदुरेकी बसतिमें आहारदानके लिए अर्पित करनेका उल्लेख है। यह दान चोट कुलकी अब्बक्कदेवीने उसकी बहन पदुमलदेवीकी पुण्यवृद्धिके लिए दिया था। पुत्तिगेके शासन इस दानका भग न करें ऐसी सूचना अंतमें दी है। तिथि पौष शु० ८, रविवार, शक १४९३ प्रजोत्पत्ति सवत्सर, इस प्रकार दी है। ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० ए ३ ]



४८१

महेश्वर ( मध्यप्रदेश )

सं० १६२७ = सन् १५७१, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख सम्राट् अकबरके राज्यकालमें संवत् १६२७ में लिखा गया था । मालवामें उस समय ख्वाजा अजीझ बेग प्रान्तीय शासक नियुक्त था । इस समय मण्डलोई सुजानरायने महेश्वरस्थित आदिनाथ-मन्दिरका जीर्णोद्धार किया ।

अकबरके शासनकालके अन्य दो लेख यहीं प्राप्त हुए हैं । इनमें मण्डलोई देवदास ( सुजानरायके वन्धु ) द्वारा संवत् १६२२ में महेश्वर मन्दिरका तथा संवत् १६२६ में कालेश्वर मन्दिरका जीर्णोद्धार किये जानेका उल्लेख है । इस तरह जैन सज्जनों-द्वारा जैनेतर मन्दिरोंकी सहायता-का यह उदाहरण है । ]

[ इ० हि० का० १९४७ पृ० ३९२ ]

४८२

कुच्चंगि ( तुंकूर, मैसूर )

सन् १५७३, कन्नड

[ इस मूर्तिलेखमें कहा है कि नाल्कुवागिलु निवासी वोम्मिसेट्टिके पुत्र दानप्पने यह मूर्ति तथा प्रभावलि सन् १५७३में स्थापित की । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४ ]

४८३

चित्तामूर ( द० अर्काट, मद्रास )

शक १५०० = सन् १५७८, कन्नड-तमिल-संस्कृत

[ यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके मानस्तम्भपर है । इस स्तम्भकी

स्थापना जगतापिगुत्ति निवामी बायिसेट्टिके पुत्र बुश्सेट्टिने शक १५००, बहुधाय सवत्सरमें की ऐसा इसमें उल्लेख है । स्तम्भके दूसरी ओर मस्कृत भाषा और कन्नड लिपिमें इसी घणनका लेख है । इसमें बुश्सेट्टिको महा-नागकुलका कहा गया है । ]

[ रि० सा० ए १९३७-३८ क्र० ५१७-१८ पृ० ५७-५८ ]

४८४

कारकल ( द० बनडा, मैसूर )

शक १(५)०१ = सन् १५८०, कन्नड

[ इस लेखकी तिथि कार्तिक शु० १, शक १(५)०१ है । प्रारम्भ श्रीमत्परमगम्भीर आदि श्लोकसे है । अन्य विवरण लुप्त हुआ है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३ ५४ क्र० ३३७ पृ० ५२ ]

४८५

सेतु ( शिमोगा, मैसूर )

शक १५०५ = सन् १५०३, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीजयाम्बुदय शालिवाहनशक वरप १५०४ चित्रमास-  
रावत्सरद भाद्रपद सुद्ध १० शुक्रवारदु करुह माड चैपल्लिय  
तिम्म गौडर यिवल्लिय नायक्क गौडर जट्टिगौडर मग सेट्टि-  
गौडर आ समस्त श्रावकर सह मुतागि सेतुविन बसदि श्री  
आदितीर्थेश्वरारंगे माडिस्त लोहद

२ प्रभावलिगे आ समस्त जनगलिगे मगल महा श्री श्री श्री  
विरपयनु माडिदुदु

[ यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इस मूर्तिकी स्थापना भाद्रपद शु० १० शक १५०५ के दिन हुई थी । स्थापक चैपल्लि ग्रामके तिम्मगौड तथा यिवल्लि ग्रामके सेट्टिगौड थे । ]

[ ए० रि० मै० १९४४ पृ० १६७ ]

४८६

## येडेहल्लि ( मैसूर )

शक १५०६ = सन् १५८४, कन्नड

- १ शुभमस्तु नमस्तुंगशिरउचुंविचंद्रचामर (चार)वे
- २ त्रैलोक्यनगरारंममू(ल) स्तंभाय शंभवे ॥ स्वस्ति श्री-
- ३ विजयाभ्युदय गामिवाहसकचरुप १५०६ नेय संद वर्तमान ।
- ४ तारण मं । आश्विजा शु १० मि आदिवारदलु श्रीमतु ।  
दानिवा-
- ५ सद चेन्नरायचंडेर । मळलु चिक्कवीरप्पवांडेर मळलु चेन्नवि-
- ६ रवांडेर गेरसांप्पे समंतमद्रदेवर सिप्यरु गुणमद्रदेवर सिप्य-
- ७ रु । वीरमेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेन्तेन्दरे  
मालेपा(ल)
- ८ चन्दप्पन मग लिंगणनु । नष्टमन्तनवा(गि)हांद सम्मंद ।  
आतन भू-
- ९ मि नागलपुरद ग्रामद वलगे तेंगिनहितलगद्दे ख ९ कंदुग  
वंभ-
- १० तु वीजवरि । आ भूमि नम्म आरमनिगे हरवरियागि वन्द
- ११ सम्मंद । श्री वीरमेनदेवरिगे क्रैयावागि कोट्टेवागि आ भूमि-
- १२ गे सलुव क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरि-  
कल्पित उ-
- १३ भयवाद्रिमंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव पियसाहेनिजग-
- १४ हि वरह ग ३२ अक्षरदलु मूवत्तु येरहु वरहनु । तरविस उलि-
- १५ यदं । मले-साकल्यवागि सल्लिसि कोण्डेवागि । आ भूमिगे  
सलुव चत्तु-
- १६ सीमेय विवर । मूळलु । ई गद्देय नोरण्णरंकरु आगल्लिदं पटुलु

१७ तेंकलु केरेणरियिंद ब(ड)गलु ॥ पडुवलु गुस्वप्प हेवत्तन तो-  
 १८ टदिंद मूटलु । वडगलु हानम्बियिंद तेंगलु । यिंती चतुस्मि-  
 १९ मेयलगुत्तल । निधि । निक्षेपजल । पासण अक्षोणि । आगमि ।  
 सिद्धया-

२० ध्यगलेंब । अष्टाभोग तेजसाम्यवत्तु नीउ निम्म शिष्यत्त पा-  
 २१ रम्पर्यवागि सुग्गदिं वोगिमि बहिरि यन्द वरमि कोट व्रय शा-  
 २२ मन पटे यिदुक्के अविलास विटवरु देवलोक मत्थंलोकके विर-  
 २३ हितरु । श्रीहत्थ । गोहत्थके वजिनरहरु । विरपव  
 २४ डेर श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

[ यह लेख आश्विन शु० १०, रविवार, शक १५०६, तारण सवत्सरके दिन लिखा है । इसमें दानिवासके शासक चैन्नरायके पौत्र तथा चिक्क-वीरप्पके पुत्र चैन्नवीरप्प वडेर-द्वारा गेरमोप्पेके वीरसेनदेवकी कुछ भूमि दानेका उल्लेख है । वीरसेनके गुण गुणभद्र तथा प्रगुह समतभद्र थे । उन्होंने ३२ बराह मूल्य देकर यह भूमि खरीदी थी जो पहले भालेपाल वन्दप्पके पुत्र लिगण्णकी थी और उसके सत्तानरहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी । यह भूमि नागलापुर गांवके क्षेत्रमें थी । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० १०४ ]

४८७

येडेहल्लि ( मंसूर )

शक १५०७ = सन् १५४५, वसंत

१ सुममस्तु । नमस्तुगशिरश्चुविचट्टचामरचा-  
 २ रवे त्रैलोक्यनगरारंभमूलस्तमाय शमचे (१) स्व-  
 ३ स्ति श्रीजगन्मयुदय शालिवाहनशकवत्स्य १५०७  
 ४ सद वर्तमान पार्थिवसवत्सरद चयित्र व ७ मि आदि-

- ५ वारदलु श्रीमत्तु । दानिवासद चेन्नरायवोडेयर म-
- ६ कलु । चिक्कवीरप्पवोडेयर मकलु । चेन्नवीरप्पोडेयरु । गेरसो-
- ७ प्पे समंतमद्रदेवर सिप्प्यरु । गुणमद्रदेवर मिप्प्य-
- ८ वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवैत-
- ९ दर । बालेपाल तम्मयन मग नरसप्पनु नष्टस-
- १० तानवागि होद सम्मंद आतन भूमि र्थचलदाल ग्रामदलि ।
- ११ एण्डु खण्डुग विजवरि भूमि नम्म अरमनिगे हरवरियागि
- १२ वन्द सम्मंद आ भूमिन् दानिवासद चेन्नरायवोडेय-
- १३ र मकलु । चिक्कवीरवोडेयर मकलु चेन्नवीरवोडेयरु ।
- १४ गेरसोप्पेय समंतमद्रदेवर सिप्प्यरु गुणमद्रदेवर सिप्प्यरु
- १५ वीरसेनदेवरिगे । क्रयवागि कोटवागि । आ भूमिगे । सलुव । क्र-
- १६ यद्रव्य । लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरिकल्पित उभे-
- १७ यवादिमंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनके सलुव प्रिय-
- १८ सूाहे । निजगति वरह गद्याण ग ३० अक्षरदलु मू-
- १९ वत्तु वरहंनु तारविस वलियदे सल्लिसि कोण्डेवागि । आ एण्डु
- २० खण्डुग भूमिगे सलुव चतुर्मीमेय विवर मूडलु नन्दिगाव ।
- २१ तिम्मरसंयन गदेयिंदलू पडुवलु । पडुवलु नरसोपुरदं-
- २२ हलदिं वलु(?) मूडल । वडगलू दरंयिंदलू । तेंकलू । तें-
- २३ कलु अरमनेगदेयिंदलू वडगलू । यिति चतुर्मीमेयोल्लु-
- २४ ल निधि निक्षेप जल पापाण अक्षीणि आगमि सिध साध्यंगल्लेय
- २५ अष्टमोग तेजसाम्यवनु आगुमादिकोण्डु निचु निम्म शिप्प्य-
- २६ रु पारम्पर्यागि आचंद्राकंस्तायियागि सुखदिं भोगिमि
- २७ बहिरि येदुवरसि कोट क्रयस्यासनपटे यिदक्के अमिला-
- २८ से वटवर देवलोक मर्त्यलोकके विरहितरु । श्रीहस्य
- २९ गोहत्यक्के वजनरहरु चेन्नवीरवोडेरु श्री
- ३० श्री श्री श्री

[ यह लेख चैत्र व० ७, रविवार, शक १५०७, पार्विव सवत्सरक दिन लिखा है । इसमें दानिवासके शासक चेन्नवीरप्प वोडेयर-द्वारा गेर-सोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका उल्लेख है । इस भूमिके लिए ३० वराह कीमत दी गयी थी । यह पहले वालेपाल तम्मयके पुत्र नरसप्प-की थी जो पुत्ररहित गियित्तमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी । भूमि यीचल-दाल ग्रामके क्षेत्रमें थी । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० १०८ ]

४८८

### चिक्कहनसोगे ( मैसूर )

सन् १५८५, कन्नड

[ यह लेख आदिनाथवसदिके गोमुखपर है । चारुकीर्ति पण्डितदेवके गिण्य तथा ब्राह्मणप्रभुरा चिक्कण्यके पुत्र पण्डितग्य द्वारा आदीश्वर, चन्द्र-नाथ तथा शान्तीश्वरकी मूर्तियोंकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है । समय सन् १५८५ है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५१ ]

४८९

### येडेहल्लि ( मैसूर )

शक १५०९ = सन् १५८७, कन्नड

- १ सुभमस्तु । नमस्तुगशिरश्चुविचडचामर-
- २ चारवे त्रैलोक्यनगरभमू(ल)स्तमाय शमवे ।
- ३ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिग्रहण शक वस्य १५०९
- ४ नेय सद् वतमान । सर्वजित्तु स । वयिशक शु ५ मि
- ५ यु आदिवारदलु श्रीमत्तु । दानिवामद चेन्नरा-

- ६ यवदेर सकल । चिक्कवीरप्पवाडे मक्कलु चेन्नविरवा-  
 ७ डेर । गेरसोप्पे मर्मतमद्रदेवर शिप्परु । गुणभद्रदेव-  
 ८ र शिप्परु । वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रम-  
 ९ वेत्तेदरे नालपुरद ग्रामदोलगे संकण्णन मग मल-  
 १० यन टोकिन कोट्टिगे यिजवरि न्व १० हत्तु खण्डुग भूमि  
 ११ यु । मलविट्टु नम्म आरमनिगे हस्तरियाणि मंद मं-  
 १२ मंद । री वीरसेनदेवरिगे त्रयक्के कोट्टेवाणि । आ भूमिगे मलु-  
 १३ व क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित । तत्कालांचितमध्यस्तपरिकल्पित  
 १४ उभयवादिमंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के मलुव प्रियसू-  
 १५ हे । निजगटि वरह ग ४० अक्षरदलु नाल्वत्तु वरहनु । तर  
 १६ विम उलियदं माक्कयवाणि । मलिसि कोण्डेवाणि आ भूमिगे  
 मलु-  
 १७ व चतुसिमेय विवर । सुडलु यिगट्टेय नारैरकलगलि-  
 १८ द पडुवलु । वटगलु केरेयंगियिदं तैकलु तैकलु नं-  
 १९ म गट्टेयिदं वडगलु । यिती चतुरर्मायेयालगुल नि-  
 २० धि निक्षेप जल पाम्पण अक्षाणि आगमि सिध सांध्यंग-  
 २१ लेव आष्टमोग तेजमाम्भ्यवंनु निटनिम्म शि-  
 २२ प्परु पारम्परियवाणि सुम्भदि वाणिमि वट्टिरि  
 २३ येदु वरमि कोट क्रयगाल्लनपटे । विदक्के अगिला(पे) वट्टवरु दे-  
 २४ वल्लोक्क मर्त्यलोकक्के विरहितरु श्रीहय गोहयक्के यजनरह-  
 २५ न । चेन्नवीरवडेन श्री श्री श्री श्री श्री

[ यह लेख बीजाल्प शु० ५, रविवार, शक १५००, मघजित मंवरमर  
 डम तिथिका है । दानिवासके ग्रामक चेन्नवीरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके  
 वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका डममें उल्लेख है । नालपुर ग्रामकी  
 यह भूमि ४० वराह क्रोमत् देकर खरीदी गयी थी । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११० ]

४६०

रत्नत्रयवसदि वीलिंगि, ( उत्तर कनडा, मैसूर )

१६वीं सदी ( सन् १५८७ )

[ इस लेखमें मूलमध-दसिगण पुस्तकगच्छके श्रवणप्रेलगुल मठके चार-कीर्ति पण्डितका उल्लेख किया है। इन्हें रायगाजगुरु, मण्डलाचाय, वल्लाल-रायजीवरम्भापालक आदि उपाधियाँ प्राप्त थी। उनकी परम्परामें श्रुतकीर्ति पण्डित हुए। इनकी शिष्यपरम्परा इस प्रकार थी—श्रुतकीर्ति—विजयकीर्ति—श्रुतकीर्ति ( द्वितीय )—विजयकीर्ति ( द्वितीय ) अक्लक—विजयकीर्ति ( तृतीय )—अक्लक ( द्वितीय )—भट्टाक्लक। भट्टाक्लकदेवका समय शक १५१०=सन् १५८७ दिया है। भगीतपुरका लोकप्रयुक्त नाम हाडुवतिल है। यहांके राजा इन्द्रभूपालको विजयकीर्ति ( प्रथम ) की कृपामें सिंहासन प्राप्त हुआ ऐसा कहा गया है। विजयकीर्ति ( द्वितीय ) की प्रेरणासे पश्चिम समुद्र तटपर भट्टक्लक नगरकी स्थापना हुई थी। ]

[ ए० इ० २८ पृ० २९२ ]

४६१

जि० दक्षिण कनडा ( स्थान नाम अज्ञात )

शक १५१३=सन् १५६१, काड

[ यह ताम्रपत्र शक १५१३ खर मन्वन्तरमें किर्तिग भूपालने दिया था। इसमें एक जैन मन्दिरके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है। ]

( इ० म० दक्षिण कनडा २ )



४६२-४६३

रायचाग ( मैसूर )

शक १५१९ = सन् १५९७, संस्कृत-कन्नड

[ ये दो लेख स्थानीय आदिनाथमन्दिरके दो स्तम्भोंपर हैं - एक कन्नडमें है तथा दूसरा उसीका संस्कृत रूपान्तर है । इसमें ज्येष्ठ व० १४, शक १५१९ के दिन मूलसंघ-सेनगणके सोमसेन भट्टारक-द्वारा इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५२-५३ पृ० ३३ ]

४६४-४६५

मारूरु ( दक्षिण कनडा, मैसूर )

शक १५२० = सन् १५९८, कन्नड

[ ये दो लेख हैं । मारूरुके पार्श्वनाथवसतिमें स्थित तीर्थकरमूर्तियोंकी पूजाके लिए पार्श्वदेवा विन्नाणि-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका इतमें उल्लेख है । पहला लेख चैत्र शु० ३, सोमवार, शक १५२० का है तथा दूसरा लेख पौष शु० २ शुक्रवार, शक १५२० का है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ७४-७५ ]

४९६-४९७

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

संस्कृत-ग्रन्थ, १६वीं सदी

[ यह लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है । पुष्पसेन योगीन्द्रके गुरु समन्त-भद्रकी अक्षय कीर्तिका इसमें वर्णन है ।

यहीके एक अन्य लेखमें मुनिभद्रस्वामीका नामोल्लेख किया है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३४, १४५ ]

४६८

हुमच ( मंगूर )

१६वीं सदी, कन्नड

१ श्रीनोम्भरसनु रूपवतिदिटनू

[ यह लेख पास्वनाथबमदिमे स्थित क्षेत्रपालमूर्तिके पादपीठपर १६वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें मूर्तिके निर्माताका नाम नोम्भरम दिया है । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७ ]

४६९

सेतु ( शिमोगा, मंगूर )

१६वीं सदी, कन्नड

१ स्तुति श्रीगुम्मेय सेट्टियर बस्तिय धीवर्धमानस्वामिय स्नि-  
धानदल्लि गणपणसेट्टियर मग सघटयसेट्टियर तमगे पुण्यात्-  
वागि प्रतिष्ठे माडिसिद अभिनन्दनतीर्थेद्वरनिगे म-

२ गल महा धी श्री श्री श्री श्री

[ इस लेखमें सघटय सेट्टि-द्वारा अभिनन्दन तीर्थकरकी इस प्रतिमा की स्थापनाका निर्देश है । इस समय गुम्मेयसेट्टिकी बस्तिके वर्धमान-स्वामी उपस्थित थे । लिपि १६वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९८४ पृ० १६६ ]

५००-५०१

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

१६वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें एक पद्यमें कोण्डैमलै निवासी गुणवदिरमुनिवन् ( गुण-  
भद्रमुनि ) की प्रशंसा की गयी है जो दक्षिणप्रदेशमें तमिल और संस्कृतके

सुप्रसिद्ध विद्वान् थे । लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है तथा चन्द्रनाथमन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है । मन्दिरके मण्डपकी दीवालपर खुदे एक अन्य लेखमें इन्हीं आचार्यको वीरसंघप्रतिष्ठाचार्य यह विशेषण दिया है ।

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र०, ३०२ पृ० ६५ ]

५०२

सौंदा ( उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १५३० = सन् १६०७, कन्नड

पहली ओर

१ श्री (१) स्वस्ति (१) श्रीजयाभ्युदय शालिवाह-

२ नशकवरूप १५३० नेय प्लवंगसंवत्सर-

३ द कार्तिक शु १० बुधवारदलि श्रीमद् राय-

दूसरी ओर

४ (राजगुरुम्) ढलाचार्य महावाद-

५ (वादीश्वर रा) यवादिपितामह सकलविद्वज्ज-

६ (नचक्रवर्ति व) लालरायजीवरक्षापा-

तीसरी ओर

७ लक देशिगणाग्रगण्य संगीतपुरसिंहा (सन)-

८ पट्टाचार्य श्रीमदकलंकदेवरुगलु

९ श्रीपंचगुरुचरणस्मरणियिद स्वर्गस्थरा-

चौथी ओर

१० (दरु) (१) अवर निपिधिमंटपके मंगल महार्थी (१)

११ भट्टाकलंकदेवेन स्याद्वादन्यायवादिना(१)

निपि-

१२ धीमंटपो दृढः स्थेयादाचंद्रमा (स्क) रं (॥)

[ इस लेखमें देशिगणके प्रमुख संगीतपुरके पट्टाचार्य अकलकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक श० १० श० १५३० के दिन हुआ था । उनकी यह निषिधि उनके शिष्य भट्टाकलकदव द्वारा स्थापित की गयी थी । ]

[ ए० इ० २८ पृ० २९२ ]

५०३

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

श० १५४१ = सन् १६१९

[ यह लेख विजयनगरके महामण्डलेश्वर रामदेव महारायके समय श० १५४१, कालयुक्ति, चैत्र ३ के दिन लिखा गया था । बाल नागम नायक और तलत्तार् लोगो द्वारा कायिलायप्पुलवर् ( नामक जैन विद्वान् ) को कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३७ ]

५०४

मूडविदुरे ( मैसूर )

श० १५४४ = सन् १६२२, कन्नड

[ इस साम्रपत्रमें निर्देश है कि सेनगणके समतभद्रदेवने इक्केरिमें केलडि वेंकटप्प नायकमें मिलकर तथा उसके अधीन अधिकारी चित्रभंडार देवप्पसे साहाय्य पाकर बिदुरे नगरकी त्रिभुवनतिलक बसंतिका जोर्णोंडार कराया । तिथि वैशाख, श० १५४४, रुविरोद्गारी सवत्सर । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ४ ]

५०५

कलकत्ता ( नाहर म्युजियम )

शक १५४८ = सन् १६२६, कन्नड

१ सक १५४८ श्रीमूलसंव भट्टारक

२ श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् प्रणम

३ श्रीमतिवीर

[ यह लेख पीतलकी चौबीसतीर्थकरमूर्तिके पादपीठ पर है । मूलसंघके धर्मचन्द्र भट्टारकके उपदेशसे श्रीमतिवीर-द्वारा इस प्रतिमाकी स्थापना शक १५४८ में की गयी थी । लिपिसे पता चलता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित है । ]

[ ए० रि० मै० १२४१ पृ० २४९ ]

५०६

कोलारस ( शिवपुरी, मध्यप्रदेश )

संवत् १६८४ = सन् १६२८, हिन्दी-नागरी

[ इस लेखमें शाहजहाँके अधीन शासक अमरसिंहके समयमें एक जैन चैत्यालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । तिथि आषाढ़ शु० ९, गुरुवार, संवत् १६०॥८४ इस प्रकार दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २४१ पृ० ४८ ]

५०७

मूडविदुरे ( मैसूर )

शक १५५४ = सन् १६३२, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि विदुरेके दो विभाग वेदुकेरी तथा मारलंगडिकेरीमें रहनेवाले श्रावक पहले दीवालीका त्यौहार मनाते वक्रत

एक दूसरेमें पत्थर, लाठी आदिमें लड़ते थे । सेनगणके सम-तन्त्रदेवने उन्हें इस कार्यसे रोककर दीपाराधना और अथ पूजाओंमें यह त्यौहार मनानेका आदेश दिया । तदनुसार स्वर्ण तथा अथ शिष्याके प्रभावमें उसका पालन भी कराया । तिथि-दीपावली, आगिरस मन्मथर, शक १५५४ । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ अ० ७० ८ पृ० २३ ]

५०८

### मूडविदुरे ( मंगूर )

शक १५६२ = सन् १६४१, कन्नड

[ इस साम्रपत्र लेखकी तिथि शक १५६२ विक्रम, मागशिर कृ० २ शुक्रवार, ऐसी है । मंगलूर तथा वाङ्कूरके शामक वेन्डि धीरमद्र नायक-के समयका यह लेख है । पुत्तिगे निवासी चौटवगके चिक्कराय ओट्टेय-द्वारा अभिनव चाह्कोति पण्डितदेव तथा मूडविदुरेके अथ श्रेष्ठियाको सरक्षणका आश्वासन दिये जनिका इसमें निर्देश है । इसके पूर्व अधिकारियों-द्वारा धार्मिक तथा वैदिक मम्पत्तिका अपहरण किया गया था अतः यह आश्वासन जरूरी हुआ था । ]

[ रि० ना० ए० १९८०-४१ क्र० ए ८ ]

५०९-५१०

### शिवपुरी ( मध्यप्रदेश )

सन् १७०३ = सन् १६४७, हिन्दी नागरी

[ इस लेखमें महाराज मग्नमके पोतदार जैन मोहनदास द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । यहीके एक अथ लेखमें गंगादास और गिरधर-

दास-द्वारा मालवदेशस्थित शिवपुरी ग्राममें एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। प्रथम लेखकी तिथि वैशाख शु० ३, शक १५६८, संवत् १७०३ ऐसी दी है। ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २५०-५२ पृ० ४८-४९ ]

५११

सोंदा ( उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १५७७ = सन् १६५५, कन्नड

- १ स्वस्ति (i) श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनसकव(र्ष)
- २ १५७७ जय सं(वत्सर)द कार्तिक सुध दशमि
- ३ सू(र्यो)दयवाद यरडने वलिगेय-
- ४ हिल देसि श्रीमद् रायराजगुरु मंड-
- ५ लाचार्यरं महावाद्वादीश्वर रा-
- ६ यवादिपितामह सकलविद्वज्जनच-
- ७ (क्र) वतिंग(लुं) वल्लालरायजीवरक्षोप-
- ८ लकरुमप्प श्रीमद् मट्टाकलंकजीय्य(दे)-
- ९ वरु
- १० (श्री)पंचगुरुचरणस्मर(णैयिंद)
- ११ चतुसंध(समक्ष) दल्लि स्व-
- १२ गंवनेदिदुरु (i) इ-
- १३ ती श्री श्री श्री (ii)

[ इस लेखमें देसिगणके श्रीमद् भट्टाकलंकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक शु० १० शक १५७७ के दिन हुआ था। उनकी समाधि पर यह लेख है। ]

[ ए० इ० २८ पृ० २९२ ]

५१२

टोडा रायसिंह ( जयपुर, राजस्थान )

सन् १७१८ = सन् १६६२, सस्कृत नागरी

[ इस लेखमें अम्बावतीके कछवाह वंशके राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदाम द्वारा विमलनाथ मन्दिरके निर्माणका वर्णन है। तिथि फाल्गुन व० १०, बुधवार, सवत १७१८ ऐसी दी है। उस समय मुगल बादशाह शाहजहाँका राज्य चल रहा था। ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१४ पृ० ६९ ]

५१३

श्रीरगपट्टम् ( मैसूर )

सन् १६६६, कन्नड

[ यहांके आदीश्वरमन्दिरमें सन् १६६६ का एक लेख है। इसमें चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्य पायण्ण-द्वारा अष्टाह्निकामहोत्सवके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। ]

[ ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५६ ]

५१४

मुलगुन्द ( चारवाड, मैसूर )

शक १५९७ = सन् १६७५, कन्नड

[ यह लेख भाद्रपद व० ५, रविवार, शक १५९७ राशम सवत्सरका है। इसमें नागभूपकी पत्नी बतदाम्बिके द्वारा अर्हेन् आदिनाथकी मूर्तिकी पुनः स्थापनाका वर्णन है। यह मूर्ति मुसलमानों-द्वारा भ्रष्ट की गयी थी। ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९३ पृ० ८ ]



५१५

, वेल्दूर ( मैसूर )

शक १६०२ = सन् १६८०, कन्नड

- १ ॥ शुभमस्तु ॥ नमस्तुंगशिरश्चुम्बिचंद्रचामर-
- २ चारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्तंभाय शम्भ-
- ३ वे ॥ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवरूपंग-
- ४ लु १६०२ ने खुद्रि सं । माद्रपद व १० ल्लु दिल्लिकोल्ला-  
पुरजि-
- ५ नकंचिपेनुगोंडेसिंहासनद समंतमदस्वामिगल शि-
- ६ प्यराद वीरसेनभट्टारकरवर प्रियशिष्यराद लक्ष्मीसेनम-
- ७ ट्टारकरवरिगे आत्रेयगात्रद आपस्तंभसूत्रद य-
- ८ जुःशारवाद्यायिगलाद श्रीमन्महाराजश्रीहरति सम्मेटरंग-
- ९ प्यराजरवर पौत्रराद कृष्णप्यराजरवर पुत्रराद राय
- १० प्यराजरवर रत्नगिरिवस्ति देवस्थानदल्लि यी जिनेश्वर-  
स्वामिप्रतिष्ठा-
- ११ कालदल्लि दारागृहीतवागि कोट भूदानद दर्मशासनदान-
- १२ पट्टे क्रम वेंतेंदरे  
( पंक्ति ३ मे १२ तकका पाठ पंक्ति २६ तक दो बार  
दोहराया है । )
- २७ क्रम वेंतेंदरे यी रत्नगिरि स्थलदल्लि अनादियागियिदंथाव-
- २८ स्ति देवस्थानदल्लि जिनेश्वरस्वामिगे आराधने नडेयदे यिदं-

## पिठला भाग

- २६ धादरल्लि नीपु मत मरक्षण्यकर्तरागि बुद्धमविसिद्धा यो—  
 ३० गनिष्ठरादरिंद यी देवस्थानउन् पुन जीर्णोद्धारव माडि  
 ३१ सप्रोक्षणे प्रतिष्ठेयन् माडि दवता नित्य वैमन्वु मार्ग-  
 ३२ कालयु नडहु आ मुहुत नमगु पुतागुव रीतिगे नडमिधिरागि  
 ३३ अहु निमित्त्य आ महोत्सवाकालदलि निगमे नम्म सिरंहद सीमे-  
 ३४ यालगण सने दीडेरि होत्रलि गूडिद वडुवन हलिस्थ-  
 ३५ लडोलगण आपिनहल्लियन् सहिरण्योदकदानधारा-  
 ३६ गृहीतवागि त्रिवाचु त्रिकरणयुक्तवागि धारयने-  
 ३७ रहु काट्टेवागि आ ग्रामके सलुवता यरेने कॅनेल्का-  
 ३८ दारम्म नीरारम्म अणे अचुकट्टु यात कपिं गूडेगू-  
 ३९ यिलु केरे कुटे कालुवे मोदळागि आ ग्रामक सलुवता परिस्तरण-  
 ४० दोळगागि वुत्पत्ति आउता सकल सुवर्णादाय सकलमत्ता-  
 ४१ दायवन् निम्म मिथ्यपारम्पर्यं अनुभविमि कौडुसु-  
 ४२ एल्लि विहुदेंदु वरमि कोट दानपट्टे । एदत्ताद्वि-  
 ४३ गुण पुण्य परदत्तानुपालन । परदत्तापहारण  
 ४४ एवदत्त निष्फल भवेत् ॥ श्रीरामा

[ इस दानपत्रकी तिथि भाद्रपद कृ० १०, शक १६०२ रौद्रि मघस्मर, ऐमो है इसमें रामप्पराजके पौत्र तथा कृष्णप्पराजके पुत्र रामप्पराज-द्वारा लक्ष्मीसेन भट्टारककी रत्नगिरिवस्तिके लिए आपिनहल्लि नामक ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । लक्ष्मीसेनकी दिल्ली, कोल्हापुर, जिनकचि तथा पेनुगोडे के सिंहासनाधीश कहा है । वे समतभद्र स्वामीके शिष्य तथा वीरसेन भट्टारकके शिष्य थे । दानदाता रामप्प राजा हरनि नगरके २३ ख थे । उन्हें आग्नेय गोत्रके आपस्तबमूत्रा गुप्तायी कहा है ।

[ ए रि मे १९३९ पृ १८७ ]

५१६

चेल्लूर ( मैसूर )

कन्नड ( सन् १६८० )

[ यह लेख विमलनाथमूर्तिके पादपीठपर है। पद्मकुलके शर्कर-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी। यह हूलिकल निवासी था तथा समन्तभद्रा-चार्य के शिष्य लक्ष्मीसेनाचार्यका शिष्य था। समय लगभग सन् १६८० का है। ]

[ ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८ ]

५१७-५१८

पोन्नूर ( उ० अर्काट, मद्रास )

शक १६५५ = सन् १७३३, तमिल

[ स्थानीय जिनमन्दिरके छतमें लगे स्तम्भपर यह लेख है। तिथि वैशाख २७, प्रमादी संवत्सर, शक १६५५, कलिवर्ष ४८३४ यह है। इसमें कहा है कि स्वर्णपुर-कनकगिरिके जैन हेलाचार्यकी साप्ताहिक पूजा-के लिए प्रति रविवारको पार्श्वनाथ तथा ज्वालामालिनीकी मूर्तियां नीलगिरिपर्वतपर ले जाते हैं। यहीके अन्य लेखमें पार्श्वनाथकी स्तुतिमें कुछ मन्त्र लिखे हैं। ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१६-१८ पृ० ४० ]

मूललेख

- १ स्वस्ति श्री आलिवाहनशकाब्दः १६५५ कल्यब्दः ४८३४ ककु  
मेल्लू चेल्ला निणरा प्रमवादि ग ( श ) काब्दः चरुपं ४६ ककु  
प्रमादिच चरुपं वैगाशिमादं १७ ( उ ) मल्लुदिय शासनमावदु ( १ )  
स्वस्ति श्रीस्व ( णं ) पु ( र ) कनकगिरि आदीश्वरस्वामिचैत्यालय  
सम्बन्द्मान वायुमल्लैयिलि-

२ रक्कु नीलगिरि हेलाचार्यपादपूजै आदिवास्तु तोरम् मेपादि  
आलयत्तिन् श्रीपाद्वनाथस्वामियु ज्वालासा (लि) निश्चम्मणैयु  
मेपादि स्वर्णपुरजैनगल् ण्डुत्तुकोण्डु पोय् पूजिप्पट्टु (१) इन्द  
शासनमनन्तसनदेव (नाले ) लुत्तपट्टु (११)

[ ए० इ० २९ पृ० २०२ ]

५१६

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

शक १६६९ = सन् १७४८, तमिल

[ यह लेख ज्येष्ठ शु० ५, शक्रवार, शक १६६९ को लिखा गया था ।  
मुनिगिरि स्थित कुन्युनाथस्वामीके मन्दिरके गोपुरका जीर्णोद्धार अगस्तियप्प  
नायितार्ने किया ऐसा इसमें कहा गया है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३६ ]

५२०

मूडचिदुरे ( मैसूर )

शक १६७१ = सन् १७५७, कन्नड

[ बिद्यानगर (विजयनगर) के राजा विजय सदाशिव महारायके  
अधीन सोदे प्रदेशके शासक अरसप्पोडेयके पुत्र इम्मडि अरसप्पोडेयने  
वेण्णोगावे ग्रामकी कुछ जमीन अपने गुरु चारुकीति पण्डितदेवको अर्पित की  
ऐसा इस साम्रपत्रमें उल्लेख है । तिथि-मार्गानिश्च शु १ शक १६७९, रायम  
सवत्सर । ]

[ रि सा ए १९४०-४१ पृ २४ क्र ए ६ ]

५२१

वालूर ( धारवाड, मैसूर )

शक १(६) = सन् १७६३, कन्नड

[ जैन मन्दिरके सन्मुख दीपमाला स्तम्भपर यह लेख है । देवण्ण और उसके पुत्रोंका इसमें उल्लेख है । तिथि कार्तिक शु. १०, सोमवार, विक्रम, शक १६८५ ऐसी दी है । ]

[ रि. इ. ए. १९४५-४६ क्र. २१३ ]

५२२

तिलिवल्लि ( धारवाड, मैसूर )

१८वीं सदी, कन्नड

[ इस निसिधि लेखमें वैशाख शु. ५ सोमवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिन पुजारी पेवय्यके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि. इ. ए. १९४५-४६ क्र. २५३ ]

५२३

काकन ( जि० मोंघीर, बिहार )

संवत् १८२२ = सन् १७६६, संस्कृत - नागरी

जैन मन्दिरमें चरणपाटुकाओंके चारों ओर

[ इस लेखमें काकन्दीके जैन मंघ-द्वारा संवत् १८२२ वैशाख शु० ६ को जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा मुविधिनाथके चरणोंकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ३ ]

५२४

मैसूर

कन्नड

शान्तीदेवर वसतिमें दीपस्तम्भोंपर

[ इस लेखमें चामराजकी रानी देवीरम्मणि-द्वारा उक्त दीपस्तम्भ शांतीश्वर वसतिको अर्पित किये जानेका उल्लेख है। ये चामरान मैसूरके राजा चामराज वोडेयर ( नवम ) ( मन् १७७१-९६ ) हागे । ]

[ मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२ ]

५२५

मैसूर

कन्नड

उपर्युक्त वसतिमें चार कलशोंपर

[ इस लेखमें उपर्युक्त रानी देवीरम्मणि-द्वारा शांतिनाथके अभिषेक-के लिए इन चार कलशोंके दानका निर्देश है । ]

[ मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२ ]

५२६-५२७

नरसिंहराजपुर ( मैसूर )

सन् १७७८-७९, कन्नड

[ यहांके दो लेख सन् १७७८ तथा १७७९ के हैं। पहलेमें वियग वरमयके पुत्र नागप्प-जो काम्बोदि वैश्य था तथा तिसडेवृक्षस्यका था -

द्वारा एक मण्डपकी स्थापनाका उल्लेख है । दूसरेमें इसी व्यक्ति-द्वारा मूर्तिका पादपीठ अर्पित करनेका उल्लेख है । रविवारव्रतकी समाप्तिपर यह दान दिये गये थे । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४ ]

५२८

मैसूर

शक १७३६ = सन् १८१४, कन्नड

शान्तोश्वर वसति-गर्मगृहके द्वारके पीतलके आवरणपर

[ इस लेखमें धनिकार पद्मयके पुत्र नागैय-द्वारा ३९३ ( तेर ) वजन-के इस पीतलके गन्धकुटी ( द्वार ) के आवरण दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान आश्विन शु० १, शक १७३६, भाव संवत्सरके दिन दिया गया था । ]

[ मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२ ]

५२९

मैसूर

( शक १७३६ = सन् १८१४ ) संस्कृत-कन्नड

शान्तोश्वर वसति-सुखनासि द्वारके आवरणपर

श्रीमच्छान्तिजिनेन्द्रस्य पंचकल्याणसंपदः ।

श्रिया मेरुजिनागारं हस्ततश्चैक्यवेश्मनः ॥१॥

पराध्यंरचनोपेतं कवाटमिदमद्भुतं ।

कारयामास सद्मक्त्या श्रावको जैनमार्गतः ॥२॥

नागनामा पितुः स्वस्य मरिनागाहयस्य च ।

धनिकारपदाढ्यस्य स्वर्माक्षसुखलब्धये ॥३॥

[ इस लेखमें निर्देश किया है कि प्रस्तुत द्वारका निर्माण घनिवार मरिनागके पुत्र नागन्दारा किया गया । इस लेखमें समयनिर्देश नहीं है किन्तु पिछले लेखका ही समय इसका भी होगा ऐसा अनुमान होता है । ]

[ ए० रि० मे० १९३६ पृ० १०३ ]

५३०

मैसूर

शक १७५४ = सन् १८३२, सङ्कृत-कच्छ

अनन्ततीर्थकरकी मूर्ति - शान्तीश्वर वसति

१ श्रीमन्कश्यपगात्रनो जिनपदामोत्रे लक्ष षट्षट् आर्षोयोत्तम-  
देवराजनृपति सदमं-

२ परम्या सह { १ } केषम्मण्यमिधानया प्रवयुता स्वर्गनिवर्गप्रद  
कृत्स्नानतत्रत तदा-

३ रचितवान् विव सुदैवच्छुभ ॥ अनुनीद्रियशैल्लेदु-प्रमितेस्मिन्  
शाकाब्दके ।

४ नन्दने वत्सरे माद्रमासे शुक्लाष्टमीतिथौ । अनन्तनाथविग्रहस्य  
प्रतिष्ठा जग-

५ दुत्तरा { १ } कारयामास पूर्वाङ्कदेवराजनृपोत्तम ॥

[ इस लेखमें कश्यप गोत्रके उत्तम क्षत्रिय राजा देवराज तथा उनकी धर्मपत्नी केषम्मणि-द्वारा अनन्तव्रतकी पूर्णताका सल्लेख है । उक्त दम्पतिने इस अवसरपर भाद्र शुक्ल अष्टमी, शक १७५४, नन्दन सप्तमर, के दिन अनन्तनाथकी यह मूर्ति स्थापित की । इस समय मैसूरमें कृष्णराज वडेयर ( तृतीय ) का राज्य चल रहा था । अतः लेखोक्त देवराज नृपति मैसूरकी अरसु जातिके प्रमुखोंमें-से एक थे ऐसा अनुमान होता है । ]

( ए० रि० मे० १९३६ पृ० १०१ )



५३१

हले हुव्वलि ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक १७८४ = सन् १८६२, कन्नड

[ यह लेख शक १७८४ का है । कहा गया है कि इस वर्ष एक नया जगट बनवाया गया । यह उस पुराने जगटसे बनवाया था जो यहाँके अनन्तनाथवसतिमे पिछले ११०० वर्षोंसे था । ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० ३५ पृ० २५७ ]

५३२

चित्तामूर ( द० अर्काटि, मद्रास )

शक १७८७ = सन् १८६५, संस्कृत-ग्रन्थ

[ यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके गोपुरकी दीवालपर है । इस गोपुरका निर्माण अभिनव आदिसेन भट्टारकने सार्वजनिक सहायतासे किया ऐसा उल्लेख है । तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, शुक्रवार, शक १७८७ क्रोधन संवत्सर ऐसी दी है । इसी दीवालपर एक अन्य लेखमे जिनालयनिर्माणसे प्राप्त पुण्यकी प्राप्त पुण्यकी प्रशंसाके कुछ श्लोक हैं । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५१९-२० पृ० ५८ ]

५३३

मैसूर

१६वीं सदी, कन्नड

शान्तीश्वर वसतिमें सर्वाण्ह यक्षकी मूर्तिके पादपीठपर

इस लेखमे मरिनागेय नामक व्यक्ति-द्वारा महिमूरके शान्तीश्वर वसतिमे सर्वाण्हयक्षकी मूर्तिके पादपीठपर पीतलका आवरण लगानेका

उल्लेख किया है । गरिनागैय दनिकार पदोंयका पुत्र था । लिपि १९वीं सदीकी है ।

[ मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित ]

[ ए० रि० मे० १९३६ पृ० १०० ]

५३४

मैसूर

१९वीं सदी, कन्नड

उपयुक्त वसतिमें घण्टापर

[ इस लेखमें शिरसैयके छोटे भाई पुट्टय-द्वारा इस घण्टेके दानका उल्लेख है । लिपि १९वीं सदीकी है ।

( मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित )

[ उपर्युक्त पृ० १०० ]

५३५

मत्तावार ( मैसूर )

१९ वीं सदी, कन्नड

मत्तवूर वस्ति पार्श्वनाथस्वामिचैत्यालयक

ऐवर अबणनुव

[ यह लेख एक घण्टेपर खुदा है । ऐवर अबण-द्वारा यह घण्टा मत्तवूरके पार्श्वनाथस्वामी चैत्यालयमें अर्पण किया गया था । लिपि १९वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मे० १९३२ पृ० १७५ ]

५३६

कन्नपतिपाडु ( नेलोर, आन्ध्र )

तमिल

[ इस लेखमें करिकालचोल जिनमन्दिरके लिए मतिसागरदेवके उपदेशसे प्रमलदेवी-द्वारा सीढ़ियाँ बनवानेका निर्देश है । यह लेख सम्राट् राजराजदेवके ३७वें वर्षका है ।

नोट—चोल राजराज नामक किसी भी राजाका राज्य ३७ वर्षकी दीर्घ सीमा तक नहीं पाया जाता । अतः इस लेखकी तिथि गलत प्रतीत होती है । ]

( ३० म० नेलोर ५०२ )

५३७

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

तमिल

[ यह लेख पल्लव राजा सकल भुवनचक्रवर्ति पेरुंजिगदेवके तीसरे राज्यवर्षका है । इसमें इस देव-मन्दिरकी प्रदक्षिणामालिकाका निर्माण पालैयूर निवासी.....शिगन्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । लेख चन्द्रनाथ-मन्दिरके प्राकारके पश्चिमी दीवारपर खुदा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१४ पृ० ६६ ]

५३८

गेरसोप्पे ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड

१ वनशोकवलीमंजुलदेगीगणललितकीर्तिमुनिसूनोः ( १ ) श्रीदेव-  
चन्द्रसूरैरुपदेशाच्चेमिजिनयिभ्यं ॥

२ इलोक ॥ ओजणथ्रेष्ठिपुत्रोसौ कल्पथ्रेष्ठिपुत्र (i) अकारयन्  
मुतो यस्य मावाम्बागर्मजोत्रण ॥

[ यह नेमिनाथ मूर्ति ओजणथ्रेष्ठिके प्रपीत्र तथा कल्पथ्रेष्ठि एव  
मावाम्बाके पुत्र ओजणथ्रेष्ठिने देशीगण-घनशोक-बलीके आचार्य ललितकीर्तिके  
शिष्य देवचन्द्रसूरिके उपदेशसे स्थापित की । ]

[ ए० रि० मं० १९२८ पृ० ९५ ]

५३६

गैरसोप्ये ( मंमूर )

कच्छड

१ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादामोषलाउन (i) जीयान् त्रैलोक्यनाथ-  
स्य शासनं त्रिनशासन (ii)

२ श्रीजिनराजराजितपदाम्बुनराचमराल नगिरिय राचशिरो-

३ मणि प्रचुरकीर्तिदिशावलयप्रकाशनु तेनमुजग्रतापरिपुराजमुत्ता-

४ तुज इस्तवीरनु भूजनग्रन्थ होन्नृपनधिजनावन कल्पवृक्षनु  
होन्-

५ नमहीशनात्मजेयु मालियध्वरसिगे कामराजग सद्गुणमूर्ति होन्न-  
नृपनात्ममदान्-

६ धव मगराजनु मन्मथरूप हरिहरनृपालकनातन पुत्र ईवणरसग  
मन प्रियान्-

७ गतेयु सान्नालदेवि समाधिकारदोलु आकेय गुग्गलु लोकरयाति-  
यनान्तिद् अनन्-

८ तवीर्यर रतिसकाशसोवगेनिसि सन्दिदां कान्तेगे ईवणरस  
बल्लमनाद । स्मररूप

९ सूदकगो पुरदोलु कीर्तिवेत्त बोम्मणमेष्टिय वरवनिते बोम्मकग  
वरसुगु-

- १० णि सान्तलरसि पुट्टिदलागल् । अरसप्पोडेयर तनृजे वरगुणि  
बोम्मकनाकेयात्मजे सान्तकरसि-
- ११ यु परमन पदमं स्मरियिसि सुरलोक्वेय्दि सुखदिन्दिदंलु  
अहंन्तन पादाम्बुजमं
- १२ स्मरयिसुतं नन्वि(?) पदम नालगेयोळु उच्चरिसुत्त सान्तकरसि  
शरीरमं पत्तेण्णुदिन-
- १३ दोळु सन्दलु वरवत्सर तारणदोळु सुरचिर-फाल्गुणद शुद्ध  
पाडिवतिथियोळु हरिदइव-
- १४ दिनदि सान्तकरसियु स्वर्गस्थलादल् भाकेनिमित्तं माडिसिद  
निपिधिय कल्लिगे मंगल महाश्री-

[ यह निपिधि-लेख रानी सान्तलदेवीके समाधिमरणका स्मारक है । इसकी तिथि फाल्गुन शु० १, रविवार, तारण संवत्सर ऐसी थी । वह देवी बोम्मणसेट्टिकी कन्या तथा हैवणरसकी पत्नी थी । हैवणरसका पिता मंगराज था जो कामराज और मालियन्नरसिका पुत्र था । मालियन्नरसिके पिता नेरसोप्पेके राजा होत्र थे । उसका एक और पुत्र हरिहर नृपाल था । सान्तलदेवीकी माता बोम्मवका अरसोप्पोडेयकी कन्या थी । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९९ ]

५४०

साल् ( मैसूर )

कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-
- २ मोघलांछनं ।...
- ३ ...शामनं जिनशा...
- ४ सनं श्री...चन्द्रनाथदेव-

- ५ र गुड्डि नादोव्वेय  
 ६ नागय्यगलु निलि-  
 ७ सिद कल्लु सालियूर  
 ८ महाजन

[ इस निपिधिलेखमें चन्द्रनाथदेवकी शिष्या नादोव्वेके समाधिमरण तथा नागय्य-द्वारा इस निपिधिकी स्थापनाका उल्लेख किया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० १२९ ]

५४१

सक्करेपट्टण ( मैसूर )

कन्नड

- १ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादामोघलाछन । जीया-  
 २ त् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन । श्रीमद् राजगुरु  
 ३ मौनपाचार्य श्री होसूर शिष्य नूलवागि-  
 ४ सेट्टिय मग नूलवन्दिसेट्टिय निपिधि  
 ५ शार्वरि सवन्मरद् ६ आपाढ सुध १४ आदि

[ यह निपिधिलेख होसूरके राजगुरु मौनपाचार्यके शिष्य नूलवागि-सेट्टिके पुत्र नूलवन्दिसेट्टिका स्मारक है । तिथि आपाढ शु० १४, रविवार, शार्वरी सवन्मर, इस प्रकार बनलायी है । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६३ ]

५४२

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

तमिल

[ इस लेखमें अण्पाण्डार ( चन्द्रप्रभ ) मंदिरके इस गोपुरका निर्माण परमजिनदेवजीयर्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । लेखकी तिथि पगुणि

द्वितीया, रेवती नक्षत्र, रविवार, युव संवत्सर इस प्रकार दी है । लिपि बाबुनिक है ।

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१५ पृ० ६७ ]

५४३

### मुत्तगद्दहोसूर ( मैसूर )

कन्नड

- १ सिद्धजिनालय
- २ सान्तेऔवेय वसद्धि
- ३ वगे माडिसिद्धनु

[ इस छोटे-से लेखमें सान्तेऔवे नामक महिला-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२४ पृ० २३ ]

५४४

### उम्मत्तूर ( मैसूर )

- |                         |                               |
|-------------------------|-------------------------------|
| १ स्वस्ति श्री.....राज- | २ भट्टारक.....नोन्तु          |
| ३ सन्यसनं गेट्टु मुडि   | ४ पिदूर् कल्ल निलिसिद्ध ज्ञा- |
| ५ न.....पण्डितं.....    |                               |

[ इस लेखमें.....राज भट्टारकके समाधिमरण तथा ज्ञान.....पण्डित-द्वारा इस निपिविकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ४७ ]

५४५

## कम्मनहस्ति ( मैसूर )

कल्लड

- १ श्रीमत्परमगमीरस्याद्वादामोघलाछन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासन जि
- २ श्रीमति मूलसघ सघोद्मवे शुभे देशीगणे
- ३ स्याद्वादारिनिगाशनि कैवल्यजन्मावनि.
- ४ मयचन्द्रकरणा कलियुगे
- ५ बुल्लप शोभते
- ६ जिनपदसेवेयोलुचितदानदोलु यिन्तु सुख
- ७ जिनेश्वरनाम मनदोल् बुल्लप
- ८ प्रभवसवत्सर देवाल
- ९ भाडिसि (१) हारदानक्क

[ यह लेख बहुत पिस गया है । प्रभवसवत्सरमें बुल्लप-द्वारा किसी मन्दिर-निर्माणका तथा उसमें आहारदानके लिए कुछ व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है । मूलमघ देशीगणके अभयचन्द्र आचार्यका भी उल्लेख हुआ है । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ८७ ]

५४६

## गोणिघोड ( मैसूर )

कल्लड

- |                 |          |
|-----------------|----------|
| १ स्वस्ति श्री- | २ मनु अ- |
| ३ नन्तन उ-      | ४ धापनेय |



५ चउवीस तीर्थक

६ र प्रति-

७ में मंगल

[ यह चौवीसतीर्थकरमूर्ति अनन्तव्रतके उद्यापनके समय स्थापित की गयी थी। इस समय वन्नि महाकाली मन्दिरमें सुनारों-द्वारा इसकी पूजा की जाती है। ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ७४ ]

५४७

कल्लहल्लि ( मैसूर )

कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंग देसिगण पुस्तकगत्स कुण्डकुन्दान्ववायं....  
श्रीजयदेवम-

२ टारकदेवर प्रियसिस्वर श्रीअनन्तवीर्यदेवर प्रियगुड्डगल जीय-

३ गौड मल्लिगौडन मग मुद्दिगौडन मग राय-

४ गौड माडिसिद् आदिपरमेश्वरप्रतिमेश्वररु मंगल म-

५ हाश्री श्री श्री रुवारि वृषोजन मग रुवारि नागोज माडिद्

[ इस लेखमें देसिगणके जयदेवभट्टारकके शिष्य अनन्तवीर्यदेवके शिष्य रायगौड-द्वारा आदितीर्थकरकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। यह मूर्ति रुवारि वृषोजके पुत्र रुवारि नागोजने उत्कीर्ण की थी। ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३ ]

५४८-५४९

तंगले ( मैसूर )

कन्नड

[ यहाँ एक शिलालेखपर कुछ मुनियोंकी मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं तथा उनके नीचे इस प्रकार नाम दिये हैं - १ नमोर्हते अजितकीर्तिगल २

देवनदित्रतिगलु ३ गुणमागरभटारकरु ४ कीर्तिमागरभटारकरु ५ अजितमेन-  
भटारकरु ६ प्रभाचन्द्रदेवरु ७ विमलगुणत्रतिगलु ८ अजितमेनभटारकरु ९  
शुभचन्द्ररु । ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ५१ ]

५५७

कनकरायनगुड्ड ( मैसूर )

कसड

१ ध्रीकीण्डय्यसेट्टियर् २ मूलस्थानवसदिय स्या-

३ नक्के कन्तियर मगल् ४ विजयक्क कोट्ट मण्णु

५ मू-

[ इस लेखमें कोण्डय्य सेट्टि-द्वारा निर्मित मूलस्थान जिनालयके लिए  
विजयक्का-द्वारा कुछ भूमि दान दो जानेका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ३८ ]

५५८

हुलदेनहल्लि ( मैसूर )

कनड

१ परमेश्वर पृथ्वीराज्य-

२ रमारपुर वूसवेल्लिय-

३ योल्कट्टि किलगणकेरे -

४ नन्दियडिगल् पडेदराताद-

५ र माक्षि मिडिलवडु तोरेदे-

६ पालु भरगोल केरेय केलग-

७ ण देसे ण्लु मने तार इदके सा-

८ वत्तर ठेकलूनाड पल्पत्तार द-

[ इस लेखका ऊपरका और दाहिना भाग टूटा है । नन्दियडिगल्  
आचार्यको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ ए० रि० नं० १९२६ पृ० ८६ ]

४४६

तोललु ( नैमूर )

कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभारस्यादवादा-
- २ मोघलांछनं जीयाव त्रैलोक्यना-
- ३ यस्य ग्रामनं जिनशासनं । स्वस्ति यमनि-
- ४ यमस्त्राध्यायगुणसम्पन्नरम्य अमयच-
- ५ न्द्रदेवरु सर्गनामिगलाद परांश-
- ६ यमनागल् पद्मावतियक्क माडिसिद साम-
- ७ नं ॥ अरेवेसनागिरद यमदियं माडि-
- ८ मिदरु देवर मनेय परिसूत्रद गद्दुं कट्टि-
- ९ यिमिदरु मनेयं माडि नडुम्मरनुमं नट-
- १० रु इनिमक्कं यिक्कि पृजिमिद गद्याणवेप्प-
- ११ तु । इन्नुप्पुदक्के साक्षि मुद्दगुण्डनु नाम-
- १२ गद्दुण्डनुं तम्मडियं रंरु । विट्टियणनुं ने-
- १३ मणनुं ईस्तानकोटैयरु ।

[ इस लेखमें कहा है कि आचार्य अमयचन्द्रकी मृत्यु होनेपर उनकी  
शिष्या पद्मावतियक्काने एक जगहरे जिनमन्दिरको पूर्ण किया । इस कार्यमें  
७० गद्याण खर्च हुए । इस मन्दिरके व्यवस्थापक विट्टियण तथा नेमण थे ।  
मुद्दगुण्ड तथा नामगुण्ड इसके जाधी थे । ]

[ ए० रि० नं० १९२६ पृ० ४२ ]

५६०-५६१

यलवट्टि ( जि० धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यहाँ दो लेख हैं । एकमें मूलमघ-देशीयगणके सकलचन्द्रदेवके गृहस्थ शिष्य सेनबोव केतय्यकी मृत्युका उल्लेख है । इसकी तिथि मार्ग-शिर शु० ८ शुक्रवार, आनन्द सवत्सर ऐसी दी है ।

दूसरे लेखमें मूलसय-देशीयगण-पोस्तक ग०ठ - कोण्डकु-दावयके देव-कीर्ति भट्टारकके एक शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है । इसकी तिथि श्रावण कृ० ९ रविवार, साधारण सवत्सर ऐसी है । ]

( रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ६०-६१ )

५६२

शावल ( जि० धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें देशीयगणके बालवट्टि त्रैविद्यदेवके एक गृहस्थ शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है । मार्गशिर कृ० ३, व्यय सवत्सर ऐसी तिथि दी है । ]

( रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ५४ )

५६३

दानबुलपाड्डु ( जि० कडप्पा, आन्ध्र )

कन्नड

[ इस लेखमें कनककीर्तिदेवके शिष्यकी - जो पेनुगोण्डका एक व्यापारी था - निसिधिका उल्लेख है । ]

( इ० म० कडप्पा १४९ )

५६४

मुल्कि ( दक्षिण कनडा, मैसूर )

कन्नड

[ जैन वसतिके भागे मानस्तम्भकी दक्षिण बाजूपर । इसमें तीर्थकरों-  
की प्रशंसामें पांच श्लोक लिखे गये हैं । ]

( इ० म० दक्षिण कनडा ९३ )

५६५

मद्रास ( म्यूजियम )

कन्नड

[ यह लेख शान्तिनाथकी मूर्तिके पादपीठपर है । महाप्रधान ब्रह्मदेवण-  
द्वारा स्थापित किये हुए येरग जिनालयमें यह मूर्ति थी । मूलसंघ, कुण्ड-  
कुन्दान्वय, काणूरगण, तिन्निगणि गच्छके महामण्डलाचार्य सकलभद्र भट्टारक  
ब्रह्मदेवणके गुरु थे । ]

( इ० म० मद्रास ३२४ )

५६६

मद्रास ( म्यूजियम )

कन्नड व संस्कृत

[ इस लेखमें साहित्यप्रिय सात्व-राजा द्वारा शास्त्रोक्त रीतिसे शान्ति-  
नाथकी मूर्तिके निर्माणका तथा स्थापनाका निर्देश है । ]

( इ० म० मद्रास ३२५ )

५६७

कोगलि ( बेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

जैन मन्दिरमें एक मूर्तिके पादपीठपर

[ चैत्र शु० १४, रविवार, परिधावि सवत्सरमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओबेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका इस लेखमें निर्देश है । ]

[ ६० म० बेल्लारी १९० ]

५६८

कीलनकुडि ( मदुरा, मद्रास )

तमिल

[ गुहामे जैन मूर्तिके पादपीठपर ।

गुणसेनदेवके शिष्य वर्धमानव पण्डितके शिष्य गुणसेनपेरियडिगल-द्वारा यह मूर्ति धुदवायी गयी ऐसा इस लेखमें निर्देश है । यहाँकी अन्य दो मूर्तियोंके लेखोमें भी गुणसेनदेवका उल्लेख है । ]

[ ६० म० मदुरा ३९ ]

५६९

कुण्डघाट ( जि० मोपीर, बिहार )

संस्कृत-गौडीय

जैन मन्दिरमें महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[ इस लेखमें कीरेश्वरव-द्वारा इस मूर्तिके दिये जानेका निर्देश है । ]

[ रि० ६० ए० १९५०-५१ क्र० ९ ]

५७०

पेनुकोण्ड ( जि० अनन्तपुर, बान्द्र )

कन्नड

पार्श्वनाथमन्दिरके समीप एक कुण्डके पास शिलापर

[ यह जितभूषणभट्टारकदेवके शिष्य नागव्यका समाधि लेख है । ]

[ इ० म० अनन्तपुर १६७ ]

५७१

कायाम्पट्टि ( मद्रास )

तमिल

[ यह लेख शमणर् तिडल् नामक भग्न जितमन्दिरके पास है । जयवोर पेरिलमैयान्-द्वारा तिरुवेण्णाविल् स्थित ऐन्नूरुवपेरुम्पट्टिल् ( जित-मन्दिर ) के आगे प्रार्थ्य वनवानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ इ० पु० क्र० १०८३ पृ० १५१ ]

५७२-५७३

मल्लैयकोचिल् ( मद्रास )

तमिल

[ इस लेखमें जैन आचार्य गुणसेनका नाम दिया है । सायमें परवा-दिनिदा यह उपाधि है । स्थानीय गुहामन्दिरके पास पापाणपर यह लेख उत्कीर्ण है । ऐसा ही लेख तिरुमय्यमूके सत्यगिरोश्वरमन्दिरके एक पापाण-पर भी है । ]

[ इ० पु० क्र० ४-५ पृ० १ ]

५७४

तेणिमलै ( मद्रास )

तमिल

[ यह लेख एक पापाणपर उत्कीर्ण जिनमूर्तिके नीचे है। यह मूर्ति ( तिरुमेणि ) शिवल्ल उदण सेरवोट्टि-द्वारा उत्कीर्ण थी ऐसा लेखमें कहा है। ]

[ इ० पु० क्र० १० पृ० १ ]

५७५

पुण्डि ( जि० उत्तर अर्काट, मद्रास )

तमिल

पोछिनाथ जैन मन्दिरक पश्चिमी दीवालपर

[ इस लेखमें दम्बुवरायका उल्लेख है। वीरवीरजिनालय रामक मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे एक गाव दान देनेका उल्लेख इस लेखमें है। ]

[ इ० म० उत्तर अर्काट २१० ]

५७६

मूडविदुरे ( मैसूर )

कन्नड

[ इस ताम्रपत्रके तीन भाग हैं। पहला भाग वृषभ ९२, गुरुवार, तारण सवत्सरके दिनका है। इसमें चन्द्रकीर्तिदेव-द्वारा २४ तीर्थंकरोंकी पूजाके लिए २०० होन्नु अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह रक्म विष्णु कलुम्बूरको बर्ज दी गयी थी। उसने अपनी कुछ जमीन गिरवी रखकर इस रक्मके ब्याजके रूपमें १६ मन चावल देना स्वीकार किया था। दूसरा भाग कर्क ९, बुधवार, स्वर्भाण्डु सवत्सरके दिनका है। इसमें शोधर पडि-



कोदि-द्वारा ज़मीन गिरवी रखकर २१०० वीररायफण कर्ज प्राप्त करनेका उल्लेख है । इसके व्याजके रूपमें २८ मुठे चावल देना स्वीकार किया था । इसका उपयोग गेरुसोप्पेकी ललितादेवी-द्वारा स्थापित वसदिमें पूजाके लिए होना था । तीसरा भाग मेघ १, रविवार, नन्दन संवत्सरके दिनका है । इसमें तीन बन्धुओं-द्वारा पार्श्वनाथवस्तिसे कुछ कर्ज लेनेका तथा उस-पर कुछ निश्चित रकम व्याज देनेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ९ ]

५७७

मूडविदुरे ( मैसूर )

कन्नड

[ इस ताम्रपत्र-लेखमें चारुकीर्ति पण्डितदेव-द्वारा निर्मित चण्डोय पार्श्वनाथवसदिके लिए कर्करवलिके वर्मनन्द तथा उनके बन्धु कुंगिय वर्मिसेट्टि-द्वारा ७०१ गद्याण दान दिये जानेका निर्देश है । लेखकी तिथि वृषभ १५, रविवार, दुर्मुखि संवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ७ ]

५७८

निटूर ( मैसूर )

कन्नड

- |                 |              |                |
|-----------------|--------------|----------------|
| १ चित्रमानु     | २ संवत्सर    | ३ द फाल्गुण    |
| ४ द शुद्ध ८     | ५ शु सोम     | ६ वार वोम्मण्ण |
| ७ गलु स्वर्गस्त | ८ राद निपिधि |                |

[ इस निपिविलेखमें फाल्गुन शु० ८, चित्रमानु संवत्सरके दिन वोम्मण्णके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० २५७ ]

५७६

तल्लूर ( मैसूर )

कन्नड

- |                    |                        |
|--------------------|------------------------|
| १ भावसवत्सरद थाव-  | २ ण शुद्ध त्रयोदशि भा- |
| ३ दिवारददु स्वस्ति | ४ श्रीमद् अजितेश्व-    |
| ५ रदेवर महाजन      | ६ वागि                 |
| ७ • केशवदेवर बम्म- | ८ ज्वे तोट्टि          |
| ९ वागि ग्कम२       | १० कोण्डु              |
| ११ येनुळ           |                        |

[ यह लेख काफी अस्पष्ट हुआ है । थावण शु० १३, रविवार, भावसवत्सरके दिन किसी ग्रामके महाजनो द्वारा अजितेश्वर देवके मन्दिरके लिए कुछ भूमि दान दी गयी ऐसा इसमें उल्लेख है । केशवदेवकी कन्या बम्मव्वेके उद्यानके समीपकी २ बम्म जमीन भी इस दानमें सम्मिलित थी । ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० ११३ ]

५८०

अंबले ( मैसूर )

कन्नड

- |               |              |
|---------------|--------------|
| १ जितचद्रदेवळ | २ सुडि(पि) • |
|---------------|--------------|

[ इस छोटे से लेखमें जितचद्रदेवके सम्पाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० १३३ ]

५८१-५८४

हैदराबाद ( म्युजियम ) ( आन्ध्र )

संस्कृत-कन्नड

[ ये चार मूर्तिलेख हैं जो घिसनेसे अस्पष्ट हुए हैं । एकमें मूलसंघके किसी व्यक्तिका उल्लेख है । दूसरेमें एक मूर्तिकी स्थापना फाल्गुन शु० १५, बुधवार, शवंरी संवत्सरके दिन किये जानेका उल्लेख है । तीसरेमें पण्डित मल्लिसेनका उल्लेख है । चौथेमें नेमिचन्द्रदेवके शिष्य कुमार मायिदेव महामण्डलेश्वर-द्वारा पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । इन लेखोंका समय निश्चित नहीं है । ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १४९, १५०, १५२, १५४ ]

५८५

भोसे ( सातारा, महाराष्ट्र )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगणके वामनन्दि व्रतोश्वरका उल्लेख है । लेख बहुत घिस गया है । समय निश्चित नहीं है । ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २४३ ]

५८६

चेलगामे ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड

१ गणप्राच्यमहामृदकः श्री-

२ मय्याव्विध्वधिष्णुशशांकमूर्तिः

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है और इसका आधा भाग अस्पष्ट हो जानेसे अपूरा हुआ है । इसमें किसी गणके एक आचार्यका उल्लेख रहा है । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२६ ]

५८७

कारकल ( मैसूर )

संस्कृत

[ यह लेख गोम्मट मूर्तिके सम्मुख ब्रह्मस्तम्भके समीप उत्कीर्ण पादुकाओंके पास है । लिपि आधुनिक है -  
( मूल- ) श्रीगणधरपादम । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३८ पृ० ५२ ]

५८८

कोप्पल ( रायचूर, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें चावय्य-द्वारा जटासिगनन्दि आचार्यकी पादुकाओंकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १६१ पृ० ४१ ]

५८९

वाद्गट्टि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख बोम्मिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६९ पृ० २२ ]

५६०

वालेहल्लि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें मार्गशिर व० १०, शुक्रवार, शुभकृत् संवत्सरके दिन माधवचन्द्रदेवके शिष्य नागगौडकी पत्नी सायिगवुडिके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १९१ पृ० २३ ]

५६१

गुडुगुडि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख सरस्त ( सूरस्त ) गणके किसी आचार्यकी शिष्या नागवेके समाधिमरणका स्मारक है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०० पृ० २४ ]

५६२

मन्तगि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख टूटा है । हरिकेसरिदेव, हरिकान्तदेव तथा तोयिमरस द्वारा विभिन्न वसदियोंको दिये गये भूमिदानोंका इसमें उल्लेख है । इनमें बंकापुरको उम्पंटाट्यवण वसदि तथा कोन्तिमहादेविय वसदिका भी समावेश है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०८ पृ० २५ ]

५९३

मन्तगि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें फाल्गुन - १ - बडुवार, सर्वघारि सवत्सरके दिन सूरस्तगणके सहस्रवीतिदेवके शिष्य तथा मल्लिगुण्डके महाप्रभु विठगौडके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २१० पृ० २५ ]

५९४

चेलवर्गि ( रायचूर, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है । इसमें मूलमघ, सूरस्तगण तथा कलिसेट्टिका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० २२५ पृ० ३९ ]

५९५

तिरुप्परकुण्डम् ( मदुरै, मद्रास )

तमिल ( ? ) - ब्राह्मी

[ यहां पहाडोपर दो गुहाआमें निम्न पक्तियाँ खुदी हैं । ये गुहाएँ जैन श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थीं -

( १ ) न य ( २ ) मा ता ये व

( ३ ) अ न तु वा ण को ट्ट पि ता वा ण ]

[ रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १४०-४२ पृ० २२ ]

५६६

देवचूर ( मढुरा, मद्रास )

वट्टेल्लुत्तु

[ यह लेख बहुत अस्पष्ट है । इसमें किसी पल्लि ( जैन वसति ) तथा तुंग पल्लवरैयन्का उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० ५९ पृ० १२ ]

५६७

अक्कूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख वीरभद्र मन्दिरकी एक भग्न मूर्तिके पादपोठपर है । इसमें शान्तिनाथ, सोमदेव तथा वसुधाकरदेवकी स्तुति की है । सातोज-रामोज-द्वारा इस वसदिके निर्माणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ७ पृ० ९२ ]

५६८

हावेरी ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें मादरस-द्वारा जिनमन्दिरकी सोढ़ियां बनवाये जानेका उल्लेख है । इस समय यह लेख वीरभद्र मन्दिरमें लगा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ९६ पृ० १०१ ]

५६६-६०२

इंगलेश्वर ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ ये चार समाधिलेख हैं । पहलेकी तिथि तारण, अमावास्या, शुक्रवार यह है । यह सत्यण्णकी समाधि है । दूसरा लेख अगलसेट्टिके पुत्र शान्ति-

सेट्टिकी समाधिपर है । तिथि आगिर सवत्सर, चैत्र १ सोमवार यह है । तीसरी समाधि शान्तिदेव मुनिकी है । तिथि प्रमादि सवत्सर, मास व ६, शुक्रवार यह है । चौथी समाधि माघनन्दि मुनिपकी है । तिथि थावण शु० ११, शुक्रवार, युव सवत्सर है । ]

[ रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १५ १८ पृ० ८५ ]

६०३

कागिनोरिल ( धारवाड, मैमूर )

कन्नड

[ यह लेख एक स्तम्भपर है । इसमें दानविनोद बेरिनारायण लैंक-मसण आदित्यवर्माकी स्तुति की है तथा उसके द्वारा काणूरगण, मंयपापाण-गच्छकी बसदिमें एक स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३ ३४ क्र० ई० २८ पृ० १२१ ]

६०४

माकिनूर ( धारवाड, मैमूर )

कन्नड

[ इस लेखमें धर सवत्सर, कार्तिक शु० ( ? ), शुक्रवारके दिन मूल सध-मूरस्थगणके नन्दिमट्टारकके शिष्य वोप्पगोडके समाधिभरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५० पृ० १५१ ]

६०५

लनकुण्डि ( धारवाड, मैमूर )

कन्नड

[ यह लेख एक भग्न जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इसकी स्थापना त्रैविद्य नरेन्द्रसेनके शिष्य वैश्य जेमिसेट्टिकी कथा राजव्हेने की थी । ]

[ रि० सा० इ० १९३४-३५ क्र० ई ७५ पृ० १५४ ]



६०६

देचूर ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघ-देसिगण-इंगलेश्वर वलिके नेमिदेव आचार्यके शिष्य सिंगिसेट्टि, देविसेट्टि, पट्टुमव्वे तथा सिंगेयके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई २२ पृ० १८३ ]

६०७

शिरूर ( जमखंडी, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें यापनीय संघ-वृक्षमूलगणके कुसुमजिनालयमें कालिसेट्टि-द्वारा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है । ]

[ रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ई ९८ पृ० २१९ ]

६०८

इडैयालम् ( द० अर्काट, मद्रास )

तमिल

[ यहाँ जैन मन्दिरके समीप पापाणोंपर चरणपाडुकाएँ उत्कीर्ण हैं तथा निम्न नाम खुदे हैं -

- ( १ ) मल्लिषेणमुनीश्वर      ( २ ) विमलजिनदेव  
( ३ ) अप्पाण्डार् नायिनार्      ( ४ ) इडैयालम्के जिनदेवर् ]

[ रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ३११-१४ पृ० ४२ ]

६०६

तोरनगल्लु ( वेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख अक्कलकदेवके शिष्य बयिचिसेट्टिके समाधिभरणका स्मारक है । ]

[ रि० सा० ए० १९२२-२३ क्र० ७२९ पृ० ५१ ]

६१०

लोकिकेरे ( वेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख श्री रत्नभूषण भट्टारकके प्रिय शिष्य लोकियेकेरे निवासी भरणगण्डके समाधिभरणका स्मारक है । ]

[ रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० २९९ पृ० ४९ ]

६११ ६१२

गरग ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख यापनीय मध-कुमुदिगणके शान्तिधोरदेवके समाधिभरणका स्मारक है । तिथि श्रावण व० ४, गुरुवार, विकृति सवत्सर ऐमी दी है । यहीके एक अन्य लेखमें भी यापनीय मध-कुमुदिगणका उल्लेख है । अथ विवरण लुप्त हुआ है । ]

[ रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४१-४४२ पृ० ७६ ]

६१३

कुमठ ( उत्तर कनडा, मैसूर )

कन्नड

[ स्थानीय जैन वसतिमें पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर यह लेख है । मूलसंघ, सूरस्तगण, चित्रकूट गच्छके मुकुन्ददेव-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना की गयी थी । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३७ पृ० २७ ]

६१४

कुमठ ( उत्तर कनडा, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें पुष्प शु० ( ? ) क्रोधन संवत्सरके दिन क्राणूरगणके गंजिय मलघारिदेवकी शिष्या कंचलदेवीके समाधिमरणका उल्लेख है । इसके पतिका नाम त्रिभुवनवीर था तथा कदम्ब राजाओंकी उपाधियाँ उसे दी गयी हैं । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४२ पृ० २८ ]

६१५

रायद्रुग ( वेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

[ यहाँके निसिधि लेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम हैं — मूलसंघके चन्द्रभूति, आपनोय संघके चन्द्रेन्द्र, वादय्य तथा तम्मण्ण । एक लेखपर माघ शु० १ सोमवार, प्रमाथि संवत्सर यह तिथि दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १०९ पृ० १२ ]

६१६-६१७

कोगलि ( वेल्कारी, मैसूर )

कछढ

[ इस मूर्तिलेखमें अनन्तवीरदेवके शिष्य ओडियमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । यहाँके एक स्तम्भपर जिनमूर्तियोंके अभि-  
पेकके लिए कई व्यक्तियों-द्वारा दिये गये दानोंका उल्लेख है । प्रथम लेख-  
की निर्धि चैत्र शु० १४ रविवार, परिघाबि सवत्सर ऐमी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९१४ १५ क्र० ५२०-२१ पृ० ५३ ]

६१८

मुलगुन्द ( धारवाड, मैसूर )

कछढ

[ इस लेखमें दैमिगण-हनसोगे अवयवके ललितकीर्ति महारवके शिष्य  
सहस्रकीर्तिकी मृत्युका उल्लेख है । मुस्लिमा-द्वारा पादर्वनाथबसदिपर  
आक्रमणके समय उनकी मृत्यु हुई थी । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९२ पृ० ८ ]

६१९

कलकेरि ( धारवाड, मैसूर )

कछढ

[ इस लेखमें मूलसध-काणूरगण-तिनिणी गच्छके भानुकीर्ति सिद्धान्त-  
देवके शिष्य हलिगावुण्ड-द्वारा कलिकेरेके अकलवच-द्वारके लिए एक  
बसदिके निर्माण तथा पादर्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ५१ पृ० २४ ]

६२०

कम्मरचोडु ( वेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें पद्मप्रभमलवारिदेवके प्रियशिष्य महावहुव्यवहारि रायर-सेट्टिकी पत्नी चन्दव्वे-द्वारा इस जिनमूर्तिके जीर्णोद्धारका वर्णन है । इस समय यह मूर्ति हिन्दू देवताके रूपमें पूजी जाती है । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६० पृ० ५५ ]

६२१-६२२

कोट्टशीचरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड

[ यह लेख एक स्तम्भपर है । काणूर गणके पुष्पनन्दि मलवारिदेवके शिष्य दावणन्दि आचार्य-द्वारा एक वसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है । यहींके एक अन्य लेखमें काणूरगणके (?) आचार्यकी शिष्या इत्तंगोल राजाकी रानी आलपदेवी-द्वारा इस वसदिकी रक्षाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० २०-२१ पृ० ७२ ]

६२३-६२६

अमरापुरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड

[ यहाँके निसिधिलेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम हैं—(१) प्रभाचन्द्र-देवके शिष्य कोम्मसेट्टि (२) पोतोज तथा उसका पुत्र सयवि मारय (३) मूलनंघ-देसियगणके वालेन्दु मलवारिदेवके शिष्य विरुपय तथा मारय (४) मूलसंघ-सेनगणके प्रसिद्ध वादि भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्ति (५) इंगलेश्वरके प्रभाचन्द्र भट्टारकके शिष्य वोम्मिसेट्टियर वाचय्य (६) वेरिसेट्टिके पुत्र सम्बिसेट्टि । यहाँके एक अन्य लेखमें इंगलेश्वरके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य देसियगणके वालेन्दु मलवारिदेव-द्वारा एक वसदिके निर्माणका उल्लेख है । ] [ रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४१-४७ पृ० ७४ ]

६३०

तम्मदहलि ( अनंतपुर, आन्ध्र )

कसद

[ इस लेखमें मूलसध-देसियगणके चारुकीर्ति भट्टारकके शिष्य चन्द्राक भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४८ पृ० ७४ ]

६३१

रामपुरम् ( अनंतपुर, आन्ध्र )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसध-देसियगणके देवचन्द्रदेवके शिष्य बैट्टिसेट्टिके पुत्र कृष्णसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ७१४ पृ० ७४ ]

६३२

रामतीर्थम् ( विजयापटम्, आन्ध्र )

तेलुगु

[ यह लेख एक भग्नजिनमूर्तिके पादपीठपर है । ओगेन्मार्गस्थित चनुद (वो) लु निवासी प्र (मि) सेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी । ]

[ रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ८३२ पृ० ८५ ]

६३३

वेलूर ( द० अर्कोट, मद्रास )

तमिल

[ इस लेखमें जयसेन द्वारा इस जिनमन्दिरके ओर्णोद्वारका उल्लेख है । लिपि उत्तरकालीन है । ]

[ रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० १२४ पृ० ५९ ]

६३४

निडुगल ( मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें वेल्लुम्बट्टेके भव्यों-द्वारा-जो मूलसंघदेसिगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य थे-पार्श्वनाथ मूर्तिको स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५ ]

६३५-६३६

नेल्लिकर ( द० कनडा, मैसूर )

संस्कृत-कन्नड

[ यह लेख स्थानीय अनन्तनाथवसदिमे है । इसके मण्डपका निर्माण मंजण कोन्नभूप-द्वारा किया गया ऐसा कहा है । यहीके दूसरे लेखमें इस मन्दिरका निर्माण ललितकीर्ति भट्टारकदेवके शिष्य कल्याणकीर्तिदेवकी सम्पत्तिसे देवचन्द्र-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२०-५२१ पृ० ४८-४९ ]

६३७

मुत्तुगोडु ( गुण्टूर, आन्ध्र )

तेलुगु

[ इस लेखमें विल्लम नायक-द्वारा पृथिवीतिलकवसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १९ पृ० ६ ]

६३८-६३९

लङ्कण्डि ( वारवाट, मैसूर )

कन्नड

[ ये दो लेख हैं । एकमें मूलसंघ-देवगणके शंखदेव-द्वारा एक जिन-

मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । दूसरेमें वसुधैवकुर्वन्नाथजिनालयके त्रिभुवन-  
तिलक शान्तिनाथदेवके लिए एक दानशालाके समर्पणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ३१, ३४ पृ० ३ ]

६४०

जावूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें बीचिसेट्टि-द्वारा सकलचन्द्र भट्टारकको जावूर ग्रामके  
पुन दानका उल्लेख है । नविलगुदमें जयकीर्तिदेव-द्वारा निर्मित ज्वाला-  
मालिनोवसदिके लिए मल्लिदेवने पहले यह गाँव अपण किया था । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २२८ पृ० ५५ ]

६४१

कोमरगोप ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें त्रिभुवनतिलक जिनालयमें आहारदानादिके लिए बालचन्द्र  
सिद्धान्तदेवके शिष्य पेगंडे वामियण्णकी पत्नी चामिकब्बे-द्वारा सुवणदानका  
उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २३० पृ० ५५ ]

६४२-६५०

गुण्डकेर्जिगि ( विजापूर मैसूर )

कन्नड

[ यहाँ भग्न मूर्ति-पाषाणोपर निम्न नाम खुदे हैं । (१) देशियगण-  
इगलेद्वर ( बलि ) के चन्द्रकीर्तिदेव तथा जयकीर्तिदेव (२) अपराजिता  
देवी (३) वृषभयक्ष (४) पातालपक्ष (५) कुबेरपक्ष (६) महामसीयक्षी  
(७) अनन्तमती (८) चक्रेश्वरी (९) (शा) जगन्नाथस्वामी ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई १६-१७ पृ० ६६ ]



६५१

हुलूर ( विजापूर )

कन्नड

[ इस लेखमें कण्डूर गणकी एक वसदिके लिए पुलुवरणिके महाजनों-द्वारा भूमिदानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० पृ० ६७ क्र० ई २९ ]

६५२

तम्मदह्दि ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ इस निसिधि लेखमें इंगलेश्वरतीर्थकी वसदिके आचार्य देवचन्द्र भट्टारकके शिष्य वोगगावुण्डके समाधिमरणका उल्लेख है ।

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ७० पृ० ६९ ]

६५३

तुम्बिगि ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख पुण्य शु० १०, सोमवार, ईश्वरसंवत्सर, राज्यवर्ष ८ का है । राजाका नाम लुप्त हुआ है । इस समय वोचुवनायककी निसिधिकी स्थापना की गयी थी तथा तदर्थ पार्श्वदेवको कुछ भूमि अर्पित की गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई० ७४ पृ० ६९ ]

६५४

ह्विनि हिप्पगि ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें हवु रेमरस तथा रेचरस-द्वारा ऋषियोंके आहारदानके लिए देवचन्द्र भट्टारकको कुछ भूमि दान देनेका उल्लेख है । इंगलेश्वरके देवकीर्ति भट्टारकका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ९१ पृ० ७१ ]

## परिशिष्ट १

### श्वेताम्बर लेखोंकी सूचना

[ पहले संग्रहकी पद्धतिके अनुसार हम यहाँ श्वेताम्बर सम्प्रदायसे सम्बद्ध लेखोंकी सूचना दे रहे हैं । इस सूचीमें सरकारी प्रकाशनोंमें प्रकाशित लेखोंका अन्तर्भाव है । श्री० पूरणचन्द नाहरका प्राचीन जैनलेखसंग्रह, श्री० अगरचन्द नाहरका बीकानेर जैनलेखसंग्रह, आदि ग्रन्थोंमें प्रायः श्वेताम्बर सम्प्रदायके ही लेख हैं । इन लेखोंकी संख्या ३५००से ऊपर है । इनका प्रस्तुत सूचीमें उल्लेख आवश्यक नहीं समझा गया । ]

१ अकोटा ( बड़ोदा, गुजरात ) - ८वीं सदी

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० १६-१९

२ अकोटा - ६ वीं-१०वीं सदी

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० २०-३५ तथा ३९-४८

३ बड़ोदा ( गुजरात ) - स० १०६३ = सन् १०३७

रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १६९-७१

४ भरतपुर ( राजस्थान ) - स० ११०६ = सन् १०५३

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३८८, ३९४

५ आबू ( राजस्थान ) - स० १११९ = सन् १०६३

ए० इ० ९ पृ० १४८

६ सिरोही ( राजस्थान ) स० ११३५ = सन् १०७६

रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११९

७ लाडोल ( गुजरात ) - स० ११४० = सन् १०८४

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ए २

८ लाढोल-सं० ३१५६ = सन् ११००

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ए ३

९ उदयपुर ( राजस्थान )-सं० ११७६ = सन् ११२०

रि० आ० सं० १९३०-३४ पृ० २३७

१० नाढोल ( राजस्थान )-सं० १२१३ = सन् ११५७

इ० ए० ४१ पृ० २०२

११ लखनऊ ( उत्तरप्रदेश )-सं० १२१६ = सन् ११६०

रि० आ० सं० १९१३-१४ पृ० २९

१२ जालोर ( राजस्थान )-सं० १२२१ = सन् ११६५

ए० इ० ११ पृ० ५४

१३ मथुरा ( उत्तरप्रदेश ) सं० १२३४ = सन् ११७८

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२६

१४ मद्रेशर ( गुजरात )-सं० १३१५ = सन् १२५९

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १६९

१५ मद्रेशर-सं० १३२३ = सन् १२६७

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १७०

१६ जालोर ( राजस्थान )-सं० १३३१ = सन् १२७५

ए० इ० ३३ पृ० ४६

१७ आमरण ( राजस्थान )-सं० १३३३ = सन् १२७७

पूना ओरिएण्टलिस्ट ३ पृ० २५

१८ चित्तौड ( राजस्थान )-सं० १३३४ = सन् १२७८

रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २३२-२३३

१९ उदयपुर ( राजस्थान )-सं० १३३५ = सन् १२७९

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४८५

२० वम्बई-सं० १३५६ = सन् १३००

रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २०१-३

२१ उदयपुर—१३वीं सदी

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ५०७

२२ खभात ( गुजरात )—स० १४२०से स० १४६८=सन् १३६४से  
सन् १४१२

रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५९-१९५

२३ आतरी ( राजस्थान ) स० १४६८=सन् १४१२

रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १८७

२४ मेहता ( राजस्थान )—स० १५०७से १६८७

=सन् १४५१से १६३१

रि० आ० स० १९०९-१० पृ० १३३

२५ ब्रिटिश म्यूजियम—स० १५१५से १५८३

=सन् १४५४से सन् १५२०

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ५३०-५३८

२६ सिरोही ( राजस्थान )—स० १५२४=सन् १४६८

रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११९

२७ कच्छ—स० १५२५=सन् १४६९

रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २४९

२८ उदयपुर—स० १५५६=सन् १५००

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४८६

२९ मौगामा ( राजस्थान )—स० १५७१=सन् १५१५

रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १८८

३० अलवर ( राजस्थान )—स० १५७३=सन् १५१७

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३८६

३१ अलवर—स० १६२६=सन् १५७०

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३७८

३२ वैराट ( राजस्थान )—शक १५०६ = सन् १०८७

रि० आ० सं० १९०९-१० पृ० १३२

३३ अलवर—सं० १६४० = सन् १५८९

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३७६

३४ लखनऊ—सं० १६५२ = सन् १५९६

रि० आ० सं० १९१३-१४ पृ० २९

३५ भद्रेश्वर ( गुजरात )—सं० १६५९ = सन् १६०३

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १७०

३६ उदयपुर—सं० १६०२ = सन् १६०६

रि० आ० सं० १९३०-३४ पृ० २३७

३७ भद्रेश्वर—सं० १९०५-१९०४ = सन् १८४६-१८७८

रि० इ० ए० १९५४-५५ पृ० ४२



## परिशिष्ट २

जनेतर लेखोमे जैन व्यक्ति आदिके उल्लेख ।

( १ ) बेलगामे

कच्छ

सन् १२९४

[ इस लेखमें यादव राजा रामचन्द्रके समय बल्लिगावके भेरुण्डस्वामी-मन्दिरका उल्लेख है । इस मन्दिरके हेगडे पदपर वैद्य दासण्णकी स्थापना कर उसे कुछ भूमि अर्पित की गयी थी । इस भूमिमें प्रथमसेनवमदि ( जिनमन्दिर ) की कुछ भूमि भी शामिल कर दी गयी थी । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२४ ]

( २-६ ) देवगेरी तथा कोलूर ( जि० धारवाड, मंसूर )

( ११वीं-१३वीं सदी )-कच्छ

पहला लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल ( सोमेश्वर प्रथम ) के राज्यकालका है । इनके अधीन वासवूर १४० प्रदशमें जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ कलियम्बरस शासन कर रहा था । इसे सम्यक्-चूडामणि तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं । इसने कोलूरके कलिदेवेश्वरके मन्दिरमें दीपदानके लिए कुछ दान दिया था । इस दानकी तिथि पौष शु० ५, शक ९६७, उत्तरायण सक्रांति थी ।

दूसरे लेखकी तिथि शक ९९७, पौष शु० १४, उत्तरायण सक्रांति थी । इस समय चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर द्वितीयका राज्य चल रहा था । इसमें भी कलियम्बरसके शासनका उल्लेख है तथा देवगेरी-के काकलेश्वर मन्दिरके लिए दण्डनायक वणमय्य द्वारा कुछ दान दिये

जानेका निर्देश है। इसी लेखके दूसरे भागमें उसी कुलके एक दूसरे कलियम्मरसका उल्लेख है जो चालुक्य सम्राट् भूलोकमल्ल सोमेश्वर तृतीय-का सामन्त था। इसने सम्राट्के राज्यके ९वें वर्ष अर्थात् शक १०५६ में उक्त मन्दिरको कुछ दान दिया था। इस कलियम्मरसने माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

तीसरे लेखमें उक्त कलियम्मरस ( द्वितीय ) का उल्लेख सम्राट् विक्रमादित्य ( पष्ठ ) के राज्यके दसवें वर्ष ( सन् १०८५ ) में किया है जब उसने कोल्लूरमें कुछ धार्मिक दान दिया था।

चौथा लेख सम्राट् विक्रमादित्य ( पष्ठ ) के राज्यके ४६वें वर्ष ( स० ११२१ ) का है। इसका सामन्त हेर्माडियरस था जो उक्त कलियम्मरस ( द्वितीय ) का पुत्र था। इसने कोल्लूरमें त्रिभुवनेश्वर तथा भैरवके मन्दिरों-को कुछ दान दिया था। तथा माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

पाँचवाँ लेख यादव राजा सिधण ( तेरहवीं सदीका पूर्वार्ध ) के राज्यकालका है। इसका सामन्त मल्लिदेवरस था जो उक्त जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ था। इसने कोल्लूरके क्षेत्रपाल मन्दिरको कुछ दान दिया था।

यहाँ द्रष्टव्य है कि कलियम्मरस ( द्वितीय ), हेर्माडियरस तथा मल्लि-देवरस शैव थे फिर भी उन्हें पद्मावतीलब्धवरप्रसाद यह पुराना विशेषण दिया है।

छठा लेख विक्रमादित्य ( पष्ठ ) के राज्यके ४थे वर्ष ( सन् १०७९ ) का है। इसके अधीन नोलम्बवाडि तथा सान्तलिंगे प्रदेशपर त्रैलोक्यमल्ल ( जयसिंह तृतीय ) शासन कर रहा था तथा वनवासि प्रदेशपर वलदेवय्य-का शासन था। वलदेवय्यको जिनचरणकमलभृंग यह विशेषण दिया है। इसके अधीन कुछ करोंका उत्पन्न कोल्लूरके ग्रामेश्वर मन्दिरके लिए किसी कन्नडाचार्यको दान दिया था। ]

### (७) शिवमन्दिर, नीडूर ( जि० तञ्जोर, मद्रास )

तमिल - सन् १११६

[ यह लेख कुलोत्तुग चोलके राज्यके ४६वें वर्षमें लिखा गया था । इसमें कण्डन् माधवन्-द्वारा शोणवाररिवार ( गणपति ) देवका मन्दिर बनवानेका निर्देश है । यह माधवन कुलत्तूर स्थानका शासक था जहाँ अमिदसागर ( अमृतसागर ) मुनिने कारिगै ( याण्णरुगलक्कारिगै ) नामक छन्द शास्त्र तमिल भाषामें लिखा था । इस रचनाके लिए जिनने प्रेरणा की वे सज्जन माधवन्के चाचा ( अयवा समुर ) थे ।

इस छन्द शास्त्रमें ४४ कारिकाएँ हैं तथा उरुप्पियल्, शैय्युनियल् एवं ओलिबियल् ये तीन प्रकरण हैं । इसपर गुणसागरने टीका लिखी है । ]

[ ए० इ० १८ पृ० ६४ ]

### (८) कमलापुर और हंपीके बीच

कृष्णमन्दिरके समीप एक मण्डपमें

शक १३३२ = सन् १४१०, कन्नड

[ यह लेख मधुर नामक जैन कविने लिखा है जो वाजि कुलमें उत्पन्न हुआ था । लेखमें देवरायके मन्त्री लक्ष्मीधर-द्वारा महागणनाथ ( शिव ) की स्थापनाका वर्णन है । मधुरने घमनाश्वपुराण तथा गुम्फदाष्टक लिखा है । यह हरिहररायके मन्त्री मुद्दण्डेश्वरका आश्रित था । इस लेखमें लक्ष्मीधर-द्वारा मधुरको हाथी, घोड़े, रत्न, जमीन आदि दान देनेका उल्लेख है । ]

[ इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७७ ]

### (९) गोकर्ण ( उत्तर कनडा )

१५वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें महाबलेश्वर मन्दिरमें अन्नमन्न तथा अन्यपूजाके लिए कुछ



दान दिये जानेका उल्लेख है। दानकी रक्षाके लिए कहे गये शापात्मक वर्णनमें गेरसोपेकी हिरियवस्तिके चण्डोग्र पाद्वर्नाथका भी उल्लेख है।]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० १०८ पृ० २३७ ]

### (१०) वीराम्बुधि ताम्रपत्र ( मैसूर )

शक १४८६ = सन् १५६७, कन्नड

[ जिनशासनकी प्रशंसासे इस ताम्रपत्रका प्रारम्भ होता है। कुलोत्तुंग विक्रमरायके पुत्र चंगलराय-द्वारा भारद्वाजगोत्रके ब्राह्मण नरसीभट्टको वीराम्बुधि नामक ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। दानकी तिसी भाव शु० १०, शक १४८९, सर्वजित् संवत्सर ऐसी दी है। ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३ ]



## परिशिष्ट ३

### नागपुर-प्रतिमा लेखसंग्रह

इस परिशिष्टमें हम नागपुरके समस्त प्रतिमालेखाका सकलन दे रहे हैं। इन लेखाका संग्रह श्री शांतिकुमारजी ठवली ( वर्तमान निवास—देवलगांव राजा, जि० बुलडाणा, महाराष्ट्र ) ने कोई २७ वर्ष पहले सन् १९३५ में किया था। आपने यह संग्रह नागपुरके लोकप्रिय जैन श्रीमान् स्व० सवाई सिंगई श्री० नेमलालजी पासूबावजीकी स्मृतिमें अर्पित किया था। इस संग्रहके लिए स्व० पूज्य ब्र० शीतलप्रसादजीने भूमिका लिखी थी जो इस प्रकार थी — “जैनधर्मके इतिहासके निर्माणके लिए इस बातको परम आवश्यकता है कि सर्व जैन स्मारकोक लेख संग्रहीत किये जावें — इन स्मारकोमें प्रतिमाओंके लेख, यंत्रोंके लेख, अथ शिलाशिल्प तथा शास्त्रोंकी प्रशस्तियाँ आवश्यक हैं — श्री शांतिकुमार ठवली नागपुरने नागपुरके सर्व दिगम्बर जैन मंदिर व चैत्यालयोंके लेखोंको लिखकर पुस्तकाकार सम्पादन करनेमें जो परिश्रम उठाया है वह सराहनीय है। अच्छा हो यदि इन मूर्तियोंके लेखोंके साथ यंत्रोंके लेख और शास्त्रोंकी प्रशस्तियोंका विवरण प्रकट किया जावे। एक संक्षिप्त तालिका ऐसी दी जावे कि लेखरहित प्रतिमाएँ इतनी व अमुक सवत्की इतनी — जिसे पाठकोंकी प्राचीनता व अर्वाचीनताका पता तुरत लग जावे। ऐसी पुस्तकोंसे भविष्यमें बहुत काम निकलेगा — आशा है ठवली महोदय मध्यप्रान्त व बरारके सर्व स्थानोंके लेखोंके संग्रहका प्रयत्न करेंगे। अथ उत्साही युवकोंको अपने-अपने प्रान्तोंके लेखोंको प्रकट करना चाहिए जिससे किसी समय भारतीय दि० जैन लेख संग्रह पुस्तक निर्माण हो सके।

ब्र० शीतल

९-३-१९३६ नागपुर”

इस पुस्तिकाका प्रकाशन अन्यान्य कारणोंसे अवतक नहीं हो सका था। अतः हमने इस परिशिष्टमें इसका पुनः संपादन किया है। संग्राहकने मूल लेख मन्दिरोंके क्रमसे अलग-अलग संग्रहीत किये थे तथा यन्त्रोंके लेखोंके परिशिष्ट अन्तमें दिये थे। हमने मन्दिरों तथा मूर्तियोंका विवरण अलग दिया है तथा लेख समयक्रमसे अलग दिये हैं। इन लेखोंके विशेष नामोंका समावेश सूचीमें कर दिया है तथा वहाँ लेखोंके साथ ( ना० ) यह संकेत दिया है।

नागपुर नगरका अस्तित्व यद्यपि राष्ट्रकूट साम्राज्यके समयसे ज्ञात होता है तथापि इसे भोंसला राजा रघूजी१ के समयसे — सन् १७३४ से प्रधान स्थान प्राप्त हुआ है। तबसे १९५६ तक यह मध्यप्रदेशकी राजधानी रही है। नागपुरके सभी मन्दिर प्रायः भोंसला राजाओंके राज्यमें ही बने हैं किन्तु इनमें कई प्रतिमाएँ अन्य स्थानोंसे भी लायी गयी हैं। इस नगरमें कुल ९ मन्दिर हैं। विदर्भकी रीतिके अनुसार यहाँके प्रमुख जैन व्यक्तियोंके घरोंमें भी छोटे-छोटे चैत्यालय हैं। ऐसे गृहचैत्यालयोंकी संख्या ३७ है। इन सब स्थानोंमें कुल मिलाकर ६४६ मूर्तियाँ आदि हैं जिनमें धातुकी ४४० तथा पाषाणकी २०६ हैं। इन मूर्तियों आदिके ४१ प्रकार हैं जिनकी संख्या इस प्रकार है — (१) आदिनाथ ४३ (२) अजितनाथ १३ (३) सम्भवनाथ १ (४) सुमतिनाथ २ (५) पद्मप्रभ ७ (६) सुपादर्शनाथ १२ (७) चन्द्रप्रभ ४३ (८) पुष्पदन्त ३ (९) शीतलनाथ ५ (१०) श्रेयांस ३ (११) वासुपूज्य ६ (१२) अनन्तनाथ २ (१३) धर्मनाथ ३ (१४) शान्तिनाथ १० (१५) अरनाथ ६ (१६) मुनिसुव्रत १३ (१७) नेमिनाथ १४ (१८) पार्श्वनाथ १३३ (१९) महावीर १० (२०) चौवीसी ३४ (२१) पंचमेरु ९ (२२) नन्दीश्वर ७ (२३) सिद्ध ४ (२४) बाहुवली ६ (२५) रत्नत्रयमूर्ति ३ (२६) पंचपरमेष्ठि १ (२७) यक्षिणी २७ (२८) सरस्वती ३ (२९) क्षेत्रपाल १ (३०) सप्त ऋषि १ (३१) चौसठ ऋषि १ (३२) गुरुपादुका २ (३३) रत्नत्रय यन्त्र ५ (३४) सम्यग्दर्शन यन्त्र ४ (३५) सम्यक्चारित्र

यत्र ६ (३६) दसलमग यन्त्र ६ (३७) षोडशकारण यत्र २ (३८) कलि-  
कुण्ड यन्त्र १ (३९) मिद्ध यन्त्र १ (४०) नवग्रह यन्त्र १ (४१) जनयाना  
यन्त्र १ । इन मूर्तियों आदिमें ५२९ के पादपीठों अथवा किनारोंपर लेख  
है । ऐसे लेखाकी संख्या ३२४ है ( जहाँ दो अथवा अधिक मूर्तियोंपर एक  
ही लेख है वहाँ हमने उस लेखको एक लेखके रूपमें ही गिना है । )

समयकी दृष्टिसे ये लेख आठ सदियामें दस प्रकार विभक्त हैं — विक्रम  
सेरहवों सदी ४, पद्महवों सदी ३, सोलहवों सदी २२, सत्रहवों सदी  
५१, अठारहवों सदी ७२, उन्नीसवों सदी ६९ तथा बीसवों सदी १०० ।

इन सब लेखाकी भाषा अशुद्ध संस्कृत है । कुछ लेखोंमें नागपुरकी  
स्थानीय भाषाओं—हिन्दी तथा मराठीका अशुद्ध प्रयोग हुआ है ( लेख क्र०  
२०६, २६३, २६७, २६९, २७८, २८५ ) किन्तु शुद्ध हिन्दी या मराठीमें  
कोई लेख नहीं है । एक लख ( क्र० ७३ ) कन्नडमें तथा एक ( क्र० ३१९ )  
उर्दूमें है किन्तु इनका वाचन प्राप्त नहीं हो सका ।

मूर्तिप्रतिष्ठाके स्थानाके सोलह नाम उल्लिखित हैं — नागपुर ( क्र०  
१५२, १९०-२, २१२ २१५, २१६, २२०-१, २२७, २२९ २३१, २३३, २३५,  
२४२, २४७, २४९, २५०, २५५-७, २५९, २६१, २७९, २८२, २९५ ) कारजा  
( क्र० ८१, १२५ १५७-८, २१० ), तिरसग्राम ( क्र० २०२, २०४ ),  
रामटेक ( क्र० ७३ २५३ ) भीमो ( क्र० १४३ ), तजेगाव ( क्र० १०६ )  
उमरावती ( क्र० १९९ ), इगोनी ( क्र० २३२ ), सजालपुर ( क्र० ७० )  
बहादुरपुर ( क्र० ६५ ), अवहनगर ( क्र० १३० ) तिवनी ( क्र० २८० )  
छनारा ( क्र० २८४ ), कामठी ( क्र० १५४ ), सावरगांव ( क्र० २९३ ),  
सवाई अदनगर ( क्र० १९३ ) ।

प्रतिष्ठाकर्ता व्यक्तियोंकी पद्मह जातियोंका उल्लेख मिला है —  
राइक्वाल ( क्र० ९ ), अगस्वाल ( क्र० ५३ ), गगराठा ( क्र० १० ),  
गालसिधारा ( क्र० ७३ ), पल्लीवाल ( क्र० ५१ ), गुजरपल्लीवाल  
( क्र० २१ ), पद्मावती पल्लीवाल ( क्र० ११४ ), उज्जैनीपल्लीवाल

( क्र० १०८, १२०, १४३ ), श्रीश्रीमाल ( क्र० ४९-५० ) हुँवड ( क्र० ८, २०, ३०, ३९, ८६ ), गोलापूर्व ( क्र० ६८, २९१ ), परवार ( क्र० ६९, १८८, १९१-९२, २५०, २५४, २६३, २७२, २८५ ), खंडेलवाल ( क्र० १०७, २८२ ) सैतवाल ( क्र० ९५, २७९, २८६, २८७ ), दवेरवाल ( क्र० १४, २९, ३८, ४४, ४६, ५५-६, ६६, ८०-८२, ८८-९०, ९२, ९४, ९६, १२२, १२५, १३०-१, १३५, १५७, १८२, १९८, २०१, २०२, २०४, २२७ ) ।

प्रतिष्ठापक आचार्य अधिकांश मूलसंघके सैनगण तथा बलात्कारगणके थे, काष्ठासंघके नन्दीतटगच्छके कुछ आचार्योंके उल्लेख भी है। इन उल्लेखोंका उपयोग हमारे ग्रन्थ 'भट्टारक सम्प्रदाय' में किया गया है। उससे इन भट्टारकोंके बारेमें अन्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

संवत् १५४८ के दो लेख ( क्र० १८, १९ ) विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं। इनमें पहला लेख कोई ७७ मूर्तियोंपर है। ये मूर्तियाँ मुडासा गहरमें शिर्वासिहके राज्यकालमें सेठ जीवराज पापडोवालने प्रतिष्ठित करवायी थीं। इस समारोहके प्रमुख भट्टारक जिनचन्द्र थे। इस समारोहमें प्रतिष्ठित मूर्तियाँ प्रायः प्रत्येक दिगम्बर जैन मन्दिरमें पायी जाती हैं।



## मूल लेख

- १ समत १२०१ बैशाख वदी तान । ( विवरण क्र० १४० )
- २ स० १२३४ स तु हा ले । ( विवरण क्र० १६६ )
- ३ समत १२६२ साल । ( विवरण क्र० ११५ )
- ४ समत १२६९ वर्षे आपाद सुदी ३ । ( विवरण क्र० ११४ )
- ५ समत १४५७ वर्षे बैशाख सुदी ६ श्रीमूलसद्य म० आजित-  
नव साह भाणिकचद । ( विवरण क्र० २३१, २३२ )
- ६ मूलसद्य म० धर्मभूषणोपदेशात् समत १४६५ वर्षे ।  
( विवरण क्र० ३०२ )
- ७ सवत १४८५ । ( विवरण क्र० ४० )
- ८ सवत १५१० वर्षे माहमासे शुक्लपक्षे ५ रवी श्रीमूलसद्ये  
सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये म० पद्मनदि  
तत्पट्टे म० श्रीसकलकीर्ति तन्शिष्य म० जिनदास हुबळजातिय  
सा० तेजु भा० मलाई सुत हरिचद भा० नागाई सुत गोविंद  
भा० बजाई । ( विवरण क्र० १६७ )
- ९ स० १५२१ वर्षे बैशाख वदि २ श्रीमूलसद्ये सरस्वतीगच्छे  
बलात्कारगणे श्रीविद्यानिदिगुरूपदेशात् श्रीराहकवालजातिय  
भार्या अश्विदे सुत वेणा भार्या वनादे कारित आचदप्रमचतुर्वि-  
शति नित्य प्रणमति ॥ श्रीशुभ ॥ ( विवरण क्र० १५७ )
- १० समत १५२४ मूलसद्य सेनगणो भाणिकलेनगुर गगराडा माल-  
सेदा भार्या तानाई । ( विवरण क्र० ८० )
- ११ समत १५३१ फागुण वदी ५ मू० । ( विवरण क्र० १८८ )
- १२ समत १५३५ श्रीमू० म० भूवनकारिस्तत्पट्टे म० ज्ञानभूषणस्त-  
दुपदेशात् स० दि० समाज । ( विवरण क्र० ११३ )

१३ सं० १५३५ वर्षे पौस वदी ३ श्रीमूलसंघे म० सकलकीर्तिस्त०  
म० श्रीभुवनकीर्तिस्त० म० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् चांगा  
मार्या भूसनदे वदासा मा० तानो.....जी वासपूज्य ।

( विवरण क्र० १६० )

१४ [ सक ] १४०२ व० श्रीक.....श.....ज्ञात वधेरवाल.....गोत्र सं०  
पासधन.....सं० जेनराज मानापुत्र प्रणमंति (विवरण क्र० ४१३)

१५ सं० १५४३ श्रीमूलसंग म० श्रीभुवनकीर्तिस्तत्पट्टे श्रीज्ञान-  
भूषणगुरूपदेशात्.....दिवसी मा० गुणा सुत.....मा० नामलाई ।

( विवरण क्र० ३८० )

१६ सं० १५४३....पदमसी.....दन.....। ( विवरण क्र० ४३३ )

१७ संमत १५४५ का ज्येष्ठ.....। ( विवरण क्र० ३४३ )

१८ संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्रीमूलसंघे मट्टारक श्रीजिन-  
चंद्रदेव साह जीवराज पापढीवाल नित्यं प्रणमांत शहर मुढासा  
राजा स्योमिध । ( विवरण क्र० १-३, १०-२६, ४६-४८, ८७, ९१-  
१०२, १४६-१५६, २३८-२६४, ३६७-६९ )

१९ संमत १५४८ वरषे वैशाखसुदी ३ श्रीमूलसंघे मट्टारकजी  
श्रीमानुचंद्रदेव साह जीवराज पापढीवाल नित्यं प्रणमंति  
सहर मुढासा श्रीराजा सोमिध । ( विवरण क्र० २१८, २१९ )

२० ॐ नमः सं० १५५२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ शुके श्रीमूलसंघे म०  
भुवनकीर्तिस्त० म० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् हुं० श्रे० पर्वत  
मा० देऊ सु० राजा मा० शलदे सुत कर्मसी प्रणमांत श्रीभुम-  
तिनाथ प्रणमंति । ( विवरण क्र० १६५ )

२१ सकं १४२४ मूलसंघे सेनगणे म० माणिकसेन उपदेशात् गुजर-  
पट्टिवालज्ञाति संववी नेमा.....। ( विवरण क्र० १३७ )

२२ सं० १५६१ वर्षे वैशाख सुदि १० बुधौ श्रीमूलसंघे म० श्री-  
ज्ञानभूषण त० म० श्रीविजयकीर्तिगुरूपदेशात् व० लाडण स०

क० राजा मा० माणिकी सु० कान्हा मा० रूपी आ० गोईया  
मा० मरगदिआ० श्रीरत्नत्रय नमति । ( विवरण क्र० १६८ )

२३ समत १५६१ वर्ष फागुण सुदी । ( विवरण क्र० ११७ )

२४ स० १५७८ मू० भ० चर्मभूषण । ( विवरण क्र० ३८३ )

२५ समत १५८२ । ( विवरण क्र० ४८२ )

२६ स० १५८३ । ( विवरण क्र० १२१ )

२७ स० १५८३ ती १३ । ( विवरण क्र० ४५३ )

२८ समत १५८४ श्री मू स भ विजयकांति सप्तमे म  
शुभचंद्रवापदेशात् ब्रह्म आशाना बेलावाइ-ति प्रणमति ।  
( विवरण क्र २०५ )

२९ समत ६०० वर्षे फागुण वदी ५ शुक्र श्रीमूलसगे मंदारक  
श्रीरामकीति प्रतिष्ठित सेनगणे वधेरवाल ज्ञानिय चवरियागोत्रे  
सा धाऊजा भार्या बोपाई सुन मा माणिक भार्या पदमाइ  
आता रतन भार्या पसाई पुत्र धाऊजी एते आमुपाश्वनाथ  
नित्य प्रणमति । ( विवरण क्र ३०९ )

३० सवत १६०७ वर्षे बैशाख वदी ३ गुरु श्रीमूलमघे म श्रीशुभ-  
चंद्रगुरुपदेशात् हूँ सखेश्वरा गोत्रे सा जीना मा भाळी सु  
नाका भा नाऊदे आ जगा मा कळितादे आ-गर एते सर्व  
निश्च प्रणमति । ( विवरण क्र ४०६ )

३१ [ स ] १६०८ उषा-१ । ( विवरण क्र ४८४ )

३२ समत १६०९ फाल्गुण २ दिन- । ( विवरण क्र १३९ )

३३ समत १६११ ते रागविदे (?) प्रणमति । ( विवरण क्र ४१० )

३४ समत १६१४ सेनगग धरमाई बापाई चागापा ।

( विवरण क्र २००, ३६६ )

३५ स० १६१५ मा० १३ । ( विवरण क्र ४६० )

३६ स० १६१६ । ( विवरण क्र ४६१ )



- ३७ सके १४८५ मू० स- । ( विवरण क्र. २२५ )
- ३८ सक १४८७ प्रजापतसंवत्सरे श्रीमू. सरस्वती. वलात्कार. म. धर्मचंद्राणाम् उपदेशात् ज्ञाति वधेरवाल भुरा गोत्रे सा रत्न सं. मार्या पुतली लखमाई-प्रणमंति । ( विवरण क्र. ४३४ )
- ३९ सं. १६२५ आपाढ शुद्धि ५ श्रीमूलसंघे ब्रह्म श्रीहंस ब्रह्म श्रीराज-पालोपदेशात् हुंवड ज्ञातौ सा. समराज भा. लोकोई स. आसजा मा. वाकाई । ( विवरण क्र. २६८ )
- ४० श्रीमूलसंघ संमत १६३१ वर्षे फाग सुदी १० सोमे म. श्रीगुणकीर्तिगुरूपदेशात् सं. कर मार्या सहागदेई सं. वीरदास मा. ताकमई श्रीअजितनाथ जिन प्रणमंति ।  
( विवरण क्र. ३०७ )
- ४१ संमत १६३६ मगनोजी पु (?) । ( विवरण क्र. ३०६ )
- ४२ संवत् १६३६ श्रीकाष्टासंघे भ० विद्याभूषण प्रतिष्ठितं झुंवड सा. जयवंतमार्या तसमादे सु-जीवराजसा धनराजसा प्रणपालसा नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र. ४०८ )
- ४३ शक १५०१ मा. तिथी ८ काष्टासंघे न. श्रीश्रीभूषणसदुपदेशात् प० जयवंत ( विवरण क्र. ४३६ )
- ४४ सके १५०३ वृषा नाम संवत्सरे फागुण सुदि ७ श्रीमूलसंघ व. न. धर्मभूषणोपदेशात् वधेरवालज्ञाति ठवलागोत्रे सं. पासुसा मार्या सं० रूपाई तयो पुत्रौ आपुसा मार्या लिंवाई रामासा मार्या वीपाई एते प्रणमंति । ( विवरण क्र. ४२१ )
- ४५ सके १५०६ माघ वदी १ गोत्र चवरिया गुणासा ।  
( विवरण क्र. ३९१ )
- ४६ संमत १६४५ वैसाख सुदी ७ सोमवार श्रीकाष्टासंघे लाडवाग-डगणे पुष्करगच्छे मटारकश्रीप्रतापकीर्ति तस्य आम्नाये वधेर-

वालज्ञातिथे बोरसद्वियागोत्रे सगाई पुजासा स० धगाई प्रणमति ।  
( विवरण क्र० ४५० )

४७ समत १६४६ वर्षे श्रीमूलसग मटारक श्री वीर त पटे म  
श्री सेन तस्य शिष्य पठित श्रीगना उपदेशात् साह बावजी  
भाया दामाई तयो पुत्र गकुरमाह तस्य भाया पेमाई तयो सुत  
तुवाजामाह भार्या लखमाई तेषा नित्य प्रणमति सात्र फागुण  
शुदी १० गुरुवामरे श्रीचित्तामणो पाश्चनाथचैयालये प्रतिष्ठित ॥  
शुभ भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ ज पूजता ते भवतु ॥ जयन्तु ॥  
( विवरण क्र० ३११ )

४८ स. १६४९ फा शु १३ मू बलात्कार म पञ्चकीर्ति उप-  
देशात् । ( विवरण क्र० ४३० )

४९ [ स० ] १६५२ बैसाख सुद १४ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे  
पञ्चकीर्ति विद्याभूषण हेमकीर्ति सदुपदेशात् श्रीश्रीमाल  
( विवरण क्र० २६६, २६९ )

५० समत १६५३ बैसाख शुद्ध १४ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे मटार-  
क हेमकाति उपदेशात् श्री श्रीमालज्ञातौ महासा नित्य प्रणमन्तु  
( विवरण क्र० ४०५ )

५१ शके १५१९ मन्मयनामसंवत्सरे बैसाख सुदि त्रयोदशीदिने  
घटापित श्रीमूलसघे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे बुदकुदाचा-  
र्यान्वये म० श्रीधर्मभूषणोपदेशात् पल्लीवालज्ञातीय स बायामा  
तस्य भार्या गगाई तयो पुत्र म लखमसा तस्य भार्या द्वौ  
गोमाई कालाई तेषा पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र स मोतासा द्वितीय  
नेमा प्रणमति । ( विवरण क्र० १२४ )

५२ श्रीमूलसघे सेनगणे धृषमसेनगणधरान्वये श्रीमम्मवमद्र लक्ष्मी-  
सेनमटारकउपदेशात् शके १५२१ फागुण सुद पा रवौ सधर्वा  
सोमसेनौ श्रीमगल । ( विवरण क्र० १३० )

- ५३ संवत् १६५८ वर्षे आषाढ वदी....अगरवालज्ञा० । ( विवरण क्र० ४८३ ) ।
- ५४ शके १५२५ वर्षे शुभकृत् नाम संवत्सरे ज्येष्ठशुक्लपक्षे १३ तिथौ प्रतिष्ठिता । ( विवरण क्र० २७१ )
- ५५ संमत १६६० वर्षे फालगुण शुद्धि १० श्रीकाष्टासंघे लाडवाग-डगच्छे म० श्रीप्रतापकीर्ति नंदिसंघे वधेरवालज्ञातिय-सा भार्या वीरूना परिनवाई तयो पुत्र सा० नोगु मा. परिहाई श्रीपद्मा-वति प्रणमंति श्रीकाष्टासंघे नंदितटगच्छे मटारक श्री श्री श्रीभूपण प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ४१४ )
- ५६ शक १५२५ वर्षे श्रीमूलसंघे सेतगणे श्रीमतवृषभसेनगणान्वये म० श्रीसोमसेन तत्पट्टे म० श्रीमाणिकसेन तत्पट्टे म० श्रीगुण-मद्र तत्पट्टे म० श्रीगुणसेन उपदेशात् वधेरवालज्ञातीय खटवड-गात्रे सं० श्रीहरकसा भार्या गोजाई तयो सुत सं० गणासा भार्या कडताई येते श्रीरत्नत्रयचतुर्विंशति प्रणमंति । ( विवरण क्र० १९० )
- ५७ संमत १६६० वर्षे फाग सुद ॥ गु० श्री एतत्-वा- मुन्नावाई श्रीशीतलनाथत्रिवका म०-। ( विवरण क्र० २७८ )
- ५८ मक १५२६ माहो सुद १३ मटारक हेमकीर्ति उपदेशात् प्रति-ष्ठितं मितलसिंघवी-ताजी सवाल तुरासु (?) रूपा नित्यं प्रण-मंति । ( विवरण क्र० ४३९ )
- ५९ संवत् १६६३ वर्षे....श्रीमूलसंघे....म० जगतकीर्ति सदुपदेशात्-स्वरान्वये-प्रतिष्ठितं ( विवरण क्र० ४८६ )
- ६० संमत १६६४....महाराजाधिराज....श्रीचन्द्रकीर्ति-तत्पट्टे मटारक देवेन्द्रकीर्तिजी आम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचा-र्यान्वय प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २७ )
- ६१ संमत १६६९ चैत्रसुद १५ रवौ मूलसंघे कुं० म० यशोकीर्ति

तत्पट्टे म० ललितकीर्ति तत्पट्टे म० धर्मकीर्ति उपदेशात्-पट्टे-  
( विवरण क्र० २१३ )

६२ ॐ नमः समत १६०१ वर्षे वैसाख सुदी ५ मूलसंघे बलात्कार-  
गणे मरस्वतीगच्छे कुडकुडाचार्यान्वये म० यशकीर्ति तत्पट्टे म०  
धर्मकीर्ति तदुपदेशात् पौरपट्टे मा उदयचन्द्र भार्या-अचित्रारा मूल-  
गोदिलगोत्रे-उदयगारोट्ट प्रतिष्ठा भूमिद सोनी दामोदर विभाषित  
समवाणि समाहित प्रतिष्ठामध्ये प्रतिष्ठित नदिश्वरजिनविंश ।  
( विवरण क्र० २१५ )

६३ मवत् १६०२ वर्षे फागुण मित २ तिथौ मेडतानगरे लाडागोत्रे  
म० वारपान भार्या सकनादेवीभ्या श्रीधर्मनाथविंश कारित  
प्रतिष्ठित श्रीजिनचन्द्रसूरिमि । ( विवरण क्र० १७८ )

६४ मके १५३७ । ( विवरण क्र० ४४१ )

६५ समत १६०६ वर्षे माघवदा ८ श्रीकाष्ठामघे लाडवागडगच्छे  
मट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये वोरगालजार्ता बोरखत्यागोत्रे  
धमतासा भार्या भवाई तथो पुत्र लक्ष्मणसा प्रभुत्वं पचपुत्र  
समाया सपुत्र श्रीचन्द्रप्रभु प्रणमति । श्रीकाष्ठामघे नदितट-  
गच्छे म० आभूषण प्रतिष्ठित बहादुरपुर । ( विवरण क्र० २९८ )

६६ समत १६०६ वर्षे माघवदा काष्ठामगे लाडवागडगच्छे श्रीप्रता-  
पकीर्ति उपदेशात् बघेरवाल ज्ञातिय गोवालगात्रे म० बापु  
भार्या जमुना । ( विवरण क्र० १४३ )

६७ [ म० ] १६८१ पादर्वनाथ मानिक । ( विवरण क्र० ४३८ )

६८ मवत १६८१ वरपे चैत्र सुदी ५ रवळ श्रीमूलसंघे मट्टारकश्री-  
ललितकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मडलाचार्यश्रीरत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे  
आचार्यश्रीचन्द्रकीर्तिस्तदुपदेशात् गोलापूर्वाचये स्वाग नाम गोत्रे  
मेडि मानु भार्या चदनमिरी तत्पुत्र सेडि कनुर भार्या किमवा  
तस्य पुत्री जादी नित्य प्रणमति । ( विवरण क्र० २६५ )

- ६९ संमत १६८१ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ भ० धर्मकीर्ति उपदेशात्  
परिवारज्ञातो....। ( विवरण क्र० २२३ )
- ७० संमत १६८१ वै० सु० १ दिने संजालपुरवास्तव्य सं० चंद्रा  
श्रीपाश्वर्चनाथविव कारितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयदेवसू [ रिमिः ] ।  
( विवरण क्र० २०१ )
- ७१ संवत् १६८१ माघ सुदी १ दिन....। ( विवरणक्र० १०८ )
- ७२ भंवरगोत्र पानासा संमत १६८६ । ( विवरण क्र० १४४ )
- ७३ संवत् १६८६ श्रीमूलसंघे यलात्कारगणे सरस्वतांगच्छे कुंदकुंदा-  
चार्यान्वये भ० श्राधर्मचंद्र तदाम्नाय आ( चार्य )पासकीर्ति  
तदुपदेशात् संघवि बरहरसाह गोलमिवारा रामटेक सांतिनाथ  
प्रसादेनू ज्येष्ठ वद्य ५ शमि तिलक मंगलं शुभं भवतु ॥ छ ॥  
( विवरण क्र० २७४ )
- ७४ सं० १६९१ मा० रत्नकीर्ति । ( विवरण क्र० ३८२ )
- ७५ संमत १६९२ मिति वैशाख वदी ११ सोमवासरे भ० धर्मचंद्र-  
जी । ( विवरण क्र० १२० )
- ७६ शके १५६१ प्रभवनामसंवत्सरे फालगुण सुदी द्वितीया मूलसंघे  
पुष्करगच्छे सेनगणे भट्टारक श्रीसोमसेनउपदेशात् प्रतिष्ठितं....।  
( विवरण क्र० १११ )
- ७७ शके १५६१ फालगुण सुदी २ गुरु श्रीमूलसंघे पुष्करगच्छे  
सेनगणे....हुंवड....। ( विवरण क्र० १३४ )
- ७८ शक १५६१ फालगुण....श्रीमूलसंघे सेनगण भ० श्रीसोमसेन  
तुक्ताव गुणासाव....बोपासा नित्यं प्रणमंति । ( विवरण  
क्र० २११ )
- ७९ शके १५६१ फाग वदी १० शनैश्चरे काष्ठासंघे लाहवागड वच्हा-  
दगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये श्रीनरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे तमो०....

- उ० सा० पामादि पु० देवामा नि० प्रतिष्ठित श्रीलक्ष्मामेन प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० २३५ )
- ८० शके १५६१ पार्थसारथ्यसंवत्सरे श्रीमू० व० स० म० धर्म-चन्द्रोपदेशात् वधेरवालज्जातीय श्वडारियागोत्रे श्रावण मा० गगाई तथोपुत्र भाणिकमा भार्या गोपाई प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० ३८९ )
- ८१ समत १७०३ वर्षे ज्येष्ठ वदी १० शके धाकाप्रयासघे लाडवागड-गच्छे लोहाचार्यान्वये घराडप्रदेशे कारकीनगरे प्रतापकार्णिभा-म्नाय वधेरवाल ज्जातीय कावला गोत्र सा श्रीपात्यसा भार्या पद्माई तया सुत सा वण माया मणकाइ तयो पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र स० श्रीरामा भार्या अगार्द द्वितीय पुत्र सा पतसा प्ते समस्तै श्रीकाष्टामघे नदितटगच्छे म० श्रीरामसेनान्वय तदनुक्रमेण म० श्रीविश्वमन तत्पट्टे श्रीविद्याभूषण तत्पट्टे म० श्रीश्रीभूषण तत्पट्टे श्रीचन्द्रकोनि तत्पट्टे म० धाराजकीर्ति तत्पट्टे म० श्रीलक्ष्मी सेनजी प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० १३५ )
- ८२ मूलसगे बलात्कारगणे म० धर्मभूषणगुरुपदेशात् वधेरवाल पुत्र सा ( भिन अक्षरमे ) समत १७०६ वर्षे मी माह सु० ५ सो पुजामा । ( विवरण क्र० ३१० )
- ८३ शके १५०२ । ( विवरण क्र० ११८ )
- ८४ समत १७११ म० सकलकीर्ति सा० लाले पुत्रपते प्रणमति । ( विवरण क्र० ३०६ )
- ८५ अन्तम सिद्धेभ्य सा म० मवत १७११ श्रीमष्टाक । ( विवरण क्र० ४७६ )
- ८६ सवत १७१३ वर्षे माघ सुदि ११ गुरौ श्रीमूलमघे ब्रह्म श्रीशक्ति-दाम तत्पट्टे ब्रह्मश्रीवादिरान गुरुपदेशात् हु वड ज्जातीय वाई

लावाई इति सिद्धयंत्रं नित्यं प्रणमंति । शुभं भूयात् ।

( विवरण क्र० २७५ )

८७ शक १५७८—सुखनाम म० स० म० श्रीधर्मभूषण उपदेशात्  
तिमासा भार्या वखाई तयो पुत्र भूतसा त० देवाई ।

( विवरण क्र० १८४ )

८८ शके १५८० माघ सुदी ५ सोमं कारंजानगरे काष्टासंधे नंदितट-  
गच्छे म० इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं वधेरवालजाति गोवलगोत्रे मा०  
दुलणवाई प्रणमंति । ( विवरण क्र० १४१ )

८९ संवत् १७१५ वर्षे माघ सुदी ५ काष्टासंधे नंदितटगच्छे विद्या-  
गणे वधेरवाल जातीय चोरखंड्यागोत्रे स० खांभा भार्या  
पुतलाई तयो पुत्र सं० धनजी भार्या पदाई येन सुपार्श्वनाथ  
प्रणमंति । ( विवरण क्र० १४२ )

९० शके १५८० माघ सुदी ५ सोमवार काष्टासंधे नंदितटगच्छे  
मटारक श्री इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं वधेरवालजाती चोरखंडियागोत्रे  
तेजजीसा भार्या जसाई तयो पुत्र पात्र नाथुसा सा० चिंतामणसा  
पुते अंबिका नित्यं [ प्रणमंति ] ( विवरण क्र० ४४७ )

९१ संवत् १७१५ माघ सुदी ५ सोमवार काष्टासंधे नंदितटगच्छे  
विद्यागणे मटारकरामसेनान्वये राजकीर्ति तत्पट्टे मटारक लक्ष्मी-  
सेन तत्पट्टे म० इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं संघवी खांभा भार्या पुतलाई  
तयो पुत्र सं० धनजी भार्या पदाई अंबिका प्रणमंति काष्टासंधे  
लोहाचार्यानवये प्रतापकीर्ति संघवी खांभा भार्या पुतलाई सं०  
धनजी । ( विवरण क्र० ४४८ )

९२ संवत् १७१५ माघ सुदी ५ सोमं काष्टासंधे लाडवागटगच्छे म०  
प्रतापकीर्ति तदाम्नाये वधेरवालजाती कावरी ।  
( विवरण क्र० ५ )

- ९३ शके १५८१ सौ० फा० व० ३ मू० स० म० पद्मकीर्ति सो० जा०  
बुनमेट माय्या आता । ( विवरण क्र० २०२ )
- ९४ श० १५८१ क० व० पद्म० म० जे० का० जा० बघेरवाल  
लुगाई दा पु ता सा मा वा मा त (?) ग गु ।  
( विवरण क्र० ४०६, ४०६ )
- ९५ सक १५८२ स्यावरी नाम मवत्सरे तीथ फाल्गुण शुद्ध दसमी  
१०॥ श्रीशार्तीनाथचै यालय श्रीबलात्कार गणे सरस्वतीगच्छे  
श्रीकुदकुदाचार्यान् महाराक श्रीपद्मकानि उपदेशात् रामटेक नम  
ज्ञाती सङ्गतवाल रायाजी जाई । ( विवरण क्र० २०३ )
- ९६ सके १५८२ फाल्गुण शुद्ध ७ तिलक संन महाराक श्रीजिनसंन  
बघेरवालज्ञाती चवत्थियागोत्रे सा० भार्या नित्य प्रणमति ।  
( विवरण क्र० ४४५ )
- ९७ समत १७१८ । ( विवरण क्र० १२३ )
- ९८ शके १५८३ प्रमवनाममवत्सरे ज्येष्ठवदी शयम व० कु०  
म० । ( विवरण क्र० २२९ )
- ९९ शके १५८६ वर्षे क्रोधनाममवत्सर तिथी फाल्गुण शुद्ध ५ श्रीमूल-  
संघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे म० धर्मचंद्र तत्पट्टे म० धर्म-  
भूषण महाराज प० नेमाजी भार्या राजाई पुत्र सोयराजी ता  
प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० २०८ )
- १०० शक १५८६ । ( विवरण क्र० ३८८ )
- १०१ शके १५८९ । ( विवरण क्र० ७ )
- १०२ शके १५९२ बैशाख सुलसंघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे  
कुदकुदाचार्यान्वये महाराक कुमुदचंद्र तत्पट्टे म० आनंदकीर्ति  
त० म० विशालकीर्ति उपदेशात् सोनोपाटित रोडे ।  
( विवरण क्र० १८० )
- १०३ समत १७३१ । ( विवरण क्र० १२२ )



- १०४ सके १५९६ फा० शु ॥ ३ म०...कीर्ति तत्पट्टे दयाभूषण श्रीमू०  
स० व० । ( विवरण क्र० २२१ )
- १०५ शके १५९७ मुलसंव वलात्कारगण म० धर्मभूषण ॐ हरीसाव  
पुत्र फर्काचंद प्रणमंति । ( विवरण क्र० २२८ )
- १०६ श० १५९७ मू० सेनगणे म० जि० तजेगामग्रामे गु० गनसेठ  
मा० सिशवाई पु० कृस्नाजी मा० मेगाई पु० जोगाजी प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० ४५७ )
- १०७ संमत १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्रीमूलसंवे मटारक श्रीसुरेंद्र-  
कीर्तिस्तदाम्नाये खंडेरवालान्वये गृध्रवालगोत्रे सा देवसी पुत्र  
संगहान...प्रतिष्ठा कारिता...। ( विवरण क्र० ३७७ )
- १०८ शके १५९७ मू ॥ व ॥ म० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् ऊजानीपल्ली-  
वालजातीय माणिकया तत्पुत्र नारसा सुत शतसा प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० १५९ )
- १०९ [ श० ] १५६७ सु० जीनसेन उ० लखसेठ माहोरकर प्रण-  
मंति । ( विवरण क्र० १६२ )
- ११० शके १५६६पिंग्लु श्रीमू० । ( विवरण क्र० ४९७ )
- १११ सक १६०१ संमत १७३६...। ( विवरण क्र० ३५९ )
- ११२ सक १६०१ मार्गशिर्ष...। ( विवरण क्र० २२० )
- ११३ १६०१ सं० श्रीमू० । ( विवरण क्र० ४९१ )
- ११४ सके १६०१ फालगुण सुदि ११ श्रीमूलसंवे वलात्कारगणे  
मटारकश्रीपद्मकीर्तिसदुपदेशात्श्रीपद्मावतीपल्लीवालजाती भडनाव  
कुस्नानी पानसी मार्या मगनाई तयोपुत्र बाबुजी प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० २७२ )
- ११५ सांतिनाथ सके १६०४ श्री....। ( विवरण क्र० ३७५ )
- ११६ रा० अरजुनसा सके १६०७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी ५  
श्रीमूलसंवे खंडारियागोत्रे सः पी० । ( विवरण क्र० १२९ )

- ११७ माननाथ मठे १६०७ ४ माघे । ( विवरण क्र० ४६२ )
- ११८ मठे १६०७ । ( विवरण क्र० ४७४ )
- ११९ मठे १७०७ ममत्त १७४२ । ( विवरण क्र० ४७२ )
- १२० शके १६०७ प्रमदनामसत्तर फाल्गुण वरा १० म० धमचट्ट  
उपदेशात् सु० नगरे ज्ञाते उज्जैनीपल्लीनार गोदमा भार्या  
सेमाई व० साह भार्या नागाई प्रणमति । ( विवरण क्र० १८७ )
- १२१ सके १६०८ फागुण वदि १० श्रीमूलमधे सरस्वतागच्छे बलात्का-  
रणे कुदकुटाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविद्यालकीर्तिस्तपट्टे म०  
श्रीपद्मनीतिस्तपट्टे म० श्रीविद्याभूषण स्वकमक्षायं ।  
( विवरण क्र० २६७ )
- १२२ सवत् १७४४ सके १६०९ फाल्गुण सुद १३ श्रीमत्काष्टासधे  
लाडवागडगच्छे म० प्रतापकीर्ति आम्नाय वधेरवालजातो गोवाल-  
गोत्रे सधवी पदाजी भार्या तानाई तयो पुत्र सधवी जमनाजी  
भार्या हासुवाई तयो पुत्रा तुर्य म० पुतलावा भार्या गगाई  
म० पुजावा मा० देवकु म० शीतलावा मा० मनाई इ० पदाजी  
पते सह नित्य प्रणमति श्रीकाष्टासधे नदितटगच्छे म० इद्रभूषण  
म० सुरेद्रकीर्ति । ( विवरण क्र० १०२, १७४, २४६ )
- १२३ सके १६०६ पा० सु० १३ काष्टामधे लाडवागडगच्छे प्रतापकीर्त्या-  
म्नाय म० सुरेद्रकीर्ति स० पदाजी मा० तानाई पु० रागावा मा०  
मोनाई पु० अनतोवा मा० पामाई जीप्रतिष्ठित ( विवरण क्र० १०५ )
- १२४ सके १६०० बलात्कार । ( विवरण क्र० ४७८ )
- १२५ सवत् १७४५ ज्येष्ठ सुदी २ सोमवार श्रीकारजानगरे काष्टायधे  
प्रतापकीर्तिआम्नाये वधेरवालजातो बोरखडियागोत्रे सा० मनामा  
भार्या शकाई तथा पुत्रा श्रव मा० अर्जुन मा० रगाई शितलमा  
भार्या सायरा लक्ष्मणसा मा० जीवाई येसोवा पुतलावा नित्य  
प्रणमति । ( विवरण क्र० ४४९ )

- १२६ मिती चैसाख सुदी ३ संमत १७४५....। ( विवरण क्र० ६६ )
- १२७ संमत १७४६....। ( विवरण क्र० ३२६ )
- १२८ शके १६११ श्री....। ( विवरण क्र० ३६१ )
- १२९ सं० १७४६ । ( विवरण क्र० ३८४ )
- १३० संमत १७४७ मके १६१२ ज्येष्ठ वदी ७ म० श्रीइंद्रभूषण त० म० सुरेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये म० श्रीनरेंद्रकीर्ति प० म० श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये वघेरवालज्ञाति गोवालगोत्रे सं० बापु पुत्र सं० भोज संघर्षा पदार्जा भार्या तानाई पुत्र सं० बापु सं० जमनाजी सं० राजवा अथ संघर्षा जमनाजी भार्या हसाई समस्त कुटुम्बपरिवार नित्यं प्रणमंति दर्शनयंत्र श्रीअवढनगर प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० १७६ )
- १३१ शके १६१२ ज्येष्ठ वदि ७ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे म० श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वय म० धर्मभूषण त० म० विशालकीर्ति त० म० धर्मचंद्रोपदेशात् वघेरवालज्ञाति खडासो गोत्रे सा० रावुसा सुत लपुसा अंघिका नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र० ४३२ )
- १३२ संमत १७५० सवधारी नाम संवत्सरे आपाढ़ कृष्ण तिथि....भार्या श्री.... । ( विवरण क्र० ७३ )
- १३३ शके १६१७ फा० ५....। ( विवरण क्र० ३७८ )
- १३४ सं० १७५२ माघ वदी ८ श्रीमूलसंघ म० श्रीहेमकीर्ति गु० त० न न जा सवजी (?) । विवरण क्र० ४११ )
- १३५ संवत् १७५३ वर्षे चैसाख सुदि ६ मर्ना श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति तदाम्नाये वघेरवालज्ञाती गोवालगोत्रे संघर्षा भोज भार्या पदमाई तयोपुत्र अरजुन भार्या सकाई तासो पुत्र सं० तवना भार्या

सिता पुत्र स० मामा भार्या देगई सववी धर्मा भार्या फालाई  
तथो पुत्र स० सितल भार्या देनकु भार्या हिराई तथो पुत्र मीन  
द्वितीयभार्या इत्यादि सपरिवार नित्य प्रणमति । आकाशसधे  
नदीतटगच्छे म० रामसनान्वये तदनुक्रमेण म० इन्द्रभूषण तत्पट्टे  
म० सु ( रेंद्रकीति ) । ( विवरण क्र० १६९ )

१३६ समत १७५३ परपे मिती वैशाख सुदी ३ पापडोगल प्रति-  
ष्ठित । ( विवरण क्र० ५८, ६३, ६४, ८८ )

१३७ शके १६११ वै० सु० ३ श्रीमूलसव सनगण । ( विवरण क्र०  
१६४, २१६ )

१३८ सवत १७५४ मूलसधे सनगणे पुष्करगच्छे म० छत्रमेनोपद-  
शात् । ( विवरण क्र० ८ )

१३९ [ स० ] १७५६ आमु० वा० स० श्रीद्वदकीर्ति म० प्रतिष्ठित  
मिती माघ सुद ५ । ( विवरण क्र० २०४, ४६९ )

१४० संके १६२२ म० श्री चद्रगुरुपदेशात् । ( विवरण क्र०  
३३० )

१४१ शके १६२३ विमवनामसंवत्सर माघ ।

१४२ स० १६२६ म० ह्रीमकीर्ति उपदेशात् प्रतिष्ठित सी० स० ।  
( विवरण क्र० ४१२ )

१४३ शक १६२६ तारणनामसंवत्सर माहो सुद १३ शुक्ले मूलसध  
बलात्कारगण कुदकुदाचायान्वये म० पद्मकीर्ति तत्पट्टे म० विद्या-  
भूषण त० म० ह्रीमकीर्ति उपदेशात् उज्जैनापल्लावालजातीय  
मिगवो लखमप्रसादजी भाया गोमाई तस्य पुत्र नेमासिंगवी  
मितलमिगवी मित्रलमिगवीप्रतिष्ठित मामीनगर चंद्रनाथ-  
चैत्यालये गृमासा चिनामणिसा नित्य प्रणमतु ( विवरण क्र०  
२१० )

१४४ शक १६२६ तारण सव सरं माह सुद १३ मूलसध व० म०

- हेमकीर्ति उपदेशात् सितलसंगई प्रतिष्ठितं शुभं भूयात् । ( विवरण क्र० १८६ )
- १४५ शके १६२८-विमवनामसंवत्सरे माघ..... । ( विवरण क्र० ३०५, ३३८, ४०१ )
- १४६ सक १६३६ जय० फा० दताजी । ( विवरण क्र० ४३५ )
- १४७ संमत १७७२ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंद ( कुंदाचार्यान्वये )..... । ( विवरण क्र० ५७ )
- १४८ संमत १७७८ चैत्र सुदी ६ श्रीमू० म० । ( विवरण क्र० २९ )
- १४९ सं० १७८३ । ( विवरण क्र० ४६३ )
- १५० संमत १७९१ मूलसंव । ( विवरण क्र० ११९ )
- १५१ संमत १७९३ प्र० श्रीमू० म० च० भ० श्रीधर्मचंद्रना उपदेशात् ज्ञान वा० भोजसा माः नावाई त० पु० फदशा (?) नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र० ४०५ )
- १५२ संवत् १८०० वैशाख शु॥ ३ मौमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कार-गणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये.....नागपुरमे.....प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ५१, ५६ )
- १५३ संमत १८०० वैशाख सुदी ३ । ( विवरण क्र० ५६ )
- १५४ संमत १८१० माघ सुद २ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती-गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये गोपाचलपट्टे मट्टारक श्रीचारुचंद्रभूषण तट्टोपदेशात्.....नगरे प्रतिष्ठा करापिता.....कामटी सदर..... । ( विवरण क्र० २०९ )
- १५५ शके १६७६ । ( विवरण क्र० ३३५ )
- १५६ श्रीमूलसंघे सके १६७६..... । ( विवरण क्र० ३४३ )
- १५७ शके १६७७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी १० बुधे मूलसंव पुष्करगच्छे सेनगणेभ्नाये मट्टारकजी सोममेनदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्रीजिनमेनगुरूपदेशान् कारंजाग्रामवास्तव्य चघेरवालज्ञात

सावज्ञागोत्रे वीरामाह माया द्विराई तयोपुत्र जिनासाह माया गोपाई तयो पुत्र द्वौ प्रथम पुत्र तवनासा मार्गा अबाई द्वितीयपुत्र शितलसाह मार्गा पद्माई नित्य प्रणमति । ( विवरण क्र० १७७ )

१५८ शक १६७८ माघ सुद १४ मूलसथ म० शानिमनोपदशात् प्रतिष्ठित कारजाग्रामवास्तव्येन नेवाज्जाति पु० गोत्र पु० चिंतामणसा नित्य प्रणमति । ( विवरण क्र० २१२ )

१५९ समत १८१४ शक १६७९ । ( विवरण क्र० ४४४ )

१६० शक १६८१ फा० व ॥ ६ मू० स० व० कु० म० धर्मचंद्र पाश्चिनाथवित्र । ( विवरण क्र० १३८ )

१६१ शक १६८६ म० म० व० म० धर्मचंद्र । ( विवरण क्र० २०३ )

१६२ शके १६८७ फा० ५ अ० । ( विवरण क्र० ४३१ )

१६३ शक १६८७ मन्मथ अजितकीर्तिउपदशात् स० छ रे म टा क (?) फा० सु० २ । ( विवरण क्र० ४७० )

१६४ सवत १८२३ चैत्र वदी ८ । ( विवरण क्र० ३१६ )

१६५ समत १८२७ सके १६९२ वैशाख सुदी १२ उपदशात् । ( विवरण क्र० २९९ )

१६६ शक १६९२ मिर्वा वैशाख वदी ११ श्रीमूलसथ स० व० म० धर्मचंद्र प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० ६ )

१६७ शके १६९५ । ( विवरण क्र० ४६७ )

१६८ शक १६९५ मन्मथनामसवत्सर । ( विवरण क्र० २३६ )

१६९ सके १६९७ फा० ॥ ५ अ० वावजि । ( विवरण क्र० ४५३ )

१७० सके १६९७ स० म० म० म० अजितकीर्ति । ( विवरण क्र० ४६५ )

१७१ शक १६९७ म० फा० सु० ५ म० अ० मना । ( विवरण क्र० ४०३ )

१७२ सके १६९७ फा० ५ अ० अय ति० । विवरण क्र० ४७७ )

- १७३ (सके) १६६७ फा० ५ अ० ज० ल० । ( विवरण क्र० ४७६ )
- १७४ शके १६९७ मन्मथनामसंवत्सरे अजितकीर्ति उपदेशात् परवार हिरामन फाल० शु० द्वितीया २ । ( विवरण क्र० ४८० )
- १७५ सके १६६७ मनाजी सेठ भ० अ० । ( विवरण क्र० ४२३ )
- १७६ शके १६९७ मि० फा० २\*\*\*\*नथु । ( विवरण क्र० ३१५ )
- १७७ समत १८३२ मन्मथनामसंवत्सरे मृ० व० स० कुं० भ० पद्मकीर्ति म० विद्याभूषण म० हेमकीर्ति तत्पट्टे अजितकीर्ति फालगुण मासे शुद्ध २ पंचपरमेष्ठी । ( विवरण क्र० २२७ )
- १७८ शक १६६७\*\*\*\*नाम संवत्सर म० अजितकीर्ति उपदेशात् फा० सु० २ । ( विवरण क्र० २०६ )
- १७९ शके १६९८ सु०\*\*\*\*( विवरण क्र० ३२४ )
- १८० श्रीमूलसंधा सके १७०५ । ( विवरण क्र० ४४० )
- १८१ सक १७०७ चैत्र वद १३ श्री मूलसंधे सरस्वतीगच्छ बलात्कार-गण । ( विवरण क्र० ७६ )
- १८२ समत १८४५ सके १७१० श्रीमत्काष्टासंधे लाडवागड नंदितट-गच्छे म० सुरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे म० सकलकीर्ति तत्पट्टे म० लक्ष्मी सेनजी\*\*\*\*श्रीवधेलवालजाति जुगिया गोत्रे\*\*\*\*काष्टासंध गादी\*\*\*\* । ( विवरण क्र० १३३ )
- १८३ सके १७१० शै कीलनामसंवत्सरे मिती श्रावण सुद्ध १२ श्री-मूलसंध चिमनाजी सरावणे तय पुत्र मुरारजी । ( विवरण क्र० १२८ )
- १८४ सा० १७१० काष्टासंधा वर्धासा जांगी । ( विवरण क्र० १७३ )
- १८५ समत १८४६ कार्तिक सुदी ४ काष्टासंधे नंदितटगच्छे\*\*\*\*श्रीलक्ष्मीसेनजी प्रतिष्ठित\*\*\*\* । ( विवरण क्र० १३२ )
- १८६ समत १८५२ मष्टारक\*\*\*\*उपदेशात् रामलालेन प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ४६८ )

- १८७ सके १७१८ सवत १८५३ मार्गेश्वर । ( विवरण क्र० ४६२, ४६६ )
- १८८ ॐ नम मिष्टेभ्य समत १८५७ शके १७२२ माघवा सुदी १० सोमवामरे कु दकु दाचार्याम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे म० श्री श्री श्री अजिनकांति तस्य उपदेशान् गोहिल परवार ज्ञाते भगल् भूयात् । ( विवरण क्र० ३१ )
- १८९ साल १७२३ सवत १८५८ फागवदी २ । ( विवरण क्र० ४२५ )
- १९० समत १८५९ शके १७२४ ला नागपुरमध्ये म० रत्नकीर्ति उपदेशात् । ( विवरण क्र० ३०, ४४, ४५ )
- १९१ समत १८५६ दुदुभिनामसवत्सरे नागपूरनगरे रघुवराज्ये म० श्रीरत्नकीर्तिउपदेशात् श्रीपरवार वशे । ( विवरण क्र० ३२ )
- १९२ समत १८५६ शके १७२४ श्री मूलमघ बलात्कारगणे सरस्वती- गच्छे म० रत्नकीर्ति उपदेशात् नागपूरनगरे रघुवराज्ये परवारा- न्वये सेतगागर गोहिल्लगोत्र भाया प्रतिष्ठा करापित । ( विवरण क्र० ३३, ४३ )
- १९३ समत १८६१ वैशाख सुनी ५ सोमवामर सवाईजयनगर श्री- सुरेंद्रकीर्तिउपदेशात् हिरा प्रतिष्ठा कारिता । ( विवरण क्र० ३४६ )
- १९४ सवत १८६६ फाल्गुण कृष्ण ५ शुक्रवारे श्रीमूलमघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकु दकु दाचार्यान्वये प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० ३७०, ३७२ )
- १९५ संमत १८६८ फागुण सुदी ७ बुध श्रीमूलमघ बलात्कारगण सरस्वतीगच्छ प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० ११० )
- १९६ शके १७४३ श्रीमूल । ( विवरण क्र० ४८१ )
- १९७ शके १७४४ श्रीमूलमघ । ( विवरण क्र० ९०, १०१ )
- १९८ सवत १८८१ वर्षे माघ मासे शुद्ध ५ सोम श्रीकाष्टासुधे म०



- सुरेंद्रकीर्ति तत्शिष्य भ० देवेंद्रकीर्ति राजामान ज्ञाति बघेरवाल ।  
( विवरण क्र० १७० )
- १६६ संमत १८८१ म० स० व० आचार्य श्रीरामकीर्ति उपदेशात्...  
प्रतिष्ठित श्रीउमरावतीनगरे । ( विवरण क्र० १६२ )
- २०० सवत १८८५ श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-  
चार्यान्वय भट्टारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति उपदेशात्...प्रतिष्ठित ।  
( विवरण क्र० ५२ )
- २०१ संवत १८८५ मार्गशिर्ष वद १२ गुरुदिने श्रीमत्काशसंघे लाड-  
वागडगच्छे भ० प्रतापकीर्ति आम्नाय नंदितटगच्छे भ० सुरेंद्रकीर्ति  
तस्य भ० देवेंद्रकीर्ति राज्यमान ज्ञाति बघेरवाल गोत्र बोरखंड्या  
सा० खेमासा पु० पूनासा यंत्र प्रणाम्यन्ति । (विवरण क्र० ३९२)
- २०२ संमत १८८७ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-  
चार्याम्नाये श्रीमत्भट्टारक धर्मचंद्रदेवात् तत्पट्टे भट्टारक देवेंद्र-  
कीर्तिदेवात् तत्पट्टे भ० पद्मनंदिदेवात् तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्ति-  
देवात् उपदेशात् बघेरवाल पासमा भवसा सरसग्राममध्ये प्रतिष्ठा  
करापितं । ( विवरण क्र० ४२८ )
- २०३ संमत १८८७ शके १७५२ श्रावणमासे शुक्लपक्षे ती० ५  
आदितवासरे बालात्कारगणे कारंजापुरपट्टाधिकारी श्रीमंत भ०  
देवेंद्रकीर्तिस्वामीजी मीदं विव्र प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ४७१ )
- २०४ शक १७५२ संमत १८८७ वैशाख सुदी ७ गुरुवार स्वस्ति श्री-  
मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ०  
धर्मचंद्रदेवात् तत्पट्टे भ० देवेंद्रकीर्तिदेवात् त० भ० पद्मनंदि-  
देवात् कार्यरंजकपुरपट्टाधिकारी श्रीमत् देवेंद्रकीर्तिउपदेशात्  
वैरामक्षेत्रे सरसग्रामे माणिकसा बघेरवाल तत्पुत्र पासमा गोत्र  
चवरे प्रतिष्ठा करावितं । ( विवरण क्र० १९१ )

- २०५ समत १८८७ का ज्येष्ठ सुदी ९ विंशतिनामसवत्सरे श्रीमू० स०  
ब० कुं० स० पद्मनदिदेवात् तत्पट्टे म० देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठा  
करान्वित । ( विवरण क्र० २८ )
- २०६ सवत् १८८८ वैशाख कृष्ण ५ रत्रिवासरे श्रीमूलसधे ब० स०  
श्रीकु० इद प्रतिमा कारयेत् श्रीमकलपचक्रमैटिक स्वकर्मक्षयार्थ  
प्रतिमा प्रतिष्ठिनिय । ( विवरण क्र० २९ )
- २०७ समत १८८८ । ( विवरण क्र० १०६ )
- २०८ समत १८८९ वैशाख शुक्ल ११ गुरुवासर मूलसधे ब० स०  
कुदकुदाचार्यान्वय । ( विवरण क्र० ८५ )
- २०९ समत १८८९ वृषभायणे । ( विवरण क्र० १०३ )
- २१० समत १८९१ शके १७५६ जयनामसवत्सरे श्रावणमास कृष्ण-  
पक्षे परादि मूलसधे स० ब० कारजानगरे इद पद्मादेवि श्री-  
मद्देवेंद्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठितम् । ( विवरण क्र० २३७ )
- २११ समत १८९३ वर्षे माघ सुद १० बुधदिनी मूलसधे कुदकुदा-  
चार्याम्नाय ब० स० महारकपद्मनदिदेवात् तत्पश्याय म० देवेंद्र-  
कीर्तिदेवात् तत् उपदेशात् भार्या हित्ता पुत्र नेमुराम आता  
दाम्जी भार्या लाहव प्रतिष्ठित प्रणमति । ( विवरण क्र०  
१८६ )
- २१२ स० १८९३ श्रीमू० नागपुर श्रीपाशू च० । ( विवरण क्र०  
३९६ )
- २१३ श्रीमूलसधे सक १७५९ । ( विवरण क्र० ४५४, ४५८ )
- २१४ श्रीसवत् १८९४ साल आषाढ वा॥ ३ श्रीमहावीर स्वामीजीका  
मुख । ( विवरण क्र० ४६, ५० )
- २१५ समत १८९७ शके १७६२ भगवतिनामसवत्सरे वैशाख सुदी  
३ बुधवासरे इद श्रीपादवैनायस्वामी श्रीमूलसधे मरस्वर्तागच्छे  
बलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये महारक श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिस्वामी

नागपुरे प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २१४ )

२१६ संवत् १८९८ मिति श्रावण सुदि ८ सोमदिने नागपुरे श्रीपार्श्व-  
नाथचैत्यालये इदं जलयात्रायंत्रं प्रतिष्ठितं ( विवरण क्र० २७० )

२१७ संमत १८६६ फागुण सुदी ७ बुधवासरे श्रीमूलसंग- बालात्कार  
गण सरस्वतीगच्छ कुंदकुंदाम्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिमा  
प्रतिष्ठितं गोपीसाह । ( विवरण क्र० ३३२-१ )

२१८ श्रीमूलसंघे शके १७६४ । ( विवरण क्र० ११२ )

२१९ श्रीपारसनाथजी सक १७६५ र...नाम संवत्सरे । ( विवरण  
क्र० ७७ )

२२० संमत १९०० सके १७६५ सोयल नाम संवत्सरे चैत्र सुदी ३  
सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नागपुर  
पार्श्वनाथचैत्यालये अयं मेरु देवेंद्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० १८१ )

२२१ संवत् १६०० शके १७६५ सोमवक नाम संवत्सरे चैत्र सुद  
३ सोमवार मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीनागपुरे  
श्रीमत् चिंतामणिपार्श्वनाथचैत्यालये श्रीशान्तिनाथस्वामी देवेंद्र-  
कीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० १७८, १७९ )

२२२ संमत १६०२ माघ शु॥ १३ ( विवरण क्र० २८३, ३०० )

२२३ संमत १९०२ माघ सुदी तेरसी म० देवेंद्रकीर्ति हस्तेन सुखा-  
लाल प्यारेलाल...प्रतिष्ठा करार्षिता । ( विवरण क्र० ३४२ )

२२४ शके १७६७ । ( विवरण क्र० ३६५ )

२२५ संमत १६०२ शके १७६७ तेरसीदिवसे प्रतिष्ठितं । ( विवरण  
क्र० ३६ )

२२६ संवत् १६०४ शके १७६६ मिति वैशाख सुदी १३ बुधवासरे  
इदं श्रीचन्द्रनाथस्वामी प्रतिष्ठा श्रीमत्देवेंद्रकीर्तिस्वामी तेन  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ६०, ६१ )

२२७ समत १६०४ शके १७६६ प्लवगनामसप्तसरं मिती वैशाख सुदी १३ बुधवाररे इद मुनिमुवत स्वामी श्रीमूलसव बला-  
त्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये म० श्रीमद् देवेंद्रकीर्ति  
उपदेशात् बयैरवालयस्य चरियागोरे रतनसागरी श्रीनागपुरे  
प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० २२४ )

२२८ समत १६०४ मिती वैशाख सुदी १३ । ( विवरण क्र० २८२ )

२२९ सवत् १९०७ शके १७७२ मिती श्रावणसुदी ५ सोमवार  
नागपुरनगर श्रीमूलसव सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण श्रीपार्श्व-  
नाथस्वामिचैत्यालये इद पद्यावतिदेवि प्रतिष्ठित ।

(विवरण क्र० २३४)

२३० सवत् १९०७ शके १७७२ मिती श्रावण सुदी ५ सोमवाररे  
नागपुरनगर मुलसव सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीपार्श्वनाथ-  
स्वामीचैत्यालये अय पार्श्वनाथप्रतिमा म० देवेंद्रकीर्तिस्वामिना  
प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० १९६ )

२३१ समत १६०७ मिती श्रावण सुद ५ म० स० व० नागपुरे  
पार्श्वनाथदेवालये प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० १८५, ३८५ )

२३२ अय मेरू डगोलीग्राम शास्तीनाथस्वामीचैत्यालये स्थापित सवत्  
१६०८ शके १७७३ वर्षे विरोधकृतनामसप्तसर श्रावणमास  
शुक्लपक्षे १० बुधवाररे मुलसव सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे  
कुदकुदाचार्यान्वये नागपुरनगर पार्श्वनाथस्वामीचैत्यालये अय  
मेरू जिनान् श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठाप्य डगोलीग्रामे  
स्थापित ( विवरण क्र० १६५ )

२३३ समत १९०८ शके १७७३ श्रावण सुद १० बुधवार सुलसव  
सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुदकुदाचार्यान्वये नागपुरनगर  
श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये अय श्रीभेमिजिन देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठित ।

( विवरण क्र० २१७, २३० )

२३४ शके १७७५ पार्थिवनामसंवत्सरं ज्येष्ठ सुदी ११ तिलक श्री-  
मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे गुणमद्रदेवात् तत्पट्टे श्रुतवीरदेवात्  
तत्पट्टे भ० माणिकसेनदेवात् त० नेमसेनउपदेशात् वधनोरा  
ज्ञाति माणिकशेटी भार्या सोनाई तस्य पुत्र धायसेटी भार्या  
गुणाई तस्य पुत्र आयसेटी भार्या रत्नाई लखमणसेटी भार्या  
धरवाई रंगसेटी भार्या मालाई इदं प्रतिष्ठा केली द्वितीय साखा  
म० गुणमद्रदेवा तत्पट्टे म० लक्ष्मीसेनश्री प्रतिष्ठितं श्री आयाजी  
लखमजी रंगो ( विवरण क्र० २२६ )

२३५ संमत १६१३ शके १७७८ मिती फाग सुदी २ मुलसंव  
सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुंदकुंदान्वय अनंतनाथस्वामी  
नागपूरं प्रतिष्ठितं ( विवरण क्र० १८३ )

२३६ संमत १९१५ शके १७८० माघ सुदी ३ म० स० व० कुं०  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० १६८ )

२३७ मा ये धा म न (?) संवत् १९१५ । ( विवरण क्र० ४१६ )

२३८ संमत १९१६ मि० फाग सुद ११ श्री म० स० व० कुं०  
हिरालालसा ठाकूर । ( विवरण क्र० ३४, ५३ )

२३९ संमत १६१६ मि० फाग सुद ११ श्री म० स० व० कुं०  
लुखुसा चोणसाव । ( विवरण क्र० ३५, ३६, ३२८, ३२९ )

२४० संमत १६१६ फागुण सुद ११ समतीवृतं (?) कुंदकुंदान्नाय  
गणहु गंगाराम । ( विवरण क्र० ३७ )

२४१ संवत् १९१६ मि० फागुण सुदी ११ श० श्रीम० स० व० कुं०  
अयं श्रीअजितनाथस्वामी सुखीसाव परवार तेन प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ४१, २८६, २८८-२९०, २९३, ३०३, ३०८, ३३१ )

२४२ संमत १६१६ मिती माघ सुदी १० श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे  
बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये अयं श्रीमहावीरस्वामीजी  
मटारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी उपदेशात् संवुरामजी तस्य

पुत्र मागचदजी अजमेरा खडेरवाल धावकेन प्रतिष्ठित गुरु-  
वासरे नागपुर शुभचारीपेठ श्रीजिनचैत्यालय । ( विवरण क्र०  
६१, ६६, ७२, ७५, ७६ )

२४३ समत १६१६ मित्ती माघ सुदी १० गुरुवार । ( विवरण क्र०  
६७, ६८, ८२ )

२४४ समत १९१६ मित्ती माघ सुदी १० सरपचद अजमेरा तेन  
प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० ७१ )

२४५ समत १६१६ माघ सुदी १० मूलसधे प्रतिष्ठित ।  
( विवरण क्र० ७८ )

२४६ समत १९१६ माघ सुदी १० गुरुवार श्रीम० स० ब० कु०  
नेमिनाथस्वामीजीन । ( विवरण क्र० ८१, १६९ )

२४७ समत १६१६ मित्ती माघ सुदी १० गुरुवार श्रीम० स० ब०  
अहारकदेवेंद्रकीर्तिस्वामीजी हस्तेन प्रतिष्ठित नागपुरमध्य ।  
( विवरण क्र० ८६ )

२४८ समत १९१६ मि० फा० सुदी ११ शनिवार श्रीम० स० ब०  
कु० अथ श्रीआदिनाथ श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीना प्रतिष्ठित ।  
( विवरण क्र० ८८ )

२४९ समत १९१६ मित्ती फागुण सुदी ११ शनिवार नागपुरनगरे  
श्रीमहावीरस्वामीचैत्यालये श्रीमूलसधे स० ब० कु० अथ  
श्रीपादधनाथस्वामीजी श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी स्वहस्तेन  
प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० ९१ )

२५० समत १६१६ मित्ती फागुणसुदी ११ शनिवार श्रीम० स० ब०  
कु० नागपुरनगरे श्रीजिनचैत्यालये अथ श्रीआदिनाथस्वामी  
मूलनाथक स० श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामी उपदेशात् गुरुरास  
तत्पुत्र मनीलाल परमार पोडल मुर कोडल गोत्र ते प्रतिष्ठित ।  
( विवरण क्र० ९६ )

- २५१ संवत् १६१६ मिति माघ ०१ ( विवरण क्र० ८६, ४२७ )
- २५२ संमत् १६२५ मार्गशिर्ष सुदी ५ गुरु श्रीमू० म० हेमकीर्ति तत्पट्टे म०....करा....। ( विवरण क्र० २८० )
- २५३ संमत् १९२५ का माघ सुदी ५ सोमवारे श्रीमूलसंवे वलात्कार-  
गणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे म० हेम-  
कीर्ति उपदेशात् रामटेकमध्ये संवदी मनालालेन प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० २८४ )
- २५४ संवत् १९२५ श्रीमूलसंवे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये  
नागौरपट्टे म० श्रीविद्यामूपणजी तत्पट्टे मट्टारक श्रीहेम-  
कीर्तिजी तदाम्नाय....परवालान्वये कोल्लगोत्रे संवदी भुरसादास  
तत्पुत्र मनालालेन प्रतिष्ठा करान्वितं । ( विवरण क्र० ४ )
- २५५ संवत् १९२५ शके १७६० विभवनाम संवत्सरे शुक्लपक्षे तीर्था  
७ बुधवासरे श्रीमूलसंवे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुंदकुंदा-  
चार्याम्नाये इदं प्रतिमा देवेन्द्रकीर्ति स्वामीन हस्ते नागपूरमध्ये  
छोखालाल तस्य भार्या वीरावाई ने प्रतिष्ठा करान्वितं ।
- २५६ श्रीजिनो जयति ॥ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो नमः । संमत्  
१९२५ का शके १७६० का विभवनामसंवत्सरे सिसरकृतां  
मासातमासोत्तममासे मार्गशिर्षमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथी ५  
पंचमी गुरुवासरे उत्तराषाढ नक्षत्रे गजनामयोगे श्रीनागपुरवा-  
स्तव्यमे श्रीमूलसंवे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे नंद्याम्नाये  
कुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीनागौरपट्टे मट्टारकथी हरपकीर्तिजी  
तत्पट्टे म० श्रीविद्यामूपणजी तराडेण (?)....इक्ष्वाकुवंशे धुरामोरी  
गोत्रे संवदी कृपारामजी तत्पुत्र कलुपाऊजी भार्या हीरावाई  
तत्पुत्र वृथपाल सावजी छोटेलाळ....तेन सपरिवारेण संवदी  
कलुपाऊ श्रीप्रतिष्ठा-करापितं ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रयामस्तु ॥ रक्षिव-  
मस्तु ॥ ( विवरण क्र० २८५ )

२५७ थीसमत १६२५ शक १७९० विमवनामसप्तमसरे मित्ती बैसाख मासे शुक्लपक्षे तीर्था ७ बुधवासर श्रीमूलसधे वालात्कारगणे श्रीसरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्त्रये श्रीचन्द्रप्रभस्वामीन प्रतिमाया श्रीमद् देवेन्द्रकीतिस्वामीहस्त श्रीनागपूरमध्य प्यारे-सावजी भार्या पुनावाई परघार तेने प्रतिष्ठा करारित ।

४ २ १ १ १ ५ १ ( विवरण क्र० २९४ )

२५८ समत १९२५ बै० शु ॥७ सु० कु० दे० नागपूरमध्ये गुमान-साय तस्य पुत्र चुडामणसा तस्य पुत्र मोजराज परवार तेन प्रतिष्ठा करान्वित । ( विवरण क्र० २९६ )

२५९ समत १९२५ बैसाख शुद्ध ७ बुध० श्रीमू० स० व० कु० श्रीपाश्र्वनाथस्वामीना देवेन्द्रकीतिस्वामीनहस्ते नागपूरमध्ये प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० ३१०-१४ )

२६० समत १९२५ बैसाख सुदी ७ प्रतिष्ठित मनषोध जिन मुगा-बाई । ( विवरण क्र० ३२७ )

२६१ समत १९२५ मित्ती अघण सुदी ५ प्रतिष्ठा नागपूरमध्ये आदि-नाथजी । ( विवरण क्र० ३३६ )

२६२ समत १९२५ शक १७९० आदिनाथस्वामी ।

( विवरण क्र० ३४४ )

२६३ समत १६२५ का'मित्ती माघ सुदी ५ सोमवासरे श्री मूलसध व० स० कुदकुदाचार्यान्त्रय नागौरपट्ट भ० श्रीविद्याभूषणजी तत्पट्टे भ० हेमकीतिना तदाम्नायवरता पंडित सवाईरामोपदेशात् परवारान्त्रये कोछल्लगोत्रे सघई तुलसीदाम तत्पुत्र म० लाल कुजलाल विहारीलालेन प्रतिष्ठा की । ( विवरण क्र० ३५५ )

२६४ समत् १६२५ बैसाख सुदी ७ बुधवारे श्रीमूलसधे वालात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्त्राये महारकश्रीमद्देवेन्द्रकीति प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० ३७१ )



२६५ संमत १६२५ माघ सुदी ५ सोमं प्रतिष्ठितं ।

( विवरण क्र० ३७३-४ )

२६६ श्रीमूलसंगचे...संमत १६२६ प्रमवनाम संवत्सरे श्रावण व ॥५॥

( विवरण क्र० ४५१ )

२६७ संमत १९२८ प्रमवनामसंवत्सरेॐ माघ शुक्ल द्वादशीतिथौ  
बुधवासरे प्रतिष्ठाचार्य श्रीमत् देवेंद्रकीर्तिमठारक प्रतिष्ठा करणार  
प्यारेसाव मनासाव । ( विवरण क्र० ३६३ )

२६८ श्रीपारसनाथजी संमत १६२८ । ( विवरण क्र० २६२ )

२६९ संवत् १९२८ प्रजापतिनामसंवत्सरे माघशुक्ले द्वादशीतिथौ बुध-  
वासरे प्रतिष्ठाचार्यश्रीमत् देवेंद्रकीर्ति मठारक प्रतिष्ठा करविणार  
मनालाल सवाईसंघवी । ( विवरण क्र० ४२ )

२७० संवत् १६२८ ( विवरण क्र० ३८ )

२७१ ॐ चंद्रनाथ येन संमत १९३३ । ( विवरण क्र० ७० )

२७२ संमत १६३६ शके १८०४...प्रतिष्ठाचार्य विशालकिर्ती मठारक  
प्रतिष्ठा करविणार सुतीयावाह्य परवारीन । ( विवरण क्र० २७९ )

२७३ श्रीपारमनाथजी सं० १९४८ ( विवरण क्र० ३०४ )

२७४ संमत १९५२ वैशाख सुदि १३ सोमवासरे...प्रतिष्ठितं ।

( विवरण क्र० ८४ )

२७५ सं० १९५८ व० सु० १२ पद्मासा भोजासाव ।

( विवरण क्र० ४०२ )

२७६ संमत १६५८ वैशाख शुद्ध १५ मूलसंघे कुंदकुंदाम्नाये मठारक  
देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ३७६ )

२७७ मा० शी० ७ श्री० रा० व० स्व० वा० झी० अ० प्र० ना०  
सं० १९६१ । ( विवरण क्र० ४१८ )

२७८ समत १९६१ मिती ज्येष्ठ शु ॥ १० श्रीवीरसेन स्वामी उपदेशात्  
चागासाव गगासावनो चवरं याहानी प्रतिष्ठा करिछी ।

( विवरण क्र० १४५ )

२७९ नागपूर शेतवाल मन्दिर प० रवि० समत १९६१ मागशिष व ॥  
सप्तम्या पण्डितवर्य रामचंद्र ब्रह्मचारिणा पंच शेतवाल अनुराथा  
प्रतिष्ठित इद प्रतिमा । ( विवरण क्र० १०७ )

२८० समत १९६६ कु०म्नाय सिवनीनम्र प्रतिष्ठित ।

( विवरण क्र० ३२५ )

२८१ वीरममत २४३६ सि० मा० शु ॥ ५ सु० बा० ग० प्रतिष्ठित ।

( विवरण क्र० ४३७ )

२८२ समत १९६८ ज्येष्ठ सुद ८ शुक्रवामरे मुलसाथे बळात्कारगणे  
सरस्वतीगच्छे कारजापुरे पट्टाधिकारी म० देवेंद्रकीर्तिस्वामा उप-  
देशात् शिखरजीकी पादुका खडेलवालजातिय पाटणीगोत्र  
हजारीलाल गेंडालाल येन प्रतिष्ठा करावित नागपूरनगरे ।

( विवरण क्र० १६७, २३३ )

२८३ समत १९७६ पण्डित रामभाऊना प्रतिष्ठित कन्हैयालालजी  
गरीबे याचै आईचे नन्दिश्वर वतावापनाथ ।

( विवरण क्र० २२२ )

२८४ स्वस्ति श्री २४५८ श्रीवीरसवत्सरे १९८८ विक्रम माघमासे  
शुक्रपक्षे दशम्या तिथी बुधवासर श्रीमूलमाघे बळात्कारगणे सर-  
स्वतीगच्छे कुदकुदाचार्याग्नाये फणिंद्रपुरनिवासी परवारजातिय  
खेलामूर गोड्डुगोत्रोत्पन्न परमानदीप्रजात्मज परवारभूषण  
पत्तेचदुदिपचदाम्था छपारानगर प्रतिष्ठित ।

( विवरण क्र० ६२०-२३ )

२८५ श्रीमहावीरनिर्वाणसमत २४६० विक्रम समत १९९० शक्र  
१८५५ फालगुण शुद्ध १२ सामग्रार श्रीमूलसाथ सरस्वतीगच्छ

बलात्कारगण श्रीकुंदकुंदाचार्याम्नाथांताळ वासल गोत्रांतोळ  
परवारजाति नागपूरनिवासी शेठ कनईलाल नेमिचंदजी यांनी  
दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथ येथील श्री ब्र० जीवराज गौतम-  
चंद सोलापूर याचे प्रतिष्ठामध्ये श्रीमहावीर तीर्थंकराचे विंव  
प्रतिष्ठित केले असे ॥ ( विवरण क्र० ६२ )

२८६ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान शांतिनाथ तीर्थंकर जिनविंव  
प्राणप्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ भ० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज  
संस्थान तक्त लातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सद्गुपदेशात् नाग-  
पूरस्थ दि० जैन सैतवाल समाज चारसंवत् २४६१ मितो मार्ग-  
शिर्ष कृष्ण १२ इयाम् कृतेति शम् । ( विवरण क्र० १०४-५ )

२८७ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान आदिनाथ तीर्थंकर जिनविंव प्राण-  
प्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ भ० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज  
संस्थान तक्त लातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सद्गुपदेशात् नाग-  
पूरस्थ दिगम्बर जैन सैतवाल समाज व श्री० राजाराम दुर्वा-  
साव काटोलकरेणप्रतिमा आणिता प्रतिष्ठाचार्य श्री० पंडितवर्य  
राममाळ महामहोपाध्याय पंडित श्री० अखिल सैतवाल जैन  
राजगुरुर्पाठ संस्थान तक्त लातूर गादी नागपूर चारसंवत् २४६१  
मितो मार्गशिर्ष कृष्ण १२ इयाम् कृतेति शम् ।

( विवरण क्र० १०६ )

२८८ स्वस्ति श्री १०८ श्रीमहाराजविशालकीर्ति उपदेशात् सं० २४६१  
मार्गशिर्ष कृष्ण १२ इयाम् बुद्धो प्रतिष्ठितं ।

( विवरण क्र० ३८६-७, ३८२-४, ४१५-७ )

[ अनिश्चित समयके लेख ]

२८९ संवत् १५४ - संव २ नी गो पुत्रा न र नी (१?)

( विवरण क्र० ४१० )

- २९० स० १५ सुद १३ सप्तम पुत्र मनमुख भार्या महता ।  
( विवरण क्र० ४२२ )
- २९१ सवत १५ - ६ वर्षे वैसाख सुदि ३ भगलदिने भट्टारकजिन-  
चट्टाम्नाये गोलापूर्व सधे इलाम । ( विवरण क्र० १६३ )
- २९२ समत १-६१ वर्षे वैसाख सुदी का जीवरान ।  
( विवरण क्र० ७४ )
- २९३ सक १-७६ शुभकृत नाम मरुसरे कातिक शुद्ध प्रतिपदा १  
बुधवार सावरगात्रमास श्रीआदिनाथचैत्याष्टये श्रीमहिचन्द्र  
भट्टारकउपदेशात् तस्य थावर तिमार्जी पलमापुरे तस्य माया  
बचाई य गगाई तस्य पुत्र येकुजि कानेरवा तस्य यत्र ।  
( विवरण क्र० २७६ २७७ )
- २९४ ७८ वैसाख सुदी ३ पुत्र मोती माया म ।  
( विवरण क्र० ३०७ )

[ अज्ञात समयक लेख ]

- २९५ सवत वैसाख मासे शुद्ध ३ भौमचामरे श्रीमूलसधेबलान्कारगणे  
सरस्वतीगच्छे कुदकुडाचार्याम्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारण प्रतिष्ठिनं  
नागपुरमध्ये । ( विवरण क्र० ५४ )
- २९६ भौकाजी । ( विवरण क्र० ११६ )
- २९७ मूलभार बलान्कारगण पितृव्यागोत्रे रामाया भार्या नमार्ते पुत्र  
रतनसा भार्या पद्मार्ते द्वितीय पुत्र हिरामा माया पुजाई तृतीय  
पुत्र तखनासा चतुर्थ पुत्र पदाजी श्रीचन्द्रप्रभ प्रतिष्ठा  
सवत । ( विवरण क्र० १३१ )
- २९८ श्रीकाष्टामात्र नदितटगच्छ म० श्रीराममनान्वये म० श्रीलक्ष्मी-  
सेनजी प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० १३६ )
- २९९ श्रीवासुपूज्य जिनवर । ( विवरण क्र० १८२ )

- ३०० ....महाराजाधिराज....देवेंद्रकीर्ति....चलात्कारगण सरस्वती  
[ गच्छ ]....। ( विवरण क्र० १९३ )
- ३०१ भ० हेमकीर्ति उपदेशात्....स० प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २०७ )
- ३०२ हेमराज तस्य पुत्र हंसराज भार्या तमावाई प्रतिष्ठा माघ सुदी....।  
( विवरण क्र० २८१ )
- ३०३ ....सातनाथ....। ( विवरण क्र० ३५३ )
- ३०४ श्री आदिसर । ( विवरण क्र० ३५८ )
- ३०५ श्रीमू० स० भ० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् रामसेन ।  
( विवरण क्र० ३७९ )
- ३०६ श्रीमू० भ० जि० का प मंठ प्र (?) ( विवरण क्र० ३८१ )
- ३०७ श्रीमूलसंघे भ० श्रीभुवनकीर्ति....। ( विवरण क्र० ३९०-४६३ )
- ३०८ श्रीमूलसंग । ( विवरण क्र० ३९१, ४०३, ४५६, ४८६ )
- ३०९ श्रीमू० स० व० । ( विवरण क्र० ४०० )
- ३१० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् कपरसेट । ( विवरण क्र० ४०४ )
- ३११ लखमनसा रुपा । ( विवरण क्र० ४०७ )
- ३१२ व्र० पं० नेमीचंद्रजी । ( विवरण क्र० ४२० )
- ३१३ सेनगण भ० श्रीलक्ष्मीसेन....च्यास्त्रिमति सेवक देवीचे चंद्रा-  
इत्ये....। ( विवरण क्र० १६४ )
- ३१४ मू० व० स० धर्मचंद्र हेममेठ नित्यं....ता ।  
( विवरण क्र० ४४२ )
- ३१५ मूलसंघे भ० सुरेंद्रकीर्ति....प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ४५५ )
- ३१६ ....मू० भ० जि० पार वा गट (?) ( विवरण क्र० ४६४ )
- ३१७ श्रीआदिनाथ मा० श्रीवंत । ( विवरण क्र० ४६६ )
- ३१८ मू० संघ तानमेठ वसनामा । ( विवरण क्र० ४७२ )
- ३१९ श्रीमूलसंघ ब्रह्म मल्लिदास मा....भार्या नखाई ।  
( विवरण क्र० ४८८ )

- ३२० श्रीमूलराघ सप्तराजी पुजारी ना । ( विवरण क्र० १२५-६ )
- ३२१ रत्नवत्या ठगली । ( विवरण क्र० १२७ )
- ३२२ बाबाजी बडलकार । ( विवरण क्र० ४६६ )
- ३२३ मू० भ० जि० गदसेठ स्वहित । ( विवरण क्र० ४६५ )
- ३२४ श्रीमूलमधे भ० श्रीमल्लिभूषण सा० लखा भार्या अज्ञी मुता सोनाइ । ( विवरण क्र० १६१ )

## मन्दिरों व मूर्तियोंका विवरण

[ १ ] अजितनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, केलीवाग, नागपुर ।

१ अजितनाथ ( सफेद पापाण १३ फुट ) लेख क्र० १८

२ पार्श्वनाथ ( सफेद पापाण १ फु० २ इ० ) लेख क्र० १८

३ „ „ „ „ लेख क्र० १८

४ पार्श्वनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २५४

५ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ९२

६ पार्श्वनाथ ( धातु ४३ इ० ) लेख क्र० १६६

७ धर्मनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १०१

८ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १३८

लेखरहित प्रतिमाएँ — शान्तिनाथ ( धातु ७ इ० ), चौबीसी

( काला पापाण १३ फुट ), पार्श्वनाथ ( धातु ३३ इ० ),

चन्द्रप्रभ ( काला पापाण ९ इ० ) पार्श्वनाथ ( काला-

पापाण ६ इ० )

पार्श्वनाथ ( काला पापाण ८ इ० ) यक्षिणो ( कृष्ण पापाण

१० इ० ) ।

[ २ ] दिगम्बर जैन मन्दिर, भस्कासाथ, नागपुर

९ आदिनाथ ( सफेद पापाण २३ फु० ) लेख क्र० १८

१० पद्मप्रभ ( सफेद पापाण १ फु० ) लेख क्र० १८

११ आदिनाथ ( सफेद पापाण १० इ० ) लेख क्र० १८

१२ पार्श्वनाथ ( सफेद पापाण १ फु० ) लेख क्र० १८

१३ अजितनाथ ( सफेद पापाण १० इ० ) लेख क्र० १८

- १४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पाषाण ३० इ० ) लेख क्र० १८
- १५ आदिनाथ ( सफेद पाषाण १० इ० ) लेख क्र० १८
- १६ सुपाश्वनाथ ( " ) लेख क्र० १८
- १७ पार्श्वनाथ ( सफेद पाषाण १ पु० ) लेख क्र० १८
- १८ वामपूज्य ( सफेद पाषाण ११ इ० ) लेख क्र० १८
- १९ पार्श्वनाथ ( काला पाषाण १ पु० २ इ० ) लेख क्र० १८
- २० पार्श्वनाथ ( सफेद पाषाण १ पु० ) लेख क्र० १८
- २१ चन्द्रप्रभ ( सफेद पाषाण १० इ० ) लेख क्र० १८
- २२ अनितनाथ ( " ) लेख क्र० १८
- २३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ पु० ३ इ० ) लेख क्र० १८
- २४ आदिनाथ ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० १८
- २५ नेमिनाथ ( सफेद पा० ८ इ० ) लेख क्र० १८
- २६ सुपाश्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८
- २७ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ पु० ३ इ० ) लेख क्र० १८
- २८ पार्श्वनाथ ( काला पा० ११ इ० ) लेख क्र० २०५
- २९ पार्श्वनाथ ( काला पा० १० इ० ) लेख क्र० १४८
- ३० पार्श्वनाथ ( धातु १ पु० ) लेख क्र० ११०
- ३१ पार्श्वनाथ ( धातु १० इ० ) लेख क्र० १८८
- ३२ पार्श्वनाथ ( धातु ९ इ० ) लेख क्र० १९१
- ३३ पद्मप्रभ ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० १९२
- ३४ चौबीसी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २३८
- ३५ चौबीसी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २३६
- ३६ चौबीसी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २३९
- ३७ पार्श्वनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २४०
- ३८ आदिनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २३०
- ३९ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० २२५



- ४० मुनिसुव्रत ( सफेद पा० १० इंच० ) लेख क्र० ७  
 ४१ अजितनाथ ( धातु ५ इंच० ) लेख क्र० २४१  
 ४२ धर्मनाथ ( धातु ७ इंच० ) लेख क्र० २६६  
 ४३ चौबीसी ( धातु १० इंच० ) लेख क्र० १६२  
 ४४ यक्षिणी ( धातु ५ इंच० ) लेख क्र० १९०  
 ४५ यक्षिणी ( धातु ७ इंच० ) लेख क्र० १९०। लेखरहित प्रतिमाएँ—  
 पार्श्वनाथ ( धातु १ से ४ इंच० की दस प्रतिमाएँ )

[ ३ ] दिगम्बर जैन मन्दिर, किराणा बाजार, नागपुर

- ४६ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ४७ पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ४८ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इंच० ) लेख क्र० १८  
 ४९ महावीर ( काला पा० ४ $\frac{१}{२}$  फु० ) लेख क्र० २१४  
 ५० चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ३ इंच० ) लेख क्र० २१४  
 ५१ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० १ फुट ) लेख क्र० १५२  
 ५२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फुट ) लेख क्र० २००  
 ५३ चौबीसी ( धातु ६ इंच० ) लेख क्र० २३८  
 ५४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ $\frac{१}{२}$  फुट ) लेख क्र० २९५  
 ५५ पार्श्वनाथ ( धातु १० इंच० ) लेख क्र० २०६  
 ५६ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० २ फु० २ प्रतिमाएँ ) लेख १५२  
 ५७ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १४७  
 ५८ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १३६  
 ५९ सुपार्श्व ( पीला पा० ७ इंच० ) लेख क्र० १५३  
 ६० चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० २२६  
 ६१ पार्श्वनाथ ( पीला पा० १ फु० ) लेख क्र० २२६  
 ६२ महावीर ( धातु १ फु० ३ इंच० ) लेख क्र० २८५

६३ चन्द्रप्रभ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १३६

६४ नेमिनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १३६

लेखरहित प्रतिमाएँ — पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १½ फु० ),  
पार्श्वनाथ ( धातु २ से ३ इ० ४ प्रतिमाएँ ), चन्द्रप्रभ ( काला  
पा० ११ इ० २ प्रतिमाएँ ), अज्ञातचिह्न मूर्ति ( स्फटिक,  
१½ इ० ), यक्षिणी ( धातु ४ इ० )

[ ४ ] दिगम्बर जैन मन्दिर, जुनी शुक्रवारी पेठ, नागपुर

६० महावीर ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २४२

६६ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इ० ) लेख क्र० १२६

६७ सिद्ध ( धातु ५½ इ० ) लेख क्र० २४३

६८ नन्दोद्वर ( धातु ६½ इ० ) लेख क्र० २४३

६९ पद्मेश्वर ( धातु १½ फु० ) लेख क्र० २४२ ( दो प्रतिमाएँ )

७० चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ६ इ० ) लेख क्र० २७१

७१ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २४४

७२ चौबीसी ( धातु १ फु० ) लेख क्र० २४२

७३ महावीर ( सफेद पा० ६ इ० ) लेख क्र० १३२

७४ आदिनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० २३२

७५ शातिनाथ ( धातु ७½ इ० ) लेख क्र० २४२

७६ आदिनाथ ( धातु १ फुट २ इ० ) लेख क्र० २४२

७७ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २१६

७८ चन्द्रप्रभ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २४५

७९ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १८१

८० पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १०

८१ नेमिनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४६

८२ आदिनाथ ( काला पा० ७ इ० ) लेख क्र० २४३

- ८३ पार्श्वनाथ ( लाल पा० ७ इ० ) ( लेख कन्नड है )  
 ८४ पार्श्वनाथ ( धातु ३३ इ० ) लेख क्र० २७४  
 ८५ चन्द्रप्रभ ( धातु ५३ इ० ) लेख क्र० २०८  
 ८६ वासुपूज्य ( काला पा० ७ इ० ) लेख क्र० २५१  
 ८७ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ८८ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १३६  
 ८९ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० १ इ० ) लेख क्र० २४७  
 ९० यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १९७

लेखरहित प्रतिमाएँ — पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ), आदिनाथ ( काला पा० ६ इ० ), आदिनाथ ( काला पा० ३३ इ० ), सिद्ध ( धातु ५३ इ०, दो मूर्तियाँ ), यक्षिणी ( धातु ४ इ० दो मूर्तियाँ )

[ ५ ] दिगम्बर जैन सैतवाल मन्दिर, इतवारी बाजार, नागपुर

- ९१ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 ९२ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 ९३ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० १८  
 ९४ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 ९५ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 ९६ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ९७ पार्श्वनाथ ( काला पा० १० इ० ) लेख क्र० १८  
 ९८ चन्द्रप्रभ ( काला पा० ८ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 ९९ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 १०० अजितनाथ ( लाल पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 १०१ मुनिसुघत ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 १०२ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८

- १०३ चन्द्रग्रह ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० २०६
- १०४ शातिनाथ ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २८६
- १०५ बाहुबली ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २८६
- १०६ पार्श्वनाथ ( काला पा० ८ इ० ) लेख क्र० २०७
- १०७ पार्श्वनाथ ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २७६
- १०८ मन्दारिश्वर ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ७१
- १०९ आदिनाथ ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २८७
- ११० नेमिनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १९५
- १११ पार्श्वनाथ ( काला पा० १० इ० ) लेख क्र० ७६
- ११२ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २१८
- ११३ शातिनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १२
- ११४ शातिनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ४
- ११५ पार्श्वनाथ ( धातु ४ १/२ इ० ) लेख क्र० ३
- ११६ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २९६
- ११७ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २३
- ११८ पार्श्वनाथ ( धातु ४ १/२ इ० ) लेख क्र० ८३
- ११९ पार्श्वनाथ ( ३ १/२ इ० धातु ) लेख क्र० १००
- १२० यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ७५
- १२१ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २६
- १२२ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० १०३
- १२३ यक्षिणी ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० १७
- १२४ रत्नत्रय यत्र ( धातु ९ इ० ) लेख क्र० ११
- १२५ सम्यग्दर्शन यत्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० ३२०
- १२६ दशलक्षण यत्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० ३२०
- १२७ सम्यक्चारित्र यत्र ( धातु ८ इ० लेख क्र० ३२०
- १२८ षोडशकारण यत्र ( धातु १२ इ० ) लेख क्र० १८३

१२६ अज्ञातवर्णन यंत्र ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ११६

लेखरहित प्रतिमाएँ - चन्द्रप्रभ ( काला पा० ६ इ० दो मूर्तियाँ ),  
चरणपादुका ( धातु ३ इ०, दो पादुका ), अजितनाथ ( काला  
पा० ४ इ० ), चौबीसी ( धातु ५ इ० दो मूर्तियाँ ) पार्श्व-  
नाथ ( धातु-छोटी छोटी ८ मूर्तियाँ ) चरणपादुका ( धातु ३  
इ०, दो पादुका ),

[ ६ ] दिगम्बर जैन सेनगण मन्दिर, लाडपुरा इतवारी, नागपुर

१३० पार्श्वनाथ ( धातु १० इ० ) लेख क्र० ५२

१३१ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० २६७

१३२ शीतलनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८५

१३३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८२

१३४ शान्तिनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० ७७

१३५ बाहुवली ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० ८१ ( दो मूर्तियाँ )

१३६ बाहुवली ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २६८

१३७ अस्पष्ट चिह्न मूर्ति ( धातु ९ इ० ) लेख क्र० २१

१३८ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १६०

१३९ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ३२

१४० पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १

१४१ पार्श्वनाथ ( काला पा० ९ इ० ) लेख क्र० ८८

१४२ सुपार्श्वनाथ ( काला पा० १० इ० ) लेख क्र० ८९

१४३ पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० ६६

१४४ पार्श्वनाथ ( धातु १ इ० ) लेख क्र० ७२

१४५ आदिनाथ ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २७८

१४६ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८

१४७ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ६ इ० ) लेख क्र० १८

- १४८ अरनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८  
 १४९ पद्मप्रभ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियों )  
 १५० मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 १५१ अजितनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 १५२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 १५३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इ० ) लेख क्र० १८  
 ( दो मूर्तियों )

- १५४ अरनाथ ( सफेद पा० ८ इ० ) लेख क्र० १८  
 १५५ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 १५६ आदिनाथ ( ४ इ० धातु ) लेख क्र० १८  
 १५७ चौबीसी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० ९  
 १५८ धर्मनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० ६३  
 १५९ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १०८  
 १६० वामुपूज्य ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १३  
 १६१ आदिनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३२४  
 १६२ चिह्नरहित मूर्ति ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १०६  
 १६३ पार्श्वनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २६१  
 १६४ श्रेयामनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ३१३  
 १६५ सुमतिनाथ ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २०  
 १६६ आदिनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २  
 १६७ पचपरमेष्ठी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ८  
 १६८ रत्नत्रय मूर्ति ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २२  
 १६९ चौबीसी ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० १३५  
 १७० सरस्वती ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १९८  
 १७१ यक्षिणी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १६७  
 १७२ रत्नत्रय यत्र ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १२२

- १७३ रत्नत्रय यंत्र ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १८४  
 १७४ दशलक्षण यंत्र ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १२२  
 १७५ रत्नत्रय यंत्र ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १२३  
 १७६ रत्नत्रय यंत्र ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १३०

लेखरहित प्रतिमाएँ - चौबीसी ( काला पा० १ फुट ), सिद्ध  
 ( धातु ६ इंच, दो मूर्तियाँ ), नन्दीश्वर ( धातु ५ इंच ),  
 पार्श्वनाथ ( काला पा० ३ $\frac{१}{२}$  फु० चौबीसी के मध्यस्थित ),  
 पद्मावती ( सफेद पा० २ फु० ), पद्मावती ( धातु ९ इंच ),  
 पद्मावती ( धातु ६ इंच ), पद्मावती ( धातु १० इंच ),

[ ७ ] पार्श्वप्रभु दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, इतवारी, नागपुर

- १७७ पार्श्वनाथ ( धातु १ $\frac{१}{२}$  फु० ) लेख क्र० १५७  
 १७८ शान्तिनाथ ( धातु १ फु० २ इंच ) लेख क्र० २२१  
 १७९ आदिनाथ ( धातु १ फु० २ इंच ) लेख क्र० २२१  
 १८० नन्दीश्वर ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० ५०२  
 १८१ पंचमेरु ( धातु ११ इंच ) लेख क्र० २२० ( चार मूर्तियाँ )  
 १८२ वासुपूज्य ( धातु ७ इंच ) लेख क्र० २६६  
 १८३ अनन्तनाथ ( धातु ९ इंच ) लेख क्र० २३५  
 १८४ पार्श्वनाथ ( धातु ४ $\frac{१}{२}$  इंच ) लेख क्र० ८७  
 १८५ चौबीसी ( धातु ३ $\frac{१}{२}$  इंच ) लेख क्र० २३१  
 १८६ चौबीसी ( धातु ८ इंच ) लेख क्र० १४४  
 १८७ चौबीसी ( धातु ९ इंच ) लेख क्र० १२०  
 १८८ रत्नत्रय मूर्ति ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० ११  
 १८९ महावीर ( धातु १० इंच ) लेख क्र० २११  
 १९० चौबीसी ( धा ६ इंच ) लेख क्र० ५६  
 १९१ क्षेत्रपाल ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० २०४

- १९२ सरम्बती ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १६६ ( दो मूर्तियाँ )  
 १९३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इ० ) लेख क्र० ३००  
 १९४ यक्षिणी ( धातु ४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इ० ) लेख क्र० १३७  
 १९५ पचमेर ( धातु २ फुट ९ इ० ) लेख क्र० २३२  
 १९६ पार्श्वनाथ ( धातु १<sup>३</sup>/<sub>४</sub> फु० ) लेख क्र० २३० ( दो मूर्तियाँ )  
 १९७ आदिनाथ ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २८२  
 १९८ बाहुवली ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २३६ ( दो मूर्तियाँ )  
 १९९ आदिनाथ ( धातु ७<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इ० ) लेख क्र० २४६  
 २०० पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३४  
 २०१ पार्श्वनाथ ( धातु ३<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इ० ) लेख क्र० ७०  
 २०२ पार्श्वनाथ ( धातु ३<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इ० ) लेख क्र० ६३  
 २०३ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १६१  
 २०४ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १३६  
 २०५ चन्द्रप्रभ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २८  
 २०६ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १७८  
 २०७ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३०१  
 २०८ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० ९९  
 २०९ पचमेर ( धातु २ फु० ३ इ० ) लेख क्र० १५४ ( दो मूर्तियाँ )  
 २१० चौबीसी ( धातु १० इ० ) लेख क्र० १४३  
 २११ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ७८  
 २१२ पार्श्वनाथ ( धातु ४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इ० ) लेख क्र० १४८  
 २१३ चन्द्रप्रभ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ६१  
 २१४ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २१५  
 २१५ नन्दीश्वर ( धातु १ फु० ) लेख क्र० ६२  
 २१६ चौबीसी ( धातु ३<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इ० ) लेख क्र० १३७  
 २१७ नेमिनाथ ( काला पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २३३



- २१८ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १६  
 २१९ पद्मप्रम ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १६  
 २२० चौंसठ ऋद्धि ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ११२  
 २२१ पार्श्वनाथ ( धातु ३ $\frac{१}{२}$  इ० ) लेख क्र० १०४  
 २२२ चौबीसी ( धातु ३ $\frac{१}{२}$  इ० ) लेख क्र० २८३  
 २२३ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ६६  
 २२४ मुनिसुव्रत ( काला पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २२७  
 २२५ पार्श्वनाथ ( धातु ५ $\frac{१}{२}$  इ० ) लेख क्र० ३७  
 २२६ चौबीसी ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २३४  
 २२७ शान्तिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १७७  
 २२८ श्रेयांस ( काला पा० ७ इ० ) लेख क्र० १०५  
 २२९ चिन्ह रहित मूर्ति ( काला पा० १० इ० ) लेख क्र० ६८  
 २३० आदिनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० २३३  
 २३१ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ३ फु० ३ इ० ) लेख क्र० ५  
 २३२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ३ फु० ३ इ० ) लेख क्र० ५  
 २३३ मिखरजी पादुका ( सफेद पा० १ $\frac{१}{२}$  फु० ) लेख क्र० २८२  
 २३४ पद्मावती ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २२९  
 २३५ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ७९  
 २३६ यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १६८  
 २३७ पद्मावती ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २१०  
 २३८ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २३९ आदिनाथ ( सफेद पा० ९ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४० शीतलनाथ ( सफेद पा० ९ इ० ) लेख क्र० १८  
 २४१ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )

- २४३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियों )  
 २४४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियों )  
 २४५ पद्मप्रभ ( सफेद पा० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 २४६ मुनिसुव्रत ( सॉबला पा० ८ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियों )  
 २४७ चन्द्रप्रभ ( सॉबला पा० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 २४८ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियों )  
 २४९ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 २५० सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 २५१ सुमतिनाथ ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० १८  
 २५२ अरनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियों )  
 २५३ नेमिनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियों )  
 २५४ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० ९ इ० ) लेख क्र० १८  
 २५५ अजितनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 २५६ श्रेयासनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 २५७ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियों )  
 २५८ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० २ फु० ४ इ० ) लेख क्र० १८  
 २५९ अजितनाथ ( लाल पा० १० इ० ) लेख क्र० १८  
 २६० चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियों )  
 २६१ नेमिनाथ ( लाल पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 २६२ पार्श्वनाथ ( लाल पा० १० इ० ) लेख क्र० १८  
 २६३ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियों )  
 २६४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ५ इ० ) लेख क्र० १८  
 २६५ सम्यक्चारित्र्यत्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० ६८  
 २६६ दशलक्षण यत्र ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ४९  
 २६७ सम्यक्चारित्र्य यत्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० १२१  
 २६८ सम्यग्दर्शन यत्र ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ३९

- २६६ सम्यक्चारित्र्यं ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ४९  
 २७० जलयंत्र ( धातु ८ इ० ) ले. क्र० २१६  
 २७१ सम्यग्दर्शनयंत्र ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ५४  
 २७२ सम्यग्दर्शनयंत्र ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ११४  
 २७३ दशलक्षणयंत्र ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० ६५  
 २७४ कलिकुण्डयंत्र ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ७३  
 २७५ सिद्धयंत्र ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० ८६  
 २७६ षोडशकारणयंत्र ( धातु १४ इ० ) लेख क्र० २६३  
 २७७ दशलक्षणयंत्र ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २९३  
 लेखरहित मूर्तियाँ — सप्तऋषि ( धातु ५ से ८ "० ),  
 पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० २ इ० ), आदिनाथ ( पीला  
 बालुकापापाण २ फु० २ इ० )

### [ ८ ] दिगम्बर जैन परवार मन्दिर, इतवारी, नागपुर

- २७८ शीतलनाथ ( धातु ४ $\frac{१}{२}$  इ० ) लेख क्र० ५७  
 २७९ नेमिनाथ ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २७२  
 २८० पुष्पदन्त ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २५२  
 २८१ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० ३०२  
 २८२ चन्द्रप्रभ ( पीला पा० ६ इ० ) लेख क्र० २२८  
 २८३ पार्श्वनाथ ( काला पा० ६ इ० ) लेख क्र० २२२  
 २८४ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २५३  
 २८५ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ५ $\frac{१}{२}$  फु० ) लेख क्र० २५६  
 २८६ पार्श्वनाथ ( धातु ६ $\frac{१}{२}$  इ० ) लेख क्र० २४१ ( दो मूर्तियाँ )  
 २८७ आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २४८  
 २८८ वासुपूज्य ( धातु ६ $\frac{१}{२}$  इ० ) लेख क्र० २४१  
 २८९ महावीर ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१

- २९० अजितनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २४१  
 २९१ पार्श्वनाथ ( धातु १३ फु० ) लेख क्र० २४६  
 २९२ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २६८  
 २९३ चौबीसी ( धातु ६३ इ० ) लेख क्र० २४१  
 २९४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ५ फु० ) लेख क्र० २५७  
 २९५ नेमिनाथ ( सफेद पा० २ फु० २ इ० ) लेख क्र० २५७  
 २९६ नेमिनाथ ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २५८  
 २९७ पार्श्वनाथ ( धातु ८३ इ० ) लेख क्र० २५७  
 २९८ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० ६५  
 २९९ अजितनाथ ( काला पा० ४ इ० ) लेख क्र० १६५  
 ३०० चिह्नरहितमूर्ति ( काला पा० ५ इ० ) लेख क्र० २२२  
 ३०१ आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २५७  
 ३०२ चिह्नरहित मूर्ति ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० ६  
 ३०३ चौबीसी ( धातु ४३ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३०४ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २७३  
 ३०५ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १४५  
 ३०६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ४१  
 ३०७ अजितनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० ४०  
 ३०८ अनन्तनाथ ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३०९ सुपार्श्वनाथ ( काला पा० ११ इ० ) लेख क्र० २६  
 ३१० चिह्नरहितमूर्ति ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० ८२  
 ३११ मुनिसुव्रत ( काला पा० ११ इ० ) लेख क्र० ४७  
 ३१२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ९ इ० ) लेख क्र० २५६  
 ३१३ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० २५६  
 ३१४ आदिनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० २५९  
 ३१५ पार्श्वनाथ ( धातु ३३ इ० ) लेख क्र० १७६

- ३१६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १६४  
 ३१७ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० २ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २५७  
 ३१८ पार्श्वनाथ ( काला पा० २ फु० ४ इ० ) लेख क्र० २५७  
 ३१९ नन्दीश्वर ( धातु ५ इ० ) उर्दू लिपिमें लेख०  
 ३२० आदिनाथ ( धातु ६<sup>१</sup> इ० ) लेख क्र० २८४  
 ३२१ शीतलनाथ ( लाल पा० १ फु० ४ इ० ) लेख क्र० २८४  
 ३२२ महावीर ( धातु १ फु० ६ इ० ) लेख क्र० २८४  
 ३२३ पुष्पदंत ( धातु १ फु० ९ इ० ) लेख क्र० २८४  
 ३२४ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १७६  
 ३२५ महावीर ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २८०  
 ३२६ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १२७  
 ३२७ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २६०  
 ३२८ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २३९  
 ३२९ यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २३९  
 ३३० यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १४०  
 ३३१ यक्षिणी ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २४१ ( दो मूर्तियाँ )  
 ३३२ चन्द्रप्रभ ( धातु १ फु० २ इ० ) लेख क्र० २१७  
 ३३३ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३३४ रत्नत्रयमूर्ति ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३३५ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १५५  
 ३३६ पार्श्वनाथ ( धातु २<sup>१</sup> इ० ) लेख क्र० ८४  
 ३३७ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३३८ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १४५  
 ३३९ आदिनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २६१  
 ३४० पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० २५७  
 ३४१ चन्द्रप्रभ ( काला पा० ८ इ० ) लेख क्र० २५७

- ३४२ पार्श्वनाथ ( लाल पा० १ फु० ) तोग्र क्र० २२३ ( तीन मूर्तियाँ )  
 ३४३ नैमिनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) तोग्र क्र० १७  
 ३४४ आदिनाथ ( काला पा० ७ इ० ) तोग्र क्र० २६२  
 ३४५ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १३ फु० ) तोग्र क्र० २५७  
 ३४६ अरनाथ ( काला पा० ३ इ० ) तोग्र क्र० १६३  
 ३४७ चन्द्रप्रभ ( धातु ५ इ० ) तोग्र क्र० २४१  
 ३४८ आदिनाथ ( धातु ३ इ० ) तोग्र क्र० २३९  
 ३४९ शीतलनाथ ( धातु ६ इ० ) तोग्र क्र० २४१  
 ३५० आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) तोग्र क्र० २४१  
 ३५१ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) तोग्र क्र० २४१  
 ३५२ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) तोग्र क्र० २४१  
 ३५३ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) तोग्र क्र० ३०३  
 ३५४ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) तोग्र क्र० २४०  
 ३५५ चन्द्रप्रभ ( धातु ७ इ० ) तोग्र क्र० २६३  
 ३५६ अजितनाथ ( धातु ७ इ० ) तोग्र क्र० २६३  
 ३५७ आदिनाथ ( धातु ७ इ० ) तोग्र क्र० २४१  
 ३५८ आदिनाथ ( धातु ७ इ० ) तोग्र क्र० ३०४  
 ३५९ नन्दीश्वर ( धातु ३ इ० ) तोग्र क्र० १११  
 ३६० सुपार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) तोग्र क्र० २४१  
 ३६१ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) तोग्र क्र० १२१  
 ३६२ महारौर ( धातु ५ इ० ) तोग्र क्र० २४१  
 ३६३ आदिनाथ ( धातु ८ इ० ) तोग्र क्र० २६७  
 ३६४ आदिनाथ ( धातु ८ इ० ) तोग्र क्र० २४१  
 ३६५ महावीर ( धातु ७ इ० ) तोग्र क्र० २४१  
 ३६६ आदिनाथ ( धातु १ फु० ) तोग्र क्र० २५०  
 ३६७ पुण्ड्रिक ( सफेद पा० १ फु० ) तोग्र क्र० १८

३६८ अरनाथ ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० १८

३६९ चन्द्रनाथ ( सफेद पा० ८ इ० ) लेख क्र० १८

लेखरहित मूर्तियाँ — वासुपूज्य ( काला पा० ५ इ० ),  
पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इ० ), पार्श्वनाथ ( काला  
पा० १० इ० ), शान्तिनाथ ( धातु ४ इ० ), १५ मूर्तियाँ  
लेख तथा चिह्नके बिना छोटी-छोटी हैं ।

[९] दिगम्बर जैन मन्दिर, सदर बाजार, नागपुर

३७० पार्श्वनाथ ( काला पा० १३ फु० ) लेख क्र० १६४

३७१ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० २६४

३७२ पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १९४

३७३ शान्तिनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २६५

३७४ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २६५

३७५ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ११५

३७६ चौबीसी ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २७६

३७७ दशलक्षण यंत्र ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १०७

लेखरहित — पद्मप्रभ ( सफेद पा० १ फु० )

[१०] गृहचैत्यालय—श्री० सुन्दरसा हिरासा जोहरापुरकर,  
इतवारी, नागपुर

३७८ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १३३

३७९ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३०५

३८० रत्नत्रय ( धातु ३३ इ० ) लेख क्र० १५

३८१ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०६

३८२ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ७४

३८३ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २४

३८३ पादर्वनाथ ( धातु २ इ० ) लोख क्र० १२९

लोखरहित - छोटी-छोटी धातुकी १० प्रतिमार्ण

[११] गृहचैत्यालय-श्री० अवादास गुलाबसा गहाणकरी, इतवारी

३८५ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लोख क्र० २३१

३८६ आदिनाथ ( धातु ३ इ० ) लोख क्र० २८८

३८७ पादर्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लोख क्र० २८८

३८८ पादर्वनाथ ( धातु २ इ० ) लोख क्र० १००

[१२] गृहचैत्यालय-श्री० भाणिकसा चिन्तामणसा दर्यापुरकर,  
इतवारी

३८९ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लोख क्र० ८०

३९० पादर्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लोख क्र० ३०७

३९१ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लोख क्र० ४५

३९२ नयग्रह यत्र ( धातु ४ इ० ) लोख क्र० २०१

[१३] गृहचैत्यालय-श्री० रतनमा गणपतसा देवलमी, इतवारी

३९३ पादर्वनाथ ( मफेद पा० ४ इ० ) लोख क्र० २८८

३९४ आदिनाथ ( काला पा० ४ इ० ) लोख क्र० २८८

३९५ चन्द्रप्रभ ( काला पा० ४ इ० ) लोख क्र० २९४

३९६ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लोख क्र० २१२

३९७ पादर्वनाथ ( धातु २ इ० ) लोख क्र० २९४

३९८ पादर्वनाथ ( धातु २ इ० ) लोख क्र० ३०८

लोखरहित पादर्वनाथ ( धातु २३ इ० ), आदिनाथ ( धातु  
२३ इ० )



[१४] गृहचैत्यालय-श्री० कन्ह्यालाल सुन्दरसा गरिवे, इतवारी

३६९. पाश्वर्नाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३४

यक्षिणी ( धातु ६ इ० )-लेखरहित

[१५] गृहचैत्यालय-श्री० सवाईसंगई मोतीलाल गुलावसा, इतवारी

४००. पाश्वर्नाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०९.

४०१. यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १४५

लेखरहित-पाश्वर्नाथ (धातु ४ इ०), चन्द्रप्रभ (स्फटिक, ३ इ०)

[१६] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा पदासा खोरणे, इतवारी

४०२. आदिनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २७५

४०३. पाश्वर्नाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ३०८

४०४. पाश्वर्नाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३१०

४०५. यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १५१

[१७] गृहचैत्यालय-श्री० दादा गुलावसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४०६. चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ९४

[१८] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा खेमासा जोहरापुरकर, इतवारी

४०७. पाश्वर्नाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३११

[१९] गृहचैत्यालय-श्री जयकुमार प्रभुसा किल्लेदार, इतवारी

४०८. पाश्वर्नाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ४२

[२०] गृहचैत्यालय-श्री तिलोकचंद येमूसा खेडकर, इतवारी

४०९. चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ९४

४१०. पाश्वर्नाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २८६

४११. आदिनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १३४

४१२ चरणपादुका ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १४२  
लेखरहित - शान्तिनाथ ( धातु २ इ० ), पार्श्वनाथ  
( धातु २ इ० )

[२१] गृहचैत्यालय-श्री विष्णुकुमार हिरासा जोगी, इतवारी

४१३ यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १४  
४१४ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ५२  
लेखरहित - (चौबीसी धातु ३ इ०), महावीर (धातु २ इ०)

[२२] गृहचैत्यालय-श्री नागोराव गुजावा श्रावणे, इतवारी

४१५ सिद्ध ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २८८  
४१६ आदिनाथ ( चाँदी ३ इ० ) लेख क्र० २८८ ( दो मूर्तियाँ )  
४१७ आदिनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २८८ ( दो मूर्तियाँ )  
४१८ पार्श्वनाथ ( सोना २ इ० ) लेख क्र० २९०  
४१९ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २३०  
४२० चरणपादुका ( चाँदी १ इ० ) लेख क्र० ३१२  
लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) ( दो मूर्तियाँ ),  
बाहुगली ( धातु ३ इ० ), सरस्वती ( धातु २ इ० )

[२३] गृहचैत्यालय-श्री गुलाबसा व्यकुसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४२१ चन्द्रप्रभ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ४४  
४२२ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २९०  
४२३ यक्षिणी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १७५  
लेखरहित-पार्श्वनाथ ( छाल पा० ३ इ० )

[२४] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा जिनदास चवडे, इतवारी

४२४ सिद्ध ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २८८  
४२५ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १८३

[२५] गृहचैत्यालय-श्री०नेमासा पासुसा जोहरापुरकर, इतवारी

४२६ पंचपरमेष्ठी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ३०

४२७ पार्श्वनाथ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० २५१

४२८ कलिकुण्ड यन्त्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २०२

४२९ षोडशकारण यन्त्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २०३

[२६] गृहचैत्यालय-श्री०माणिकचंद वालाजो आगरकर, इतवारी

४३० पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ४८

४३१ पार्श्वनाथ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० १६२

४३२ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १३१

[२७] गृहचैत्यालय-श्री०सुंदरसा गंगासा खेडकर, इतवारी

४३३ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १६

४३४ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ३८

लेखरहित-पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) चौबीसी ( धातु ५ इ० )

[२८] गृहचैत्यालय-श्री०लक्ष्मणराव सेवाराम पिंजरकार, इतवारी

४३५ आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १४६

४३६ पार्श्वनाथ ( धातु ३३ इ० ) लेख क्र० ४३

लेखरहित-यक्षिणी ( धातु ६ इ० )

[२९] गृहचैत्यालय-श्री०पुरणलाल वापुसा खेडकर, इतवारी

४३७ चौबीसी ( धातु ३३ इ० ) लेख क्र० २८१

४३८ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ६०

[३०] गृहचैत्यालय-श्री०महादेवराव तानवा पिंजरकर, इतवारी

४३९ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ५८

४४० पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १८०

- ४४१ पार्श्वनाथ ( धातु २ ३/४ इ० ) लेख क्र० ६४  
 ४४२ पार्श्वनाथ ( धातु २ ३/४ इ० ) लेख क्र० ३१४  
 ४४३ यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १५६

[३१] गृहचैत्यालय-श्री०वर्धासा सकुसा महाजन, इतवारो

- ४४४ चौबीसी ( धातु ३ ३/४ इ० ) लेख क्र० १५६  
 ४४५ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ६६  
 ४४६ षोडशकारण यत्र ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १२२  
 ४४७ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ६०  
 ४४८ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ६१  
 ४४९ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १२४  
 ४५० यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ४६  
 लेखरहित-पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० )

[३२] गृहचैत्यालय-श्री०नत्थुसा पैकाजी चवरे, इतवारो

- ४५१ सुपार्श्वनाथ ( लफेद पा० ५ इ० ) लेख क्र० २६६  
 ४५२ चन्द्रप्रभ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ११६  
 ४५३ पार्श्वनाथ ( धातु २ ३/४ इ० ) लेख क्र० २०  
 ४५४ पार्श्वनाथ ( धातु २ ३/४ इ० ) लेख क्र० २१३ ( दो मूर्तियाँ )  
 ४५५ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ११५  
 ४५६ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ३०८ ( दो मूर्तियाँ )  
 ४५७ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १०६  
 लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० )

[३३] गृहचैत्यालय-श्री रुखवसा पिजरकर, इतवारो

- ४५८ पार्श्वनाथ ( धातु २ ३/४ इ० ) लेख क्र० २१३

[३४] गृहचैत्यालय-श्री लक्ष्मणराव देवमनसा वोपडे, इतवारो

- ४५९ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १६६

- ४६० पार्श्वनाथ ( धातु २ ई० ) लेख क्र० ३५  
 ४६१ पार्श्वनाथ ( धातु २ ई० ) लेख क्र० ३६  
 ४६२ चौबीसी ( धातु ३ ई० ) लेख क्र० ११७  
 ४६३ चिह्नरहित मूर्ति ( धातु २ ई० ) लेख क्र० १४६  
 ४६४ पार्श्वनाथ ( काला पा० ३ ई० ) लेख क्र० ३१६
- [३५] गृहचैत्यालय-श्री वापुजी विश्रामजी गिल्लरकर, मस्कासाथ  
 ४६५ आदिनाथ ( धातु ३ ई० ) लेख क्र० १७०  
 ४६६ आदिनाथ ( धातु २ ई० ) लेख क्र० ३१७  
 ४६७ पार्श्वनाथ ( धातु ४ ई० ) लेख क्र० १६७  
 ४६८ यक्षिणी ( धातु ७ ई० ) लेख क्र० १८६  
 लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु १ ई० )
- [३६] गृहचैत्यालय-श्री गोविंदराव शिवराम नाकाडे, इतवारी  
 ४६९ चौबीसी ( धातु ५ ई० ) लेख क्र० १३६  
 ४७० चिह्नरहित मूर्ति ( धातु ३ ई० ) लेख क्र० १६३  
 ४७१ पार्श्वनाथ ( धातु ६ ई० ) लेख क्र० २०३  
 ४७२ पार्श्वनाथ ( धातु २ ई० ) लेख क्र० ३१८  
 ४७३ यक्षिणी ( धातु ३ ई० ) लेख क्र० १७१  
 ४७४ यक्षिणी ( धातु ४ ई० ) लेख क्र० ११८  
 ४७५ दशलक्षणयंत्र ( धातु ४ ई० ) लेख क्र० ५०
- [३७] गृहचैत्यालय-श्रीमती तानावाई वापुजी गांधी, इतवारी  
 ४७६ पार्श्वनाथ ( धातु ४ ई० ) लेख क्र० ८५  
 ४७७ पार्श्वनाथ ( धातु ३ ई० ) लेख क्र० १७२  
 ४७८ पार्श्वनाथ ( धातु २ ई० ) लेख क्र० १२४  
 ४७९ चन्द्रप्रभ ( धातु १ ई० ) लेख क्र० १७३  
 लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु ३ ई० ) यक्षिणी ( धातु ६ ई० )

[३८] गृहचैत्यालय-श्री राजावापू लच्छावापू ठवली, इतवारी

४८० चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १७४

४८१ यक्षिणी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १९६,

४८२ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २५

[३९] गृहचैत्यालय-श्री जयकृष्णपत सावलकर, इतवारी

४८३ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ५३

४८४ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ३१

[४०] गृहचैत्यालय-श्री कृष्णाजी भागवतकर, इतवारी

४८५ सिद्ध ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २८८

४८६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०८

लेखरहित - यक्षिणी ( धातु ३ इ० )

[४१] गृहचैत्यालय-श्री राजाराम डुब्बीसाव काटोलकर, इतवारी

४८७ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २४३

४८८ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३१९

लेखरहित - चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ४ इ० )

[४२] गृहचैत्यालय-श्री हिरासा नत्थुसा मुठमारे, इतवारी

४८९ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ५६

४९० आदिनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३३

४९१ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ११३

४९२ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १८७

४९३ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०७

लेखरहित - यक्षिणी ( धातु ३ इ० )

[४३] गृहचैत्यालय-श्री रखनसा विनायकसा, इतवारी

४९४ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ३२२

- [४४] गृहचैत्यालय-श्री पांडुरंग वापूजी उदापूरकर, इतवारी  
 ४९५ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३२३
- [४५] गृहचैत्यालय-श्री गणपतराव पलसापुरे; इतवारी  
 ४९६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १८७
- [४६] गृहचैत्यालय-श्री सुरेन्द्र गंगासा जोहरापुरकर, इतवारी  
 ४९७ चन्द्रप्रस ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ११०  
 लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० )

# नामसूची

उल्लिखित अंक पृष्ठों के हैं ।

अक्बर ३२८	अजितकीर्ति ३६०, ४०७, ४१३-
अकलक ५८ ६०, १७५, २००,	४१५
२१४, २१६, ३३५, ३३८,	अजितचन्द्र २२१, २२३
३३९, ३७७, ३७९	अजितसेन ९२, ९३, १७५, २१४,
अकालवर्ष ३१, ४४, ५३	२१६, २२७, ३६१
अकोटा ३८५	अज्ज ३०४५
अक्कम्म ३१४	अज्जणदि २१, २२, ४२
अक्कलकोट ११३	अज्जरय्य ५६
अक्कसालकामोज १६६	अणहिल्लपुर २२१-२
अक्कादेवी ८४, ८५	अण्णन् २५५
अक्कूर ३७४	अण्णमय्य १६४
अगरवाल ३९५, ४०२	अण्णिगेरे २५ ८५, १०४, १०७,
अगस्तिधन्व ३४७	१०९, १११, २५९
अगिल ४	अत्तिमन्वे १४९
अणोकेमोगे ४०	अत्तियन्वे ७३
अगलदेव ९१, ९३, १०२	अयनी २३२
अगलसेट्टि ३७४	अदरगुवि २६६
अणोत्ति २७	अनेत्तवन् २२
अच्युतदेव ३१७	अनमकोड १४१, १४३, १४५
अजण ३५५	अनुपमकवि ६१-२
अजयमेरु १९१	अनतकसेट्टिति २९७



अनंतकीर्ति २५०, २९६

अनंतवीर्य १७५, १७७, ३५५-६,

३६०, ३६५, ३७९

अपराजित ३५-६

अप्पण २३८-९, २४४

अप्पाण्डार २७९, ३५७, ३७६

अवडनगर ३९५, ४१०

अवेयमाचर २९२

अव्वक्कदेवी ३२७

अभयचंद्र ९६, ३५९, ३६२

अभयनंदि १०५, ११०-१, २५८,

२७१

अभिनंदन २२

अमरकीर्ति २७८, २८८, ३११

अमरमुदलगुरु ४२

अमरसिंह ३४०

अमरापुरम् २६०, ३८०

अमिदसागर ३९१

अमृतपाल १६०

अमृतव्हे ५५-६

अमूर्तय २६०

अमोघवर्ष ३३-४, ३६-७

अम्ब ३०४-५

अम्बले ३६९

अम्बावती ३४३

अम्बाराय ३०३-५

अम्मरस ३८

अम्मराज ६४, ६५, ६८, ६९

अम्मिनभावि २२९

अटववलि १३४

अट्यप्प २६

अट्यवोले १६४

अटवतोक्कलु २६३

अटवसामि ७१

अरताल १४८

अरत्तुलान् देवन् ८३

अरमंडमेगलु ४०

अरयन् उडैयान् ९९

अरस्सप्पोडेय ३४७, ३५६

अरसरवसदि ११२

अरसय्य १२०-१

अरसीवीडि ८३, १२१, १७३,

१८३

अरिकुठार ३१४

अरिकेसरी १३९

अरिन्दमंगलम् ५६

अरिमंडल २२

अरिवन् कोयिल् ३९

अरिविगोज ६२

अरिष्टनेमि १६, ५२

अरुगर् देवर् ९९

अरुमोलिदेव १६०

अरुमोलिदेवपुरम् १६७, १७६

अरुवदै आण्डाल् २८९

अश्वाहि १

अरुहणदि ११२, २५८

अरुगला वय १२८, २१४, २१६,  
२३३, २६७, २६९

अरेयन्वे ८८, ८९

अरैयगाविदि २२

अर्णोराज १८९

अर्हणदि ७३, १३८, २५२ ३, २७१

अलगरमलै ४२

अलनावर ११४

अलवर ३८७-८

अलियमरय ३८

अवनिपशोत्तर ३६

अवनिमहेन्द्र १८, २०

अविनीत १२, १७, २०

अष्टोपवामी २२, ७७, ९३, २५८,  
२७१

अमवक्वरसि १२२

अमुण्डि ४४

अहिच्छत्र १८९

अंक १५३

अकनायपुर ७०-१, १३४

अकुलगे १३८, १४०

अकेनेडु ८९

आकलपे २५९

आकाशिका ९६

आकियमगिसेट्टि ३०८

आगुप्तायिक १५-१६

आचणीड १८६

आचण १८६

आचन चामुण्डर ६९

आचलदेवी १७१

आच्चन् २२

आटकोण्डान् १६७

आणदेव २२८

आण्डारमडम् ५६

आदगे १३८

आदवनी ३१२, ३२६

आदित्यवर्मा ३७५

आदिनाय १२०-१

आदिराज ३०३

आदिमेट्टि २९७, ३१६

आदिसेन ३५२

आनदमगलम् २५१

आनेसेज्जवसदि ११३

आपिनहल्लि ३४५

आधू ३८५

आमरण ३८६

आम्बट १९१, १९६

आयतवर्मा ५६, ७७

आय्चगावुण्ड ७६	इन्दरपिट्टम्म ४०
आय्चप्पय्य ११२	इन्दोर १९७, २६१, २८४
आय्चिमय्य ९८	इन्द्रकीर्ति ९४, १५८
आय्वोज ८८-९	इन्द्रणंद १५-१६
आरम्बनंदि १५८	इन्द्रनंदि ७३, १२६, २३४
आरान्दमंगलम् ७५	इन्द्रराज ३१, ३४, ३६, ५५, ६१-६३
आरियदेव २२७	इन्द्रभूपाल ३३५
आरुलगपेरुमान् ४१	इन्द्रभूषण ४०६, ४०९-११
आर्यणंदि १५, १६, ४३	इम्मडि १७६
आर्यपंडित ११२	इम्मडि अरसप्पोदेय ३४७
आर्यसंघ ५७	इम्मडिदेवराय ३१५-६
आलपदेवी ३८०	इम्मडिवुक्क २८८
आलप्पिरन्दान् मोगन् १६६, २७४	इम्मडिभैरवरस ३१५
आलाक १३२	इरुग २८८
आलुप १५४	इरुगोण २६०
आगिका १९०	इरुवुन्दूर ३०४-५
आशिरियन् ३९	इरुगोल ३८०
आहड १९६	इलपेरुमानडिगल् ७५
आहवमल्ल ७३, ७८, ८१, ८२	इलंगौतमन् ३९
आंतरी ३८७	इंगणेश्वर-इंगलेश्वर २१७, २२४, २३२, २६६-७, २७२, २७४, ३७४, ३७६, ३८०, ३८३-४
इक्केरि ३३९	इंगरस ३०८
इट्टगे १०४, १०९	इंगोली ३९५, ४१९
इट्टियारन् १६७	ईचवाडि ५८
इट्टयालम् ३७६	
इद्रम्पट्टु १२	
इन्दप १२०-१	

ईश्वर १२०-१	उरिगपनिडि २०
उषकाल ७४	ऊन १२७
उविकसेट्टि २७३	ऊरुत्तकाडु १७८
उगरगोल १४९	ऋषिदास ६
उगुरु २६३	ऋषिभूषण १४९
उग्रवाडि १४४-५	एकब्दे २७३
उच्छ्रगि २०४, २६६	एकसधि १७५
उज्जत ३२५	एकसवि १८५
उज्जेनीपल्लीवाल ३९५, ४०८-९, ४११	एकसम्बुगे १८६
उज्जल १९२, १९७	एक्कोटिजिनालय २१९-२०
उडिपि ३०५	एचलदेवी २०२-३, २१२
उडैयार १२७	एचिकब्दे १२०-१
उदय २३८, २४४	एचिसेट्टि २०५
उदयगिरेन्द्र ४०३	एटा २६१
उदयचन्द्र १०७, ११०, २५८, २७१	एडेनाडु २८
उदयपुर ७५, ३८६-८८	एणक्कुनल्लनायक् २५५
उदयादित्य १२७, १५४, २०२, २११, २१७, २२४	एरक ७६
उद्दरि २९३	एरणदि १६७
उद्योतकेसरी ५६-७	एरेक्प ११७, १२०
उमरावती ३९५, ४१६	एरेग ११६-७, १२०, १२४
उम्पटाय्चण बसदि ३७२	एरेय ४३-४४
उम्बरवाणि २४६, २४९	एरेयप ५८, ६०
उम्मत्तूर ७०, ३५८	एरेयमय्य ११६, १२०
	एरेयग ५८, ६०, १२२-५, १५४, १७६, २०२, २११, २७०
	एलवाचार्य २८, ३०

एलाचार्य ४४, ५४, २८८

ऐन्द्रवपेरुम्पल्लि ३६६

ऐवर अंघण ३५३

ऐवरमलै ३७

ऐहोले १४५

ओखरिक ५, ६

ओजण ३५५

ओडेयमसेट्टि ३७९

ओड्डिपाणि ४०

ओवेयमसेट्टि ३६५

ओरंकत्वायगर् १९, २०

ओंगेर ३८१

कक्करगोंड १०५, ११०

कच्चिनायकर् २७४

कच्चिनायनार् १६६

कच्चियरायर् २७४

कच्छवेगंडे २३०-१

कछवाह ३४३

कडकोल २६१

कडलेहल्लि २१५-६

कडितले २६८

कणवियसेट्टि १०८

कणितमाणिकसेट्टि ८३

कण्डन् पोर्पट्टन् २२

कण्डन् माधवन् ३९१

कण्डूर, कण्डूर गण ११६, १२०,

१५०, १५२, २७५, ३८४

कण्गम्मन् १८-२०

काण्णसेट्टि २१४

कण्णूर १३४

कत्तम १८५

कदम्ब १३, १५, २६, ३८, ७१,

८२, ११४, १२३, १२४-५,

१३६, १४८, १५७, १७१-२,

२०८-९, २५०-१, ३१३,

३७८

कदलालयवसदि १४३, १४५

कनककीर्ति ३६३

कनकगिरि ३४६

कनकचन्द्र १४८, २५८, २७१

कनकचिन्नगिरि २७३

कनकनन्दि २२, ७७, ९५, १०२

कनकरायनगुडु ३६१

कनकवोर २२, ५६, १६७

कनकगञ्जि ९५

कनकसेन ३९, ९२-३, १७५

कन्नडिगे १८२

कन्नडिवसदि ३०९

कन्नप १२०-१, १६४

कन्नर ( कन्वर, कन्हर ) देव ४५,

१५१, २५६-७, २६३

कन्निसेट्टि ३७३

कन्युपतिपाडु ३५४  
 कमलदेव १२८, २९१  
 कमलभद्र ७०, २९४-५  
 कमलश्री १९३, १९७  
 कमलसेन २५०, २५४  
 कमलापुरम् ७३, ३९१  
 कम्बदहल्लि १५६, १६९  
 कम्भराज २८-३०  
 कम्भनहल्लि ३५९  
 कम्भरचोडु ३८०  
 कयिलायप्पुलवर् ३३९  
 करगुदरि १७२  
 करडकल १७९  
 करदै ९९, १४०, १७८, २८९,  
 ३१३, ३३६, ३३९, ३४७  
 करसिदेव २५६  
 करिकालचोलजिनमदिर ३५४  
 करिमानो २६  
 करिविडि ७६, ८५  
 कर्कराज ३१, ३४-६  
 कणदिवी १६६  
 कर्म ३  
 कलकत्ता ४०, २३४, ३४०  
 कलवरि २५४, २५६, २६३, ३७९  
 कलचुम्बुरु ६८  
 कलचुरि १५९, १७८

कलचुय १७९, १८२, १८६-७,  
 १९८, २०१  
 कलशनगर २२५  
 कलसापुर २०१  
 कलिगम्बे ६९  
 कलिगावुण्ड २२६  
 कलिदेव ८१, १०९-१०, १२०-१,  
 १४९, १८६  
 कलिमानम् ७८  
 कलियत्तिगड ६४  
 कलियम्म २५, ३८९-९०  
 कलिविष्णुवर्धन ६४  
 कलिसेट्टि १०८, १७२  
 कलिग २  
 कल्वलेश्वर ८६  
 कल्लेलेदेव ४३-४, ५४  
 कल्याण ८५, ८६, २१४  
 कल्याणकीर्ति ७४, ३८२  
 कल्याणवसत २४  
 कल्लप ३५५  
 कल्लम्बे ५४  
 कल्लरस ३०४-५  
 कल्लहल्लि ३६०  
 कल्लारुप्पल्लि २७  
 कल्वविका ११७  
 कवडेगोल्ल १६३-५

कवडेमय्य २०४-५	कामनुमाल २९७
कसपगावुण्ड २४९	कामराज ३५५-६
कंचरस ९१-३	कामैय ३१४
कंचलदेवी ३७८	काम्बोदि ३४९
कंचिक्ववे ७६	कायस्य १९५
कंति २३४	कायान्पट्टि ३६६
कंदगल २५१	कारकल ३१९-२०, ३२९, ३७१
काकतीवेत १४२, १४५	कारंजा ३९५, ४०५-६, ४०९,
काकन (काकन्दो) ३४८	४१२-३, ४१६-७, ४२५
काकुत्स्थ १३	कारिजे ३२०
कागिनेल्लि ७७, ३७५	कारेयगण १५३
काटरस १०६, ११०	कार्तवीर्य १२८, १८५-६, २३५-९
काटिमय्य ११२	२४२-६, २४८-९
काडूरगण २६६	कालडिय ७८, ८१
काणूर (क्राणूर) गण ५८-६०,	कालण १८६
१४८, १५५-८, १७३, २२४,	कालहल्लि ३१९
२३३-४, २५०-१, २६८,	कालिदास १३४, १७८
२९६, ३२१, ३२३, ३२६,	कालिमय्य ९९
३६४, ३७०, ३७५, ३७८-८०	कालियूर ९९
काप्पायन ९, १७	कालिसेट्टि ३७६
कादलूर ५४	कावण्ण २६७
कान्तराजपुर २१७	कावदेवरस २०८-९
काप ३२१-३, ३२६	कावनहल्लि १३३-४
कामठी ३९५, ४१२	कावय्य २५७
कामण्ण २८२, २८६	कावला गोत्र ४०५
कामदेव ७७	काशिक ७-९

काशिवल ७३  
 काष्ठामघ ३९६, ४००, ८०२-६,  
 ४०९-११, ४१४-६, ४२७  
 कासिमध्य १९८  
 काचन ९८  
 काचेलादेवी २१७  
 किनिगभूपाल ३३५  
 किरसपगाडि १५३  
 किमुवल्लि २३०-१  
 किमुबोलल २५  
 कीरप्पावक्कम् ४२  
 कीयरदुर ३१७  
 कीर्ति १५१-२  
 कीर्तिवमन् २५  
 कीर्तिसागर ३६१  
 कीलवकुडि २२, ७२, २२७, ३६५  
 कुक्कुटासन १६७  
 कुच्चगि २०७, ३२८  
 कुडलूर २६, ५४  
 कुडुगिनवयल्लु ३२०  
 कुण्टनहोसल्लि १७१  
 कुण्डकु-दान्वय ११४, १५५-६  
 २३३-४, ३६०, ३६४  
 कुण्डघाट ३०७, ३६५  
 कुण्डमध्य ४०  
 कुण्णत्तुर ३०७

कुदेपथी २  
 कुनलनाडु ३०४-५  
 कुन्दकु डावय, कुन्दकु दाचायविय  
 १२६, २७८, ३१७, ३९७,  
 ४०१४, ४०७, ४०९१२,  
 ४१५ २७  
 कुन्दकुन्द २२१-२, २२५  
 कुन्दननालु २८८  
 कुन्दरगो ८५  
 कुदाति १३९-४०  
 कुपण ३८  
 कुप्पटूर २२४  
 कुञ्ज विण्णुवर्धन ६३, ६८  
 कुमठ २०८, २७८, ३७८  
 कुमरन् देवन् ४१  
 कुमरम्य १४७  
 कुमारकीर्ति १८६  
 कुमारनदि २८-३०  
 कुमारपवत ५७  
 कुमारवीडु १४६, २२३  
 कुमारसेन १७५, २९४-५  
 कुमिलिगण ४२  
 कुमुदवाद्र २५८-९, २७१-२, ४०७  
 कुमुदिगण ८२, ३७७  
 कुम्बनूर १४५  
 कुरजन १३७



कुरट्टिगल १६	कृष्णसेट्टि ३८१
कुरण्डि २२, ६३	केतगावुड १०७, २२७
कुरुगोडु ३१९	केतय्य ३६३
कुर्वडिमिदि ३१८	केतिसेट्टि १०८, १८२, २०५
कुलगाण १७	केतोज ८८-९
कुलचन्द्र ५७-८, १५७-८, २५७	केम्पम्मणि ३५१
कुलत्तूर ३९१	केरवसे २९९
कुलशेखर १५४	केरसन्ते १७९
कुलोत्तुग १२१, १२७, १४०, १४५-६, १६६, २५१, २७३ ३९१-२	केलगरे २७०
कुलोत्तुंगशोलकाडवरायन् १६६	केलडिवीरभद्र ३४१
कुसुम ४	केलडिवेकटप्प ३३९
कुसुमजिनालय ३७६	केलेयव्वरसि ९५, २०२
कुंकुमदेवी २५	केल्लिपुसूर १८-२०
कुंगियवर्मिसेट्टि ३६८	केशणदि २६६
कूण्डि ७९, ८१, १२८, १३७, १५३, १६४, २३५, २४१, २४३, २४६, २४९	केजव १९५, १९७, २६५ ३०२- ५, ३६९
कूष्माण्डीविषय १५	केशवदेवी २८३
कृष्णदेव २७६	केशवय्य १४६
कृष्णदेवराय ३१३-४	केशवरस ७६
कृष्णप्पराज ३४४-५	केशवसूरि ५१-५२
कृष्णराज ३१, ४४, ५३, १०९, १५२, २३६, ३५१	केशवादित्य ८०, १५१
कृष्णवर्मा १७	केगिराज ९१
	केसरिसेट्टि २०७
	केसिसेट्टि २२६
	कैतडुप्पूर १४१
	कोकलिपुर ९४

कोक्किवाड ५४	कोत्र ३१७, ३८२
कोक्कल १३६	कोप्पण (कोप्पल) ३८, ४५, ७४,
कोक्किलि ६४	१३०, २५०, ३२५-६, ३७१
कोगलि २६५, ३६५, ३७९	कामरगोप ३८३
कोळल गा.न ४२१-३	कोम्मणाय १४९
कोट्टगेरे १७४	कोम्मसेट्टि ३८०
कोट्टशीवम् ३८०	कोरग २९९
कोट्टिय गण ६	कोरमग १२, १८, १५
काडिहल्लि ७१	कोरवल्लि २४६, २४९
कोडुगूर १८, १९	कोरिक्कुद ११
कोणेरिम्मकोण्डाम् २७, २५५	कोलारस ३४०
कोण्डकुन्दावय ५३, ९४, १२५,	कोलूर २८९-९०
१३०, १३३-४, १५७-८,	कोल्लापुर (कोल्लापुर) १३५,
१६६, १७०, २०४, २०७,	१६२, १६४-६, ३४४-५
२४६, २४९, २५२-३, २५९,	कोल्वुगे ८५
२६६, २७२, २८८, २९५-६	कोवल ६२
३६३	कोविल्गुलम् १४५
कोण्डकुन्देय वात्रय २८, ३०	कोशिक २६
कोण्टकुन्देय तीर्थ ११४	कोह नगोरी ३१५
कोण्डम्मसेट्टि ३६१	कोठल्लि ८५
कोण्डैमल ३३७	कोंकण ८२, १३७, ३२७
कोनकोण्डल २०, ७२, ११४,	कोंगज १३६
२२६, २९३	कोंगणिवर्मा ९, १७, २०, ५४
कोनाट्टन ८३	कोंगणिवृद्धराज १७, २०
कोतकुलि १४८	कोगण्यधिराज ११, १२
कोत्तिमहादेविवसदि ३७२	कोगरपुलियगुलम् २१

कोंगरैयर् ६३  
 कोंगल देग ५३  
 कोगु १५५, २०३, २६७, २८०  
 कोठूर २४  
 कोरूरगच्छ ७३  
 क्षेमपुर ३०३, ३१५  
 क्षेमकांति २२१, २२३  
 क्षोणीपति १११  
 खटवड गोत्र ४०२  
 खण्डगिरि २-५, ५६-७  
 खण्डिलवाल १६१, ३००, ३१५  
 खण्डेलवाल ३१७, ३९६, ४०८,  
 ४२१, ४२५  
 खप्परट्य १६४  
 खर २  
 खंडारिया गोत्र ४०५, ४०८, ४१०  
 खंभात ३८७  
 खारवेल २  
 खाग गोत्र ४०३  
 खोट्टिग ५४  
 स्वराजा अजीजवेग ३२८  
 गजपंथ ४२६  
 गजा ४०१  
 गणपण ३२३, ३२५, ३३७  
 गणपवरम् १६६  
 गणिगेमहाव्रति २४

गण्डरादित्य ६२, १३७-९, १६२,  
 १६४-६, १८५-६, २३९  
 गण्डविमुक्त १०५, ११०-१२, १४९  
 १७०, २५८, २७१  
 गण्डिसेट्टि १०८  
 गयाकर्ण १५९  
 गरग ३७७  
 गंग १२, २०, २६, ४०, ४४,  
 ५३-४, ५८-६०, ८९, ९४,  
 १०२, १०४, १२९, १५१-२  
 गंगपट्य १४६-७, १६७  
 गंगपेमीडि १०४, १०७, १०९, १३५  
 गंगरवमिसेट्टि १४८  
 गंगरसावन्त २५९  
 गंगराज १५६  
 गंगराडा ३९५, ३९७  
 गंगरुल सुन्दरपेरुम्बल्लि १२२  
 गंगवुर २३२  
 गंगादास ३४१  
 गंगाधि २८५  
 गंगेवे २२७  
 गंजेनाड १८-२०  
 गावरवाड १०२, १०४, १०७,  
 १०९, १११  
 गिरधरदास ३४१  
 गिरनार २२२, ३२६

गुजरपल्लीवाल ३९५, ३९८  
 गुडुगुडि ३७२  
 गुड्डिगेरे २५  
 गुणकोति ५६, ७६, १०४, १०९,  
 ११०-१, ४००  
 गुणगविजयादित्य ६४  
 गुणवद्र ५३, ७३, १०५, ११०,  
 १९७, २३४, २५८  
 गुणबेडगि ८४ १, १८७  
 गुणनदि ५८, ६०  
 गुणनेरिमगलम् ७५  
 गुणदागि १६  
 गुणपाल १६१  
 गुणमद्र ७२, १९५, १९७, २९४-५  
 ३३०-२, ३३४, ३३७, ४०२,  
 ४२०  
 गुणमति २२  
 गुणवर्मा ६२  
 गुणवीर ३७ ८, ६३, २७४  
 गुणमाभर ३६१, ३९१  
 गुणसेन २२, १७७, २६४, ३६५,  
 ३६६, ४०२  
 गुप्त १८२  
 गुप्तवापि २८६  
 गुन्दुगज १८९  
 गुम्मतदेव ३०९

गुम्मणसेट्टि ३१२  
 गुम्मिसेट्टि २२६, ३०८  
 गुम्मुगोल १०४, १०९  
 गुम्मेयसेट्टि ३३७  
 गुल्लवयनकेरे ३०९, ३१४  
 गुर्जर १९७  
 गुलियपुर २६२  
 गुह्ननदि ७-९  
 गूटी २८८,  
 गूवक १८९  
 गूवल १३६  
 गुह्यवाल गोत्र ४०८  
 गेरसोप्पे २७९, २८२, २८४,  
 २८६-७, २९७ ८, ३०१,  
 ३१५, ३२७, ३३० ४, ३५४-  
 ५, ३६८, ३९२  
 गोआलभिता ९  
 गोक्के २३३-४  
 गोकर्ण ३३५-६, ३९१  
 गोकाक १५, ८४-५  
 गोमि १८३ ५  
 गोमियवसदि १५८  
 गोजिजका ९१-३, १०२  
 गोदृगडि १९८  
 गोणबेडगि १२१  
 गाणिबोड ३५९

गोपनन्दि २०४, २०७

गोपरस २६६

गोषाचल ४१२

गोपेन्द्र १८९

गोप्पण २७९

गोयिन्दम्म ४०

गोरविसेट्टि १०८, १६४

गोहूर २२६, २२९

गोर्म १५१-२

गोललतक २६१

गोलसिधारा ३९५, ४०४

गोलिहल्लि १५३

गोलाचार्य २३४

गोलापूर्व १५९, ३९६, ४०३,  
४२७,

गोल्हणदेव १५९

गोव १८०

गोवर्धन २२७, २५०

गोवलदेव ११४

गोवा २८७

गोवालगोत्र ४०३, ४०६, ४०९-१०

गोपाटपुंजक ७-९

गोहिलगोत्र ४०३, ४१५, ४२५

गोकय्य २७

गोकल १३६

गोडसंघ ५३

ग्रहकुल ५७

ग्राम २२४

घटेयंककार ७६

घण्टोडेय ३२०

घनविनीत १८

घनशोकवली ३५४-५

चच्चिग १८९

चच्चुल १९१, १९६

चटवेगन्ति २९२

चट्टजिनालय ११४

चट्टय्यदेव ८२

चट्टरसि ८८-९

चण्डव्वे १०७

चण्डिगौडि २६१

चण्डिपण ३९

चण्डिमेट्टि १०८

चतुर्थजाति १७२

चतुर्थमुनोद्वर ३२६

चतुर्मुख देव २०४, २०७

चतुर्मुखवसति ४१

चनुदब्रोलु ३८१

चन्तलदेती १३३-४

चन्दन १८९

चन्दलदेवी २३७, २४४, ३१९-२०

चन्दव्वे ३८०

चन्दिगव्वे ४५

चदिमेष्टि १०८  
 चन्द्र १३६, १८९  
 चन्द्रकराचार्याम्नाय १५९  
 चन्द्रकवाट अवय ९२-३  
 चन्द्रकीर्ति २०८, ३६७, ३८३,  
 ४०२, ४०३, ४०५  
 चन्द्रगिरि ३१३  
 चन्द्रनन्दि ४०, १०२, २२४  
 चन्द्रनाथ ३५६-७  
 चन्द्रपुर २८२  
 चन्द्रप्रभ ४४, ७२, २१७, ३१५ ६  
 चन्द्रभूति ३७८  
 चन्द्रमेन १८ २०, ६७-८  
 चन्द्राक ३८१  
 चन्द्रिकावाट वन ९८  
 चन्द्रिकादेवी २३७  
 चन्द्रेन्द्र ३७८  
 चल्लपिल्ले २६१  
 चनुडिमेष्टि १०८  
 चकुण्ड २६३  
 चवरिया ३९९-४००, ४०७,  
 चवरे ४१६, ४१९, ४२५  
 चगालराय ३९२  
 चगाल्व १२९  
 चाण्डरम १७३  
 चादकवटे ९८

चाद्रायणदेव १८०, २७१  
 चामकब्बे ७०, ३८३  
 चामराज १४७, ३४९  
 चामराजनगर २९६, ३१४  
 चामुण्डराज १८९  
 चाक्षकीर्ति १२२, २२१, २२३,  
 २९७ ८, ३१२, ३२७, ३३३,  
 ३३५, ३४१, ३४३, ३४७,  
 ३६८, ३८१  
 चारुचन्द्रभूषण ४१२  
 चालुक्य २४५, २७, ५३, ६३,  
 ६६, ६८, ७३-८२, ८४ ६,  
 ८९, ९०, ९३ ४, ९८-९,  
 १०२-३, ११०, ११७-५,  
 १२०-१, १२६, १३४, १३७,  
 १३९, १४१-४ १४८-५०,  
 १५२-३, १५७ ८, १७०-३,  
 १७८, २०८, ३८९-९०  
 चालुक्यभोम ६४, ६७ ८  
 चावय्य ३७१  
 चावुण्ड ८२  
 चावुण्डरस १८७  
 चावुण्डराय ८८-९, २७७  
 चाहमान १५९-६०, १६९, १७१,  
 १८९, १९६  
 चिकण ३७

चिकमगलूर १२९, १३१  
 चिकककन्नेयनहल्लि २७१-२  
 चिककण्टय ३३३  
 चिककमल्लण १७९-८०  
 चिककमालिगेनाडु ३२०  
 चिककराय ३४१  
 चिककवीरप्प ३३०-२, ३३४  
 चिककहनसोगे ४३, १२९, ३३३  
 चिककहन्दिगोल २०१  
 चिककिसेट्टि १०८  
 चिण १२३-५  
 चितरल १६  
 चितलद्रुग ३०८-९  
 चितोड ३८६  
 चित्तामूर ३२८, ३५२  
 चित्तारि ८८-९  
 चित्रकूट २२१-२  
 चित्रकूटगच्छ १७२, ३७८  
 चित्रकूटान्वय १०२, ११२, १७२,  
 २६९  
 चित्रभंडारदेव ३३९  
 चिप्पगिरि २६६, २९३, ३२६  
 चिचलो २३५  
 चूलकम्म ३  
 चेकवा २५७  
 चेदि ६२

चेदिकुलमाणिकपेरुम्बल्लि १२२  
 चेन्न भैरादेवी ३२७  
 चेन्नराय ३३०-३  
 चेन्नवीरप्प ३३०-४  
 चैपल्लि ३२९  
 चोकिसेट्टि ३११  
 चोल ५२, ५६, ६२, ७४-५, ७८,  
 ८३, ९९, १०५-६, ११०,  
 १२१, १२७, १४०-१,  
 १४५-६, १५८, १६६-७,  
 १७८-९, २०८, २५१, २६०,  
 २७३, ३५४, ३९१  
 चोलपेरुम्बल्लि २७  
 चोलवाण्डिपुरम् ६२  
 चोटकुन ३२७, ३४१  
 चोलुक्य ९८, २२२  
 छतरपुर १७४  
 छत्रसेन ४११  
 छपाग ४९५, ४२५  
 छव्वि ९५  
 छोतग १९५  
 जकवेहट्टि २९२  
 जकव्वे २३२, २५०  
 जक्कव्वरसि ३०२-३  
 जक्कय २५८  
 जक्कलदेवी ३०४-५

जक्कलि १३५	जसनन्दि ५७
जक्कियक्क १५५	जाकवे २६६
जक्कियम्बे ४३, २०२	जाकिमम्बे ९८
जक्कसेट्टि २०५	जानियक्क १४६
जगतकीर्ति ४०२	जावालिपुर १९०
जगतापिगुत्ति ३२९	जालोर ३८६
जगदेकमल्ल ७५-७, ८०-१, ९३, १७०-२	जावूर ३८३
जगमणचारि १३२	जासट १९१, १९६
जटामिहनदि ३७१	जाह्नवेयकुल ९, १७
जट्टिगौड ३२९	जिड्डुलिगे २७७
जतिग १३५-६	जिनकचि ३४४-५
जननाथपुरम् १२२	जिनगिरिपल्लि २५१
जननाथमगलम् १६६	जिनगिरिमल्लै २५५
जबलपुर ३१०	जिनचन्द १९५, १९७, २०४, २०७ २५८, २७५, २८७, ३१०, ३६९, ३९६, ३९८, ४०३, ४२७
जम्बुवण्डगण १५-१६	जिनदत्त २२५
जयकीर्ति ९५, १२९, ३८३	जिनदास ३९७
जयकेशि ११२, १५३, १७२, २५१	जिनदेव १५३, ३७६, ३९७
जयदेव १८९, ३६०	जिनभूषण ३६६
जयन्ताचार्य ६८	जिनवल्लभ ४०-१
जयराज १८९	जिनसेन २९४-५, ४०७-८, ४१२
जयवीरपेरिल्लिमैयान् ३६६	जिनेन्द्र मगलम् ३१८
जयसिंह २४, ६३, ७६, ११५, १२०, १५१-२, ३४३, ३९०	जिघ्रण १८६
जयमेन ६७, ६९, ३८१	जीमूतवाहनाचार्य १३७-८, १६२,
जयगोडशोलमडलम् १७८	



३८९-९०  
 जीयगोड ३६०  
 जीवराज ३९६, ३९८  
 जुगियागोत्र ४१४  
 जेबुलगेरि २५  
 जेमपार्य १४६  
 जेमिसेट्टि ३७५  
 जोगीवंडि ५६  
 जोन्नगिरि ८२  
 जोयिमय्यरस ११४  
 ज्ञानभूषण ३९७-८  
 टोडा रायसिंह ३४३  
 टोंक १३२, ३००  
 ठवला गोत्र ४००  
 ठवली, शान्तिकुमारजी ३९३  
 डम्बल ९४, २६३  
 ढिल्लिका १९०  
 तगहूर २६२, २९६  
 तगरपुर १३८, १६२  
 तगरे २६  
 तजेगांव ३९५, ४०८  
 तट्टिकेरे ५९-६०  
 तडागपत्तन १९१, १९६  
 तण्डपुरम् १६७  
 तमिलप्पलवरैयन् २५५  
 तम्मण ३७८

तम्मदहल्लि ३८१, ३८४  
 तम्मय्य ३३२-३  
 तम्मरस ३०४-५  
 तलकाड १४६, १५५, २०३,  
 २१४, २९१  
 तलक्कूडि ४१  
 तलप्रहारि १८३, १८५  
 तललूर ३६९  
 तलवननगर २८-३०  
 तलवलि २१४  
 तवनन्दो २६९, २९१  
 तवनिधि २९०-१  
 तंगले ३६०  
 तंगलेदेवी ३०३-५  
 ताढकोड २६३  
 ताढपत्री २१७  
 तायूर २६२  
 तालराज ६४  
 तिकमदेव २६५  
 तिक्क ११७  
 तिन्त्रिणीगच्छ १५५-६, २२४, २५०,  
 ३२१, ३२६, ३६४, ३७९  
 तिप्पगोड ९६  
 तिप्पय २६६  
 तिप्पिसेट्टि ११४  
 तिम्मगोड ३२९

तिम्मण्ण ३२०	तुलु (तुलुव) २८०, ३१४, ३२१-
तिरवकोल १६७	२, ३२७
तिरुक्काट्टाम्पल्लि १४०	तुलुअडि २६
तिरुक्कामकोट्टपुरम् ९९	तुणपल्लवरैयन् ३७४
तिरुगोक्कणम् २७	तेणिमलै ३६७
तिरुच्छाणत्तुमलै १६	तेरक्कावि २९५
तिरुच्छोरुत्तुरै २८९	तेवारम् ६३
तिरुनिडकोण्डै ४१, ७८, १२७,	तैकविणाडु २७
१६०, १६६ २७३-४, २७९,	तैल ७३, १७१-२
३३७, ३५४, ३७५	तैलप १४८-९, १८५
तिरुणरम्बूर १४०, १७३	तैलमेरे २६१
तिरुण्णरकुण्डम ३७३	तोणरकुट १४८
तिरुण्णरुत्तिक्कुण्डम् १४०-१, १८५	तोयिमरस ३७२
तिरुण्णान्मल ५२	तोणनगल्लु ३७७
तिरुमण्णैरि ७८	तोणवगे १६४
तिरुमय्यम् ३६६	तोण्लु ९५-६, १२६-७, ३६२
तिरुमलरस ३१९, ३२२-३, ३२५	तोणहरबलि २९७
तिरुवयिरै ३७ ८	तोणलग्राम २६
तिरुवेण्णायिल् ३६६	तोणमडल ७४, २८०
तिलकरम २६०, ३०१	तोणूर ७५
तिलिन्नल्लि ३४८	तोणव ३१५
तिगवूरु ८३	तिवूटवसदि १४१
तीयवसदि १२९	तिणयनकुल ६६, ६८
तुंगलिकिलान् ९९	तिमुवनवीति २६०, ३८०
तुम्बदेवनहल्लि १२२	तिमुवनचद्र १०६-७, ११०-१२
तुम्बिगि ३८४	तिमुवनमल्ल ११४-५, १२०, १२२,

१२६-७, १३३, १४१, १४३,	दासण्ण ३८९
१४५, १४८-५०, १५२-३,	दासत्रोव १८७
२००, २०८	दांदि १६१
त्रिभुवनवीर ३७८	दिनकर ११९, १२१
त्रैकीर्ति २७५	दिनकरजिनालय १६७
त्रैलोक्यमल्ल ८२, ८४-६, ८९,	दिल्ली ३४४-५
९०, ९३-४, ९८-९, १००,	दिवाकर २५०
१०५, ११०, ११५, १२०,	दुग्गमार ३९, ४०
१७३, १७८, ३८९-९०	दुद्दमल्ल १३३-४
दडग १५४	दुद्यक १९१, १९७
दडिगनकेरे १५५-६	दुर्गभट्ट ३६
दडिगसेट्टि ७०	दुर्लभ ( दुर्लभराज ) ४६, ५२,
दण्डन्नह्य १३७	१८९, १९२, १९७
दण्डिपल्लि ४४	दुर्विनीत १७, २०, ९४
दत्ता ५, ६	दूडम ११९-१२१
दत्तकसूत्रवृत्ति १०	दूमल १८९
दन्तिदुर्ग ३१	देकवे २०५
दमित्र ५, ६	देज्जमहागज १५-१६
दयापाल २१४, २१६	देमलदेवी १७३
दयाभूषण ४०८	देमायप २३४
दयावसन्त २४	देल्हण १९६-७
दानप्प ३२८	देवकीर्ति ७६, ३२३, ३२६, ३६३,
दानवुलपाहु ५५, ६०, ३६३	३८४
दानिवास ३३१-४	देवगण ३८२
दारिसेट्टि १०८	देवगेरी ३८९
दावणंदि १०२. ३८०	देवचन्द्र २२५, २५८, २७१, ३२३,

३२६, ३५४-५, ३८१-२

३८४

देवणय्य ११२

देवण्ण २६०, ३१६-७, ३४१, ३४८

देवत्तूर ३७४

देवदास ३२८

देवधर १९२, १९७

देवनन्दि २७०, ३६१

देवपाल १६१

देवप्प ३०८

देवमाम्बे २९४

देवरदासठय ७०

देवरस १४९

देवराज १९०, ३५१

देवराय ३००, ३०५-६, ३१४,

३९१

देवस्पर्श १९१, १९७

देवाद्वि १९२

देवांगना १११

देवियम्बे ७०

देविसेट्टि १०८, २०५, २०७, ३१२,

३१६

देवीरम्मणि ३४९

देवूर ३७६

देवेद्र ६९, २०४, २०७

देवेन्द्रकीर्ति ३१४, ४०२, ४११,

४१६-२५, ४२८

देवन्द्रसेन २९४-५

देशवल्लभजिनालय ४२

देशीय ( देशी, देसि, देसिग ) गण

४३, ५३, ७७, ९३-४, ११४,

१२५-६, १२९, १३३-४,

१४०, १४८, १५६, १५९,

१६४-५, १६७, १७०, १७३,

१७९, १८२, १९७, २०४,

२०७, २२५, २३२, २४६,

२४९, २५२-३, २५६, २६०,

२६५-८, २७२, २७४, २७८,

२९५, ३१५-६, ३३५, ३३८-

९, ३४२, ३५४-५, ३५९,

३६०, ३६३, ३७६, ३७९-८३

देसल १९१, १९६-७

दोडणसेट्टि ३१२

दोण ११७-८, १२०-१

दोणि १२२

दोरसमुद्र २५३, २५६, २७०-१

दाहद ५

द्रमिल सघ २१४

द्रविल सघ १७९-८०, २३३, २६७

२६९, २९१

द्राविहसघ १२८

द्राविडान्वय २६४

द्रोहघरट्टाचारि १५६	नन्दवर ४५
द्रोषितटाक २९४	नन्दवाडिगे ८५
धन्यवसन्त २४	नन्दसेठि १
धरवृद्धि ६	नन्दापुर ८५
धर्मकीर्ति ४०३-४	नन्दिआम्नाय ४२२
धर्मचन्द्र ३१७, ३४०, ४००, ४०४- ५, ४०७-१०, ४१२-३, ४१६, ४२८	नन्दिगण (संघ) १०४, १०९, १२८ २१४, २२१-२, २३३, २५८ २६७, २६९, २९१, ४०२
धर्मपुर ३०३	नन्दिवेवूर ९३
धर्मपुरी ३८-९	नन्दिभट्टारक २५८-९, २९६, ३७५
धर्मभूषण २८८, ३११, ३९७, ३९९-४०१, ४०५-८, ४१०	नन्दिमुनि २३४
धर्मबोलल ९४, २६३	नन्दियड संघ ७२
धर्मसेन २६९	नन्दियडिगल ३६१-२
धवल ४६, ४९, ५२	नन्दीतटगच्छ ३९६, ४०२-३, ४०५-६, ४०९, ४११, ४१४, ४१६, ४२७
धारवाड ५३	नघ्नियगंगा ५९, ६०
धारावर्ष २८, ३०	नमयर ५३
धुरामोरो गोत्र ४२२	नम्बिसेट्टि २८२-३
धृति २७	नयकीर्ति १७३, २०७, २१९-२० २३१-२, २५६, २५८-९, २७१-३
घोरजिनालय ४४, ९५, १८७	नयसेन ९१-३, ११८, १२१
ध्रुव ३०, ३२	नरतोग १६७
नकुलरस ८८-९	नरवर १९१, १९७
नगिरि २९७-८, ३०३, ३२७	नरवाहन ६६-८
नदिहरलहल्लि १८७, १९८	
नदूलडागिका १६०, १६८-९, १७०-१, १९०	

नरसण्य ३३२ ३  
नरसिंहगय्य ११४  
नरसिंह १६९, १७६ ७, १७६,  
१८०, २०३, २११-२, २५६,  
२५८-६०, २६२, २७०-२,  
३१३

नरसिंहवग ३०९  
नरसिंहराजपुर २६, ३१२, ३४९  
नरसीगेरे ३९, ४०  
नरसीमठ ३९२  
नरेगल ५३  
नरेन्द्रकीर्ति ४०४, ४१०  
नरेन्द्रसेन ९२-३, ११८-२१, ३७५  
नले १२९

नलजनम्भाडु २३  
नल्लूर २७३  
नविलगुन्द ३८३  
नविलूर १२६-७, २२६  
नविले ८५  
नगलि १५५  
नजेदेवरगुड्ड २१६  
नाकण १४७, २६७  
नाकिग ९५

नाकिमय्य ११२  
नाकिया ४  
नाकिराज १६६

नागकुमार ४३  
नागगावुण्ड १९८, २६२  
नागगौड ३७२  
नागचन्द्र ९५, १२९, १७२, १८६,  
२७८

नागण्ण ३००  
नागदेव ७३, १९२, १९७  
नागनन्दि ३७, २९६  
नागपुर २०९, ३९३-५, ४१२,  
४१५, ४१८-२३, ४२५-२७

नागप ३४९  
नागमुप ३४३  
नागय्या ४४, २०९, ३५०, ३५७,  
३६६

नागरम्बण्ड ४४, २५०, २७७,  
२८९

नागरस ३०१  
नागरहाल १७६-७  
नागराज २९४  
नागलदेवी २६६  
नागलपुर ३३०-१  
नागवर्मा २६, ८८-९  
नागवे १८१, २३३-४, २८६,  
३७२

नागथो १९२, १९७  
नागसारिका ३५-६

नागसिरियव्वे २५१	नाहर ३८५
नागसेट्टि २८९-९०	नाहटा ३८५
नागसेन ७२, ८४-५	निगमान्वय २७६
नागह्मद १९४	निगुम्बवंश १३९
नागिसेट्टि १७१, २८६	निजिकव्वे २३०-१
नागुलपोलमव्वे ३७	निट्टूर २२५, ३६८
नागुलव्रसदि ३७	निडुगल ( निडुगल्लु ) २६०, ३८२
नागेयिसेट्टि २६३	नित्वकल्याणदेव १६०
नागोज ३६०	नित्यवर्ष ४४-५, ५५
नागौर ४२२-३	नित्वगोहाली ७-९
नाडलाई १५९, १६७, १६९, १७०	निघियण्ण ३९
नाडलि १००-१	निम्बदेव १६३, १६५-६, २३९
नाडोल ३८६	निरुपम ३०
नाथशर्मा ७-९	निर्घडेवृक्षसंघ ३४९
नाथसेन ६७-८	निलिम्पपुर २९८
नादीवे ३५७	नोडूर ३९१
नानिग १९६	नौरलगि १७१
नामिसेट्टि २७३	नीलगिरि ३४६-७
नायिम १३५, १३९-४०	नीलत्तनहल्लि ३१८
नाराणक १९१, १९६	नीलिव्वे १७२
नारायण ३६, ४०	नूतिसेट्टि १०८
नारियप्पाडि ४१	नूलवन्दिसेट्टि ३५७
नालिसेट्टि १०८	नूलवागिसेट्टि ३५७
नालपुर ३३४	नेगलूर २५७
नाल्कुवागिलु ३२८	नेचटिमतायि १२९
नाविकव्वे ११४	नेमण ८१-२, २८६-७, ३६२

नेमसेन ४२०

नेमिचन्द्र ४२-३, १२६-७, १५३,  
१७३, २१९ २०, २२६,  
२३२, २४५, २४९, २५८,  
२६५, २७१, ३७०, ३८२,  
४२८

नेमिदेव २२७, ३७६

नेमिमट्टि १०८, ३१२

नेरिलगे १७१

नेल्लिकर ३१७, ३८२

नेवाजाति ४१३

नैगम १९५

नोम्पिपबसदि २०८

नोलम्ब ३८ ९, ७६, ९३, ११६,  
१३९-४०

नोलम्बवाडि ( नोणम्बवाडि ) ७६,  
१५५, २१४, ३९०

न्यायपरिपालपेक्षम्बल्लि २५५

पटना ३१७

पट्टिपोम्बुर्च ८६, ८९, १८३, १८५

पडियरकाटि ८८-९

पडेवल ७३

पडेशोदुट्ट ३१३

पण्डितय्य ३३३

पदमूलिक ४

पदार्थसार २५६

पदुमणसेट्टि ३१८

पदुमलदेवी ३२७

पदुमन्वे ३७६

पद्मकांति ४०१, ४०७ ९, ४११,  
४१४

पद्मकुल ३४६

पद्मट १९१, १९६

पद्मण्णरस ३०४-५

पद्मनन्दि ४५, ५५-६, १४९, २१७,  
२५०, २५८, २७७, ३००,  
३१०, ३९७, ४१६ ७

पद्मप्रभ २००, २०८, २६९, ३८०

पद्मवरसि ५३

पद्मन्देवी १७९, २४४

पद्मसेन २५४, २६१

पद्मावती २३६, ३६२

पद्मावतीपल्लीवाल ३९५, ४०८

पद्मय ३५०, ३५३

पनसोगे ४३, २०७, २२५

पयिट्ठण १४८

परकेसरिवमन् ५२, ७५, १४१,  
१५८, १६०, १६७, २५१

परमजिनदेवजीयर् ३५७

परमार ८६

परम्बुर ९९

परवार ३९६, ४०४, ४१५,  
४२३-६



परान्तक ५२	पायण ३४३
परिस्य २६६	पायिम्म ७८, ८१
परियूरताडु १७१	पायिसेट्टि २५४
पर्वतमुनि २२४	पारिसेव १७९
पलसिगे ८२	पारिसेट्टि २१९-२०
पल्लव ११-२, ३८, ९३, ३५४	पार्श्व १२०-१
पल्लवपेर्मातिडि ११५, १२०	पार्श्वदेव ३८४
पल्लवरयम् १६७	पार्श्वदेवी ३३६
पल्लवावित्य २३	पालयड ९६
पल्लवेसरस १८, २०	पालयूर ३५४
पल्लिका १९०	पालनकीर्ति २२७
पल्लिच्छन्मल् ३१७	पाल्हाण १९६
पल्लोत्राल ३९५, ४०१	पासकीर्ति ४०४
पसिडिंग २६	पिट्टनूप १५१-२
पहाडपुर ६	पित्त्यागोत्र ४२७
पंचस्तूपनिकाय ७-९	पिरियमोसंगि ७६-७
पाटनी गोत्र ४२५	पुगलोकरनाथनल्लूर २५५
पाटनीवरम् २०८	पूट्टय ३५३
पाण्डय २७, ३८-९, ७४, १०५, २५३, २५५, २६१, २६४, २९९	पुणिस १४७
पाण्डयप्परस ३१९-२०	पुन्ड्रवर्धन ७, ९
पाण्डयरस १८३, १८५	पुत्तडिगल ६३
पानुंगल १४८, २१४	पुत्तिगे ३२७, ३४१
पान्थियूर १८६	पुट्टुप्पट्ट १४१
पापडीवाल ३९६, ३९८, ४११	पुन्नागवृक्षमूलगण ८०, ८१, १८६
	पुन्नाद १७, १८, २८, ५४
	पुरगूर ८५

पुरिकर ११३, ११८, २५४, २६५  
 पुरिगेरे २५, ११२, १७२  
 पुलिगेरे ९०, ९३, १०३, ११०,  
 ११२, ११७, १२०, २५४  
 पुल्लवरणि ३८४  
 पुल्लिऊर ११-२  
 पुष्करगण ( पुष्करगच्छ ) ४००,  
 ४०४, ४१०-१२, ४२०  
 पुष्पदन्त ९६, १७५, २१४, २१६  
 पुष्पनन्दि ३८०  
 पुष्पसेन ८८-९, १७५, २१०,  
 २१४, २१६, ३३६  
 पुस्तकगच्छ ११४, १२६, १२९,  
 १३३-४, १४८, १६४, १७०,  
 १७३, १७९, १८२, २२५,  
 २४६, २४९, २६६-७, २७२,  
 २९४-५, ३३५, ३६०, ३६३  
 पुणुससेट्टि २०५  
 पुण्डि ३६७  
 पूर्णतल्ल १८९  
 पुलि ७९-८२, १५० २  
 पुषिवोकोंगणि १७, १८, २०  
 पुषिवोदेशरट्टगुडि २४  
 पुष्वोकोगाल्व १३३  
 पुष्वोराज १८९, १९०, १९६  
 पुष्टिमवोत्तक ७-९

पेण्डरवाच्चिमुत्तव्वे २१७  
 पेद्दगालिडिपर्न ६७, ६९  
 पेनिमलपाडु २१  
 पेनुगाण्ड ३४४-५, ३६३, ३६६  
 पेरियनवकनारु ४१  
 पेरियवडुगणारु ४१  
 पयनकिलि २७  
 पेसुत्रिगदेव २५४  
 पेळु ८५  
 पेरेर १२  
 पेगुमि १५२  
 पेर्म १५१-२  
 पेर्मण २३८, २४४  
 पेर्मिडिबसदि ११२  
 पेर्मतिडि ९३, १०५  
 पेर्वयल ८९  
 पेवय्य ३४८  
 पोगरियगण ३९  
 पोतोज ३८०  
 पोन्निनाथ ३६७  
 पोनुगुन्द ८५, ११२  
 पोन्नूर १६७, २६४, २८९, ३४६  
 पोम्बुच्च ३१५  
 पोय्मण ( पोय्मल ) ९५, १५४,  
 २११, २७०  
 पोलेग ७६

पोसवूर ७६

प्रतापकीर्ति ४००, ४०२-३, ४०५-

६, ४०९-१०, ४१६

प्रथमसेनवसदि ३८९

प्रभाकरदेव २५४

प्रभाकरसेन २९४-५

प्रभाचन्द्र ५४, ५८, ६०, ७०,

१३३-४, १४०, १५४, १५७-

८, ३००, ३६१, ३८०

प्रमलदेवी ३५४

प्रमिसेट्टि ३८१

प्रवरकीर्ति २२२-३

प्राग्वाट १९१, १९६

प्रोल १४२-३, १४५

वधेरवाल ३९६, ३९८-४०३, ४०५-

७, ४०९-१०, ४१२, ४१४,

४१६, ४१९

वट्टकेरे १०८, ११०, १४८

वडोदा ३८५

वण्डुवाल ३१५

वदनगुप्ते २८, ३०

वदनोर ३०७

वहेग ५३

वधनोरा ४२०

वनदाम्बिके ३४३

वनवासि ८५, ११४, ११६, १२०,

१२४, १४८, १५५, १५७,

१९८, २०४, २१४, २७६,

२८१, २८९-९०, ३९०

वन्दलिके ४४

वष्पयराज १८९

वमण ६९, २३२

वम्बई २०९, ३२७, ३८६-७

वम्मगवुड २६४

वम्मय्य २८३

वम्मन्वे ३६९

वम्माचारि २१०

वम्मिसेट्टि १०८, १५२, १६४,

१७०, २०७, २२६

वयिचिसेट्टि ३७७

वर्मदेवरस १२१

वर्मनन्द ३६८

वलगारगण १०४, १०९

वलगारवंश २९४-५

वलगेरि १७८

वलदेव ७१, ९१, ९३, १०२,

१९९, २३९, २४५, ३९०

वलभद्र ५०-२

वलात्कारगण १०७, ११२, १५३,

२२९, २५८, २७०, २७२,

२७८, २८८, २९९, ३०६,

३१०-१, ३१५, ३९६-७,

४००-५, ४०७-१२, ४१४-  
२३, ४२५-८  
बलिकुल ६१-२  
बलेयवट्टण १६४  
बल्लय १९९, २००  
बल्लाल १३१, १३७, १५४, १९८,  
१९९, २००, २०२४, २०७,  
२०९-१८, २२०, २४९५०,  
२७०, २७३, २७६७, ३३५  
बल्लिग्रामे ( गाँवे ) २७६-७, ३८९  
बमरूर ३०६  
बसवदेव २८१-२  
बसवपट्टण २६६  
बसविमट्टि १०८  
बस्तिहल्लि १६७, २५६  
बहादुरपुर ३९५, ४०३  
बकापुर ४४, ३७२  
बकेयरस ४४  
बागियूर ५४  
बाधण ३०९  
बाचय ९४  
बाचवे २३१  
वाचिगावुण्ड १४९  
वाचिमट्टि २७५  
वाचेय २६०  
वाद्यय ३७८

बादगट्टि ३७१  
बाबवनगर २५०  
बाबानगर १८२  
बायिसेट्टि ३२९  
बारकूह २९९, ३२२, ३२६, ३४१  
बारलो १  
बालचन्द्र ५८, ६०, ७०, ८०-१,  
१३४, १४८, २०४५, २०७,  
२१९-२०, २२७, २४२३,  
२४८, २६०, २६३, ३६३,  
३८०, ३८३  
बालप्रसाद ४७, ५२  
बालूर २४९, २५७, ३४८  
बालेहल्लि १७०, २७९, ३७२  
बासवे ७१  
बामवूर १२५, ३८९  
बासिमेट्टि १८१  
बाहुबलि १२६ १२९ १५०,  
१५२ २१९-२०, २५२-३  
बाहुबलिकूट १५५-६  
बिजापुर ४५ २५५, २७६  
बिजोलिया १८८  
बिज्जण १३६ १८२, १८६-७  
बिज्जल १५१-२, १७८-०  
बिटिसेट्टि ३११  
बिट्टय ४४

विट्टरस १८७	वूचन्वे १२९
विट्टिदेव १५४, २११, २७०	वून १२३, १२५
विट्टियण ३६२	वूतय्य ५३
विडक्क ७१	वूतुग ५८, ६०, १०४, १०९
विण्डगनवले ५५	वूणोज ३६०
विदिस्सर २६८, ३०९-१०	वूवनहल्लि ७०
विदुरे ३२०, ३३६-७, ३३९-४०	वेगूर ४२
विरणंतर ३२६	वेचारकवोमलापुर ७४
विलगौण्ड १२६-७	वेट्टकेरि ३४०
विलपाणसेट्टि १६४	वेट्टिमेट्टि ३८१
विलिगि ३२०, ३३५	वेत १४२-५
विलिगिरि रंगनवेट्ट २०९	वेन्नेवुर ९८
विलिचाग्राम २५३	वेरिसेट्टि ३८०
विल्लमनायक ३८२	वेलगामि २१७, २७६, ३७०, ३८९
वीचगवुड ७४-५	वेलगांव ४२, २३६, २४३, २४९
वीचण ( वीचिगज ) २३८-९, २४३-६, २४८-९, २५४	वेलगुल २२७, २६७, ३२५-६
वीचिसेट्टि ३८३	वेलतंगडि ३१४
वीरण १३९-४०	वेलप्प २७९
वीरय्य ९४	वेलूर १३०, १४७, १७५, २०७, ३४४, ३४६
वीररस १८३, १८५	वेल्लगलि ८५
वुक्कराज २७८-९, २९०, २९५	वेल्लदेव ९१, ९३, १०२
वुघगुप्त ९	वेल्लेट्टि ५६
वुलिसेट्टि ३०१	वेल्लुम्भट्टे ३८२
वुल्लप ३५९	वेल्लवत्ति १५२
वुस्सेट्टि ३२९	

बेल्बल ७९, १०४ ६, १०९-१०,  
११२ १७८, २१४  
बेल्बोल ९०, ९३, १०३, १२०,  
१७२

बेहार २२८

बेटूर ३७

बैचण २९७-९

बैचय २७८, २८८

बैचिसेट्टि २८५-६, २९९

बैदुह ३०८

बैराट ३८८

बैरामक्षेत्र ४१६

बैहुरु ९३

बोगगावुण्ड ३८४

बोगाडि १९८

बाबुवनायक ३८४

बाणगौड ३७५

बाणदेव १५६, २५०

बाणय २९६

बोपिसेट्टि १०८, १६४

बोप्लेयळे १८३

बोप्लेयवाड १३८, १४०

बाम्मक ३५६

बोम्मण ३६८

बोम्मरस ३३७

बोम्मरसेट्टि ३१६

बोम्मवे २२९, २६६

बोम्मिसेट्टि २६०, २६६, २७७,  
२९९, ३१२, ३२८, ३७१,  
३८०

बोयुगट्ट २७

बारखड्यागोत्र ४०१, ४०३, ४०६,  
४०९, ४१६

बोलगडि ७८, ८१

बोलयनाग २९३

बोसिसेट्टि १०८

ब्रमदेव २२६

ब्रह्मदेवण ३६४

ब्रह्म २५०, २९०-१

ब्रह्मकुल ११६

ब्रह्मजिनालय १५२, १५७

ब्रह्माधिगज ९३

ब्रिटिश म्यूजियम २७, ३८७

भटकल ३००, ३३५

भट्टाकलक ३१६, ३३५, ३३८ ९,  
३४२

भट्टिदाम ६

भद्रब ह ९६, १७५, २१४, २१६

भद्ररायि १५७ ८

भद्रेशर ३८६, ३८८

भरत ७३, १५५-६, २७२

भरतपुर १७४, ३८५

भरतिमय्य १७०	भूलोकमल्ल १५३, १५७-८, ३९०
भरतिसेट्टि २१४	भैररम ३१३
भंवर गोत्र ४०४	भैरवदेव २६५
भागिणव्वे ७९, ८१	भैरवपुर ३१५
भागियव्वे ४०-१, ९५	भैरादेवी ३००
भानुकीर्ति १२९, २५०, २७२, ३७९	भोगदेव २०८
भानुचन्द्र ३९८	भोगराज २७८
भानुमुनीश्वर ३२१, ३२६	भोगवदि १९९-२००
भालेपालवन्दप्प ३३०-१	भोगव्वे ११४
भावचन्द्र १९७	भोगादित्य ९८
भावनगन्धवारण ८५	भोज ८६, १३६-७
भावसेन ३८०	भोसले ३९४
भासगवुण्ड ३६२	भोसे ३७०
भास्करनन्दि ११३	मगर कारगरस १५७
भित्तम १३७, २१३	मणलकुल ११२
भोम ६७	मणलिमनेओडेयोन् २६
भोमदेव ९७-८, २२१-२	मणलेर १७२
भोसा ३९५, ४११	मणिचन्द्र ४२
भुजवलमल्ल १८६	मण्टूर २२९
भुरा गोत्र ४००	मण्डलकर १९२, १९७
भुवनकीर्ति ३९७-८, ४२८	मण्डालगेरे ८५
भुवनैकमल्ल १०२-३, ११०, ११२- ३, ३८९	मण्डलोई ३३८
भुवलोकनायनल्लूर २६१	मण्णे ६९
भूतवलि १७५, २१४, २१६	मतिवीर ३४०
	मतिसेन ९९

मत्तिसागर ३५४	मयूरवर्मा १५७
मत्तावार ९९, २९२, ३५३	मरकत ३२७
मत्तिकट्टि ९९	मरगोड ३७७
मथुरा ५, ६, ७२, ३८६	मरवोलल ७६
मदनसेन २९४-५	मरसे २३३
मदनूर ६८	मरिनाग ३५०-३
मदऽणसेट्टि ३१८	मरियाने १३१, १५५-६, १६९
मदविलगम् १३०	मरुत्तुववकुटि १२१
मदिर ३९	मरुज्जिन २९२
मदिरैकोण्ड ५२, २५१	मरुलयरस २८०
मदिसागर २५५	मरोल ७५
मदुवण १८६	मलघारिदेव १३०, १७०, १८२, २२८, २४५, २४९
मदुवरस ३०१	मलयकुल ६३
मद्देगडे ३२१-३, ३२५-६	मलयन ३३४
मद्रास ३६४	मलवसेट्टि २२६
मधुकण्ण २५६	मलेय २२५
मधुर ३९१	मलेयालपाण्ड्य २५८
मनगुन्दि २५१	मलैयन् कोविल ३६६
मनोली २२७	मलैयन् मल्लन् १६०
मनोविनीत १८	मल्ल २५४
मन्तरवर्मण १२१	मल्लगावुण्ड १७१-२
मन्तगि १८६, ३७२-३	मल्लप ६४, २८७
मन्त्रचूडामणि ९५	मल्लय १०७, ११०
मन्नेरमसलवाड २६५	मल्लवलि २६
मम्मट ४६, ५०-२	मल्लवादि ३५ ६
मयिलिसेट्टि १०८	



मल्लव्वे १०८	महाभोज १५९
मल्लि २६८	महामद ४
मल्लिकामोद २१७, २७६-७	महामेघवाहन २
मल्लिकार्जुन २३७, २३९, २४३-४, २४६, ३०८	महालक्ष्मी २९१
मल्लिगुण्ड ३७३	महावीर ४२
मल्लिगौड ३६०	महोचन्द्र ४२७
मल्लिदेव ३८३, ३९०	महोघर १९२, १९७
मल्लिभूषण ४२९	महोशब्दवृद्धि ८६
मल्लिमय्य १६७	महेन्द्र ३८-९, ४६, ५२-३
मल्लियक्का २२६	महेन्द्रकीर्ति ७१
मल्लियण १५८, २१७, २७६-७	महेश्वर ३२८
मल्लिराय ३००	मंगभूप ३०२-५, ३५५-६
मल्लिसेट्टि ८२, १०८, १५३, २६०, २८२, ३१६	मंगराज २९८
मल्लिसेन (मल्लिपेण) ९९, १२७, १७५, २१४, २१६, ३७०, ३७६	मंगलिवेढ १८२
मसुलिपट्टम् ६३	मंगलूर ३२२, ३२६, ३४१
मस्की ७७	मंगियुवराज ६३
महाकोत्ति २८४	माकण २१४-५
महादेव २५८-९	माकनूर ३७५
महादेवी ७६	माकव्वे ७४
महादेविसेट्टि २२६	मागुण्ड २५०
महानागकुल ३२९	माघनन्दि २२, ५८, ६०, ९८, १५०, १५२, १६६, २०४, २०७, २२९, २५८, २७१-२, २७४, २७८, ३७५
	माच १७६
	माचव्वे १२५

माचियण १७६-७	मानलदेवी १६०
माचिराज १८३, १९८, २००	मानसेन २९९
माचेल २४	मावलरसि ३०३, ३०५
माणिकदेवी ३०५	मावाम्बा ३५५
माणिकसेट्टि १०० १, २८५-७	मामटा १९२, १९७
माणिकसेन २०९, ३९७-८, ४०२, ४२०	मायण २९४ ५
माणिक्यतीर्थ १५२	मायदेव २६३, ३७०
माणिक्यनन्दि १०४, ११०	मायमेट्टि २९९
माणिक्यमट्टारक १८२	मार २९२
माण्हू ३०६	मारगोड १८५-६
माधुर सघ १९५, १९७	मारदेवी २८३
मादरस ३७४	मारब्बेकति ६९
मादलदेवी २६६	मारमय्य ७०
मादलगडिकेरि ३४०	मारय ३८०
मादवे २५८, २६३	मारवर्मन् २५५, २६४
मादेय २६३	मारसिंह ५३, ५४, ५९, ८९, १०९, १३६
माघद २८७	मारिसेट्टि १८१ २, २१४
माघवच्चद्र १५४, २३३-४, २४२-३, २६६, २६८, ३७२	मारुगोट्टेर १९, २०
माघवनन्दि १५९	मारुह ३३६
माघवमहाविराज १०, १२, १७, २०	मारेय २१९-२०
माघववर्मा १०, १४४ ५	मातण्डय्य ८२
माघवसेट्टि १०८	मालकोण्ड १
माध्यमिका १	मालवे २२५
	मालवेगढे २७७
	मालियम्बरसि ३५५-६

मालेयध्वे १३२	मुनिमद्र १५५-६, ३३६
मावलि २३३	मुनिवल्लि २२७
माविनकेरे २२५, २९७	मुनुगोड्ड २७, ३८२
मावीरन् १६७	मुम्मूडिचोल ६२
मासवाडि ७३	मुलगुन्द ८५, ९०-१, २६०, ३०१, ३४३, ३७९
मामाविवर्म १३१	मुत्तिक ३६४
मासेनन् ५२	मुल्लभट्टारक १५३
मिरिजे १३८-९, १६४	मुण्कर १७, २०
मीचारमागाणे ३२७	मुंजराज ४६, ५२
मुकुन्ददेव ३७८	मुंजार्य ५४
मुक्कुडैयार् १४५	मूगूर २७२
मुगद ( मुगुन्द ) ८२	मूडगेरि १०४, १०९
मुच्छण्डि २१५-६	मूडविट्टरे ३१३, ३२०, ३२६-७, ३३९-४१, ३४७, ३६७-८
मुडासा ३९६, ३९८	मूलपल्लि ३९
मुडिगोण्डम् १३३	मूलराज ४६, ५२, २२०
मुत्तदहोसूर २९९, ३५८	मूलवसतिका २२१, २२३
मुत्तुप्पट्टि २२	मूलमंघ ३५-६, ३९, ४३, ७२, ८४-५, ९२-३, ९६, ९८, १०४, १०९, ११२, ११८, १२०, १२६, १२९, १३३-४, १४०, १४८-९, १५३, १५७- ८, १६४-५, १६७, १७१, १७३, १७९, १८२, २०४, २०७, २२४, २२५, २२७,
मुत्तीरुक्कूरम् ३१८	
मुद्दगावुण्ड १००-१, ३६२	
मुद्दगीठ ९६, ३६०	
मुद्दण्डेश्वर ३९१	
मुद्दमावन्त २५०	
मुनिगिरि ३४७	
मुनिचन्द्र ( मुनीन्दु ) ५९, ६०, १२२, १८६, १९१, १९७, २२७, २५०, ३२३-४, ३२६	

२२९, २३३-४, २४६, २४९-  
५३, २५६, २५८-६१, २६५-  
७०, २७२, २७६, २७८,  
२८८, २९५-६, ३००, ३०६,  
३१०-१, ३१५, ३१७, ३२१,  
३२६, ३३५-६, ३४०, ३५९-  
६०, ३६३-४, ३७०, ३७३,  
३७५-६, ३७८-८२, ३९६-  
४२९

मूलियतिष्य २६६

मृगेश १३-१५

मेघचन्द्र ५८, ६०, ९६, १३३-४,  
१४०, १५५-६, २४९

मेघनदि २५०

मेढता ३८७, ४०३

मेण्डाम्बा ६६, ६८

मेलपराज ६६, ६८

मेलपाडि ५३

मेलरस १४४-५

मेलब्बे २६०

मेलाम्बा ६४

मेलुमान्तल्लिगे १८३, १८५

मेयपायाणगच्छ १५७-८, ३७५

मेणदाम्बय २६८

मेलम १४३, १४५

मैलजदवी ८५, १५१-३

मैलाप अन्वय १५३

मैलुगि १७८, १८२

ममुनाड २१५-६, २८३

मंसूर ३४९-५३

मोटवेन्नूर ४०, ९८, २७५

मोदलियन्नल्लि १७०

मानभट्टारक ४२

मोरक कुल ७६

मोरव ९५

मोराहारी १९०, १९६

मोमल १९१, १९७

मोसलेयकुर्वु ३१६

मासलेवाड २६५

मोहनदास ३४१, ३४३

मोगामा ३८७

मोनपाचार्य ३५७

मोनिदेव १५०, १५२

यलवट्टि ३६३

यश कीर्ति २२१, २२३, ४०२-३

यद्योनन्दि ५७

यशोराज १८९

यशोवर्मन् ८६

याकमब्बे १४२-३, १४६

यादव २५१, २५४, २५६-९,

२६३, २६५, ३८९-९०  
 यापनीय संघ ४२, ८०, ८१, ९५,  
 १२२, १५०, १५२, १५३,  
 १८६, २२७, २६६, २७५,  
 ३७६, ३७७-८  
 याप्पसंगलवकारिगै ३९१  
 यावनिक ११-२  
 यिवल्लिग्राम ३२९  
 योचलदाल ३३२-३  
 येविसेट्टि १०८  
 येडेहल्लि ३३०-१, ३३३  
 येरगजिनालय ३६४  
 येलवगि ३७३  
 योजणसेट्टि २८२, २८४, २८६-७  
 रक्कसगंग ५९  
 रघु १३  
 रघुवर, रघुजी ३९४, ४१५  
 रट्टगुडि २४  
 रट्टजिनालय २४०, २४३, २४६,  
 २४९  
 रट्टवंश १२८, १३२, १५३, १८५,  
 २३५, २३७, २४३, २४५,  
 २४९  
 रणकि १२३, १२५  
 रणपाकरस २६  
 रणावलोक २८, ३०

रत्नकीर्ति २६१, ३१०, ४०३-४,  
 ४१५  
 रत्नगिरि २१, ३४४-५  
 रत्नचन्द्र १९७  
 रत्ननन्दि २०४, २०७  
 रत्नप्पोडेय ३१४  
 रत्नभूषण ३७७  
 रत्नापुरि २६७  
 रवि १३-१५  
 रविचन्द्र ५४, १२५, २५८, २७१  
 रविनन्दि ५४  
 रत्तसिद्धुळगुट्ट २०, ७२, २२६,  
 २९३  
 रंगनवेट्ट २१०  
 रंगप्पराज ३४४-४५  
 रंगरस २५६  
 राइकवाल ३९५, ३९७  
 राचमल्ल ५८, ६०, १०९  
 राचय ७१  
 राजकीर्ति ४०५-६  
 राजकेसरिवर्मन् ५६, ९९, १४०  
 राजगावुण्ड १००-१  
 राजदेव १६८-७१  
 राजदेवी १८९  
 राजपाल ४००  
 राजभीम ६४-५, ६८

राजमार्तण्ड ६४	राममट्टि २८५
राजराज ७४, १७८-९, २८०, ३५४	रामसेनान्वय ४०५-६, ४११, ४२७-८
राजलदेवो २५४	रामी ७-९
राजब्दे १७६, ३७५	रामोज ३७४
राजाधिराज ११०	रायगौड ३६०
राजि १२०-१	रायदुग २७८, ३७८
राजिमय ११९	रायपाल १५९-६०, १६८-७१
राजेन्द्र ७५, ७८	रायबाग ७७, २३५, ३३६
राजेन्द्रशोलचेन्द्रिराजन् १२७	रायरसेट्टि ३८०
राणिवेण्णूर ३७	रावदेवो १११
रामकीर्ति ३९९, ४१६	रावसट्टि १६४
रामक २८२, २८४-७	राष्ट्रकूट १५-६, २८, ३०२, ३६-७, ४२, ४४, ५०१, ५३५, ६४, १०९, १५९, १७२, २४३, ३९४
रामचन्द्र ८१-२, २६३, २६५, ३१५, ३८९, ४२५	रासलदेवो १८९
रामटेक ३९५, ४०४, ४०७, ४२२	रात्रक १९१, १९७
रामण १८६, २८२, २८६	रुद्रपाल १६०
रामतीर्थ ३८१	रुगि २३५
रामदेव २६५, ३३९	रूपनारायणवसदि १६४-५
रामनाथ २६५	रेचय्य ७१, २५०
रामनायक ३१०	रेखरस ३८४
रामपुरम् ३८१	रेचिदेव १०८, ११०
रामप्प ३१३	रेन्चूरु ९३
रामराज ३१९, ३२२, ३२६	
रामब्दे २८६	

रेवकनिर्मडि १०४, १०९, १५१-१	ललितकीर्ति २२२-३, २२५, २९५-
रेवकव्वरसि ७६	६, ३१९, ३५४-५, ३७९, ३८२, ४०३
रेवणय्य ११२	ललिता १९३, १९७, ३६८
रेवणाग्राम १९०, १९६	लाघक ६
लक्कवरपुकोट २८७	लाटीय मण्डल ३४
लक्कुण्डि ७३, २०८, ३७५, ३८२	लाडवागडगच्छ ४००, ४०२-६, ४०९-१०, ४१४, ४१६
लक्ष्मट १९१, १९६-७	लाडोल ३८५-६
लक्ष्मण १९२, १९४, १९७	लातूर ४२६
लक्ष्मप्परस ३१३	लालाक २
लक्ष्मरस ९८, १०३, १०५-६, ११०-३, २३६-७, २४४	लिगण्ण ३३०-१
लक्ष्मादेवी १७८, २११	लोकटेयरस ४४
लक्ष्मी १९३, १९७	लोकाचार्य २९१
लक्ष्मीदेव १३२, २३६-७, २४४	लोकाम्बा ६५
लक्ष्मीघर ३९१	लोकिकेरे ३७७
लक्ष्मीमाणिकदेवी ३०३	लोकिकुण्डि ७३
लक्ष्मीसेन २९४-५, २९९, ३४४-५, ४०१, ४०५-६, ४१४, ४२०, ४२७-८	लोढा गोत्र ४०३
लक्ष्मेश्वर ५४, ११२-३, ११५, १५८, २६५, ३००, ३१५, ३१८	लोलाक १९२-५, १९७
लखनऊ १७४, १८०, ३८६, ३८८,	लोहाचार्यान्वय ४०४-६, ४१०
लच्छलदेवी } ७९-८२, १८६	वक्रग्रीव १७५, २१४, २१६, २८८
लच्छियव्वे }	वज्र ९५
	वज्रदेव २५१
	वज्रनन्दि १७५, २१४-६
	वज्रसिग ७५
	वटगोहाली ७, ९

वटेश्वर ९८

वडुल ३

वण्णमठय ३८९

वयिरिमल्लयन् ७५

वरगुण १६, ३७-८

वरलाइका तीर्थ १९३, १९७

वराग ३०६, ३१४-५

वरुण ६९, २६९

वर्धमान २८, ३०, १०४, ११०,

१२८, १३४, २०८, २५१,

२५८, २७०-१, २८८, ३०६,

३३७, ३६५

वलभी १९०

वल्लयवाड १३८, १६२

वल्लुवामोलि ७५

वसन्तकीर्ति २९९

वसुधाकर ३७४

वस्तुपाल १९०

वक्तिकातट ३५

वाक्पतिराज १८९

वाग्देवी २३८, २४५

वाच २५४

वाचय्य ३८०

वाजसेन २०९

वाजिकुल ७३, ३९१

वाणकोवरैयर् ४१

वादिवघलभट्ट ५४

वादिराज ५९, १२८, १७५-७,

२१४, २१६, ४०५

वादिराजुल २३

वादीभर्तिह १७६

वामनन्दि ३७०

वायड ९७

वालनागम ३३९

वावणरस ७६, १७२

वासल गोत्र ४२६

वातिमण्ण ३८३

वासुदेव ४६, ४८, ५२, २२४

वासुपूज्य १५३, १७२, १७६ ७,

२१५-६, २५८, २६३, २७१

वाहिल ७५

विक्रमचोल ८३, १५८, १६०

विक्रमपाण्डय २६४

विक्रमपुर ८४-५, १२१

विक्रमराय ३९२

विक्रमादित्य १६, ६४, ७४, ११३,

११५, १२०, १२२, १२६,

१२७, १२९, १३४, १३६-७,

१३९, १४५, १४८, १८२,

२१२, ३९०



विग्रहराज १८९-९०

विजयकोटि १८६, २९३, ३१६,  
३३५, ३९८-९

विजयवका ३६१

विजयगण्डगोपाल २८९

विजयण ६९, २५६

विजयदेव ४०४

विजयनगर २७८-९, २८७-८, ३००,  
३०५, ३०८, ३१३-४, ३१७,  
३१९, ३२६, ३३९, ३४७

विजयनायकर् ३१७

विजयवाटिका ६७, ६९

विजयशक्ति २६

विजयादित्य २५, ६४-६, ६८,  
१५३, १८५-६

विजयानन्द १५-६

विजयालयमल्ल ७८

विजो ५७-८

विट्टरस २६

विट्ठप्पनायक ३२७

विठगौड ३७३

विडालपर २६४

विर्णयाभशूर २५१

विण्णकोवरियन् ७५

विदग्धराज ४६, ४९-५२

विद्यागण ४०६

विद्यानन्द १०४, ११०, २५८,  
२९३विद्याभूषण ४००-१, ४०५, ४०९,  
४११, ४१४, ४२२-३

विनयचन्द्र २६५

विनयसेन ३९

विनयादित्य ९५-६, १००-१,  
१५४, २०२, २११, २७०

विन्ध्यराज १८९

विन्ध्यवल्ली १९२, १९७

वियंगवरमैय ३४९

विरिसेठि १

विरूपय ३८०

विलप्पकम् ५२

विलशार १५८

विल्लवडरेयन् २७९

विशालकीर्ति २७८, ३११, ३२६,  
४०७, ४०९, ४१०, ४२४,  
४२६

विशयनल्लूलान् ४१

विश्वसेन ४०५

विष्णुकलम्बुद्ध ३६७

विष्णुगोप १०, १७, २०

विष्णुवर्धन २७, ६३-४, १३३-४,

१४७, १५६, १७६, २००,	वृषामूलगण १२२, ३७६
२०२-३, २११	वृषभ २१
वीगडि १९१, १९७,	वृषभनन्दि २०४, २०७
वीन १९७	वृषभसनगणवरान्वय ४०१-२
वीरकायात्व १३३-४, १४०	वेडल ५६
वीरगग ९५, १३३, १४६, १५४,	वेणगि १२८
२००, २०४५, २१४	वेणुग्राम ( वेणुपुर ) १३२, १३७,
वीरनन्दि ५३, ९३, २०८, २५२-३	२३९-४७, २४६
२५८, २७१	वण्णोगाव ३४७
वीरनोलम्ब ११५-६, १२०	वेणुनाडु २२
वीरपेर्माडि १५३	वेमुलवाड ५३
वीरप्योडेय ३२०	वेम्बुवलनाडु १४५
वीरबलज १६३, १६५, २४०	वेरावल २२०
वीरभैरव २९९	वेलनाण्डु ६६, ६९
वीरम ११४, ३२०	वेलि ६३
वीरराजे द्व ९९	वेलूर ३८१
वीरसघ ३३८	वेलूरवोम्मनायक ३१७
वीरसान्तर ८७-९	वेल्लप्रभाटिका १५९
वीरसेन २०९, २३५, २९३, २९५,	वेगी ६३, ६५, ६८, ९०
३३०-४, ३४४-५, ४२५	वैखर ७२
वीराम्बुधि ३९२	वैज १४२, १४५, २३९, २४५
वीरेश्वर ३६५	वैजयन्ती १३
वीरैय ३१४	वैयप्प ३१७
वीयराम १८९	वैयवण १९१, १९६
वीसल १८९	

वोजणसेट्टि २८६-७

व्याघ्रेरक १९१-६

शक १२९

शङ्खेयापारै २७

शण्वै ३१७

शमणर् तिडल् ३६६

शम्भुदेव २२९

शम्भुवराय ३६७

शर्कर ३४६

शशकपुर २०१

शंकरगण २९

शंकरदेवी ३१७, ३२६

शंकरसेट्टि ३२६

शंखजिनालय ५५, २०१, ३००,

३१५-६

शंखणाचार्य ३१८

शंखदेव ३८२

शाकम्भरा १८९

शान्तदेव २१४, २१६

शान्तर १३६, १८३

शान्ति १२०-१, १६१

शान्तिग्राम २२४

शान्तिदास ४०५

शान्तिदेव १७५, २१४, २१६,

३७५

शान्तिनन्दि ९८

शान्तिनाथ ३७४

शान्तिमद्र ४८, ४९, ५२

शान्तिमुनि १२८

शान्तियवक १५३

शान्तिवर्मा १३, ९१, ९३

शान्तिवीर ३७-८, ३७७

शान्तिसेट्टि १६४, १८१, ३७४

शान्तिसेन ४१३

शावल ३६३

शावड २२८

शास्त्रसारसमुच्चय २५९

शाहजहां ३४०, ३४३

शिगांव २५

शिरसैय ३५३

शिर ३७६

शिलाथ्री १६१

शिलाहार १३५, १३८-९, १६२,

१६५-६, १८५

शिवकुमार १८, २०

शिवहूंगर ३१०

शिवनहसेट्टि २२५

शिवपुरी ३४१-२

शिवमार २६

शिवराम ३१९

शिवरामय्य ३००	धीनदि ११३
शिवसिंह ३९६	धीपादरस ७६
शिगणार ४१	धीपाल २२, १६१, १७५-७, २१४, २१६, २६९
शिकिकुलम् २५५	धीपुष्प २६
शीतलप्रमादजी ३९३	धीभूषण ४००, ४०३, ४०५
शुभकीर्ति ७२	धीमाल १९०, ३९६, ४०१
शुभचन्द्र ५७-८, १३१, १५०, १५२, १६७, २४०, २४३, २४६, २४९, २५८, २६८, २७१, ३१०, ३६१, ३९९	धीयम्म २६
शुभतुग ३१	धीयादेवी १८०
शुभकर १९१, १९६	धीरगपट्टम् ३४३
शृंगेरी १७३, १८१, ३१६	धीवल्लउदण ३६७
शोडवाल १७४	धीवल्लम १८, २०, ३९, १८५
शेरगढ १६१, २३५	धीविक्रम १७, २०
शैगाट्टिक्क १४५	धीविजय २९, ३०, ६१ २, १७५, २१४, २१६, २५४
शैवादि २७९	धृतकीर्ति ५९ ६०, १६४ ५- १७५, २५८, २६७, २७१, ३३५,
शैवियन शैवोत्रिलाहणान् १६७	धृतवीर ४२०
शैनियम्पण कापिल् ३१७	ध्वेतपद ८६
श्वणन धरे २१०	सकलकीर्ति ३९७ ८, ४०५, ४१४
श्वणनहन्ति १३३	सकलचन्द्र १०२, १०७, ११०-१, ११४, २५१ ३, २५७, २६८, ३६३, ३८३
श्वणबेलगोल ३३५	सकलमद्र ३६४
श्रावकाचारसार २५९	सकललोकाश्रय २४
श्रीकीर्ति १९७, २२१-२	
श्रीचन्द्र १५४	
श्रीधर ४३, २५८, २७०-१, ३६७	

सक्करेपट्टण २९३, २९९, ३५७	सर्व ३३
सण्णमल्लीपुर २६२	सर्वदेव २५६
सत्तिग ७६	सर्वघर १५९
सत्यण्ण ३७४	सर्वलोकाश्रय २७
सत्यवाक्य ५४, १४०	सलनूप २०१
सत्यवेगाढे २३०-३	सल्लक्षण ३
सत्यसेन ६	सवणूर १५२, २२८
सत्याश्रय २५, ६३, ७३, ७६	सवाईजयनगर ३९५, ४१५
सदाशिवनायक ३२२, ३२६	सवाईराम ४२३
सदाशिवराय ३१९, ३२२, ३२६, ३४७	सवाईसिंगई नेमलालजी ३९३
सप्तरस २६३	सहस्रकीर्ति ३७३, ३७९
सन्नि ९५, १४२, १४५	सहेटमहेट २५५
समणरमलें ७२	संकण ३३४
समन्तभद्र २६३, ३३०-२, ३३४, ३३६, ३३९, ३४१, ३४४- ६, ४०१	संकिसेट्टि १०८
सम्यक्त्वरत्नाकर ८२	संखेस्वग गोत्र ३९९
सयविमारय ३८०	संगनूप ३०३-५
सरटूर १०२, २६०	संगप २८६
सरणसेट्टि २८६	संगमदेव २८७
सरस्वतीगच्छ २७८, २८८, ३०६, ३१०, ३९७, ४००-४, ४०७, ४०९, ४१०-२, ४१४-२३, ४२५, ४२७	संगिराय ३००, ३०८
	संगीतपुर ३३५, ३३८-९
	संगूर २५९, २८७
	संग्राम ३४१
	संघट्टसेट्टि ३३७
	संजालपुर ३९५, ४०४
	संविसेट्टि ३८०

ससारभोत २४	सिद्धबडवन् ६२
सागरकट्टे १२८	सिद्धातयोगीन्द्र २६४
सागरसेन २३५	सिद्धातसार २५९
सातग्य ११४	सिन्दकुल ९३, १८७
सातानिकोट २४	सिन्दनाड्ड २६
सातिपेद्द २०८	सिन्दनूप ९१
सातोज ३७४	सिन्दय ७०
सान्तर ८७, २९९	सिन्दरस ७६, १२१
सातलदेवी ३५५-६	सिन्दिगे ९८
सान्तलिगे ८७, ११६, १२०, १५७, १८३, ३९०	मिरसग्राम ३९५, ४१६
सान्तेथीवे ३५८	सिरसगि १४९
सामन्तणबसदि २३२	सिरिणदि १०२
साम्मर १९६	सिरियण्ण २१७, २७७
सायिगवुडि ३७२	सिरियम्मगोड २६१
सालिग्राम २२६	सिरियन्वे १८१-२
सालुव ( सात्व ) २६३, ३२७, ३६४	सिग्यादेवी १५१-२, २२७
सालूर ( सालियूर ) १५७, ३५६	मिरोही ३८५, ३८७
सायन्तर्पाण्डित २६५	सिर्मलगेगूह गण २८, ३०
सावरगावि ३९५, ४२७	मिवनी ३९५, ४२५
सावला गोत्र ४१३	सिगनन्दि २०
साविकरि २७९	सिगिसेट्टि ३७६
सिगलि २५४	मिगेथ ३७६
सित्तप्रवासल ३९	सिघट १८९
सिदवसयदेव ३२०	सिघल १८६
	सिहण ( सिघण ) २५१, २५४, ३९०

सिंहनन्दि ७४, १७५, २१४,  
२१६, २८८

सिंहराज १८९

सिंहविष्णु ११-२

सिंहवूरगण ३७

सोम्पाल्नायगर् १९, २०

सोयक १९१-२, १९४, १९७

सुजानराय ३२८

सुन्दरपाण्ड्य २७, २५५

सुभद्र १५९

सुभूति ४

सुमति ३५-६, १७५, २१४, २१६

सुरभिकुमुदचन्द्र २३२

सुरेन्द्रकीर्ति ४०८-११, ४१४-६,  
४२८

सुलोचना २७

सुवर्णवर्ष ३५-६

सूरत ३०

सूरसेन २९४-५

सूरस्थ गण ५४, ७३, ९८, १०२,

११२-३, १७२, २२४, २६९,

३७२-३, ३७४, ३७८

सूर्याचार्य ४९, ५२

सूर्याश्रम १६१

सूलाकोमरन् २०

सेटिमहादेवी २७५

सेट्टिगौड ३२९

सेणिगकोत्तलि १७४

सेणिसेट्टि २८९, ९०

सेतु ३२९, ३३७

सेन अन्वय ३९, ९२-३

सेन गण ८४-५, १०७, ११८,

१२०, २९३, २९५, २९९,

३३६, ३३९, ३४१, ३८०,

३९६-९, ४०१-२, ४०४,

४०८, ४१२, ४२०, ४२८

सेननसिग १२८

सेननृप ( सेनविभु ) २३६, २४३-४

सेनसंघ ३५-६

सेन्द्रक १५-६

सेम्बूर २५७

सेवुण २१३-४, २१८

सैगोट्ट ५८, ६०

सैतवाल ३९६, ४०७, ४२५-६

सैद्धान्तिदेव २८३

सोगि २००

सोडक ७५

सोत्तियूर ७०

सोदे ३१५, ३४७

सोन्द ३१६, ३३८, ३४२

सोनोर्पाडित ४०७

सोमदेव ५३, २५९, ३७४

सोमय २६५, २७७

सोमन्देवी ७६, १८९

सोमवे २८५-६

सोमसेन ३३६, ४०२, ४०४, ४१२

सोमापुर ११३, २११, २१६

सोमिदेव २१७

सोमेय २५९-६०

सोमेश्वर ८१-२, ८५, ९०, ९३-

४, १०२, ११०, ११२ १८२

१९०, १९६, २०८, २८२,

३८९, ३९०

सोमदूर १०२

सोमव २९० १

सोम्लण १/९

सोम २५९

सोमवण १४६ ७

सोमवस ८२, १७२

सोमिन्वे १९८, २०१

स्थिरविनोत १८

स्योमिध ३९८

स्वरटोर ३०१

स्वणपुर ३४६

हृष्ट १३१

हृष्टजण २८३

हस्तिमत्तूर २५८

हदिनाडु १३३

३३

हनगल १८६

हनगुद ११२, १२६

हनुमन्तगुडि ३१८

हदिगुल २८६

हबुरेमरस ३८४

हम्पो २३४, २८८, ३९१

हम्मिकब्बे ७९, ८१, १२० १

हरति ३४४ ५

हरमिग १९५

हरिकान्त ३७२

हरिकेमरी ३७२

हरिचन्द्र २७४

हरिदत्त १४५

हरिद्वार १८०

हरिनन्दि १७२

हरियनन्दन २९१

हरियनन्दि २५८ २७१

हरिवर्मा १०, ४६, ५०-१

हरिसेष्टि २८६

हरिसन २९४ ५

हरिहर २७८, २८७-८, ३५५ ६,

३९१

हर्षकोति ४२२

हलमगि १८७

हलमिगे २१४

हलहरवि ४५



हलिगावुण्ड ३७९

हलुमिडि ३१६

हलेबोड १५६, २३२, २५२,

२५८, २७३

हलेसोरव २९०

हलेहृव्वलि २७५, ३५२

हव्वक्का २१०

हस्तिकुण्डो ४६-७, ५०, ५२

हस्तिसाहम २

हम ४००

हाडुवल्लि ३०८, ३३५

हादरिवागिलु १४६-७

हानुंगल १५५, १७२, १८६, २०४

हालियसेट्टि १६४

हालुगुड्डे १८३, १८५

हालोवे २६६

हावेरि ३७४

हत्तिनसेनबोव २०१

हिरण्ययोगा ३५-६

हिरियमादण २८३

हरियमृद्गोड १२६-७

हिरेचोटि २८९

हिरेमःनूर १८७

हिरेमिगनगुत्ति १४८

होरगुप्पे २५६

हुकेरी २७५

हुमच २६४, ३११, ३३७

हुलगूर १७२

हुलदेनहल्लि ३६१

हुलिकल ( हुलेकल ) २९२, ३४६

हुलिकेरे ( हुलिगेरे ) २१४, २५९

२८५-६, ३१६

हुलियव्व १०२

हुलियार १८०

हुलूर ३८४

हुंवड ३९६, ४००, ४०४-५

हुलि ७८, १४९, २२६

हुविनसिग्गलि २५४

हुविनहिप्पणि ३८४

हुड्डव १२३, १२५

हेण्णेगडलु १४०

हेण्णेगडंग १३४

हेव्वलगुप्पे ३९

हेव्वेलु ८६

हेमकीर्ति ४०१-२, ४१०-२, ४१४,

४२२-३, ४२८

हेमणाचार्य ३१८

हेमदेव १५८, ३००

हेमसूरि २२१

हेमसेन २१४, २१६, ३०१

हेम्मरमि ३२७

हेम्माडिसेडि १८१-२

हेरगु २७४	१५५-६, १६९, १७६-७,
हेरियवासेवेगडे २३० १	१७९-८०, २००-१, २०४-७
हेर्माडियरस ३९०	२०९-१०, २१६-८, २२०,
हेलाचार्य ३४६-७	२२३-४, २४९-५०, २५६,
हैदराबाद ७६, १११, ३७०	२५८-६०, २६२, २६५,
हैवण ३०३ ५, ३५५-६	२७१-२, २७७, २९५
हैवेनूय ( भुगल ) २८०-२, २८४,	होरिम १३९-४०
२९८, ३००, ३०२, ३२७	होलरस १८७
होगरिगळ ८४ ५	होलनरसोपुर ७१, १४०
होनण २६७	होल्लराज २९४
होकुन्द २६०	हास्लिगोड १८६
होनव्वरसि ३०२, ३०५	होसकोटे ९
होनभूय ( हानरय ) २९७-८, ३०३,	होसनगर २१०
३५५-६	होमपट्टण २९५
होमिमेट्टि २२४	होमाल २७८
होयसल ९६, १००-१, १२८,	होसूर ७६, १३२, ३५७
१३१, १३३-४, १४६-७,	होगनूर २६८

## MĀṆIKACHANDRA D. J GRANTHAMĀLĀ

\* The Serial Numbers marked with asterisk are out of print

\*1 *Laghīyastraya-ādi-samgrahah* This vol contains four small works 1) *Laghīyastrayam* of Akalankadeva (c 7th century A D), a small Prakarana dealing with *pramāna*, *naya* and *pravacana* Akalanka is an eminent logician who deserves to be remembered along with Dharmakīrti and others His works are very important for a student of Indian logic Here the text is presented with the Sk commentary of Abhayacandrasūri 2) *Sarūpasambodhana* attributed to Akalanka, a short yet brilliant exposition of *ātman* in 25 verses 3-4) *Laghu Sarvajña siddhih* and *Bṛhat Sarvajña siddhih* of Anantakīrti These two texts discuss the Jaina doctrine of Sarvajñatā Edited with some introductory notes in Sk on Akalanka, Abhayacandra and Anantakīrti by Pt KALLAPPA BHARAMAPPA NITAVE, Bombay Samvata 1972, Crown pp 8 204, Price As 6/

\*2 *Sāgāra dharmāmṛtam* of Āśādhara Āśādhara is a voluminous writer of the 13th century A D, with many Sanskrit works on different subjects to his credit This is the first part of his *Dharmāmṛta* with his own commentary in Sk dealing with the duties of a layman Pt NATHURAM PREMI adds an introductory note on

Āśādhara and his works. Ed. by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp. 8-246, Price As. 8/-.

\*3. Vikrāntakauravam or Sulocanānāṭakam of Hastimalla (A.D. 13th century) : A Sanskrit drama in six acts. Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp. 4-164, Price As. 6/-.

\*4. Pārśvanātha-caritam of Vādirājasūri : Vādirāja was an eminent poet and logician of the 10th century A. D. This is a biography of the 23rd Tirthaṅkara in Sanskrit extending over 12 cantos. Edited with an introductory note on Vādirāja and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 18-198, Price As. 8/-.

\*5. Maithilikalyāṇam or Sītānāṭakam of Hastimalla : A Sk. drama in 5 acts, see No. 3 above. Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 4-96, Price As. 4/-.

\*6. Ārāḍhanāsāra of Devasena : A Prākṛit work dealing with religio-didactic topics. Prākṛit text with the Sk. commentary of Ratnakīrtideva, edited by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 128, Price As. 4/6.

\*7. Jinadattacaritam of Guṇabhadra : A Sk. poem in 9 cantos dealing with the life of Jinadatta, edited by Pt. MANOHARLAL, Bombay saṁvat 1973, Crown pp. 96, Price As. 5/-.

8 **Pradyumnacarita** of Mahāsenācārya A Sk poem in 14 cantos dealing with the life of Pradyumna It is composed in a dignified style Edited by Pts MANOHARLAL and RAMAPRASAD, Bombay Samvat 1973, Crown pp 230, Price As 8/-

9 **Cārītrasāra** of Cāmundarāya It deals with the rules of conduct for a house holder and a monk Edited by Pt INDRALAL and UDAYALAL, Bombay Samvat 1974, Crown pp 103, Price As 6/-

\*10 **Pramānanirnaya** of Vādirāja A manual of logic discussing specially the nature of Pramānas Edited by Pts INDRALAL and KHUBCHAND, Bombay Samvat 1974, Crown pp 80, Price As 5/-

\* 11 **Ācārasāra** of Vīranandi A Sk text dealing with Darśana, Jñāna etc Edited by Pts INDRALAL and MANOHARLAL, Bombay Samvat 1974, Crown pp 298, Price As 6/-

\* 12 **Trilokasāra** of Nemichandra • An important Prākṛit text on Jaina cosmography published here with the Sk commentary of Mādhavacandra Pt PREMI has written a critical note on Nemichandra and Mādhavacandra in the Introduction Edited with an index of Gāthās by Pt MANOHARLAL, Bombay Samvat 1975, Crown pp 10-405 20, Price Rs 1/12/-

\* 13 **Tattvānuśāsana-ādi-saṁgrahaḥ** • This vol contains the following works 1) *Tattvānuśāsana* of Nāgasena 2) *Ītopadeśa* of Pūjyapāda with the Sk

commentary of Āśādhara. 3) *Nīlisāra* of Indranandi. 4) *Mokṣapañcāśikā*. 5) *Śrutāvatāra* of Indranandi. 6) *Adhyātmatarāṅgiṇī* of Somadeva. 7) *Brhat-pañca-namaskāra* or *Pātrakesarī-stotra* of Pātrakesarī with a Sk. commentary. 8) *Adhyātmāṣṭaka* of Vādirāja. 9) *Dvā-triṃśikā* of Amitagati. 10) *Vairāgyamaṇimālā* of Śrīcandra. 11) *Tattvasāra* (in Prākṛit) of Devasena. 12) *Śrutaskandha* (in Prākṛit) of Brahma Hemacandra. 13) *Dhāḍasī-gāthā* in Prākṛit with Sk. chāyā. 14) *Jñānasāra* of Padmasimha, Prākṛit text and Sk. chāyā. Pt. PREMI has added short critical notes on these authors and their works. Edited by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1975, Crown pp. 4-176, Price As. 14/-.

\* 14. **Anagāra-dharmāmṛta** of Āśādhara : Second part of the *Dharmāmṛta* dealing with the rules about the life of a monk. Text and author's own commentary. Edited with verse and quotation Indices by Pts. BANSIDHAR and MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1976, Crown pp. 692-35, Price Rs. 3/8/-.

\*15. **Yuktyanuśāsana** of Samantabhadra : A logical Stotra which has wielded great influence on later authors like Siddhasena, Hemacandra etc.. Text published with an equally important commentary of Vidyānanda. There is an introductory note on Vidyānanda by Pt. PREMI. Ed. by Pts. INDRALAL and SHRILAL, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp. 6-182, Price As. 13/-.

\*16 **Nayacakra-ādi-saṃgraha** This vol contains the following texts 1) *Laghu-Nayacakra* of Devasena, Prākṛit text with Sk chāyā 2) *Nayacakra* of Devasena, Prākṛit text and Sk chāyā 3) *Ālāpapaddhati* of Devasena There is an introductory note in Hindī on Devasena and his *Nayacakra* by Pt PREMI Edited by Pt BANSIDHARA with Indices, Bombay Samvat 1977, Crown pp 42 148 Price As 15/

\*17 **Ṣaṭprābhṛtādi-saṃgraha** This vol contains the following Prākṛit works of Kundakunda of venerable authority and antiquity 1) *Darīna prābhṛta*, 2) *Cāritra prābhṛta*, 3) *Sūtra prābhṛta*, 4) *Bodha prābhṛta*, 5) *Bhāva-prābhṛta*, 6) *Mokṣa prābhṛta*, 7) *Langā prābhṛta*, 8) *Sīla prābhṛta*, 9) *Rayanasāra* and 10) *Dīḍaśānu prekṣā* The first six are published with the Sk commentary of Śrutasāgara and the last four with the Sk chāyā only. There is an introduction in Hindī by Pt PREMI who adds some critical information about Kundakunda, Śrutasāgara and their works Edited with an Index of verses etc by Pt PANNALAL SONI, Bombay Samvat 1977, Crown pp 12 442 32 Price Rs 3/.

\*18 **Prāyascittādi-saṃgraha** The following texts are included in this volume 1) *Chedapinda* of Indranandi Yogīndra, Prākṛit text and Sk chāyā 2) *Chedaśāstra* or *Chedanvati*, Prākṛit text and Sk chāyā and notes 3) *Prāyascitta cūlikā* of Gurudāsa, Sk text with the commentary of Nandiguru 4) *Prāyascittagrantha* in Sk verses by Bhaṭṭākalaṅka There is a critical

introductory note in Hindī by Pt. PREMI. Edited by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṃvat 1978, Crown pp.16-172-12, Price Rs. 1/2/-.

\*19. *Mūlācāra* of Vaṭṭakera, part I : An ancient Prākṛit text in Jaina Śaurasenī, Published with Sk. chāyā and Vasunandī's Sk. commentary. A highly valuable text for students of Prākṛit and ancient Indian monastic life. Edited by Pts. PANNALAL, GAJADHARALAL and SHRILAL, Bombay Saṃvat 1977, Crown pp. 516, Price Rs- 2/4/-.

20. *Bhāvasaṃgraha-ādiḥ* : This vol. contains the following works. 1) *Bhāvasaṃgraha* of Devasena, Prākṛit text and Sk. chāyā. 2) *Bhāvasaṃgraha* in Sk. verse of Vāmadeva Paṇḍita. 3) *Bhāva-tribhaṅgī* or *Bhāvasaṃgraha* of Śrutamuni, Prākṛit text and Sk. chāyā. 4) *Āravatrihaṅgī* of Śrutamuni, Prākṛit text and Sk. chāyā. There is a Hindī Introduction with critical remarks on these texts by Pt. PREMI. Edited with an Index of verses by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṃvat 1978, Crown pp. 8-284-28, Price Rs. 2/4/-.

21. *Siddhāntasāra-ādi-Saṃgraha* : This vol. contains some twentyfive texts. 1) *Siddhāntasāra* of Jīnacandra, Prākṛit text, Sk. chāyā and the commentary of Jñānabhūṣaṇa. 2) *Yogasāra* of Yogicandra, Apabhraṃśa text with Sk. chāyā. 3) *Kallāṇālokaṇā* of Ajitabrahma, Prākṛit text with Sk. chāyā, 4) *Amṛtāṇṭi* of Yogīndradeva, a didactic work in Sanskrit. 5) *Ratna-*



mālā of Śivakoti 6) *Śāstrasārasamuccaya* of Māgha-  
 nandī, a Sūtra work divided in four lessons 7) *Arhat-  
 praiśanam* of Prabhācandra, a Sūtra work in five  
 lessons 8) *Āptasvarūpam*, a discourse on the nature  
 of divinity 9) *Jñānalocanastotra* of Vādirāja (Poma-  
 rājasuta) 10) *Samavasaranastotra* of Viṣṇusena 11)  
*Sarvajñastavana* of Jayānandasūri 12) *Pārvanātha-  
 samasyā stotra* 13) *Utrahandastotra* of Guṇabhadra  
 14) *Maharṣi stotra* (of Āśādhara) 15) *Pārvanātha-  
 stotra* or *Lakṣmīstotra* with Sk commentary 16) *Nemi-  
 nātha stotra* in which are used only two letters viz n &  
 m 17) *Śaṅkhaśāstaka* of Bhānukīrti 18) *Nyāt-  
 mātaka* of Yogīndradeva in Prākṛit 19) *Tattvabhāṣana*  
 or *Sāmāyika pāṭha* of Amitagatī 20) *Dharmarasāyana*  
 of Padmanandī, Prākṛit text and Sk chāyā 21)  
*Sārasamuccaya* of Kulabhadra 22) *Amgapanatti* of  
 Śubhacandra, Prākṛit text and Sk chāyā 23) *Śrutā-  
 tatāra* of Vibudha Śrīdhara 24) *Śalākānikṣepana-  
 nīkāśana viharanam* 25) *Kalyānamālā* of Āśādhara  
 Pt PREMI has added critical notes in the Introduction  
 on some of these authors Edited by Pt PANNALAL  
 SONI, Bombay Samvat 1979 Crown pp 32-324, Price  
 Rs 1/8/-

\*22 *Nītivākyaṃrtam* of Somadeva. An important  
 text on Indian Polity, next only to *Kauṭilya Arthaśāstra*  
 The Sūtras are published here along with a Sanskrit  
 commentary There is a critical Introduction by PREMI  
 comparing this work with *Arthaśāstra* Edited by

Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1979, Crown pp. 34-426, Price Rs. 1/12/-.

\* 23. *Mūlācāra* of Vaṭṭakera, part II : Prākṛit text, Sk. chāyā and the commentary of Vasunandī, see No. 19 above. Bombay Saṁvat 1980, Crown pp. 332, Price Rs. 1/8/-

24. *Ratnakaraṇḍaka-śrāvakācāra* of Samantabhadra : With the Sanskrit commentary of Prabhācandra. There is an exhaustive Hindī Introduction by Pt. JUGAL KISHORE MUKTHAR, extending over more than pp. 300, dealing with the various topics about Samantabhadra and his works. Bombay Saṁvat 1982, Crown pp. 2-84-252-114, Price Rs. 2/-.

25. *Pañcasamgrahaḥ* of Amitagati : A good compendium in Sanskrit of the contents of *Gīmaṭasāra*. Edited with a note on the author and his works by Pt. DARBARILAL, Bombay 1927, Crown pp. 8-240, Price As. 13/- .

26. *Lāṭisamhitā* of Rājamalla : It deals with the duties of a layman and its author was a contemporary of Akbar to whom references are found in his compositions. There is an exhaustive Introduction in Hindī by Pt. JUGALKISHORE. Edited by Pt. DARBARILAL, Bombay Saṁvat 1948, Crown pp. 24-136, Price As. 8/- .

27. *Purudevacampū* of Arhaddāsa : A Campū work in Sanskrit written in a high-flown style. Edited with notes by Pt. JINADASA, Bombay Saṁvat 1985, Crown p. 4-206, Price As. 12/- .

28 **Jaina-Śilālekha samgraha** It is a handy volume giving the Devanāgarī version of *Epigraphia Carnatica* II (Revised ed) with Introduction, Indices etc by Prof HIRALAL JAIN, Bombay 1928, Crown pp 16 164-428-40, Price Rs 2/8/-

29-30 31 **Padma-carita** of Ravisena This is the Jaina recension of Rāma's story and as such indispensable to the students of Indian epic literature It was finished in A. D 676, and it has close similarities with *Padma-carita* of Vimala (beginning of the Christian era) Edited by Pt DARBARILAL, Bombay Samvat 1985, vol 1, pp 8-512, vol II, pp 8-436, vol III, pp 8-446 Thus pp about 1400 in all Price Rs 4/8/-

32-33 **Harivamsa purāna** of Jinasena I This is the Jaina recension of the Kṛṣṇa legend These two volumes are very useful to those interested in Indian epics It was composed in A D 783 by Jinasena of the Punnāta samgha There is a Hindī Introduction by Pt PPEMIJI Edited by Pt DARBARILAL, Bombay 1930, vol 1 and II pp 48-12-806, Price Rs 3/8/-

34 **Nītivākyāmṛtam**, a supplement to No 22 above This gives the missing portion of the Sanskrit commentary, Bombay Samvat 1939, Crown pp 4-76, Price As 4/-

35 **Jambūsvāmi-caritam** and **Adhyātma kamala-mārtanda** of Rājamalla See No 26 above Edited with an Introduction in Hindī by Pt JAGADISH-

CHANDRA, M. A., Bombay Saṁvat 1993, Crown pp. 18-264-4, Price Rs. 1/8/-.

36. **Triṣaṣṭi-smṛti-śāstra** of Āśādhara : Sanskrit text and Marāṭhī rendering. Edited by Pt. MOTILAL HIRACHANDA, Bombay 1937, Crown pp. 2-8-166, Price As. 8/-.

37. **Mahāpurāṇa** of Puṣpadanta, Vol. I **Ādipurāṇa** (Saṁdhis 1-37) : A Jaina Epic in Apabhraṁśa of the 10th century A.D. Apabhraṁśa Text, Variants, explanatory Notes of Prabhācandra. A model edition of an Apabhraṁśa text. Critically edited with an Introduction and Notes in English by Dr. P. L. VAIDYA, M. A., D.Litt., Bombay 1937, Royal 8vo pp. 42-672, Price Rs. 10/-.

37(a) Rāmāyaṇa portion separately issued. Price Rs. 2.50.

38. **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra Vol. I : This is an important Nyāya work, being an exhaustive commentary on Akalaṅka's *Laghīyastrayam* with Vivṛti (see No. 1 above). The text of the commentary is very ably edited with critical and comparative foot-notes by Pt. MAHENDRAKUMARA. There is a learned Hindī Introduction exhaustively dealing with Akalaṅka, Prabhācandra, their dates and works etc. written by Pt. KAILASCHANDRA. A model edition of a Nyāya text. Bombay 1938, Royal 8 vo. pp. 20-126-38-402-6, Price Rs. 8/-.

39 **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra, Vol II See No 38 above Edited by Pt MAHENDRAKUMAR SHASTRI who has added an Introduction in Hindi dealing with the contents of the work and giving some details about the author There is a Table of contents and twelve Appendices giving useful Indices Bombay 1941 Royal 8vo pp 20+94+403-930 Price Rs 8/8/-

40 **Varāṅgacaritam** of Jātā-Sūmhanandi A rare Sanskrit Kāvya brought to light and edited with an exhaustive critical Introduction and Notes in English by Prof A N Upadhye, M A, Bombay 1938, Crown pp 16+56+392, Price Rs 3/

41 **Mahāpurāṇa** of Puspadanta, Vol II (Samdhis 38-80) See No 37 above The Apabhramsa Text critically edited to the variant Readings and Glosses, along with an Introduction and five Appendices by Dr P L VAIDYA, M A, D Litt, Bombay 1940 Royal 8vo pp 24+570 Price Rs 10/-

42 **Mahāpurāṇa** of Puspadanta, Vol III (Samdhis 81-102) See No 37 and 40 above The Apabhramśas Text critically edited with variant Readings and Glosses by Dr P L VAIDYA, M A, D Litt The Introduction covers a biography of Puspadanta, discussing all about his date, works, patrons and metropolis (Mānyakheta) Pt PREMI'S essay 'Mahākavi Puṣpadanta' in Hindi is included here Bombay 1941 Royal 8vo pp. 32+28+314 Price Rs 6/-

42(a). **Harivaṁśa** portion is separately issued.  
Price Rs. 2.50.

43. **Ajanāpavanamjaya-nāṭakam** and **Subhadrā-nāṭikā** of Hastimalla : Two Sanskrit Dramas of Hastimalla (see also No. 3 above). Critically edited by Prof. M. V. PATWARDHAN. The Introduction in English is a well documented essay on Hastimalla and his four plays which are fully studied. There is an Index of stanzas from all the four plays. Bombay 1950. Crown pp. 8+68+120+128. Price Rs. 3/-.

44. **Syādvādasiddhi** of Vādibhasinḥa : Edited by Pt. DARBARILAL with Introductions etc. in Hindī shedding good deal of light on the author and contents of the work. Bombay 1950. Crown pp. 26+32+34+80. Price Rs. 1-50.

45. **Jaina Śilālekha-saṁgraha**, Part II (see No. 28 above) : The texts of 302 Inscriptions (following A. Guérinot's order) are given in Devanāgarī with summary in Hindī. There is an Index of Proper Names at the end. Compiled by Pt. VIJAYAMURTI, M. A. Bombay 1952. Crown pp. 4+520. Price Rs. 8/-.

46. **Jaina Śilālekha-saṁgraha**, Part III (see Nos. 23 & 45 above) : The texts of 303-846 inscriptions (following Guérinot's list) is given in Devanāgarī with summary in Hindī compiled by Pt. VIJAYAMURTI, M.A. There is an Index of Proper Names at the end. The Introduction by Shri G.C. CHAUDHARI is an exhaustive

study of inscriptions Bombay 1957 Crown pp 8+178  
+592+42 Price Rs 10/-

47 **Pramānaprameyakalikā** of Narendrasena (A. D.  
18th century) A Nyāya text dealing with Pramāṇa and  
Prameya The Sanskrit text critically edited by Pt  
DARBARILAL The Hindi Introduction deals with the  
author and a number of topics connected with the  
contents of this work Bhāratīya Jñānapīṭha Kashi,  
Varanasi 1961 Price Rs 1 50



*For copies please write to—*

**BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪṬHA**

Durgakunda Road,

Varanasi—5 (India)

Or

**BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪṬHA**

3620/21 Netaji Subhash Marg,

Delhi—6 (India)